

БЕЛАРУСКІ КАЛЯНДАР

1966 г.

X год выдання

БЕЛАСТОК
ГАЛОЎНАЕ ПРАЎЛЕННЕ БЕЛАРУСКАГА
ГРАМАДСКА-КУЛЬТУРНАГА ТАВАРЫСТВА
У ПОЛЬШЧЫ

Рэдактар календара
МІХАСЬ ХМЯЛЕЎСКИ

„Kalendarz Białoruski” na 1966 r. wydany przez Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne w Białymstoku. Nakład 5025 egz. Ark. druk. 20. Papier V kl. 70 g. Rękopis otrzymano 15 października 1965 r. Druk ukończono w grudniu 1965 r.

Białostockie Zakł. Graficzne, Białystok, Malmada 1. Zam 4623 * C.-3

Да Чытачоў

Беларускі календар на 1966 год мае спецыфічны характар. Ён прысвечаны 10-годдзю існавання Беларускага грамадска-культурнага таварыства ў Польшчы. Таму большасць публікацый календара адводзіцца дзейнасці БГКТ. Імі паказана і ілюстраваная фотаздымкамі, вядома, не ўся дзейнасць БГКТ. Аднак ужо і гэта ў пэўнай ступені паказвае напрамкі працы нашай беларускай арганізацыі. Магчыма, што гэтыя публікацыі на-служачы каму-небудзь і калі-небудзь шырэй пацікавіцца дзейнасцю БГКТ у Польшчы.

Значная частка календара адведзена лепшым публікацыям журналістаў «Нівы», якімі яны адзначаюць дзесяцігоддзе беларускага часопіса.

РЭДАКТАР

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх.-зах. |
|-----------|-------|-----|----------------|-------------|--------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | С | Цімафей | Nowy Rok | |
| 2 | 20 | Н | Ігната | Makarego | 7,44 — 15,39 |
| 3 | 21 | П | Ульяны, Пятра | Genowefy | |
| 4 | 22 | А | Анастасіі | Tytusa | |
| 5 | 23 | С | Паўла | Edwarda | |
| 6 | 24 | Ч | Куця | Andrzeja | |
| 7 | 25 | П | Нарадж. Хр. | Lucjana | |
| 8 | 26 | С | Другі дз. кал. | Seweryna | |
| 9 | 27 | Н | Сцяпана | Juliana | 7,41 — 15,48 |
| 10 | 28 | П | Агафіі | Jana | |
| 11 | 29 | А | Марка | Honoraty | |
| 12 | 30 | С | Хвядоры | Benedykta | |
| 13 | 31 | Ч | Меланіі | Weroniki | |
| 14 | 1 | П | Новы год | Feliksa | |
| 15 | 2 | С | Серафіма | Pawła | |
| 16 | 3 | Н | Малахіі | Marcelego | 7,34 — 16,00 |
| 17 | 4 | П | Саб. 70 ап. | Antoniego | |
| 18 | 5 | А | Апалінара | Malgorzaty | |
| 19 | 6 | С | Вадохрышча | Henryka | |
| 20 | 7 | Ч | Афанасія | Fabiana | |
| 21 | 8 | П | Юрыя | Agnieszki | |
| 22 | 9 | С | Піліпа | Wincentego | |
| 23 | 10 | Н | Рыгора | Rajmunda | 7,26 — 16,12 |
| 24 | 11 | П | Міхала | Tymoteusza | |
| 25 | 12 | А | Тацяны | Pawła | |
| 26 | 13 | С | Якава | Polikarpa | |
| 27 | 14 | Ч | Ніны | Jana Złot. | |
| 28 | 15 | П | Паўла | Przybysława | |
| 29 | 16 | С | Леанілы | Franciszka | |
| 30 | 17 | Н | Антона | Martyny | 7,16 — 16,25 |
| 31 | 18 | П | Максіма | Marceliny | |

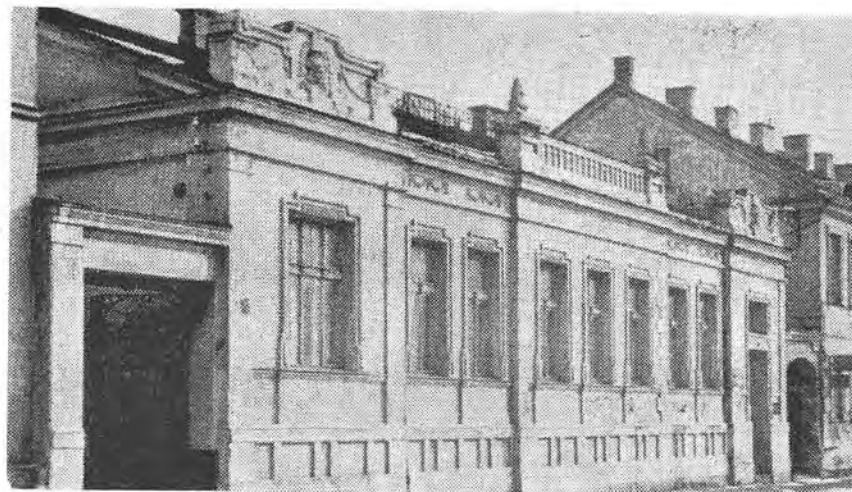


Варшава ў раёне вуліцы Манюшкі.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

| ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ | |
|---------------|--------------------------------------|
| 1. I. 1944 | — Стварэнне КРН |
| 5. I. 1942 | — Стварэнне ПНР |
| 11. I. 1898 | — Нар. бел. паэтэса Канстанцыя Буйла |
| 17. I. 1945 | — Вызваленне Варшавы |
| 21. I. 1924 | — Памёр Уладзімір Ленін |
| 21. I. 1838 | — Нарадзіўся Кастусь Каліноўскі |
| 30. I. 1921 | — Нарадзіўся бел. піс. Іван Шамякін |

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|----------------|------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | А | Макара | Ignacego | |
| 2 | 20 | С | Яфіма | Marii | |
| 3 | 21 | Ч | Максіма | Błażeja | |
| 4 | 22 | П | Цімафея | Andrzeja | |
| 5 | 23 | С | Клімента | Agaty | |
| 6 | 24 | Н | Ксепі | Doroty | 7,03 — 16,38 |
| 7 | 25 | П | Рыгора | Ryszarda | |
| 8 | 26 | А | Язэпа, Марыі | Jana | |
| 9 | 27 | С | Дзмітрыя | Apolonii | |
| 10 | 28 | Ч | Яфрэма | Jacka | |
| 11 | 29 | П | Рамана, Якава | Łazarza | |
| 12 | 30 | С | Трох свяціцел. | Juliana | |
| 13 | 31 | Н | Мікіты | Grzegorza | 6,51 — 16,53 |
| 14 | 1 | П | Трыфана | Walentego | |
| 15 | 2 | А | Срэчанне Гасп. | Faustyna | |
| 16 | 3 | С | Сямёна, Ганны | Danuty | |
| 17 | 4 | Ч | Кірыла | Zbigniewa | |
| 18 | 5 | П | Агаты | Szymona | |
| 19 | 6 | С | Хрысціны | Konrada | |
| 20 | 7 | Н | Лукі | Leona | 6,36 — 17,04 |
| 21 | 8 | П | Хведара | Eleonory | |
| 22 | 9 | А | Нікіфара | Małgorzaty | |
| 23 | 10 | С | Валянціны | Demiana | |
| 24 | 11 | Ч | Уласа | Macieja | |
| 25 | 12 | П | Аляксея | Wiktora | |
| 26 | 13 | С | Зоі, Святланы | Mirosława | |
| 27 | 14 | Н | Кірыла | Gabriela | 6,23 — 17,15 |
| 28 | 15 | П | Еўфрасініі | Romana | |



Памяшканне Галоўнага праўлення БГКТ

ДЛЯ ЗАПІСУ:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

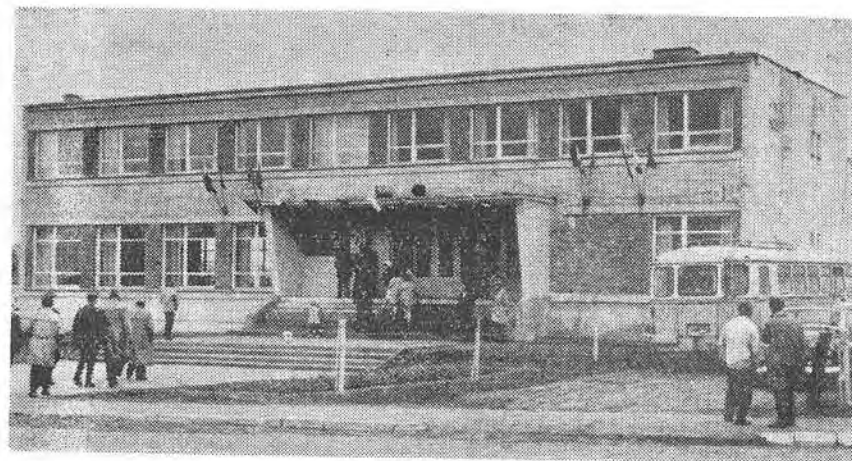
.....

.....

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

2. II. 1943 — Перамога пад Сталінградам
 6. II. 1905 — Нарадзіўся Уладзіслаў Гамулка
 6. II. 1914 — Нарадзіўся бел. паэт Аркадзь Куляшоў
 19. II. 1473 — Нарадзіўся Мікалай Капернік
 22. II. (ст. ст.) 1896 — Нарадзіўся Кандрат Крапіва
 23. II. 1918 — Стварэнне Савецкай Арміі
 26. II. 1956 — Адбыўся I з'езд БГКТ

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|--------------|--------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 16 | А | Рамана | Antoniny | |
| 2 | 17 | С | Льва | Heleny | |
| 3 | 18 | Ч | Архіпа | Kunegundy | |
| 4 | 19 | П | Агафона | Kazimierza | |
| 5 | 20 | С | Цімафел | Wacława | |
| 6 | 21 | Н | Яўгеніі | Róży | 5,02 — 17,28 |
| 7 | 22 | П | Палікарпа | Tomasza | |
| 8 | 23 | А | Дзень жанчын | Dzień Kobiet | |
| 9 | 24 | С | Тараса | Franciszki | |
| 10 | 25 | Ч | Парфіра | Makarego | |
| 11 | 26 | П | Пракопа | Konstantyna | |
| 12 | 27 | С | Ціта | Grzegorza | |
| 13 | 28 | Н | Васіля | Krystyny | 5,51 — 17,40 |
| 14 | 1 | П | Еўдакіі | Leona | |
| 15 | 2 | А | Фядота | Klemensa | |
| 16 | 3 | С | Яўтропія | Hilarego | |
| 17 | 4 | Ч | Герасіма | Zbigniewa | |
| 18 | 5 | П | Конана | Cyryla | |
| 19 | 6 | С | Аркадзія | Józefa | |
| 20 | 7 | Н | Яўгена | Anatola | 5,35 — 17,52 |
| 21 | 8 | П | Феафілата | Lubomira | |
| 22 | 9 | А | 40 мучан. | Pawła | |
| 23 | 10 | С | Міхала | Pelagii | |
| 24 | 11 | Ч | Сафрона | Gabriela | |
| 25 | 12 | П | Феафана | Marii | |
| 26 | 13 | С | Нікіфара | Teodora | |
| 27 | 14 | Н | Бенадыкта | Lidii | 5,18 — 18,04 |
| 28 | 15 | П | Аляксандра | Sykstusa | |
| 29 | 16 | А | Юліяна | Wiktoryny | |
| 30 | 17 | С | Аляксея | Anieli | |
| 31 | 18 | Ч | Аляксандры | Balbiny | |



Дом культуры імя Кастуся Каліноўскага ў Гарадку

ДЛЯ ЗАПІСУ:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

- 2. III. 1919 — Стварэнне III Інтэрнацыянала
- 4. III. 1956 — Выйшаў першы нумар «Нівы»
- 14. III. 1883 — Намёр Карл Маркс
- 22. III. 1864 — Павешаны Кастусь Каліноўскі
- 28. III. 1868 — Нарадзіўся Максім Горкі

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|--------------|-----------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | П | Дарыі | Grażyny | |
| 2 | 20 | С | Святланы | Władysława | |
| 3 | 21 | Н | Вербніца | Ryszarda | 5,02 — 18,16 |
| 4 | 22 | П | Васіля | Izydora | |
| 5 | 23 | А | Нікана | Ireny | |
| 6 | 24 | С | Захара | Celestyna | |
| 7 | 25 | Ч | Благавешчане | Rufiny | |
| 8 | 26 | П | Ірынея | Dionizego | |
| 9 | 27 | С | Матроны | Marii | |
| 10 | 28 | Н | Вялікдзень | Wielkaroc | 4,46 — 18,29 |
| 11 | 29 | П | II Дз. Вял. | II Dzień Wielk. | |
| 12 | 30 | А | Івана Л. | Wiktora | |
| 13 | 31 | С | Веніяміна | Bronisława | |
| 14 | 1 | Ч | Марыі | Justyna | |
| 15 | 2 | П | Трафіма | Anastazji | |
| 16 | 3 | С | Мікіты | Benedykta | |
| 17 | 4 | Н | Язэпа, Юрыя | Roberta | 4,31 — 18,31 |
| 18 | 5 | П | Хвядоры | Alicji | |
| 19 | 6 | А | Платаніды | Leona | |
| 20 | 7 | С | Марціна | Czesława | |
| 21 | 8 | Ч | Радзівона | Anzelma | |
| 22 | 9 | П | Вадзіма | Łukasza | |
| 23 | 10 | С | Георгія | Wojciecha | |
| 24 | 11 | Н | Анціна | Grzegorza | 4,16 — 18,53 |
| 25 | 12 | П | Васіля, Мілы | Marka | |
| 26 | 13 | А | Артамона | Marii | |
| 27 | 14 | С | Антана | Teofila | |
| 28 | 15 | Ч | Трафіма | Pawła | |
| 29 | 16 | П | Ірыны | Piotra | |
| 30 | 17 | С | Сямёна | Katarzyny | |



Ю. Гагарын у Польшчы ў 1961 годзе. Старшыня Дзяржаўнай рады Аляксандр Завадскі ўзнагародзіў Ю. Гагарына Крыжам Грунвальдскім I ступені.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

12. IV. 1961 — Першы ў свеце касмічны палёт Ю. Гагарына
18. IV. 1903 — Нар. бел. піс. Платон Галавач
21. IV. 1840 — Нарадзіўся Францішак Багушэвіч
22. IV. 1870 — Нарадзіўся Уладзімір Ленін
23. IV. 1886 — Нарадзіўся Змітрок Бядуля
28. IV. 1900 — Памёр Францішак Багушэвіч

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. — зах. |
|-----------|-------|-----|-------------------|-----------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 18 | Н | Свита працы | Święto Pracy | 4,03 — 19,04 |
| 2 | 19 | П | Хрыстафора | Zygmunta | |
| 3 | 20 | А | Анастасіі | Marii | |
| 4 | 21 | С | Фёдара | Moniki | |
| 5 | 22 | Ч | Лукі | Ireny | |
| 6 | 23 | П | Георгія Паб. | Jana | |
| 7 | 24 | С | Савы | Benedykta | 3,50 — 19,16 |
| 8 | 25 | Н | Марка | Grzegorza | |
| 9 | 26 | П | Дз. Перамогі | Dzień Zwyc. | |
| 10 | 27 | А | Сымона | Izydora | |
| 11 | 28 | С | Віталія | Franciszka | |
| 12 | 29 | Ч | Мемнона | Pankracego | |
| 13 | 30 | П | Якава | Serwacego | |
| 14 | 1 | С | Тамары | Bonifacego | |
| 15 | 2 | Н | Барыса, Зои | Zofii | 3,39 — 19,27 |
| 16 | 3 | П | Цімафея | Andrzeja | |
| 17 | 4 | А | Пелагеі | Weroniki | |
| 18 | 5 | С | Ірыны | Feliksa | |
| 19 | 6 | Ч | Узнісненне | Wniebowzięcie | |
| 20 | 7 | П | Акакія | Bernarda | |
| 21 | 8 | С | Яна Багасл. | Włodzimierza | 3,29 — 19,37 |
| 22 | 9 | Н | Мікалая | Heleny | |
| 23 | 10 | П | Сымона | Joanny | |
| 24 | 11 | А | Мяфодзія і Кірыла | Michała | |
| 25 | 12 | С | Германа | Urbana | |
| 26 | 13 | Ч | Глікерыі | Filipa | |
| 27 | 14 | П | Ізідара | Jana | |
| 28 | 15 | С | Дзмітрыя | Augustyna | |
| 29 | 16 | Н | Сёмуха | Zielone Świątki | 3,22 — 19,46 |
| 30 | 17 | П | Ефрасініі | Ferdynanda | |
| 31 | 18 | А | Клаўдзіі | Anieli | |



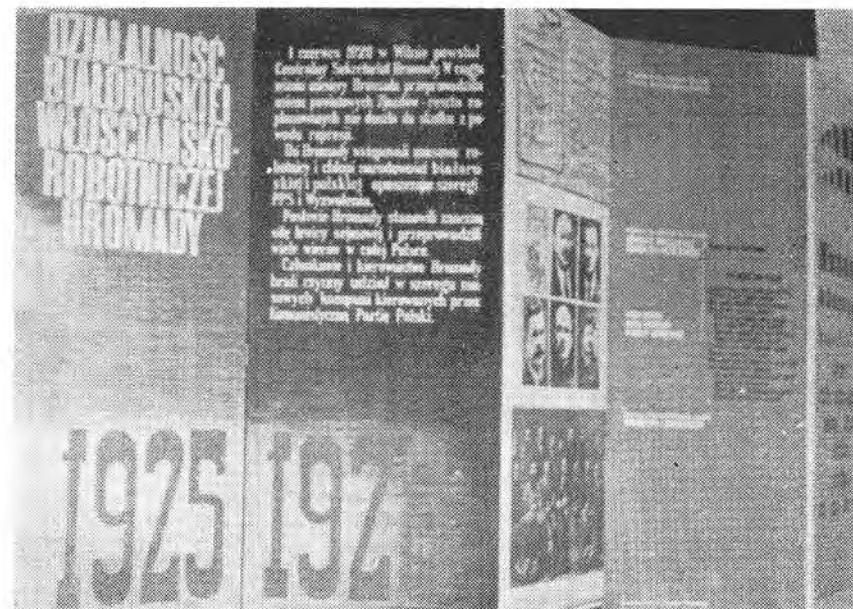
Вызваленне. Вяртанне беларускіх партызан.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

5. V. 1818 — Нарадзіўся Карл Маркс
 8. V. 1945 — Капітуляцыя Гітлераўскай Германіі
 11. V. 1883 — Нар. бел. дзіцячы піс. Янка Маўр
 15. V. 1882 — Нар. бел. піс. Уладзіслаў Галубок
 25. V. 1917 — Памёр Максім Багдановіч
 26. V. 1799 — Нарадзіўся Аляксандр Пушкін

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|---------------|----------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | С | Карніла | Jakuba | |
| 2 | 20 | Ч | Аляксея | Marcelina | |
| 3 | 21 | П | Алёны | Leszka | |
| 4 | 22 | С | Васілісы | Franciszka | |
| 5 | 23 | Н | Ігара | Bonifacego | 3,16 — 19,53 |
| 6 | 24 | П | Сцяпана | Pauliny | |
| 7 | 25 | А | Івана | Robertta | |
| 8 | 26 | С | Карпа | Seweryna | |
| 9 | 27 | Ч | Хвядоры, Ніла | Pelagii | |
| 10 | 28 | П | Мікіты | Małgorzaty | |
| 11 | 29 | С | Аляксандра | Barnaby | |
| 12 | 30 | Н | Васіля | Onufrego | 3,14 — 19,58 |
| 13 | 31 | П | Ярамея | Pankracego | |
| 14 | 1 | А | Дыяніза | Bazylego | |
| 15 | 2 | С | Нікіфара | Jolanty | |
| 16 | 3 | Ч | Лук'яна | Aliny | |
| 17 | 4 | П | Марфы | Boże Ciało | |
| 18 | 5 | С | Дарафея | Elżbiety | |
| 19 | 6 | Н | Тэхлі | Gerwazego | 3,14 — 20,01 |
| 20 | 7 | П | Валерыі | Bogny | |
| 21 | 8 | А | Яфрэма | Alicji | |
| 22 | 9 | С | Фёклы | Pauliny | |
| 23 | 10 | Ч | Антаніны | Zenona | |
| 24 | 11 | П | Варфаламея | Jana | |
| 25 | 12 | С | Анўфрыя | Wilhelma | |
| 26 | 13 | Н | Акуліны | Pawła | 3,17 — 20,01 |
| 27 | 14 | П | Ялісея | Władysława | |
| 28 | 15 | А | Міхала | Ireneusza | |
| 29 | 16 | С | Ціхана | Piotra i Pawła | |
| 30 | 17 | Ч | Мануіла | Lucyny | |



Фрагмент выстаўкі аб Грамадзе. Выстаўка была адкрыта 18 верасня 1965 года ў залах Музея рэвалюцыйнага руху ў Беластоку.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

.....

.....

.....

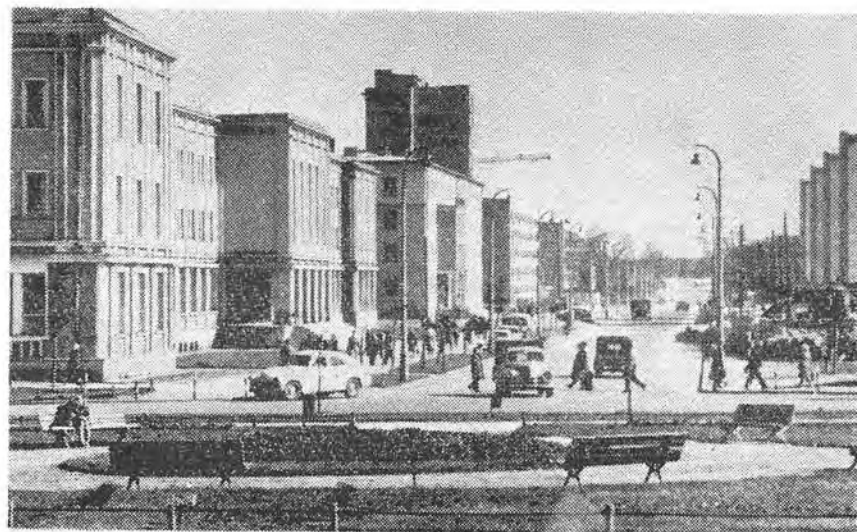
.....

.....

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

- 18. VI. 1936 — Памёр Максім Горкі
- 22. VI. 1941 — Інвазія Гітлераўскай Германіі на СССР
- 24. VI. 1925 — Стварэнне БСР Грамады
- 25. VI. 1905 — Нарадзіўся Пятрусь Броўка
- 28. VI. 1942 — Памёр Янка Купала

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|---------------|-------------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 18 | П | Лявона | Haliny | |
| 2 | 19 | С | Засіма | Marii | |
| 3 | 20 | Н | Мяфода | Anatola | 3,22 — 19,58 |
| 4 | 21 | П | Пярэнція | Teodora | |
| 5 | 22 | А | Зіны | Antoniego | |
| 6 | 23 | С | Іосіфа | Dominiki | |
| 7 | 24 | Ч | Іоана Прэдц. | Cyryla | |
| 8 | 25 | П | Ермалая | Elżbiety | |
| 9 | 26 | С | Дзяніса | Weroniki | |
| 10 | 27 | Н | Інесы | Anieli | 3,29 — 19,54 |
| 11 | 28 | П | Івана | Pelagii | |
| 12 | 29 | А | Пятра і Паўла | Jana | |
| 13 | 30 | С | Сабор 12 Ап. | Eugeniusza | |
| 14 | 1 | Ч | Дзям'яна | Marcelego | |
| 15 | 2 | П | Уліты | Henryka | |
| 16 | 3 | С | Анатолія | Dzierżysławy | |
| 17 | 4 | Н | Андрэя | Aleksego | 3,37 — 19,46 |
| 18 | 5 | П | Афанасія | Szymona | |
| 19 | 6 | А | Сяргея | Wincentego | |
| 20 | 7 | С | Фамы | Czesława | |
| 21 | 8 | Ч | Пракопа | Wiktora | |
| 22 | 9 | П | Св. Адрадж. | Święto Odrodzenia | |
| 23 | 10 | С | Антана | Apolinarego | |
| 24 | 11 | Н | Вольгі | Krystyny | 3,47 — 19,37 |
| 25 | 12 | П | Гаўрылы | Jakuba | |
| 26 | 13 | А | Сцяпана | Anny | |
| 27 | 14 | С | Анісіма | Natalii | |
| 28 | 15 | Ч | Уладзіміра | Wiktora | |
| 29 | 16 | П | Валянціны | Marty | |
| 30 | 17 | С | Марыны | Julity | |
| 31 | 18 | Н | Амяльяна | Ignacego | 3,56 — 19,25 |



Беласток. Вуліца М. Кюры Складоўскай.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

| ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ | |
|---------------|--------------------------------|
| 2. VII. 1900 | — Нарадзіўся Уладзімір Дубоўка |
| 3. VII. 1876 | — Нарадзілася Цётка |
| 6. VII. 1905 | — Нарадзіўся Пятро Глебка |
| 7. VII. 1900 | — Нарадзіўся Кузьма Чорны |
| 7. VII. 1882 | — Нарадзіўся Янка Купала |
| 15. VII. 1410 | — Бітва пад Грунвальдам |
| 21. VII. 1944 | — Стварэнне ПКВН |
| 22. VII. 1944 | — Абнародаванне Маніфеста ПКВН |
| 27. VII. 1944 | — Вызваленне Беластока |

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|-------------------|-------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | Ч | Андрэя | Bronisławy | |
| 2 | 20 | П | Самуіла | Stefana | |
| 3 | 21 | С | Фадзея | Szymona | |
| 4 | 22 | Н | Афанасія | Rozalii | 4,55 — 18,13 |
| 5 | 23 | П | Ірынея | Wawrzyńca | |
| 6 | 24 | А | Арсенія | Zachariasza | |
| 7 | 25 | С | Ціта | Reginy | |
| 8 | 26 | Ч | Наталіі | Nestora | |
| 9 | 27 | П | Пімена | Piotra | |
| 10 | 28 | С | Іова | Mikołaja | |
| 11 | 29 | Н | Усеки. Гл. І. Пр. | Jacka | 5,07 — 17,53 |
| 12 | 30 | П | Алякс. Неўск. | Gwidona | |
| 13 | 31 | А | Хведара | Filipa | |
| 14 | 1 | С | Сямёна | Bernarda | |
| 15 | 2 | Ч | Маманта | Nikodema | |
| 16 | 3 | П | Якіма | Kornela | |
| 17 | 4 | С | Майсея | Justyny | |
| 18 | 5 | Н | Елізаветы | Józefa | 5,18 — 17,40 |
| 19 | 6 | П | Макара | Konstancji | |
| 20 | 7 | А | Лукі | Eustachego | |
| 21 | 8 | С | Нар. Пр. Баг. | Mateusza | |
| 22 | 9 | Ч | Ганны | Tomasza | |
| 23 | 10 | П | Пятра | Tekli | |
| 24 | 11 | С | Сяргея | Gerarda | |
| 25 | 12 | Н | Юліяна | Aurelii | 5,29 — 17,23 |
| 26 | 13 | П | Валерыяна | Cypriana | |
| 27 | 14 | А | Узн. Кр. Гасп. | Kosmy | |
| 28 | 15 | С | Максіма | Wacława | |
| 29 | 16 | Ч | Людмілы | Michała | |
| 30 | 17 | П | Веры, Надз. Л. | Heronima | |



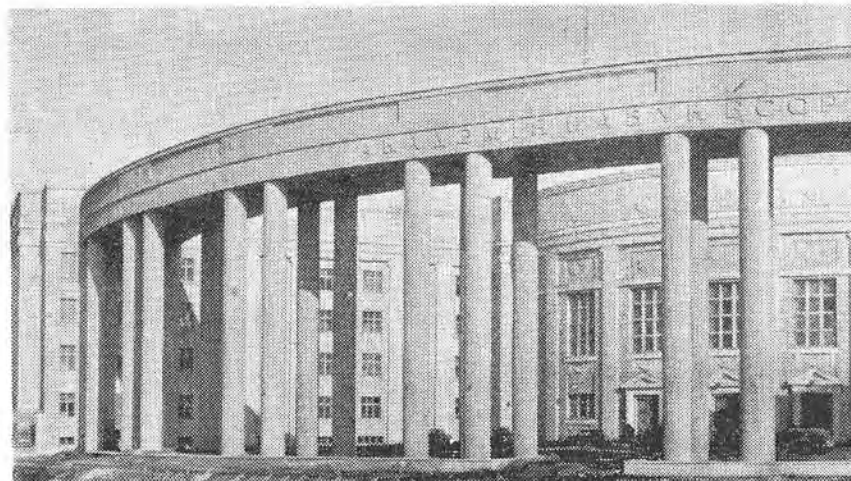
Верасень не паўторыцца ніколі. На здымку: З трагічных дзён паражэння і здрады праз санацыйны ўрад і вайскае камандванне, Польшкіх салдат-абаронцаў Варшавы гоняць гітлераўцы ў фашысцкі палон.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

- 1. IX. 1906 — Выхад першай легальнай бел. газеты «Наша доля»
- 1. IX. 1939 — Напад Гітлераўскай Германіі на Польшчу
- 4. IX. 1869 — Нарадзіўся Юльён Славацкі
- 17. IX. 1912 — Нарадзіўся Максім Танк
- 29. IX. 1823 — Нарадзіўся Уладзіслаў Сыракомля

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|----------------|--------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 18 | С | Софii | Danuty | |
| 2 | 19 | Н | Трафіма | Teofila | 5,42 — 17,07 |
| 3 | 20 | П | Яўстрафія | Teresy | |
| 4 | 21 | А | Кандрата | Franciszka | |
| 5 | 22 | С | Іоны | Apolinarego | |
| 6 | 23 | Ч | Іоана Хр. | Brunona | |
| 7 | 24 | П | Фёклы | Marii | |
| 8 | 25 | С | Сяргея | Brygidy | |
| 9 | 26 | Н | Івана, Багасл. | Dionizego | 5,54 — 16,53 |
| 10 | 27 | П | Марка | Franciszka | |
| 11 | 28 | А | Нікана | Emiliana | |
| 12 | 29 | С | Кірыяна | Maksymiliana | |
| 13 | 30 | Ч | Рыгора | Edwarda | |
| 14 | 1 | П | Пакр. Пр. Баг. | Kalikastra | |
| 15 | 2 | С | Кастуся | Jadwigi | |
| 16 | 3 | Н | Дзяніса | Gerarda | 6,05 — 16,36 |
| 17 | 4 | П | Пятра | Malgorzaty | |
| 18 | 5 | А | Аляксея | Lukasza | |
| 19 | 6 | С | Фамы | Piotra | |
| 20 | 7 | Ч | Пелагеі | Ireny | |
| 21 | 8 | П | Таісы | Urszuli | |
| 22 | 9 | С | Якава | Filipa | |
| 23 | 10 | Н | Тэафіля | Teodora | 6,18 — 16,21 |
| 24 | 11 | П | Філіпа | Rafała | |
| 25 | 12 | А | Карпа | Kryspina | |
| 26 | 13 | С | Марціна | Ewarysta | |
| 27 | 14 | Ч | Назара | Sabiny | |
| 28 | 15 | П | Лук'яна | Szymona | |
| 29 | 16 | С | Лангіна | Teodora | |
| 30 | 17 | Н | Лявона | Klaudiusza | 6,31 — 16,07 |
| 31 | 18 | П | Лукі | Augusta | |



Будынак Акадэміі навук Беларускай ССР.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ

4. X. 1928 — Заснаванне ў Мінску Беларускай Акадэміі навук
4. X. 1957 — I штучны спутнік Зямлі
12. X. 1943 — Бітва пад Леніна
30. X. 1921 — Заснаванне ў Мінску універсітэта

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усп. - зах. |
|-----------|-------|-----|----------------|-----------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 19 | А | Клеапатры | Wszystkich Św. | |
| 2 | 20 | С | Арцёма | Bohdana | |
| 3 | 21 | Ч | Іларыёна | Huberta | |
| 4 | 22 | П | Аверкія | Karola | |
| 5 | 23 | С | Якава | Elżbiety | |
| 6 | 24 | Н | Апанаса | Leonarda | 6,44 — 15,56 |
| 7 | 25 | П | Пер. В. Кастр. | Rocz. Rew. Paź. | |
| 8 | 26 | А | Дзмітрыя | Wiktora | |
| 9 | 27 | С | Нестара | Teodora | |
| 10 | 28 | Ч | Іова | Andrzeja | |
| 11 | 29 | П | Анастасіі | Marcina | |
| 12 | 30 | С | Зіновія | Witolda | |
| 13 | 31 | Н | Спірыдона | Stanisława | 6,56 — 15,44 |
| 14 | 1 | П | Дзям'яна | Józefata | |
| 15 | 2 | А | Акіндзіна | Leopolda | |
| 16 | 3 | С | Язэпа | Edmunda | |
| 17 | 4 | Ч | Ніканора | Salomei | |
| 18 | 5 | П | Галакціёна | Romana | |
| 19 | 6 | С | Паўла | Elżbiety | |
| 20 | 7 | Н | Фядота | Feliksa | 7,08 — 15,35 |
| 21 | 8 | П | Міхаіла Арх. | Janusza | |
| 22 | 9 | А | Парфіра | Cecylii | |
| 23 | 10 | С | Радзівона | Klemensa | |
| 24 | 11 | Ч | Віктара | Jana | |
| 25 | 12 | П | Ніла | Katarzyny | |
| 26 | 13 | С | Іона Зл. | Konrada | |
| 27 | 14 | Н | Піліпа | Waleriana | 7,19 — 15,28 |
| 28 | 15 | П | Гурыя | Zdzisława | |
| 29 | 16 | А | Мацвея | Saturnina | |
| 30 | 17 | С | Рыгора | Andrzeja | |



Напярэдадні гадавіны Вялікай Кастрычніцкай рэвалюцыі грамадскіх Варшавы злагыла вянкi на могілках савецкіх салдат.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

| ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ | |
|---------------|-----------------------------------|
| 2. XI. 1909 | — Нарадзіўся Максім Лужанін |
| 3. XI. 1882 | — Нарадзіўся Якуб Колас |
| 4. XI. 1887 | — Нарадзіўся Цішка Гартны |
| 7. XI. 1917 | — Пачатак Кастрычніцкай рэвалюцыі |
| 10. XI. 1906 | — Выйшла «Наша Ніва» |
| 14. XI. 1905 | — Нар. бел. паэт Міхась Васілёк |
| 27. XI. 1903 | — Нарадзіўся Піліп Пестрак |
| 30. XI. 1899 | — Нарадзіўся Міхась Лынькоў |

| С т ы л ь | | Дні | Праваслаўны | Katolicki | Сонца усх. - зах. |
|-----------|-------|-----|-----------------|-----------------|----------------------|
| Новы | Стары | | | | |
| 1 | 18 | Ч | Платона | Natalii | |
| 2 | 19 | П | Аўдзея | Pauliny | |
| 3 | 20 | С | Рыгора | Franciszka | |
| 4 | 21 | Н | Ув. у Хр. П. Б. | Barbary | 7,29 — 15,24 |
| 5 | 22 | П | Філімона | Krystyny | |
| 6 | 23 | А | Фёдара | Mikołaja | |
| 7 | 24 | С | Кацярыны | Ambrożego | |
| 8 | 25 | Ч | Клімента | Marii | |
| 9 | 26 | П | Аліпія | Leokadii | |
| 10 | 27 | С | Якава | Julii | |
| 11 | 28 | Н | Сцяпана | Daniela | 7,37 — 15,25 |
| 12 | 29 | П | Парамона | Aleksandra | |
| 13 | 30 | А | Андрэя | Łucji | |
| 14 | 1 | С | Наума | Izydora | |
| 15 | 2 | Ч | Авакума | Waleriana | |
| 16 | 3 | П | Сафона | Euzebiusza | |
| 17 | 4 | С | Варвары | Łazarza | |
| 18 | 5 | Н | Савы | Bogusława | 7,42 — 15,25 |
| 19 | 6 | П | Мікалаа Чуд. | Urbana | |
| 20 | 7 | А | Амбражэя | Dominika | |
| 21 | 8 | С | Патапа | Tomasza | |
| 22 | 9 | Ч | Ганны | Zenona | |
| 23 | 10 | П | Мілы | Wiktorii | |
| 24 | 11 | С | Ланілы | Adama i Ewy | |
| 25 | 12 | Н | Спірыдона | Boże Narodzenie | 7,45 — 15,29 |
| 26 | 13 | П | Яўгенія | Szczepana | |
| 27 | 14 | А | Апалона | Jana | |
| 28 | 15 | С | Анфісы | Antoniego | |
| 29 | 16 | Ч | Агея | Tomasza | |
| 30 | 17 | П | Данілы | Eugeniusza | |
| 31 | 18 | С | Зоі | Sylwestra | |



Навагрудак. Дэлегацыя Галоўнага праўлення БГКТ у Музеі Адама Міцкевіча ў 1956 годзе.

ДЛЯ ЗАПІСУ:

| ПАМЯТНЫЯ ДАТЫ | |
|---------------|-------------------------------------|
| 5. XII. 1926 | — Крыжавыя падзеі ў Старым Беразове |
| 9. XII. 1891 | — Нарадзіўся Максім Багдановіч |
| 17. XII. 1884 | — Памёр Дунін - Марцінкевіч |
| 18. XII. 1902 | — Нарадзіўся Міхась Машара |
| 24. XII. 1789 | — Нарадзіўся Адам Міцкевіч |

БЕЛАРУСЫ ў НАРОДНАЙ ПОЛЬШЧЫ

Беларусы за народнай улады сталі паўнапраўнымі гаспадарамі сваёй краіны. Пасля вызвалення на Беластоцчыне пачалі арганізавацца школы з беларускай мовай навучання і як прадметам, пачала развівацца мастацкая самадзейнасць з беларускім рэпертуарам, пачалі арганізавацца розныя мерапрыемствы з беларускім мастацкім словам і песняй.

Ужо ў 1954—1955 гадах вялікай папулярнасцю карыстаўся беларускі жаночы хор з Гарадка пад кіраўніцтвам Ніны Мушыńskiej, беларускія хоры з Белавежы, Орлі, драмгурток у Новай Волі (Беластоцкі павет) і іншыя аматарскія калектывы.

Аднак не хапала г'ес на беларускай мове і беларускіх кніжак, а найважнейшае — не хапала друкаванага беларускага слова. Не было каму належна цікавіцца беларускім мясцовым фальклорам, матэрыяльнай культурай, спецыфікай беларускага асяроддзя, яго багатымі традыцыямі і звычаямі.

Бачачы патрэбу існавання культурна-асветных арганізацый нацыянальных меншасцей, Цэнтральны Камітэт Польскай аб'яднанай рабочай партыі вынес пастанову аб іх утварэнні.

Аб пакліканні да жыцця беларускай арганізацыі пачало шырока гаварыцца ў партыйных і дзяржаўных органах у Беластоку. У гэтай справе орган ЦК ПАРП «Трыбуна люду» апублікаваў два вялікія артыкулы (перадрукоўваем іх на далейшых старонках нашага календара).

БІАЛОРУСІНІ W POLSCE

ДРОГА DO WSPÓLNEJ SPRAWY

W granicach Polski Ludowej mieszka pewna ilość obywateli narodowości nie polskiej. Polacy zamieszkują również tereny przygraniczne sąsiednich państw. Tak jest np. na granicy polsko-radzieckiej lub polsko-czecho-

siowackiej. Nie przeszkadza nam to w bratnim współżyciu z naszymi sąsiadami — z Ukrainą i Białoruską Republiką Radziecką i z Republiką Czechosłowacką.

Inaczej było przed wojną — wielkomocarstwowa imperialistyczna megalomania sanacji i jej faszystowskich krewniaków („od morza do morza!”) stworzyła Polsce wielu wrogów. Prasa sanacyjna, endecka, cenerowska, klerykalna prześcigała się w wynajdywaniu „wad narodowych” naszych ówczesnych sąsiadów: Ukraińców i Białorusinów, Rumunów i Niemców, Czechów i Słowaków.

Trudno było w tych warunkach o przyjaźń.

*

Chcemy dziś powiedzieć o Białorusinach, mieszkających w Polsce. Trochę za mało wiemy o nich, a jest ich chyba na naszych wschodnich granicach około 100 tysięcy. Dokładnie trudno to określić, bo rzeczywistość nie zawsze tam wiadomo, gdzie kończy się Polak, a zaczyna Białorusin. Zdarza się, że w tej samej rodzinie, ojciec przyznaje się do jednej, a syn do drugiej narodowości.

Białorusini mieszkają w Polsce w województwie białostockim. W ogóle Białostockie zamieszkuje więcej narodowości, niżby to się komukolwiek mogło zdawać. Obok Polaków i Białorusinów są tu Niemcy (w powiatach Elk, Gołdap i Olecko), Litwini (w kilku wsiach Suwalszczyzny), ba, nawet Tatarzy.

Byłem w powiecie sokólskim w dwóch wsiach, zamieszkałych przez Tatarów. Przywędrowali tutaj przed wiekami, osiedlili się i spolonizowali, a co im tatarskiego zostało — to wykrój oczu i meczet. Bo nazwiska, a nawet imiona coraz częściej polskie. „Imam” (tatarski ksiądz-proboszcz) w Bohonikach — Alejkiewicz, wymienia imiona mieszkańców swojej wsi. Obok Alich i Jusuffów mamy tu Mieczysławów i Władków.

Meczet w Kruszyńskich jest zabytkiem o dużej wartości — warto by zatroszczyć się o jego restaurację. Żyją Tatarzy, jak inni chłopcy na tym terenie, jest ich około 200.

Zostawmy jednak tatarską egzotykę, wracajmy do Białorusinów.

Dobry to naród, serdeczny. Przyjazny ludziom i prosty, — co na sercu, to i na języku. I powiedzmy to od razu — Białorusini są dobrymi obywatelami Polskiej Rzeczypospolitej Ludowej, świadomymi swych zadań na dziś i jutro.

*

Nieprosta była ich droga do Polski. Dziesięciolecia pańskiej, obszarniejszej nienawiści daly się chłopu białoruskiemu tym bardziej we znaki, że z klasowym uciskiem szedł w parze dziki szowinizm. Niestety, było tak, że często dla białoruskiego chłopca pojęcie: Polak równoznaczne było z pojęciem: osadnik, policjant, strażnik więzienny, sekwestrator, starosta.

Oskarżał w Sejmie szermujących słowami o „wolności” i „tolerancji” rządów ówczesnej Polski, poseł — Białorusin:

„Są wsie, gdzie 65 proc. dorosłej ludności przebywa w więzieniach... Używanie języka białoruskiego uważane jest za czyn antypaństwowy”.

Mówił inny poseł białoruski:

„Zmieniły się niektóre personae gratae, pozmieniali się niektórzy kacykowie na tzw. Kresach Wschodnich, ale system został ten sam. A system ten polega na tym, ażeby wszystko to, co białoruskie — niszczyć, polonizować i kolonizować... Kilkanaście tysięcy Białorusinów mamy już siedzących w kryminale, dlatego tylko, że się nazywają Białorusinami”.

Mówcy przerwał głos któregoś z posłów prawicy:

— Bo są komunistami!**)

Rzeczywiście, miał rację. Większość z nich była komunistami. Komunizm znakomicie uczył białoruskich chłopów ówczesne polskie rządy, policja wlewająca katowanym więźniom mocz do nosów, uczyli ich komunizmu osadnicy, zabierając im ziemię, komornicy, wydzierający wdowie ostatnią krowinę, uczyli ich komunizmu władze szkolne, likwidujące — co do jednej, — wszystkie szkoły początkowe w języku ponad dwumilionowej ludności białoruskiej.

„Ale w naszej organizacji — opowiada mi w osadzie Orla jeden z założycieli białoruskiej „Hromady”****) w 1925 roku, Karp Kuptel — byli i Polacy, polscy chłopci i inteligenci”.

Polscy robotnicy byli również członkami Komunistycznej Partii Zachodniej Białorusi. Ramię w ramię z białoruskimi chłopami i licznym na tym terenie proletariatem żydowskim walczyli oni przeciw dyktaturze burżuazji, o wolność, o wyzwolenie społeczne. Ta kuźnia internacjonalizmu, międzynarodowej solidarności uciskanych w owym okresie stworzyła przesłanki do braterskiego współżycia Polaków i Białorusinów na ziemi białostockiej w dniu dzisiejszym.

Tradycje bojowego przymierza uciskanych sięgają i dalej wstecz, do okresu Rewolucji Październikowej a nawet do lat Powstania Styczniowego 1863 roku. Kastus (Konstanty) Kalinowski, jeden z bohaterów tego powstania i przywódca partyzantki przeciwcarskiej, był bratem Waleremu Wróblewskiemu i Trauguttowi. W Bielsku-Podlaskim po dziś dzień żywe są legendy o „Chodim” — Józefie Tokarzewskim, pocięciu i powstańcu. Przyznają się do niego i Białorusini i Polacy. Warto by poszperać, zbadać historię Chodiego, którego wnukowie i prawnukowie po dziś dzień mieszkają w Bielsku.

*

W tymże bielskim powiecie województwa białostockiego jest wieś, która czeka na swego dziejopisa.

Gdy jedziesz szosą z Białegostoku, niedaleko przed Bielskiem skreć w prawo. Niech cię nie zrażają złe drogi: tylko trzy kilometry do Rajska.

Wieczorem siadź na drabiniastym wozie. Zapal papierosa, inni też zapalą, otoczą cię zewsząd. Nic nie mów, tylko słuchaj.

Popłynie opowieść krwią, męką i bohaterstwem znaczone. Straszliwa, ale optymistyczna opowieść. Opowieść o losach gromady, którą jakby przez ironię Rajsk nazwano.

*

„Robota u nas zaczęła się chyba w 28-ym. Wtedy powstała we wsi komórka KPZB. No, i było jak wszędzie.

Jak wszędzie — to znaczy głód i walka.

W 1925 roku — już nie można było wytrzymać. Kiedy przyjechał sekwestrator, kobiety przegnały go. Myśmy się nawet nie wtrącali. A baby u nas zacięte. Sekwestrator uciekł. Ale wrócił z komendantem policji z Wyszek i trzydziestoma policjantami.

Byliśmy przygotowani. Spotkaliśmy policję widłami i kamieniami i wyparliśmy policjantów ze wsi.

Ale był wśród nas prowokator, Czerwiński, na imię miał Paweł. Poraesztowali nas. Najpierw pięciu, a potem...

Potem pewnego dnia zaczęła policja walić do Rajska, jakby miała tu mobilizację z całej Polski. Pociągami i samochodami, pieszo i na rowerach. Było ich coś z pięciuset.

— Pomyślcie, na jedną wioskę 500 policjantów, w hełmach, z karabinami, łagnetami. Oczywiście, im już nie daliśmy rady. Kto mógł, wiał do lasu. Otoczyli wieś, przetrząsnęli, poniszczyli, aresztowali.

Dalej — już wiadomo. Defensywa, bicie. Nie przyznawaliśmy się, ale Czerwiński sypał. Wyroki: 8 lat, 5, 2. Ja też dostałem...”

To opowiada Bazył Bogusz. Opowiada niechętnie.

— Stare dzieje, co było to było.

A potem kolejny etap: okupacja.

— Było to latem 1942 r. Niemcy wybrali się na wieś po produkty. Smażowały im nasze jajka, nasza słoninka: — Szpek, jajki — tak wołali. No cóż? Wybrali się, ale nie wrócili. W powrotnej drodze dostali się pod ogień partyzantów. Dwóch Niemców zabili. Było to około naszej wsi, w niedzielę, pamiętam, jak dziś, o 3 po obiedzie.

A w dwa dni później w nocy warkot. Otoczyli wieś, tak, że i pies by się nie przedostał, w dwa rzędy. Kiedy się rozwidniło, poszli po chałupach. Kolbami wyginali pod cerkiew. Potem wybierali mężczyzn, a gdy w rodzinie nie było chłopca, to i kobiety, a i dzieciaki takie — lat 14. Wybrali 149, w tym 25 kobiet. O pierwszej w dzień zaprowadzili ich za wieś do dołów od ziemniaków. A potem karabiny maszynowe. Rozwalili. Tak według hitlerowskiego prawa. Odczytali wyrok.

— Wyście stracili kogo?

— Ojca. Miałem wtedy 10 lat.

— A wy?

— Ojca i dziadka.

— A wy?...

Każdy kogoś stracił.

— Tym, co zostali żywi, dali półtorej godziny do wyjazdu. Do Bociek,

gmina Brańsk. Jeszcześmy nie wyjechali, jak zaczęli palić wieś. Chałupy, obory, cerkiew — wszystko. Tylko trzaskała z palących się chałup pochowana amunicja. Prawie każdy coś miał w domu, albo zakopane. Szliśmy i oglądaliśmy się na naszą wieś. Dymy długo było widać...

Potem dowiedzieliśmy się, że rozebrał nawet fundamenty, że kazał bruk zrywać. Taka była jego nienawiść, chciał obsiać pole, żeby śladu po Rajsku nie było...

O hitlerowskim okupancie mówi się tu w formie zaimkowej. „On”, „jego”. Wiadomo już o kogo chodzi.

Rajsk. Byłem niedawno w Lidicach w Czechosłowacji. Martyrologia lidickich chłopów znana jest całemu światu. O Rajsku nie wie nawet wielu ludzi w Białymstoku. Bo tych Rajsków dużo było w Polsce.

*

— A po wyzwoleniu wróciliśmy. No i macie... — Ręka Aleksandra Głowackiego zakresła szeroki łuk. A w łuku tym mieści się cała dzisiejsza rzeczywistość Rajska. I zmartwychwstałe życie, i nowe domy, i kłopoty, i radości, i brak mężczyzn do pracy. I radość młodych: — Byliśmy na Festiwalu, w Warszawie, to już na całe życie zostanie...

W gruncie rzeczy historia małego Rajska i historia wielkiej Warszawy są podobne do siebie. Nie darmo ludzie Rajska czują się sercem związani z Warszawą.

...Gdy żegnałem się z nimi, powiada do mnie ów Aleksander Głowacki: — A ja do was, towarzyszu, mam jeszcze jedną sprawę, na osobności.

Bywa tak, że ludzie mają do dziennikarza sprawę „na osobności”. Zdarza się, że chcą o kimś coś powiedzieć, a nie chcą, żeby wiedziano, kto to powiedział, czasem jakaś osobista troska.

— To wsiądziemy w tę waszą taksówkę — mówi Głowacki. „Taksówka” — to tutaj każdy wóz osobowy. Jedziemy.

— O teraz, zatrzymajcie się. — Głowacki stuka w plecy kierowcę.

— Popatrzcie — powiada do mnie — to ta górka, z której nasi szli na policję w 1935. Niedawno była jeszcze większa i dojazd do wsi był bardzo niedobry. Na wiosnę i na jesień błoto, że nie tylko taksówką nie przejedzie, ale i w butach nie przejdzie. Postaraliśmy się żeby ścięli tę górkę. No, i przysłali spychacz, ścięli. Ale widzicie, zostawili 2 czy 3 metry i pojechali. A to robota na dwa dni.

Niedługo jesień, będą błota. A tu i zboże trzeba wozić przez tę drogę, a i ludzie do spółdzielni przyjeżdżają. Powiedźcie sami. Dlaczego zabrali spychacz?

To ja was proszę, żebyście to skrytykowali w gazecie, ten wydział powiatowy. Jak będą opisani, to będą współczuli...

Tę to sprawę „na osobności” miał do mnie Aleksander Głowacki, który zapytany o nazwisko, powiada z nieśmiałym uśmiechem na młodej nieogolonej twarzy:

— Głowacki Aleksander. To tak jak ten polski pisarz.

*

Ogromną drogę przebył młody Białorusin Aleksander Głowacki. Drogę tę znaczyły lata cierpień i walki. Jego rodzice bili się wraz z polskim robotnikiem przeciwko polskiemu policjantowi. Krew jego ojca wsiąka w polską ziemię obok krwi polskiej, przelanej przez hitlerowskiego barbarzyńcę. Jemu samemu może dlatego łatwiej było zrozumieć prawdę.

Jest jakiś związek między jego historią, a jego „sprawą na osobności”. Nauczyło go życie cenić wspólne dzieło i troszczyć się o nie. Dlatego Aleksander Głowacki nie dzieli spraw na „ogólne” i „swoje”.

Dużo ogólnych spraw ma dziś zamieszkująca wschodnie granice północnej Polski ludność białoruska. O tych sprawach w następnym artykule.

JERZY RAWICZ

*) Sprawozdanie stenograficzne z posiedzenia Sejmu 27.I.1927.

**) J.w. — sprawozdanie z posiedzenia 30.III.1928 r.

***) „Hromada” — legalna organizacja białoruska, założona w 1925 r. pozostawała pod wpływami lewicy. Posiadała swych posłów w Sejmie. Potem rozbita przez policję, w 1928 r. w Białymstoku odbył się proces „hromadzan”, zostali skazani na długoletnie kary więzienia.

(„Trybuna Ludu” 8.IX.1955 r.)

NOWYM TOREM

Po wyzwoleniu nie od razu było dobrze. Województwo białostockie obrały sobie bandy za teren działania — może dlatego, że lasów tu dużo, może dlatego również, że zwracaliśmy wówczas przede wszystkim uwagę na wielkie centra przemysłowe i na Ziemię Zachodnie. Dość, że bandy złożone z najróżniejszego talatajstwa, byłych SS-manów i własowców oraz ludzi, którzy w latach okupacji nauczyli się żyć z cudzego nieszczęścia, terroryzowały ludność. Wśród bandytów było również wielu takich, którzy przed wojną latami gnębili białoruskiego chłopca i teraz mścili się nad nim za swoją klęskę.

Pamiętam, jak zostaliśmy w Białymstoku w lutym 1946 roku zaalarmowani zbrodnią wyjątkowo nikczemną, dokonaną na mieszkańcach czterech białoruskich wsi w powiecie bielskim. Bandyci nie zadowolili się rabunkiem: usiłovali odziać swój bandytyzm w „polityczny” płaszczyk, uczynili to w ten sposób, że zamknęli chłopów, znanych z lewicowych przekonań, w płonącym domu i spalili na hitlerowską modłę. Gwałcili kobiety. Z całej wsi ocalały jedynie dwa domy zamieszkałe przez Polaków. Bandyci chcieli w ten sposób zasiać ziarno niezgody między polskich a białoruskich chłopów.

Gdy przyjechałem wówczas do wsi Zanie, dymiły jeszcze zgłiszczka, a pozostali przy życiu ludzie na widok obcych uciekali do lasu.

Potem przestali uciekać. Postanowili, współpracując z władzami, dać odpór bandom, tak, jak dawali w swoim czasie odpór granatowej policji,

a potem hitlerowcom. Wkrótce wielu chłopów białoruskich zasililo szeregi milicji i bezpieczeństwa, we wsiach utworzono ORMO — bandyci tracili grunt pod nogami.

Niemniej pierwsze, spływające krwią, lata władzy ludowej na Białostocczyźnie zdołały zaszczepić do wielu mniej bojowych serc jad nieufności. — Czy władza ludowa da sobie radę z bandami, z podziemiem, z PSL-em — jego sojusznikiem?

*

Bezpośrednio po wojnie ziścił się sen kilku pokoleń białoruskiej inteligencji — Białorusini uzyskali w Ludowej Polsce pełnię praw, przysługujących im tak, jak i wszystkim innym obywatelom. Między innymi uzyskali to, o co niezmordowanie walczyli przez burżuazyjne dwudziestolecie: uzyskali własną szkołę. Nareszcie język białoruski przestał być językiem „zabronionym”. Rodzice zaczęli posyłać dzieci do tych szkół, szkoły stały się centrum odżywającej kultury białoruskiej i pierwszą kuźnią patriotycznego wychowania i przywiązania do Polski Ludowej.

I wtedy nagle wyrządzono krzywdę. Zarządzeniem władz oświatowych zamieniono szkoły białoruskie na polskie. Nie pomogły interwencje.

Działo się to w sierpniu 1946 r., gdy teza, iż Polska z państwa narodowościowego zamieniła się w państwo narodowe, potraktowana przez wielu jako sztywna formułka, nie uwzględniała faktu istnienia na terenie polskim ludzi niepolskiej narodowości.

Formułkowiczom rozbrat z życiem nie przeszkadzał. Wychodzili z założenia, że — jeśli życie mówi co innego, tym gorzej dla życia. Oczywiście — wzięwszy rozbrat z rzeczywistością, wzięli również rozbrat z ideologią, doprowadzili do nacjonalistycznych wypaczeń w stosunku do ludności białoruskiej, co przyniosło i przynieść musiało duże szkody. Wielu Białorusinów straciło orientację, niektórzy woleli oficjalnie nie przyznawać się do swojej narodowości.

*

Nie uogólniajmy jednak za bardzo, bo uzyskalibyśmy fałszywy obraz. Od 1946 roku minęło już niemal 10 lat i wiele ówczesnych krzywd na szczęście naprawiono. Bandy przestały raz na zawsze nękać ludność, a szkolnictwo białoruskie rozwija się coraz lepiej — przy czym nie tylko przywrócono podstawowe szkoły białoruskie, ale stworzono szereg nowych szkół. Obecnie w Białostockim istnieją szkoły średnie z białoruskim językiem nauczania, jedna szkoła średnia z białoruskim jako przedmiotem oraz 156 szkół podstawowych, w których białoruski jest bądź językiem wykładowym, bądź przedmiotem.

Ogólnokształcące liceum bielskie, otwarte w 1949 roku, szczyci się już szeregiem absolwentów, którzy ukończyli studia wyższe w Polsce i pracują jako lekarze, inżynierowie, są oficerami naszego wojska itd. Wielu z nich studiuje jeszcze na wyższych uczelniach w Polsce, a niektórzy nawet w Mińsku w BSRR. Z dużą dumą opowiada dyrektor szkoły ob. Kostyce-

wicz o tym, że absolwent liceum Gierba jest najlepszym studentem na swym roku w Wyższej Szkole Pedagogicznej w Warszawie lub o tym, że inny absolwent zdał egzamin do Wyższej Szkoły Marynarki Wojennej. Zespół artystyczny liceum składa się z orkiestry dętej, zespołu tanecznego i 120-osobowego chóru. Zespół ten bierze udział w życiu kulturalnym nie tylko powiatu, ale i województwa. Przyjazdy zespołu również na tereny zamieszkałe przez Polaków są zawsze atrakcją. Napływ uczniów do szkoły jest tak wielki, że nie może ona wszystkich przyjąć i część uczniów przekazuje liceum białoruskiemu w Hajnówce.

Niemniej są kłopoty. Kłopoty zresztą dotyczą całego szkolnictwa białoruskiego. Tak np. nie rozwiązana do końca jest sprawa podręczników. Dawniej sprowadzano podręczniki z BSRR, ale to oczywiście była tylko „prowizorka”. Program nauczania a i problematyka inne są w szkołach w Polsce, a inne w Związku Radzieckim. Ostatnio wydano w Polsce po zbyt długich staraniach pewną ilość podręczników białoruskich, ale te znowu zawierają dużo błędów językowych.

Pomijając zasadniczą szkodliwość błędów językowych, a zwłaszcza w podręcznikach szkolnych, na tym terenie szkodliwe jest to specjalnie, ludność bowiem nie mówi tutaj bynajmniej językiem literackim. W formę przysłowia ujął ten stan w rozmowie ze mną chłop białoruski Jan Fiedorczuk ze Swiryd: „U nas: co wieś — to inna pieśń”.

Jasne, że w tych warunkach błędy w podręcznikach szkolnych mogą tylko zwiększyć chaos.

Gorszą sprawą jest jeszcze z kwalifikacjami nauczycieli — wielu z nich nie ma należytych kwalifikacji i nie bardzo ma możność podniesienia ich. Owszem, mogą się dalej kształcić, ale po polsku. Nie stworzymy w Polsce białoruskiego Uniwersytetu, bo nie ma takiej potrzeby, ale wydaje się celowe, stworzyć przy Studium Nauczycielskim w Białymstoku sekcji języka i literatury białoruskiej dla nauczycieli tych przedmiotów.

A nauczycielstwo w liceach? I tutaj sytuacja nie jest najlepsza. Tak np. w białoruskim liceum w Hajnówce większość przedmiotów wykładana jest po polsku, nauczyciele bowiem nie władają należycie literackim językiem białoruskim. Będzie chyba również słuszne stworzenie katedry języka i literatury białoruskiej przy Wydziale Filologicznym sekcji filologii słowiańskiej Uniwersytetu Warszawskiego. Napływ kandydatów na studia przy tej katedrze jest zapewniony.

Spędziłem miłą godzinę w osadzie Orla w mieszkaniu Lewczuków. Zawędrowałem tam dowiedziawszy się, że Wiera Lewczuk, będąc w szkole jeszcze, wyróżniła się talentem poetyckim. Wiera zawstydzona czyta mi swoje wiersze. Mowa w nich o umiłowaniu ziemi ojczystej, o radosnej młodości, o wzruszeniach młodego serca. Z uwagą wsłuchują się w te wiersze jej brat i koleżanka. Z uwagą słucham i ja. Ładny jest białoruski język.

Wiersze Wiery napewno dalekie są od doskonałości. Mówi: — Gdybym tam mogła przeczytać coś o poezji...

Podręcznika poetyki nie widziała nigdy w życiu. Chciałaby jeszcze pisać, uczyć się dalej — przede wszystkim literatury białoruskiej, którą zna i ko-

cha na równi z polską. Tymczasem Wiera Lewczuk pracuje jako urzędniczka w kaflarni.

Dobrze byloby postarać się, aby Wiera Lewczuk i wiele takich jak ona mogło zrobić skok z kaflarni w Orli na Uniwersytet Warszawski.

*

Na tym terenie szkolnictwo — to podstawowy element rozwoju kultury białoruskiej, ale nie jedyny. Nieraz ludzie powiadają: — Poczytalibyśmy po białorusku, ale coś z naszego życia. Przy szkołach białoruskich są biblioteki zaopatrzone w radziecką białoruską literaturę. To dobrze. Janka Ku-pała, Jakub Kolas, Maksym Tank, Piotr Glebka, Piotr Browka i inni pisarze radzieckiej Białorusi mają tu swoich zwolenników i gorliwych czytelników. Ale to nie wystarczy.

Czy nie byłoby słuszne wydawać w Białymstoku tygodnika w języku białoruskim? Na pewno byłoby słuszne. Wiera Lewczuk miałaby gdzie się poradzić, powiedzieć o swych marzeniach, o twórczości literackiej. Nauczycielstwo białoruskie mogłoby dyskutować o swoich sprawach, chłopci białoruscy dowiadywaliby się o sprawach interesujących ich, czytali o sobie, o swoim języku.

Krążą legendy, że sekretarz KW już w zeszłym roku przyrzekał i że gdzieś tam zastanawiają się. Opowiadają, że są trudności, nie ma zecerów wykwalifikowanych. Wydaje się, że te trudności są do przezwyciężenia. W Białostockim już większe trudności przezwyciężano.

*

Na Białostocczyźnie Białorusini zajmują poważną pozycję. Są i sekretarze partii — Białorusini i przewodniczący rad narodowych, wielu jest studentami Akademii Medycznej, Wieczorowej Szkoły Inżynieryjnej, pracują w dziennikarstwie itd. Jest tu i dwóch posłów białoruskich na Sejm. Ogromna większość z nich wykazuje się doskonale ze swych zadań, zyskała sobie zaufanie ludności, jest odznaczana. Mary przeszłości przestają straszyc raz na zawsze.

A jednocześnie o Białorusinach jakoś się nie mówi. Organ KW „Gazeta Białostocka” np. nigdy nie poświęcała sprawom białoruskim uwagi. Nie ma oczywiście „problemu białoruskiego” w Polsce, ale jest stutysięczna rzesza obywateli polskich narodowości białoruskiej w woj. białostockim, której sprawy i bolączki zasługują na uwagę.

Milczenie „Gazety Białostockiej” jest odbiciem milczenia Komitetu Wojewódzkiego Partii w tej sprawie. „Białorusini — to dobry element” — sły-szy się często w Komitecie. To prawda, ale czy dlatego nie należy się nim zajmować? Czy dlatego nie należy się troszczyć o rozwój kultury narodowej Białorusinów w Polsce?

Warto, naprawdę warto, aby ludzie kierujący województwem białostockim o tych sprawach pomyśleli.

*

Białoruski poeta Maksym Tank, który przed wojną mieszkał na terenach Zachodniej Białorusi i razem z Polakami, z polskimi robotnikami walczył przeciwko władzy burżuazji, napisał w 1936 roku po bestialskiej akcji policji przeciwko proletariatu Krakowa i Lwowa wiersz, który poświęcił ofiarom policji. Wiersz zatytułowany był „Wianok” („Wieniec”).

Oto fragment tego wiersza:

Ustanuć druhija buntarnyja dni,
Jeszcze my na waszy mahily prydzziem.
I razam z parywami nowaj wiasny
Akrytyja sławaj sztandary Ź ahni —
Klaniemsia — my wam pryniasiem *).

Nastaly „nowe buntownicze dni”. Dla obu narodów dla narodu polskiego i narodu białoruskiego narodziła się „z porywem nowej wiosny” — wolność. Oba nasze bratnie narody pamiętają o tych, którzy zginęli za wspólną wolność. Ich wspólna walka, ich śmierć były zapowiedzią naszego dzisiejszego braterstwa.

JERZY RAWICZ

*) „Znowu nadejdą buntownicze dni,
Jeszcze na wasze mogiły przyjdziemy,
Jak wiatru poryw, co na wiosnę dmie.
I sławą w bojach kryte sztandary
Przysięgam — my wam przyniesiemy”.

Przekład JERZEGO LAU
(„Trybuna Ludu” 10.IX.1955 r.)

1956

БЕЛАРУСКАЕ ГРАМАДСКА-КУЛЬТУРНАЕ ТАВАРЫСТВА

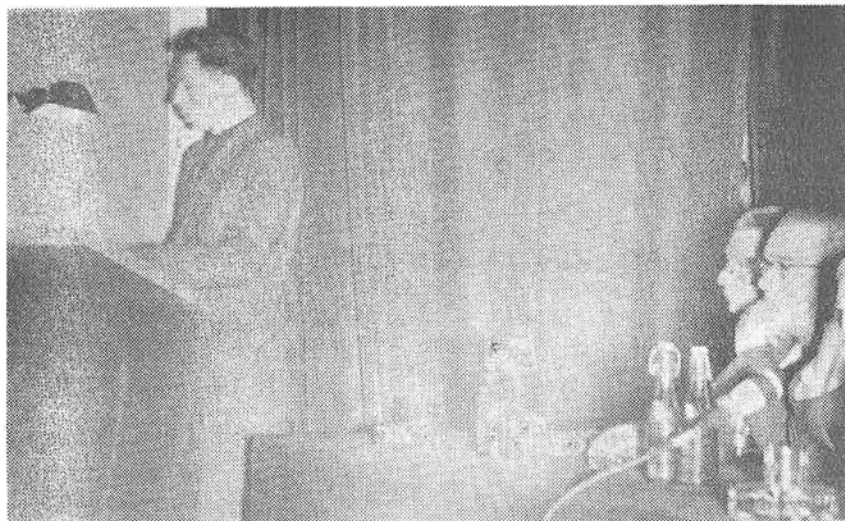
*

ВАЖНЕЙШЫЯ ПАДЗЕІ Ё ДЗЕЙНАСЦІ ГП БГКТ

Пачынаючы ад самага пачатку 1956 года рабіліся ўжо арганізацыйныя захады заснавання Беларускага грамадска-культурнага таварыства.

2-га лютага 1956 года на пасяджэнні беларускага актыву ў памяшканні ТППР быў пакліканы арганізацыйны камітэт Беларускага грамадска-культурнага таварыства. У склад яго ўвайшлі: *Уладзімір Сайка* — старшыня, *Георгі Валкавыцкі* — намеснік старшыні, *Аляксей Казёл* — сакратар і члены: *Ілья Федаровіч*, *Піліп Кізевіч*, *Ян Канапелька*, *Сымон Шыманюк*, *Ніна Мушынская*, *Міхась Хількевіч*. Заданнем камітэта было падрыхтаваць арганізацыйны з'езд і скамплектаваць рэдацыйны калектыў. Дзякуючы ўсебаковай дапамозе ўлад арганізацыйны камітэт паспяхова справіўся са сваімі заданнямі.

З'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства накрэсліў ролю і заданні беларускай арганізацыі і выбраў улады таварыства. Орган БГКТ штотыднёвік «Ніва» распачаў сваю прапагандовую і арганізатарскую дзейнасць у развіцці беларускай культуры. Актыв БГКТ пры дапамозе павятовых улад падрыхтаваў павятовыя з'езды БГКТ. У маі і чэрвені адбыліся з'езды ў Бельску, Гайнаўцы, Гарадку, Саколцы, Сяміцічах і Варшаве. Прэзідыум ГП пачаў навіязваць кантакты супрацоўніцтва з установамі культуры ў Савецкай Беларусі. З гэтай мэтай выязджала ў Мінск дэлегацыя Галоўнага праўлення БГКТ, а пазней у Беласток па запрашэнню ГП БГКТ прыязджала дэлегацыя з Мінска Беларускага таварыства культурнай сувязі з заганіцай. Прэзідыум ГП арганізаваў калектыў песні і танца а таксама драмгурток. Пры намаганнях БГКТ асветныя ўлады адкрылі кафедру беларускай філалогіі пры Варшаўскім універсітэце і беларускую філалогію пры Завочнай настаўніцкай студыі ў Беластоку. (мх)



Даклад чытае намеснік старшыні арганізацыйнага камітэта БГКТ *Георгі Валкавыцкі*.

І З'ЕЗД БГКТ

НАША ДРУЖБА

Вытрымкі з даклада намесніка старшыні арганізацыйнага камітэта Беларускага грамадска-культурнага таварыства тав. *Георгія Валкавыцкага*

Народны лад павеяў новым струменем у жыццё нашых людзей. Выпраставаў плечы ўчарашні батрак, разгнуў спіну рабочы, свабодна ўздыхнуў інтэлігент.

У кожнай беларускай вёсцы відаць рысы новага сацыялістычнага абнаўлення.

Старымі застаюцца ў нас слаўныя, рэвалюцыйныя традыцыі.

На працягу шмат стагоддзяў працоўныя масы Польшчы і Беларусі мелі тых самых унутраных і вонкавых ворагаў. У барацьбе супроць чужаземных захопнікаў, у змаганні за сваю нацыянальную незалежнасць і сацыялістычнае вызваленне гартаваліся сувязі братэрства і дружбы паміж нашымі народамі.

Калі на кліч Хмяльніцкага адгукнулася ўся Украіна і Беларусь, адказаў пад Чорштынам Костка Паперскі, закіпела нават у вёсках Вялікапольшчы.

Калі прыгнечаны царскім урадам польскі народ узняўся на барацьбу за незалежнасць, быў ён дзейна падтрыманы беларусамі. Валеры Врублеўскі, у далейшым генерал Парыжскай Камуны, камандваў 400-асабовым беларускім атрадам. За справу студзенскага паўстання аддаў сваё жыццё адзін з яго кіраўнікоў — Кастусь Каліноўскі, рэдактар першай беларускай рэвалюцыйнай газеты «Мужыцкая праўда», якая выдавалася ў Беластоку.

З хвілінай з'яўлення на гістарычнай арэне рабочага класа, перадавой рэвалюцыйнай сілы грамадства, сувязі супольных змаганняў працоўных мас Беларусі і Польшчы ўзмоцніліся.

Калі ў 1895 г. генеральная забастоўка тэкстыльшчыкаў Беластока прычынілася да астаноўкі ўсіх фабрык і заводаў, падняліся на барацьбу рабочыя: палякі і беларусы.

У час рэвалюцыі 1905 г. рабочыя Лодзі, Варшавы, Беластока, Мінска і Віцебска разам будавалі барыкады супроць царскага самаўладства.

Дванаццаць год пазней перамога вялікай Кастрычніцкай рэвалюцыі была справай, за якую змагаліся польскія рэвалюцыянеры поплец са сваімі сябрамі з Расіі, Беларусі, Украіны і іншых народаў царскай імперыі.

На барацьбу з беспрацоўем і нацыянальна-сацыяльным прыгнётам у час санацыйнага ўладарніцтва зноў паўсталі як адзін беларускія і польскія камуністы супроць буржуазнай улады, якая ў сваіх цесных эгаістычных класавых мэтах імкнулася расейваць фальш і нянавісць паміж абодвума народамі.

Камуністычная партыя Заходняй Беларусі, якая з'яўлялася часткай Камуністычнай партыі Польшчы, дзейнічала на тэрыторыі Заходняй Беларусі згодна з генеральнай лініяй Камуністычнай партыі Польшчы.

У адозве ЦК КПП ад 1935 г. гаварылася аб прыгнечаных народах: «Барацьба за іх свабоду — гэта барацьба за нашу свабоду. Барацьба супроць прыгнятальнікаў Заходняй Беларусі і Украіны — гэта барацьба супроць нашых прыгнятальнікаў...»

Гэтыя шматлікія прыклады ахвярнасці і геройства нашых народаў, іх салідарнасць у барацьбе супроць супольнага ворага — усё гэта замацавана збройным братэрствам у вайне з фашысцкім нашэсцем.

Дружба наша гартавалася ў супольных змаганнях з акупантам, расла і мацнела на палях бою.

ЛІСТ БАЛЕСЛАВУ БЕРУТУ

Тав. БАЛЕСЛАЎ БЕРУТ
першы сакратар ЦК ПАРП

ВАРШАВА

Мы, беларусы, грамадзяне Польскай Народнай Рэспублікі, прысутныя сёння ў Беластоку на I-шым агульным з'ездзе Беларускага грамадска-культурнага таварыства перасылаем на Вашы рукі словы адданасці да Польскай аб'яднанай рабочай партыі і Цэнтральнага Камітэта.

Шмат гадоў беларускі народ быў агранічаны ў правах, накрывджаны і пагарджаны.

Шмат гадоў марыў ён і змагаўся за роўныя правы. У барацьбе гэтай дзейна дапамагаў польскі рабочы клас і партыя.

Сёння, дзякуючы народнай уладзе і апецы Польскай аб'яднанай рабочай партыі, беларусы ў Польшчы карыстаюцца поўнаасцю з грамадзянскіх свабод. Мы сумесна з палякамі будзем супольны дом — народную Польшчу.

Дзеці нашы вучацца на роднай мове. У нашых гарадах і вёсках расцвітае народная культура. Доказам гістарычных змен у жыцці беларусаў у Польшчы з'яўляецца ўтварэнне Беларускага грамадска-культурнага таварыства. Беларускае грамадска-культурнае таварыства ставіць перад сабой задачы:

1. Шырэйшае ўключэнне беларускага насельніцтва ва ўсе-народнае будаўніцтва сацыялізма ў Польшчы.

2. Папулярызацыя і распаўсюджванне традыцый супольных змаганняў беларускіх і польскіх рабочых і сялян.

3. Азнаямленне беларускага насельніцтва з прагрэсіўнай культурай польскага народа і азнаямленне польскага насельніцтва з прагрэсіўнай культурай беларускага народа.

4. Развіццё беларускай культуры.

5. Умацаванне дружбы і супрацоўніцтва паміж народамі на аснове саюза і братэрства, якое сёння злучае польскі народ з міралюбівымі народамі свету ў імкненні да агульнай мэты — зрабіць немагчымай агрэсію і ўмацаваць сусветны мир.

Запэўніваем Цэнтральны Камітэт Польскай аб'яднанай рабочай партыі, што ў нашай працы будзем кіравацца палітыкай Партыі і даложым максімум намагання, каб з гонарам выканаць задачы, якія перад намі ставіць Цэнтральны Камітэт і Урад.

За ўдзельнікаў з'езда
ПРЭЗІДЫУМ

Беласток, 26. II. 1956 г.

БЕЛАРУСКАЕ СВЯТА

Ужо з самай раніцы вялікая зала Таварыства польска-савецкай дружбы ў Беластоку гудзела шматлікімі галасамі і гукамі музыкі.

Гэта на I-шы арганізацыйны з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства з'ехаліся дэлегаты з усіх канцоў Беласточчыны, а нават і з цэнтральнай Польшчы: Варшавы, Лодзі і іншых гарадоў.

радовай тав. Юзэф Шчэнснях, старшыня Пасольскага клуба тав. Ядвіга Зубрыцкая, прадстаўнік Міністэрства ўнутраных спраў тав. Станіслаў Сасна, прадстаўнік Міністэрства асветы тав. Уладзімір Станкевіч.

Праз мікрафон паведамляюць аб набліжэнні адкрыцця з'езда. Змаўкае гоман і шорах, усе вочы кіруюцца ў напрамку прэзідыяльнага стала.



Прэзідыум з'езда. Старшыня з'езда Піліп Кізевіч знаёміць з парадкам дня.

Ва ўпрыгожанай беларускімі ўзорамі зале сабралася звыш 400 дэлегатаў і запрошаных гасцей.

З якім узрушэннем, як радасна было глядзець на гэтыя, упрыгожаныя важнасцю хвіліны, твары.

Здавалася, гэта ўвесь народ прышоў задэманстраваць шчырую падзяку партыі і ўрада за ўмовы, створаныя беларускаму насельніцтву ў Польшчы.

Але гэта не ўвесь народ. Гэта толькі яго дэлегаты.

На з'езд прыбылі таксама сакратар Ваяводскага камітэта Польскай аб'яднанай рабочай партыі тав. Мар'ян Ксёжэ, старшыня прэзідыума Ваяводскай рады на-

За прэзідыяльным сталом з'яўляецца сакратар арганізацыйнага камітэта тав. Казёл. У гарачых простых словах вітае прадстаўнікоў партыі, урада і ўсіх прысутных.

Доўга незмаўкаючыя апладысменты гучаць, як прыгожая музыка, як адзіны, згодны голас сэрца.

Тав. Казёл прызывае на старшыню з'езда шматгадовага заслужанага дзеяча тав. Кізевіча, які ў сваю чаргу склікае Прэзідыум з'езда.

У далейшым удзельнікі з'езда з вялікай увагай слухаюць даклада тав. Валкавыцкага. Як горда гу-

чаць і глыбока западаюць у сэрцы словы аб вялікіх супольных змаганнях за свабоду і шчасце беларускага і польскага працоўнага людю, аб непарванай ніколі дружбе братніх народаў.

Пасля даклада тав. Валкавыцкага ад імя Бюро Ваяводскага камітэта Польскай аб'яднанай рабочай партыі і прэзідыума Ваяводскай рады нарадовай выступіў тав. Юзэф Шчэнснях.

Прывітаўшы з'езд, гаварыў ён аб заданнях, якія стаяць перад насельніцтвам нашага ваяводства,

рукі старшыні кветкі — цудоўна прыгожыя, жывыя кветкі.

Пачаліся дэбаты.

Як жа добра дэлегаты разумелі адзін аднаго, як уважліва слухалі, якая атмасфера запоўніла вялікую залу. Нельга было не быць узрушаным гэтым настроем. Не існаваў гадзіннік, не існаваў поспех.

Гаварыце таварышы, вы нам родныя, мы вас слухаем!

Вось за трыбунай рабочы з Беластока. «Мы цяпер ва ўмовах народнай улады ганарымся, што



Дэлегаты з'езда слухаюць даклад.

заданнях першага пяцігадовага плана, якога выкананне залежыць ад нас усіх.

На сцэну, да прэзідыяльнага стала, падыходзіць дэлегацыя літоўскага насельніцтва — дзяўчына і хлопец у народных касцюмах.

Дэлегацыя па-літоўску вітае дэлегатаў з'езда і жадае поспехаў у абрадах. Дзяўчына складае на

мы беларусы», — гаворыць гэты малады чалавек.

Селянін падымае ўверх руку з пагрубелымі ад працы пальцамі як сімвал прысягі, як доказ, што ён беларускі мужык — чалавек. Ён прыехаў сказаць усім, што за ўсё тое добрае, якое атрымалі беларусы ад партыі і ўрада, яго вёска не застаецца ў даўгах. Яна



Будынак, у якім адбыўся I а потым II з'езды БГКТ.

будзе новай сацыялістычнай вёскай.

Колькі маладога энтузіязму, колькі душэўнай энергіі, якая велічыня ў гэтым простым чалавеку, які належна зразумеў сапраўднае значэнне сацыялістычнага перыяду і нашу сучаснасць.

Настаўніца з Гайнаўкі, Ніна Лебядзінская перад усімі прысутнымі сказала, што беларускія настаўнікі ў горадзе і на вёсцы даюць усіх намаганняў, каб задачы Таварыства выканаць.

Выступаюць усё новыя дэлегаты. Дзеля таго і з'ехаліся, каб так па-сяброўску, ад шчырага сэрца, выказаць свае думкі, параіць, запэўніць аб сваёй адданасці партыі і народнай уладзе.

Прадаўжаючы абрады з'езда, пасля наннясення змен і паправак, аднагалосна зацвердзіў праект статута Беларускага грамадска-культурнага таварыства і выбраў улады таварыства. (На старшыню

выбраны Аляксандр Давідзюк а на сакратара ПІ Аляксей Казёл).

У мастацкай частцы выступілі з багатай і цікавай праграмай гурткі мастацкай самадзейнасці.

Палілася вольная, народная песня. Беларускія песні, сумныя і вясёлыя, паўныя гумару, а часам і вострыя!

Колькі ў іх простага хараства, колькі прыгожых думак, мараў, імкненняў! Адкуль гэта ўсё ўзялося? З якой крыніцы цячэ такі ўзлёт?

І калі мы чуем складзеныя народам песні, у нас з'яўляецца думка: вялікі той народ, які патрапіць так спяваць, мець толькі не-парушанай надзеі на светлую будучыню!

Паслухалі б вы, як спяваў беларускі хор з Гарадка. Прыгожыя, прыгожа апранутыя жанчыны, колькі цяпла, колькі вяселасці разлілі сярод дэлегатаў з'езда. Вочы не маглі ад іх адарвацца.

Старая народная песня ў выкананні хора з Гарадка абязброіла слухачоў, а частушкі, складзеныя Нінай Мушынскай, зусім растапілі іх сэрцы.

З беларускай народнай песняй злілася старая літоўская песня. Гэта спявала дэлегатка на з'езд ад літоўскага насельніцтва. Адчувалася, што гэтыя песні, паднімаючыся дзесьці высока пад столь, падаюць сабе рукі, як дзве сястры, хочуць цешыць чалавека і звінец мелодый і братэрства народаў.

Набліжаўся вечар. I-шы з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства канчаўся.

Здавалася, што пасля гэтага вялікага дня кожны з прысутных мусіць вынесці вялікай важнасці



Старшыня Галоўнага праўлення БГКТ Аляксандр Давідзюк.



Гарадоцкі жаночы хор пад кіраўніцтвам Ніны Мушынскай.

пастанову, мусіць зрабіць штосьці прыгожае, добрае!

Дэлегаты паехалі ў свае вёскі, прадпрыемствы, школы, установы, каб расказаць аб усім, што самі бачылі і чулі, каб сказаць аб вя-

лікай радасці для беларусаў — аб нараджэнні іх арганізацыі.

ВЕРА ЛЕЎЧУК

«Ніва», 4. III. 1956 год.

П. ГЛЕБКА ў ГП БГКТ



У красавіку ГП БГКТ і рэдакцыю «Нівы» наведаў вядомы беларускі савецкі паэт ПЯТРО ГЛЕБКА. На здымку сустрэча ў памяшканні ГП БГКТ. Злева направа: член Літоўскай Акадэміі навук праф. КОСТАС КОРСАКАС, ПЯТРО ГЛЕБКА, галоўны рэдактар «Нівы» ГЕОРГІ ВАЛКАВЫЦКІ і старшыня ГП БГКТ АЛЯКСАНДР ДАВІДЗЮК. (мх)

БЕЛАРУСКІ КАЛЕКТЫЎ ПЕСНІ І ТАНЦА

Вясною 1956 года прэзідыум ГП аб'явіў у мясцовым друку і па радыё прыём членаў у Беларускі калектыў песні і танца. Заклік сустрэўся з шырокім водгукам сярод беларусаў Бела-



Удзельнікі мастацкага калектыву.

стока. Ахвотных несці ў людзі кветкі роднай творчасці знайшлося звыш 100 чалавек. Першага чэрвеня 1956 года адбыўся першы арганізацыйны сход. Без прэзідыума і дакладаў. Мастацкі кіраўнік Людміла Панько пазнаёміла з працай, якая іх чакае, і загадала спяваць — хто як умее і што ўмее. Не ўсе хацелі і маглі спяваць. Некаторыя жадалі танцаваць. Канчаткова засталася звыш 60 чалавек.

1-га чэрвеня адбылася першая рэпетыцыя хора БГКТ пад кіраўніцтвам Людмілы Іванаўны Панько.

І так пачаў сваё жыццё Беларускі народны калектыў песні і танца пры Галоўным праўленні БГКТ у Беластоку.

ПА ЗАПРАШЭННЮ ГП БГКТ

Па запрашэнню Галоўнага праўлення Беларускага грамадска-культурнага таварыства 8. VII. 1956 года наведалі Беласток Марыя Ваганова і Павел Ратомскі — прадстаўнікі Беларускага таварыства культурнай сувязі з заgrаніцай.



Памятны здымак удзельнікаў нарады.

Абмяркоўвалі яны з прадстаўнікамі культуры Беласточчыны ўмовы культурнага абмену паміж Беластоцкім ваяводствам і БССР. Намеснік старшыні ГП БГКТ, галоўны рэдактар «Нівы» Г. Валкавыцкі прадставіў план такога абмену на 1956 год. У сустрэчы ўзялі ўдзел, між іншым, сакратары Ваяводскага камітэта ПАРП тав. Флюг і Ляскоўскі і сакратар прэзідыума ВРН тав. Федаровіч. (мх)

ГОСЦІ ДАРАГІЯ



Сустрэча ў Гарадку. Выступае Янка Брыль.



У Белавежы выступае з прамоваю Г. М. Верасаў.

У днях ад 29 верасня да 2 кастрычніка 1956 года Беласточчыну наведалі дарагія госці з Беларусі: Гаўрыла Мікалаевіч Верасаў — старшыня Беларускага таварыства культурнай сувязі з заgrаніцай, Піліп Сямёнавіч Пестрак — пісьменнік, Іван Антонавіч Брыль — пісьменнік.

У першым дню пабыўкі ў Беластоку госці наведалі рэдакцыю «Нівы».

На другі дзень у вечары госці апынуліся ў Гарадку ў вялікай зале мясцовага кіно, поўнасцю запоўненай народам. Сцэна, дзе за ганаровым сталом яны занялі месца, упрыгожана дыванамі мясцовага ткання з беларускімі на-

роднымі ўзорамі. Угары прывітальныя словы. Усё паказвала на тое, што гасцей гэтых тут чакалі і рады былі іх бацьць.

А ў нядзелю раніцай а 8-ай гадзіне госці выехалі на народны фэст у Белавежу, дзе

сабралася звыш 10 тысяч чалавек з усіх бакоў Беласточчыны.

Белавежскі парк быў сведкам магутнай дэманстрацыі дружбы народаў з выпадку прыбыцця да нас гасцей з Беларусі.

ПЛЕНУМ ГП БГКТ

25 лістанда 1956 года адбылося пленарнае пасяджэнне ГП, якое абмяркоўвала напрамкі працы таварыства пасля VIII кастрычніцкага пленума ЦК ПАРП. (мх)



Выступае Віктар Цыунчык з Бельска

Уступайце ў члены
Беларускага грамадска-культурнага
таварыства!

A6 БГКТ пісалі

NA UNIWERSYTECIE WARSZAWSKIM
KATEDRA JĘZYKA BIAŁORUSKIEGO

(Inf. wł.) W wyniku starań Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego w Polsce, zostanie z początkiem roku akademickiego 1956/57 na wydziale filologicznym Uniwersytetu Warszawskiego uruchomiony kierunek studiów filologii białoruskiej. Organizacja tych studiów została powierzona prof. dr Antoninie Obrębskiej-Jabłońskiej. Po przedstawieniu wniosku przez Uniwersytet Warszawski zostanie powołana katedra filologii białoruskiej.

Wobec trudności, wynikających z braku odpowiedniej kadry naukowej w dziedzinie białorusystyki, Ministerstwo Szkolnictwa Wyższego wystąpiło z prośbą do Ministerstwa Oświaty BSRR o wydelegowanie do Polski dwóch sił naukowych: językoznawcy i historyka literatury białoruskiej.

Utworzenie katedry filologii białoruskiej na Uniwersytecie Warszawskim pozwoli na wykształcenie odpowiednich kadr przede wszystkim dla średniego szkolnictwa białoruskiego na terenie Białostocczyzny, jak i kadr do pracy kulturalno-oświatowej Towarzystwa Białoruskiego, wydającego m. in. czasopismo w języku białoruskim „Niwa”. (r)

„Trybuna Ludu”
3.9.1956 r.

**Шануйце родную
беларускую мову!**

ВАЖНЕЙШИЯ ПАДЗЕІ Ў ДЗЕЙНАСЦІ ГН БГКТ

У лютым вышаў з друку першы беларускі каліндар на 1957 год. Быў пакліканы выдавецкі камітэт, які арганізаваў выдавецкі фонд. У дапамогу аматарскім калектывам выдана п'еса Янкі Купалы «Паўлінка». 29 і 30 красавіка адбыўся ў Белавежы першы з'езд беларускіх настаўнікаў. Арганізавана гурток БГКТ у Беластоку, які пры дапамозе ГП наладжваў літаратурныя вечары. На канцэрты калектыву песні і танца збіралася па 500—750 чалавек. 4 красавіка арганізавана гурток БГКТ у Шчэціне. Пакліканы штатныя сакратары аддзелаў БГКТ. Пабыўка дэлегацыі ГП БГКТ у БССР. Купалаўскія ўрачыстасці, у якіх узяла ўдзел дэлегацыя з Мінска. Куплена народныя ўборы для калектыву песні і танца. Пленарнае пасяджэнне ГП (верасень) прысвечанае справам арганізацыйнага ўмацавання беларускага таварыства. (мх)

«ЗАХАЦЕЛА БАБУЛЕНЬКА»

Калектыў песні і танца пад кіраўніцтвам Людмілы Іванаўны Панько інтэнсіўна працаваў і падрыхтаваў цікавы рэпертуар. Першае пробнае выступленне яго адбылося 25 лістапада 1956 года для ўдзельнікаў Пленума ГП, а першае публічнае выступленне было ў канцы снежня для ўдзельнікаў ваяводскай справаздачна-выбарчай партыйнай канферэнцыі ў Беластоку. Першыя выязныя канцэрты адбыліся 13 студзеня 1957 года. Ніжэй перадрукоўваем з 48 нумара «Нівы» рэпартаж з гэтых выступленняў.

Канчаўся зімовы марозны дзень. Вечарэла. На зямлю апускаўся змрок. Звальняючы свой бег, па замерзлай вуліцы колы аўтобуса затрымаліся перад даволі вялікім, як на вясковыя ўмовы, домам у Крынках.

— Ага, значыцца тут будзе адбывацца канцэрт.

Мы глянулі праз аконныя шыбы, а там... шмат народу. Адны з поспехам праходзілі

праз вузкія дзверы ўсярэдзіну, іншыя з цікавасцю глядзелі на нашых харыстаў і танцораў, якія гуськом з чамаданамі ў руках пакідалі аўтобус, выходзячы на чыстае, здаровае, марознае паветра.

Прайшло мінут 20 і харысты ўжо пераапанутыя ў народныя беларускія касцюмы стаялі на невяліччай сцэне мясцовага кіно. У зале шмат-



Выступае харавая група беларускага калектыву.

лікая разнастайная публіка, спіснутая, што «іголки не ўваткнеш».

Пачынаецца праграма. Пераломліваецца першая напружанасць. Песні змяняюцца танцамі. Беларускі народны танец — «Крыжачок» — жывы і прыгожы, ці «Лянок», — у якім паказаны ўвесь працэс апрацоўкі ільну, або беларуская турботна-вясёлая народная песенька «Захацела бабуленька раптам збагацеці» — асабліва падабаюцца гледачам.

Вось пастаноўка харыстамі мантажу пад загалоўкам «Вечарніцы». Чыста народная, часта вострыя словы, народ-

ныя частушкі маладых дзяўчат, якія толькі і думаюць пра хлопцаў, ды пра замуж, шчыры расказ старэнькай цётчкі, што гледзячы на маладых дзяўчат успамінае свае маладыя гады, прыход вясковых хлопцаў на вечарніцы — усё гэта трапляе да сэрца вясковага гледача.

Людзі весела смяяліся, а потым па-рознаму выказвалі сваю падзяку і задавальненне. «Хоць яшчэ адну песню заспявайце», — прасілі, калі было аб'яўлена, што канцэрт ужо закончыўся.

Артысты абяцалі, што яшчэ прыедуць у Крынкі.

— Прыезджайце да нас з

нашымі старыннымі песнямі, — сказаў нехта.

І хіба я не памыляюся, калі скажу, што гэты чалавек у асноўным выказаў таемныя жаданні простага народа, яго глыбокую любоў і прывязанасць да сваёй песні, якая нарадзілася, вырасла і жыве ў народзе, як скарб яго.

Выходзячы амаль апошняй з глядзельнай залы, я сутыкнулася ў дзвярах з групай жанчын.

— Прыгожа, — гаварыла адна, — у нас ніколі так не было.

На вуліцы пачула галасы, здаецца маладых хлопцаў: «Цётка найлепша. Ну й цётка!».

Значыць «Вечарніцы» запамяталіся як «Цётка».

*

З Крынак паехалі мы ў Салігорск, дзе адбыліся два канцэрты Беларускага мастацкага калектыву песні і танца. І тут добра іх прынялі. І тут была атмасфера прызнасці і задавальнення. А «Крыжачок», «Лянок», «Захацела бабуленька» і галоўнае беларускае «Вечарніцы» і тут разлілі шмат вяселлі, гумару і цяпла.

Калі я глядзела на прысутных, на іх вочы накіраваныя на сцэну, вельмі жадала, каб



Танцавальная група.



Саліеткі Бўдакія Леў і Надзя Вяршкова.

БЕЛАРУСКІ ЛІТАРАТУРНЫ ВЕЧАР У БЕЛАСТОКУ

Гурток БГКТ у Беластоку арганізоўваў літаратурныя вечарыны. Адна з іх адбылася 30 сакавіка.

На пачатку быў дадзены кароткі агляд беларускай літаратуры.

Далейшую праграму занялі творы: Францішка Багушэвіча, Янкі Купалы, Якуба Коласа, Кандрата Крапівы, Максіма Танка.

Жывое мастацкае слова перапляталася з песнямі: «Люблю наш край» (на словы Канстанцыі Буйлы), «Чаму ж мне не пець» (народная), «Зорка Венера» (на словы М. Багдановіча), «Ой, пайду я, выйду» і іншыя.

Выступаюць саліеткі Зося Буслівіч і Вера Леўчук.

багацце і прыгожасць жывога беларускага слова, беларускай песні ці танца, не толькі спадабаліся, але і на радзілі трывалую глыбокую пашану ў паляка і глыбокую любоў да беларуса, да вялікай культурнай спадчыны беларускага народа.

Позна ўночы вярталіся дамоў. Большасць харыстаў не супакойвалася. З нейкай задзірыстасцю спявалі «што ў галаву папала», як бы не існавала для іх стомленасць. (вл)



АБМЯРКОўКА ПЛАНА КУЛЬТУРНАГА АБМЕНУ



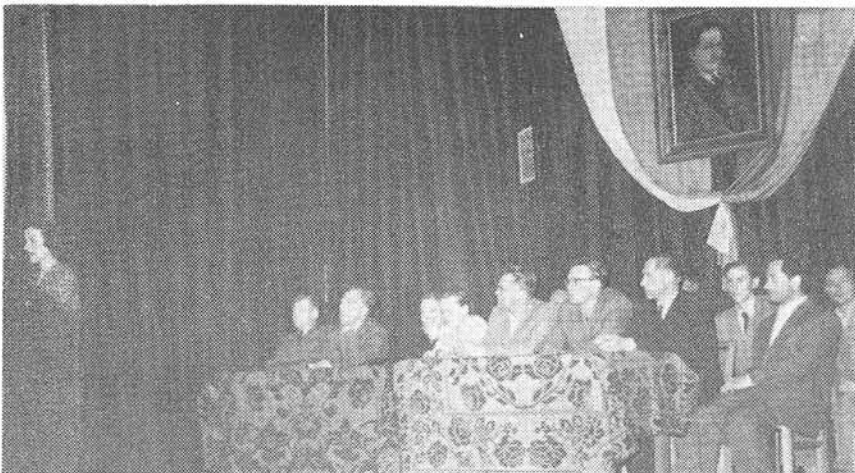
У маі Беларусь наведала дэлегацыя ГП ТППР і ГП БГКТ, якая пазнаёмілася з жыццём рэспублікі і абмеркавала з савецкімі сябрамі план культурнага абмену. На здымку наша дэлегацыя (злева) і прадстаўнікі Беларускага таварыства культурнай сувязі з замежнымі краінамі абмяркоўваюць план супрацоўніцтва. (мх)

КУПАЛАЎСКІЯ ДНІ

Купалаўскія дні — гэта свята не толькі беларускага народа, песняром якога быў Янка Купала, — паэт і драматург, грамадскі дзеяч — вядомы і блізкі польскаму народу.

У перыяд падрыхтоўкі да Купалаўскіх дзён шмат гурткоў мастацкай самадзейнасці падрыхтавала купалаўскі рэпертуар. Гурткі ў Паўднёвым Востраве, Гарадку, Беластоку і іншых мясцовасцях выступілі з пастаноўкамі п'ес Янкі Купалы. Найбольшай папулярнасцю карысталіся камедыі: «Паўлінка» і «Прымакі». У гэтым жа часе ў школах і клубах праводзіліся гутаркі аб жыцці і творчасці беларускага песняра. Адбываліся вечарыны, на якіх гучаў прыгожы, блізкі па зместу верш Янкі Купалы. Такім чынам Янка Купала стаў яшчэ бліжэйшым нам усім.

Грамадства на Беласточчыне з вялікім задавальненнем прыняло вестку аб запрашэнні на Купалаўскія дні дэлегацыі з Мінска, у склад якой уваходзілі: Уладзіслава Францаўна Луцэвіч — жонка Янкі Купалы, Мікола Гаўрылавіч Ткачоў — пісьменнік і галоўны рэдактар часопіса «Літаратура і мастацтва» і Вячаслаў Іванавіч Антошын — прадстаўнік Беларускага таварыства культурнай сувязі з заgrаніцай.



Прэзідыум акадэміі ў Беластоку. З дакладам выступае Вера Леўчук.

Яшчэ да пачатку акадэміі зала запоўнілася грамадствам Беластока, але не толькі Беластока. Можна было тут сустрэць і жыхараў навакольных мясцовасцей. Адкрыў акадэмію сакратар Галоўнага праўлення БГКТ Аляксей Іванавіч Казёл. У цёплых словах прывітаў ён прысутных.

Пасля ў прэзідыум паклікана дэлегацыю з Мінска і прадстаўнікоў партыйных і адміністрацыйных улад Беластока.



Цёця Уладзя ў «Ніве».

Прысутныя з вялікім зацікаўленнем выслухалі даклад рэд. Веры Леўчук аб жыцці і творчым шляху Янкі Купалы. У далейшым з прамовай выступіў Мікола Гаўрылавіч Ткачоў. Гаварыў ён аб Я. Купалу, як аб вялікім паэце і грамадскім дзеячу.

З вялікім зацікаўленнем выслухалі прысутныя выступленне Уладзіслава Францаўны Луцэвіч. Пасля яе выступлення зрываецца ў зале бура апладысmentaў.

У артыстычнай частцы вечара выступілі: Беларускі драматычны гурток пад мастацкім кіраўніцтвам Антона Ягоравіча Кавальчука, Беларускі народны хор пад кіраўніцтвам Людмілы Іванаўны Панько і танцавальны калектыў пад кіраўніцтвам Тацяны Мікалаеўны Гіжэўскай. Драмгурток выступіў з пастаноўкай камедыі Янкі Купалы «Прымакі», якая выклікала зацікаўленне ў гледачоў. Хор выканаў, між іншымі, песні на словы Янкі Купалы «А ў бары, бары», «Жыў на свеце Лявон».

БАГАЦЕ І ПРЫГОЖАСЦЬ УЗОРАЎ БЕЛАРУСКАЙ ВЫШЫЎКІ



На выстаўцы ў Гарадку.

З мэтай зрабіць мажлівым беларускаму і польскаму насельніцтву бліжэйшае і лепшае азнаямленне з беларускай культурай, з задачамі і дзейнасцю Беларускага грамадска-культурнага таварыства, Галоўнае праўленне нашага таварыства падрыхтавала беларускую выстаўку.

Тут паказана перспектывы VI пяцігодкі ў БССР, дзейнасць і дасягненні нашага таварыства: мастацкія гурткі, беларуская асвета, формы нашай сувязі з БССР і цікавы куток з беларускім народным арнамантам — узоры ткання, вышыўкі. Выстаўка адлюстроўвала таксама, хоць далёка не поўнасцю, літаратурную спадчыну беларускага народа. Яна знаёміла з творамі найбольш выдатных беларускіх паэтаў і пісьменнікаў.

У першыню беларуская выстаўка была паказана на сельскагаспадарчай павятовай выстаўцы ў Бельску, дзе карысталася зацікаўленнем наведвальнікаў.

Ад 19 верасня да 5 кастрычніка 1956 г. выстаўка знаходзілася ў Гарадку. На працягу 17 дзён яе пабачыла звыш 4 000 наведвальнікаў. Усе яны з жывым зацікаўленнем аглядалі яе. Асабліва моцнай папулярнасцю, у прыватнасці ў жанчын, карысталіся прыгожыя багатыя ўзоры беларускай народнай вышыўкі.

ПЛЕНУМ ГП

29 верасня 1957 года адбыўся пленум ГП. З дакладам на тэму культурна-асветнай дзейнасці БГКТ выступіў старшыня ГП Аляксандр Давідзюк.

За сталом прэзідыума: старшыня ГП А. Давідзюк, Г. Валкавыцкі — галоўны рэдактар «Нівы», П. Юр'еў — галоўны рэдактар «Рускага голаса» і А. Гайдук — працаўнік ГП. (мх)



Выступае з прамоваю старшыня прэзідыума ВРН у Беластоку Станіслаў Юхніцкі.

ВАЖНЕЙШЫЯ ПАДЗЕІ У ДЗЕЙНАСЦІ ГП БГКТ

Пачатак 1958 года прайшоў пад знакам падрыхтоўкі да II з'езда БГКТ. Адбываліся справядзачна-выбарчыя канферэнцыі аддзелаў і выбары дэлегатаў на з'езд. З'езд накрэсліў далейшыя напрамкі дзейнасці. Было наклікана праўленне прамыслова-гаспадарчага прадпрыемства «Betescz», якое хутка разгарнула работу. У канцы мая быў праведзены агляд беларускіх мастацкіх калектываў. На пачатку чэрвеня адбыўся першы з'езд літаратурнага аб'яднання. Пры Беластоцкім радыё ўтворана рэдакцыя беларускіх перадач. У канцы чэрвеня быў арганізаваны гарадскі аддзел БГКТ у Беластоку. У Беластоку выступае з канцэртамі Беларускай дзяржаўнай акадэмічнай капела пад кіраўніцтвам Р. Р. Шырмы. Падрыхтоўка БГКТ да адзначэння 40 гадавіны БССР, калектыву песні і танца даў 23 канцэрты. Утворана 20-асабовая лектарская група ГП. (мх)

II З'ЕЗД БГКТ

Вытрымкі з даклада тав. А. Давідзюка

БГКТ павінна выхоўваць беларускае грамадства ў духу пралетарскага інтэрнацыяналізму, у духу глыбейшага азнаямлення беларускага насельніцтва з традыцыямі рэвалюцыйнай барацьбы беларускага і польскага народаў. Неабходна разгарнуць сістэматычную працу ў галіне азнаямлення беларускага насельніцтва ў Польшчы з дасягненнямі гаспадарчага і культурнага жыцця братняй

Беларускай Савецкай Сацыялістычнай Рэспублікі.

БГКТ павінна садзейнічаць правільнай кадровай палітыцы ў галіне асветы, працягваюць канкрэтнае зацікаўленне ўмовамі працы беларускіх школ і настаўнікаў, а таксама звяртаць увагу на ўзровень працы школ.

БГКТ павінна развіваць іншыя формы народнай асветы, як курсы беларускай мовы для насельніцтва, народныя

універсітэты. Павінна ўсебакова прывіваць любоў і пашану да беларускай мовы.

БГКТ павінна праяўляць максімальную зацікаўленасць справе друку і распаўсюджвання падручнікаў для беларускіх школ, а таксама ўстаўлення падінспектараў школ, якія ведаюць беларускую мову.

СПРАВАЗДАЧА

30 сакавіка з самай раніцы ў дом ТППР групамі і пасобку спяшаліся дэлегаты на з'езд.

Каля 11 гадзіны вялікая, прыгожа ўдэкараваная зала ТППР была ўжо запоўнена дэлегатамі і гасцямі.

Справа беларускай асветы з'яўляецца на сучасным этапе асноўным у працы БГКТ.

БГКТ павінна далей прыкладаць намаганні да павышэння ўзроўню і распаўсюджвання «Нівы». Акрамя таго важнай справай з'яўляецца арганізаваць выдавецтва, якое занялося б выдаваннем беларускай мастацкай, дзіцячай і папулярнай літаратуры.

На трыбуну ўваходзіць старшыня Галоўнага праўлення БГКТ — Аляксандр Давідзюк. Ён у цёплых словах вітае дэлегатаў, гасцей і адкрывае з'езд.



Удзельнікі з'езда.

Старшынёй з'езда аднаголосьна дэлегаты выбралі Юрку Туронка — старшыню Варшаўскага аддзела БГКТ.

Пад апладысменты ў прэзідыум сядоць, між іншымі, прадстаўнік Камісіі па справах нацыянальных меншасцей пры ЦК ПАРП Уладзіслаў Скішчак, дырэктар дэпартамента Міністэрства культуры Чэслаў Калужны, прадстаўнік Міністэрства ўнутраных спраў Антоні Лашкоўскі, старшыня прэзідыума ВРН у Беластоку Ежы Попка, сакратар КВ ПАРП у Беластоку Ян Сянкевіч, пасол на Сейм ПНР Іван Мацеюк.

Бурнымі апладысментамі дэлегаты прывіталі прадстаўніка пасольства СССР у Польшчы Б. К. Фёдарова і карэспандэнта «Праўды» Аляксея Лукаўца.

З дакладам аб 2-гадовай дзейнасці і перспектывах у далейшай працы Таварыства



Старшыня ГП БГКТ Уладзімір Станкевіч.

выступіў Аляксандр Давідзюк.

З'езд падсумаваў двухгадовую дзейнасць БГКТ, накрэсліў далейшыя напрамкі працы і выбраў новыя ўлады. Старшынёй ГП выбраны Уладзімір Станкевіч, а сакратаром — Віктар Швед.

РЫГОР ШЫРМА ў «НІВЕ»

Мы, у рэдакцыі, ведалі Рыгора Раманавіча Шырму. Праўда, не асабіста, і не з канцэртных выступленняў, але толькі са здымак, радыё, выразкаў з газет і расказаў тых, якія добра памятаюць яго яшчэ з часоў санацыі. Су-

стрэчы з ім усе чакалі з вялікім хваляваннем.

У пакой, дзе мы сабраліся, увайшоў паволі і як бы нясмела. Сваімі ўдумнымі вачыма паглядзеў на сабраўшыхся і ўсміхаючыся пачаў з кожным вітацца. У час сяб-



Рыгор Шырма ў «Ніве».

роўскай гутаркі Рыгор Раманавіч успамінаў, як са скрыпкай пад пахай вандраваў па Беластоцчыне, ад вёскі да вёскі, збіраючы — народныя песні. Пяшчанікі, Страшава, Гарадок, Тапілец — вёскі добра знаёмыя Рыгору Раманавічу.

18 год таму назад паўстаў у Беластоку ансамбль песні і танца пад яго кіраўніцтвам, які цяпер ужо ператварыўся ў Акадэмічную харавую капелу. Аб гэтым таксама ўспамінае Рыгор Шырма, гаворачы аб людзях — беластачанах, якія ад першых дзён па сёння нясуць у шырокі свет родную народную песню, музыку.

(А. А.)



Беларуская дзяржаўная акадэмічная капела са сваім мастацкім кіраўніком Р. Р. Шырмам.



Удзельнікі з'езда літаратурнага аб'яднання.

АРГАНІЗАВАЛАСЯ БЕЛАРУСКАЕ ЛІТАРАТУРНАЕ АБ'ЯДНАННЕ Ў БЕЛАСТОКУ

У нядзелю, 8 чэрвеня 1958 года ў Беластоку адбыўся арганізаваны з'езд Беларускага літаратурнага аб'яднання. На з'езд прыехалі дэлегаты з розных куткоў Польшчы, якія творча праявілі сябе на старонках «Нівы». З'езд паклікаў праўленне і прыняў статут аб'яднання. Пастаноўлена, што аб'яднанне будзе гуртавацца пры рэдакцыі «Ніва» і будзе выдаваць літаратурную старонку.

Старшынёю аб'яднання выбрана Георгія Валкавыцкага, сакратаром — Віктара Шведа, скарбнікам — Мацея Канапацкага.

ВУЧЫЦЦА, ВУЧЫЦЦА, ВУЧЫЦЦА

Мы далёкія ад думкі, каб з нашай літаратурнай арганізацыі рабіць нейкую літаратурную няньку, якая мяняе пялёнкі растуцым талентам. Аднак у нас паўстае неабходнасць стварэння такой арганізацыі, якая выхоўвала б літаратурныя таленты.

Мы жывем ва ўмовах народнай улады, з'яўляемся часткай усяго польскага грамадства, сваёй штодзённай працай рухаем наперад справу пабудовы сацыялізма ў Польшчы. З'яўляемся ўрэшце нацыянальнай меншасцю са сваёй спецыфікай культурнага жыцця, якое ўліваецца ў агульную плынь культуры нашай краіны.

У сваіх творчых задумах мы павінны ўлічваць абставіны нашага жыцця, больш уважліва ўзірацца на яго, дакладна вывучаць нашу рэчаіснасць. У сваіх творчых пошуках мы не павінны аддзяляцца кітайскай сцяной ад усяго грамадства. Перажыванні кожнага паэта ці празаіка павінны нязменна перарастаць у перажыванні больш шырокія, якія адлюстроў-

ваюць настрой нашых сучаснікаў. Справа творчай задумы ў пісьменніка — гэта не толькі яго асабістая справа, а гэта таксама справа грамадства, да якога ён павінен звяртацца ў сваім творы. Кожны мастацкі твор павінен унесці хача б самую найменшую частку ў агульнае культурнае будаўніцтва. Твор, які будзе лунаць сваёй тэматыкай, а дакладней кажучы, сваёй бестэматычнасцю ў нейкім завоблачным свеце, будзе з'яўляцца ў сутнасці бездапаможным, нежыццяздольным. І таму кожны твор павінен адзначацца мэтанакіраванасцю.

Мы хочам, каб у нашай творчасці адчуваўся тэмбр сучаснасці, каб кожны твор быў не творам для сябе, а творам для ўсіх. Колькі ж тэм падказвае нам мінулае і сучаснасць, якія поўныя прыкладаў сяброўскага сужыцця паміж нашымі братнімі народамі, паміж беларусамі і палякамі.

Неад'емнай часткай творчай работы пісьменніка з'яўляецца яго вучоба. Без адукацыі і без агульнай культуры пісьменнік не патрапіць даць добры твор. Трэба няспынна паглыбляць свае веды і папаўняць свае назіранні над жыццём.

Каб выказаць думку, глыбокае чалавечае пачуццё, трэба дасканалы валодаць моўным матэрыялам, адчуваць увесь пах роднай мовы, увабраць у сябе яе дух, заглянуць у яе невычарпальныя нетры.

Шлях да літаратуры вельмі доўгі і вельмі цяжкі. Толькі адзінкам удаецца дайсці да мэты. І дзеля гэтага кожнаму з нас трэба вучыцца ў вялікіх майстраў мастацкага слова роднай і іншамоўнай літаратуры.

Пачынаючы пісьменнік павінен вызначацца вялікай скромнасцю, крытычна ставіцца да ўсіх сваіх літаратурных спроб і ўсцяж іх дапрацоўваць. Калі паявіцца першы твор яго ў друку, гэта зразумела, свайго роду дасягненне аўтара. Аднак гэта яшчэ не прычына да ўпэўненасці, што далейшыя творы павінны быць таксама добрымі. Творчая праца некаторых ужо сталых пісьменнікаў гаворыць, што не кожны твор у іх жа ацэнцы надаваўся да друку. Мы яшчэ раз падкрэсліваем, што зазнайства маладых аўтараў прыносіць ім жа самым вялікую шкоду.

Неадлучным спадарожнікам паступовага росту кожнага з нас павінны быць мастацкія творы выдатных пісьменнікаў, кожны з нас павінен уважліва чытаць польскі і беларускі літаратурны друк і знаёміцца з навінкамі беларускай і польскай літаратуры.

(З даклада арганізацыйнага камітэта Беларускага літаратурнага аб'яднання ў Беластоку).



Вывучэнне беларускіх песень.

ВОЗЬМУЦА ЗА КУЛЬТУРНУЮ ПРАЦУ

З чыгуначнай станцыі ў Сыбе каля Элку я накіраваўся ў дом адпачынку аб рамантычнай назве «Зацішша». З-за квітнеючых кустоў ляцелі словы вясёлай, беларускай песні:

«Кацілася чорна галка
Па бару, па бару.
А за ёю ясны сокал
Паблізу, паблізу.
Пастой чорна галка
Ты мая, ты мая.
Яна яму шчабятала:
Не твая, не твая...»

Адкуль жа яна, беларуская песня, тут, на мазурскай зямлі? Прынеслі тут яе з сабою 37 маладых хлопцаў і дзяўчат з Беластоцкага, Сакольскага, Бельскага, Гайнаўскага, Сяміяцкага павеатаў, якім Саюз вясковай моладзі і ГП БГКТ сарганізавалі ў гэтай мясцовасці культурна-асветны курс.

На курс прыехала беларуская моладзь з вёскі, якая ўжо нешта робіць у галіне культурнага жыцця.

Курс працягваўся два тыдні. Моладзь набыла веды ў галіне культуры і асветы. Курсанты завучылі шмат новых і старых песень. Былі паўтораны і распрацаваны і тыя песні, якія моладзь прыязла з сабою.

Шмат часу на курсе прысвячалася вывучэнню народных танцаў, між іншым, «Лявоніхі» і «Крыжачка». У час заняткаў прысвечаных працы клубаў моладзь даведалася, як падрыхтаваць п'есу да пастаноўкі на вёсцы, арганізаваць мерапрыемствы, акадэміі, дыскусіі над кніжкай і г.д. Моладзь пазнаёмілася з народнымі беларускімі ўзорамі.

Былі наладжаны вечары, у часе якіх чыталіся вершы, праводзіліся спрэчкі над кніжкамі, а потым рабіліся ацэнкі.

Моладзь прыпамінала сабе вершы Янкі Купалы і іншых паэтаў і ахвотна іх чытала.

Лекцыі па беларускай літаратуры чытаў прафесар Варшаўскага ўніверсітэта кафедры беларускай філалогіі — В. Т. Тарасаў. Моладзь з вялікім захапленнем слухала яго лекцыі. Многія з іх упершыню даведаліся столькі цікавага аб сваёй роднай літаратуры, упершыню адчулі яе прыгожасць.

Вялікай атракцыяй была экскурсія параходам па мажурскіх азёрах. Хацела гэтай зямлі назаўсёды застацца ім у памяці.

Ці курс гэты даў нейкую карысць моладзі? Зразумела, што так. Размаўляў я з многімі ўдзельнікамі курса. Усе яны (аднолькава) гаварылі, што цяпер, вярнуўшыся ў свае мясцовасці з вялікай ахвотай возьмуцца за культурную працу. Курс даў ім падставы.

Некаторыя пастанавілі пайсці на двухгадовы культурна-асветны курс у Супраслі, гэта таксама дзякуючы курсу.

II ПЛЕНУМ ГП БГКТ



Прэзідыум пленума.

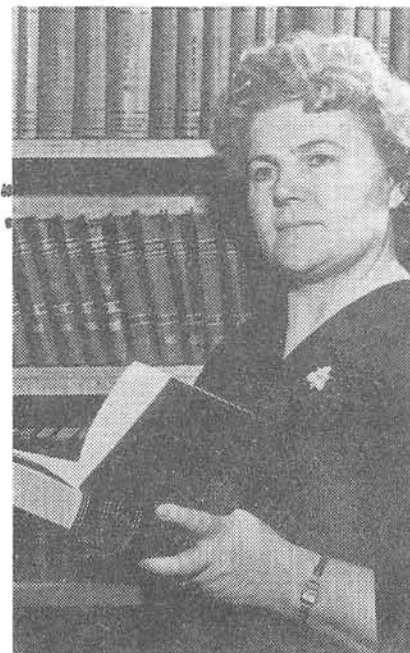
2-га лістапада адбыўся пленум ГП БГКТ. З дакладам выступіў старшыня ГП Уладзімір Станкевіч, які між іншым сказаў: «Умацоўваючы нашу культурна-асветную і выхаваўчую дзейнасць, мы павінны наблізіць беларускае насельніцтва да партыі, да народнай улады і актыўна ўключыць яго ў рэалізацыю актуальных заданняў, якія паставіў усяму народу XII пленум ЦК ПАРП. Дзеля гэтага трэба, каб усе нашыя праўленні аддзелаў БГКТ утварылі групы агітатараў пасярод партыйнага і беспартыйнага актыву».

ВУЧОНЫЯ З МІНСКА Ў БЕЛАСТОКУ

У сувязі з 40-ой гадавінай з дня ўтварэння Беларускай ССР па запрашэнню Галоўнага праўлення Таварыства польска-савецкай дружбы прыбылі ў Польшчу беларускія вучоныя — Ніна Васільеўна Каменская — доктар гістарычных навук і Сцяпан Парфіёнавіч Маргунскі — член карэспандэнт Акадэміі навук БССР.

У панядзелак — 1 снежня ў памяшканні ТППР у Беластоку адбыўся семінар прысвечаны саракагоддзю Беларускай ССР, у якім прыняў удзел актыў ТППР з Беластока, Альштына і Любліна, а таксама актыў БГКТ. У час семінара выступілі з дакладамі запрошаныя беларускія вучоныя. Сцяпан Парфіёнавіч Маргунскі зачытаў даклад на тэму: «Утварэнне і развіццё беларускай савецкай дзяржаўнасці». Ніна Васільеўна Каменская прачытала даклад на тэму «Беларуская Савецкая Сацыялістычная Рэспубліка ў саракагоддзі». Пасля дакладаў удзельнікі семінара звярнуліся да вучоных з рознымі запытаннямі па гісторыі і эканоміцы Беларусі.

Вечарам у зале кіно ТППР вучоныя сустрэліся з насельніцтвам горада Беластока. Ад імя жыхараў Беластока, Ваяводскага праўлення ТППР і Галоўнага праўлення БГКТ прывітаў дарагіх гасцей Ян Рызнар — пасол у Сейм і



Ніна Васільеўна Каменская.

старшыня ВП Таварыства польска-савецкай дружбы.

Пасля выступлення беларускіх вучоных пара ўдзельнікаў беларускай мастацкай самадзейнасці ўручае гасцям кветкі.

Неўзабаве пачынаецца беларускі канцэрт. Выступаюць: Беларускі калектыў песні і танца Галоўнага праўлення БГКТ, славуе трыо з Гарадка і эстрадны калектыў Праўлення гарадскога аддзела БГКТ у Беластоку.

2 снежня госці наведалі Бельск, дзе сустрэліся з вучнямі і настаўніцкім калектывам Беларускага ліцэя. (ся)

ПЕСНІ ДРУЖБЫ

Калектыў песні і танца пры ГП БГКТ на аглядзе беларускіх мастацкіх калектываў у Беластоку заняў першае месца. У сувязі з гэтым браў ён удзел у Варшаве ў аглядзе аматарскіх калектываў нацыянальных меншасцей, а таксама выязджаў з канцэртамі ў Гродна. А вось што пісала аб ім «Гродзенская праўда» ў 207 (4062) нумары за 19 кастрычніка.

З вялікай гасціннасцю, як дарагіх гасцей, сустрэлі гродзенцы Беластоцкі беларускі народны калектыў песні і танца, які прыехаў учора з візітам дружбы. Гэты калектыў арганізаван Галоўным праўленнем Беларускага культурнага таварыства ў Польшчы ў чэрвені 1956 года. Яго ўдзельнікі — беларуская і польская моладзь, якая працуе на прадпрыемствах Беласто-



Выступленне Беластоцкага беларускага народнага калектыву песні і танца ў Гродзенскім Доме Афіцэраў.

ка і Беластоцкага ваяводства. Калектыў выступаў у розных раёнах Польшчы, у тым ліку ў Варшаве. На аглядзе лепшых самадзейных калектываў нацыянальных меншасцей у Польшчы, які адбыўся ў чэрвені гэтага года, ён заняў першае месца. ...На граніцы пасланцаў брацкай Польскай Народнай Рэспублікі сустракалі прадстаўнікі партыйных і савецкіх арганізацый Гродна і вобласці.

Вечарам у памяшканні гарнізоннага Дома афіцэраў адбыўся вялікі канцэрт. Перад пачаткам з прывітальнай прамовай да гасцей звярнуўся начальнік Дома афіцэраў І. А. Глухаў. У словы ў адказ старшыня Беларускага таварыства Уладзімір Станкевіч сказаў:

— Цяжка выказаць славамі тую радасць, якую мы адчуваем з выпадку нашага прыезду ў Гродна. Мэта нашай паездкі — яшчэ больш умацаваць нашы дружалюбныя сувязі, паказаць дасягненні беларускай культуры ў народнай Польшчы.

Цёпла прынялі гледачы выступленне харавага калектыву (мастацкі кіраўнік Галена Зюлкоўская), які выканаў беларускія народныя песні «Бульба», «Пайду, пайду», «Кракаўскае вяселле» і іншыя. Танцавальны калектыў (харэограф Тацяна Гіжэўская) з поспехам выканаў беларускі народны танец «Крыжачок», польскі нацыянальны танец «Куявяк - абэрэк». Яркае, маляўнічае відовішча прадстаўляюць сабой беларускія народныя танцы «Полька - Янка» і «Лявоніха» ў выкананні хору і танцавальнай групы. З вялікім поспехам выступілі: вакальнае трыо ў складзе Н. Мушыньскай, Н. Цыванюк, А. Яроцкай, якое выканала беларускія частушкі і беларускую народную песню «Баба Ксютка, дзед Тамаш», трыо ў складзе Кардзюкевіча, А. Балдака, Я. Младзьяноўскага, якое выканала «Лясную песню» Алоўнікава, танцоры В. і Б. Жэшкі, Т. Савіцкая, Я. Крупа.

Горача дзякавалі гледачы А. Каліноўскаму, які валодае прыгожым, моцным голасам. Ён выканаў беларускую народную песню «Жыў на свеце Лявон» і В. Кардзюкевічу, які выканаў песню «Недалёк той дзянёк».

Пасля заканчэння канцэрта гасцям былі паднесены кветкі. Канцэрт Беластоцкага беларускага калектыву песні і танца — яркае сведчанне росквіту беларускай нацыянальнай культуры ў Польшчы.

Сёння польскія госці выступаюць з канцэртамі перад удзельнікамі абласнога агляду мастацкай самадзейнасці ў Гродна. Вечарам яны пабываюць на заключным канцэрце абласнога агляду мастацкай самадзейнасці, прысвечанага 40-годдзю Беларускай ССР.

І. МІХАЙЛАВА

НАША МЭТА — САЦЫЯЛІЗМ

Аб II з'ездзе БГКТ орган ЦК КПБ «Звязда» ў 80 (11620) за 4 красавіка 1958 года змясціў артыкул.

У мінулую нядзелю ў Беластоку адбыўся II з'езд Беларускага культурна-асветнага таварыства. Прасторны клуб Ваяводскага праўлення Таварыства польска-савецкай дружбы запоўніла звыш 200 дэлегатаў і гасцей, якія прыбылі з тых гарадоў і павеатаў, дзе жыве беларускае насельніцтва.

Клуб правёў да з'езда спецыяльную падрыхтоўку. У фазе была арганізавана выстаўка беларускіх нацыянальных убораў, а таксама выстаўка работ мастакоў — беларусаў. У кіёску з кнігамі, якія прадаваліся на месцы, — газета «Звязда», часопіс «Беларусь» і іншыя перыядычныя выданні з Мінска, кнігі Янкі Купалы, Якуба Коласа, П. Броўкі, а таксама зборнік сцэнічных твораў і беларускі календар на 1958 год. Дзве апошнія кнігі выдадзены ў Беластоку.

Беларускае культурна-асветнае таварыства — гэта нацыянальная арганізацыя беларусаў, якія жывуць у Польскай Народнай Рэспубліцы. Яно створана звыш двух год і аб'ядноўвае 6 аддзелаў і 44 гурткі. Таварыства мае свой штотыднёвы часопіс «Ніва»,

які выходзіць на роднай мове. Як бясплатны дадатак да часопіса выпускаецца дзіцячая газета «Зорка».

Таварыства арганізуе і праводзіць вялікую культурна-асветную работу сярод беларускага насельніцтва. Наладжваюцца лекцыі, даклады і гутаркі аб жыцці народнай Польшчы, аб поспехах Савецкага Саюза, аб дасягненнях Беларускай ССР. Разам з Таварыствам польска-савецкай дружбы шырока адзначаліся 40-годдзе Вялікай Кастрычніцкай рэвалюцыі, 39-я гадавіна Беларускай ССР і 40-годдзе Савецкай Арміі і Ваенна-Марскога Флоту.

У мясцовых аддзелах таварыства звыш 40 гурткоў мастацкай самадзейнасці, у якіх удзельнічаюць сотні людзей. У мінулым годзе сіламі мастацкай самадзейнасці наладжана каля 150 вечароў. Асабліва актыўна праводзіцца гэтая работа ў павеатах Гайнаўка, Бельск і іншых. У Варшаве існуе і часта выступае беларускі хор.

Галоўнае праўленне таварыства, аддзелы і гурткі арганізуюць літаратурную прапаганду. У мінулым годзе праводзіліся Купалаўскія дні, на

якія прыязджала дэлегацыя з Беларусі. Па ініцыятыве таварыства ў гасцях беларускага насельніцтва Польшчы былі вядомыя беларускія пісьменнікі і паэты. У вёсках наладжваюцца літаратурныя чытанні.

Асаблівымі клопатамі таварыства з'яўляецца асвета. Цяпер у краіне ёсць 49 беларускіх школ, а таксама 116 школ, дзе беларуская мова вывучаецца як прадмет. 8 860 дзяцей займаюцца ў школах на роднай мове. Ёсць таксама два беларускія ліцэі, аснова на кафедры беларускай філалогіі пры Варшаўскім універсітэце і завочнае аддзяленне беларускай філалогіі пры Беластоцкім настаўніцкім інстытуце.

Аб усім гэтым гаварылася на з'ездзе як у справаздачным дакладзе, так і ў спрэчках. Дакладчык і дэлегаты з месц падкрэслівалі, што з першых дзён пасля вызвалення Польшчы ад фашысцкіх акупантаў беларускае насельніцтва актыўна ўключылася ў мірную, аднаўленчую работу, усяляк садзейнічала ўмацаванню народнай улады, не шкадавала намаганняў для развіцця эканомікі і культуры Польскай Народнай Рэспублікі.

— Уся дзейнасць таварыства накіравана да таго, — гаварылася ў справаздачным дакладзе, — каб пастаянна ўмацоўвалася і развівалася польска-савецкая дружба,

якая складае аснову сацыялістычнага будаўніцтва ў Польшчы, каб беларускае насельніцтва паўней і глыбей ведала аб дасягненнях Савецкай Беларусі, каб яно яшчэ больш актыўна ўдзельнічала ў рабоце па сацыялістычнаму пераўтварэнню Польскай Народнай Рэспублікі.

На з'ездзе па справаздачнаму дакладу выступіла звыш 25 чалавек. З'езд віталі старшыня Беластоцкай Ваяводскай рады нарадавай Ежы Попка, сакратар Ваяводскага камітэта ПАРП па прапагандзе Ян Сянкевіч, прадстаўнікі рускага, украінскага і літоўскага культурна-асветных таварыстваў. На з'ездзе выступілі таксама прадстаўнікі нацыянальнай камісіі пры ЦК ПАРП і Міністэрства культуры. З'езд аднагалосна прыняў ідэйна-праграмную дэкларацыю. У ёй падкрэсліваецца, што галоўная мэта таварыства — садзейнічанне сацыялістычнаму будаўніцтву ў Польшчы, актыўны ўдзел беларускага насельніцтва ў барацьбе за індустрыялізацыю краіны, за павелічэнне сельскагаспадарчай вытворчасці, умацаванне польска-савецкай дружбы. Прыняты таксама змены і дапаўненні да Статута таварыства, выбраны кіруючыя органы.

Пасля з'езда адбыўся вялікі канцэрт, арганізаваны сіламі мастацкай самадзейнасці беларускага насельніцтва.

(Уласн. інфарм.)

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ

На пачатку года вышаў з друку беларускі календар на 1959 год. Арганізаваўся навуковы гурток пры ГП.

У канцы лютага на месяц часу была пазычана ў Савецкім пасольстве кінаперасоўка, якою ў 56 мясцовасцях былі паказаны савецкія фільмы, а перад пачаткам фільмаў былі праведзены гутаркі аб ролі і заданнях Беларускага грамадска-культурнага таварыства.

На шапіраграфе для аматарскіх калектываў выдання п'есы — «Суседка», «Госць з таго свету» і «Зямляк».

Выданы таксама зборнік вершаў «Рунь» — пачынаючых беларускіх літаратараў. У днях асветы, кніжкі і друку было арганізавана 5 выставак беларускай літаратуры. 24 мая адбылося пленарнае пасяджэнне ГП прысвечанае мабілізацыі беларускага насельніцтва да рэалізацыі заданняў пастаўленых XII пленумам ЦК ПАРП. З аддзелаў культуры ВРН праведзена этнаграфічная разведка Сакоўскага павета. У жніўні ГП супольна з Міністэрствам культуры і аддзелаў культуры ВРН у Беластоку арганізавала ў Супраслі 3-охтыднёвы культурна-асветны курс для настаўнікаў беларускіх школ і актыву БГКТ, якія займаюцца мастацкай самадзейнасцю. Адначасова быў арганізаваны 2-хтыднёвы курс для членаў Беларускага народнага калектыву песні і танца.

Было ўтворана аб'яднанне беларускіх мастакоў. У Нарве і Міхалове былі праведзены два агляды беларускіх мастацкіх калектываў. У Саколцы і Гайнаўцы былі арганізаваны выстаўкі народнага мастацтва. Выстаўка беларускага народнага мастацтва была таксама адкрыта ў этнаграфічнай зале Акруговага музея ў Беластоку. Арганізатарамі яе былі ГП і аддзел культуры ВРН.

У кастрычніку супольна з Ваяводскай бібліятэкай быў арганізаваны семінар для бібліятэкараў, якія працуюць у беларускіх асяроддзях, а таксама быў выданы мантаж беларускай паэзіі, на аснове якога ў бібліятэках і школах адбылося 30 літаратурных вечароў. ГП правяло шырокую рэкрутацыйную акцыю на I-шы курс беларускай філалогіі пры Завочнай настаўніцкай студыі ў Беластоку.

У Бельску і Саколцы супольна са школьнымі ўладамі праведзены павятовыя нарады выкладчыкаў беларускай мовы. У кастрычніку распачаўся абмен членскіх білетаў БГКТ. У 1959 г. пачаліся перадачы праз радыёвузлы на беларускай мове. Народны калектывы песні і танца даў 21 канцэрт. Адбылося 25 аўтарскіх спатканняў з членамі Беларускага літаратурнага аб'яднання. (мх)

«РУНЬ»



Аўтары «Руні» сярод актыву БГКТ.

У красавіку ГП БГКТ выдала зборнік вершаў членаў літаратурнага аб'яднання п. з. «Рунь». Аб зборніку, між іншым, пісалі: «Литературная газета» (орган Саюза пісьмен-

нікаў СССР. Масква), «Літаратура і мастацтва» (орган Саюза беларускіх пісьменнікаў. Мінск), «Przyjaźń» (орган ГП ТППР), «Gazeta Białostocka» (орган ВК ПАРП).



Калектыў, песні і танца Галоўнага праўлення БГКТ у першамайскім паходзе.

КУЛЬТУРА — ВЁСЦЫ!

Кожны, хто перад летняй спякотай уцякае з Беластока, на-рыклад, да маляўнічай, з рэчкай і лесам мясцовасці Супрасль, выходзячы з аўтобуса звяртае ўвагу на арыгінальны палац Бухольца, з бусліным гняздом на капуле. Вось у гэтым палацы 22 жніўня г. г. адбылася ўрачыстасць заканчэння трохтыднёвага культурна-асветнага курса для настаўнікаў беларускіх школ і актыву БГКТ, а таксама 2-тыднёвага курса-абозу для членаў Беларускага народнага калектыву песні і танца з Беластока.

Арганізатары курсаў — Міністэрства культуры, Аддзел культуры ВРН, Ваяводскі дом культуры ў Беластоку, а таксама Галоўнае праўленне БГКТ — палажылі ўсе намаганні на тое, каб гэтыя курсы прынеслі іх удзельнікам як мага большую карысць. На пачатак праведзена адпаведны набор кандыдатаў. Зацікаўленасць курсам была на столькі вялікая, што прыехала на курс больш асоб чымсьці прадбачвалася, і трэба сказаць, што не было тут людзей выпадковых. Маючы на ўвазе, што мэта курса заключалася ў тым, каб пазнаёміць удзельнікаў з формамі і метадамі культурнай працы сярод беларускага на-

сельніцтва, пашырыць веды з галіны беларускай літаратуры, тэатра, фальклора, песні і танца, рэпетыцыі, падумалася таксама і аб добрым падборы выкладчыкаў.

Заняткі вялі на курсе такія выдатныя выкладчыкі як мгр Аляксандр Баршчэўскі з Варшаўскага універсітэта, сапраўдны мастак жывого слова. Нават не вабіла курсантаў да сябе рэчка і цёплыя праменні жнівеньскага сонца, калі А. Баршчэўскі вёў заняткі з гісторыі беларускай літаратуры і беларускага тэатра. Мгр М. Пецюкевіч — этнограф, ад'юнкт этнаграфічнага музея ў Торуні, прачытаў цікавыя лекцыі аб беларускім народным мастацтве, аб матэрыяльнай і духоўнай культуры беларускага народа. Уладзіслаў Яжэўскі — акцёр тэатра імя А. Вянгеркі ў Беластоку, шырока пазнаёміў курсантаў з тэатральнай працай і рэцытацыямі. Балеслаў Асцілоўскі — адначасова кіраўнік курсаў, пазнаёміў з арганізацыяй і формамі працы ў вясковай святліцы. Уладзімір Лазінскі — рэдактар Польскага радыё ў Беластоку, даў цікавы агляд палітычных падзей у сусветным маштабе. Мгр Мацей Канапацкі — рэдактар беларускіх перадач пры Польскім радыё ў Беластоку пазнаёміў курсантаў са сваёй цікавай навукова-даследчай працай аб перакладзе на беларускую мову міцкевічаўскага «Пана Тадэвуша», які зрабіў Дунін-Марцінкевіч якраз сто год таму назад. Сакратар ГП БГКТ Віктар Швед раскажаў аб нацыянальных меншасцях і нацыянальных таварыствах, аб дзейнасці Беларускага грамадска-культурнага таварыства ў Польшчы. Мгр Міхась Кураш, рэдактар «Нівы», правёў заняткі аб сацыялістычнай маралі. Галена Зюлкоўская і Тацяна Гіжэўская пазнаёмілі ўдзельнікаў курса з беларускімі і польскімі песнямі і танцамі. З песнямі, якіх навучыліся на курсе, курсанты выступілі перад мікрафонам Польскага радыё.

Арганізатары курсаў падумалі таксама і аб тым, як упрыемніць курсантам вольныя ад заняткаў хвіліны. Ваяводскі дом культуры забяспечыў курсы найлепшымі пазіцыямі мастацкай літаратуры на польскай мове, а Беларускае таварыства — беларускай мастацкай літаратурай і часопісамі. Адбылася таксама надта ўдалая экскурсія аўтобусам у Варшаву, дзе курсанты наведвалі заапарк, музеі, пабывалі на цікавым спектаклі Запольскай «Жабуся». Не менш удалай была экскурсія ў Белавежу. Удзельнікі курсаў наведвалі кіно ў Супраслі і Беластоку.

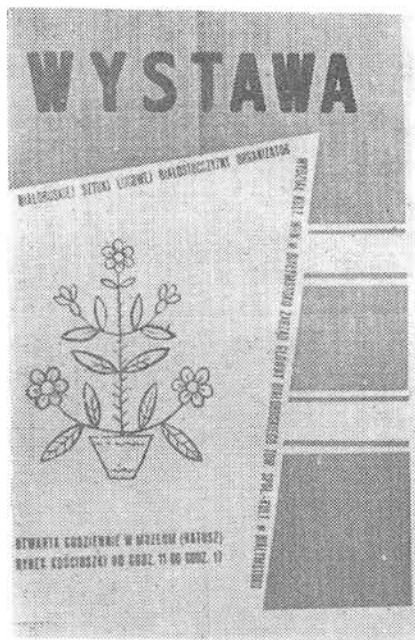
А як цікава і культурна праводзіліся вечарыны пасля заняткаў. Сярод курсантаў знайшліся акардэаністы, скрыпачы, барабаншчык, і такім чынам утварыўся ўласны аркестр, пад музыку якога весела кружыліся пары.

Беларускі народны калектыў песні і танца з Беластока, дзякуючы двухтыднёвай пабыўцы на курса-абозе ў Супраслі, падрыхтаваў новую праграму, з якой выступіў перад насельніцтвам Супраслі.

У час заканчэння ўручана ўдзельнікам курса пасведчанні на польскай і беларускай мовах падрыхтаваныя аддзелам культуры ВРН, а таксама сцэнічныя творы, выдання Галоўным праўленнем БГКТ.

В. III.

ВЫСТАЎКА БЕЛАРУСКАЙ НАРОДНАЙ ТВОРЧАСЦІ



Афіша выстаўкі.

14 кастрычніка адкрылася ў Беластоку першая выстаўка беларускай народнай творчасці. Яна была размешчана ў этнаграфічнай зале Акруговага музея. На выстаўцы сабраны экспанаты старадаўніх вырабаў вясковага ткацтва і рукадзелля, як: дываны, на-

роднае адзенне, узорыстыя ручнікі, каронкі, каляровыя выцінанкі з паперы, усялякага тыпу гаршкі, прадметы хатняга карыстання выкананыя з саломы і г. д. Пры зборцы экспанатаў і кваліфікацыі



Народныя ўборы.

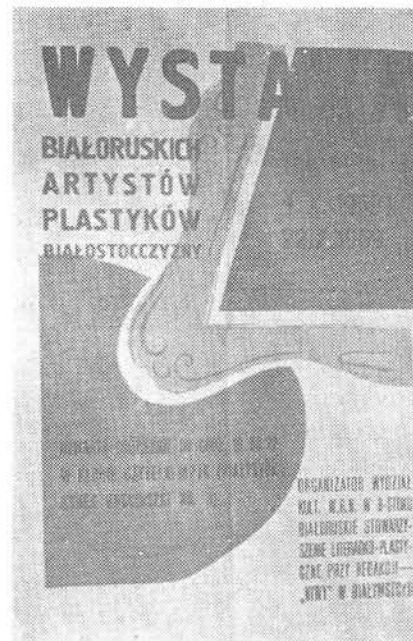
гэтых рэчаў на выстаўку вялікія заслугі паклалі члены Беларускага літаратурна-мастацкага аб'яднання пры рэдакцыі «Ніва», мастакі Аглая Артысевіч і Люба Красоўская. У сваіх паездках наведалі лены шмат беларускіх вёсак Гайнаўскага, Беластоцкага і Бельскага паветаў. Выстаўку арганізаваў аддзел культуры Ваяводскай рады нарадавай і Галоўнае праўленне БГКТ.

Многія экспанаты з выстаўкі пасля яе заканчэння закупіла Міністэрства культуры.

МАСТАЦКАЯ ВЫСТАЎКА

Пры рэдакцыі «Ніва» і пры літаратурным аб'яднанні згуртавалася група беларускіх мастакоў. У кастрычніку ў клубе міжнароднага друку і кнігі была арганізавана выстаўка гэтай групы мастакоў.

Карысталася яна вялікім поспехам. Некаторыя працы з выстаўкі купіла Міністэрства культуры і мастацтва.



Афіша мастацкай выстаўкі.

Аб БГКТ пісалі

KULTURALNIE NIE TYLKO Z SZYLDU

(Korespondencja własna z Białegostoku)

Przeglądając całoroczny dorobek pracy kulturalnej Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego w Białymstoku przyznać trzeba, że przymiotnik „kulturalne” pozostaje nie tylko w szyldzie. Działalność kulturalna tego towarzystwa jest tu bowiem bardzo konsekwentna, przybierająca różnorodne formy.

Zamieszkiwanie ludności białoruskiej, zamieszkującej południowo-wschodnią część województwa białostockiego, do tańca i pieśni ludowej znalazło swe odbicie w 70 białoruskich amatorskich zespołach ludowych. W celu spopularyzowania tych form pracy kulturalnej, towarzystwo urządza doroczne eliminacje białoruskich zespołów ludowych, przeprowadza seminaria dla

ich kierowników, zaopatruje je w powielany przez siebie repertuar w języku białoruskim.

W ramach działalności towarzystwa powstało również Stowarzyszenie Literackie. Wydało ono w bieżącym roku zbiór wierszy 17 poetów białoruskich. Wydanie tego zbiorku spowodowało 15 wieczorów autorskich wśród ludności wsi białostockich.

Inną formą jest powołanie przez towarzystwo koła naukowego, które zajmuje się zagadnieniami ekonomii, etnografii, językoznawstwa, krytyki literackiej.

W związku z 40-leciem Komunistycznej Partii Zachodniej Białorusi koło to opracowało do radiowęzłów w powiatach zamieszkałych przez ludność białoruską audycje w języku białoruskim związane z tą rocznicą. Nadto koło naukowe przygotowuje do druku periodyk odzwierciedlający problemy białoruskie na Białostocczyźnie.

Działą tu również białoruska sekcja etnograficzna Polskiego Towarzystwa Ludoznawczego. Sekcja ta okazała w bieżącym roku dużą pomoc Wydziałowi Kultury Prezydium WRN w etnograficznej penetracji powiatu sokólskiego. Ogółem sekcja jest w posiadaniu 50 amatorskich zapisów etnograficznych.

Białoruska twórczość ludowa to pięknie tkane dywany, kilimy, krajki, misterne hafty, wycinanki, słomiane plecionki. 175 najpiękniejszych okazów tej twórczości znalazło się ostatnio na zorganizowanej staraniem towarzystwa białoruskiego i Wydziału Kultury Prezydium WRN wystawie białoruskiej sztuki ludowej. Urządzono cieszącą się również dużym zainteresowaniem wystawę działającego stowarzyszenia plastycznego.

Zasługą towarzystwa białoruskiego jest również powołanie przy zaocznym studium nauczycielskim wydziału filologii białoruskiej. Towarzystwo wspólnie z kuratorium zorganizowało seminarium przygotowawcze do egzaminów wstępnych. W tej chwili filologię białoruską studiuje 43 słuchaczy.

Zagadnienie znajomości języka rodzinnego wśród Białorusinów jest sprawą niemałej wagi. Białoruski język literacki wśród ludności wiejskiej jest prawie nieznanym. Białoruskie słowo pisane nie ma tu więc szerokiego zasięgu. To jest niewątpliwie przyczyną malej w stosunku do liczebności Białorusinów na Białostocczyźnie poczytności tygodnika „Niwa”, drukowanego w Białymstoku w języku białoruskim. Niewielka jest ilość znajdujących się w 5 powiatach 266 punktach bibliotecznych 3663 woluminów w języku białoruskim. Ogółem w tych pięciu powiatach było od początku roku tylko 3290 wypożyczeń książki białoruskiej.

Największe powodzenie mają książki młodzieżowe, co świadczy o tym, że język literacki zna przeważnie młodzież, która uczy się w szkołach podstawowych języka białoruskiego. Dorośli mają tu jednak trudności. Obok nieznajomości wśród dorosłych literackiego języka białoruskiego, nie znają go też często bibliotekarze. Nie ma więc mowy o czytelnictwie inspirowanym, które by najlepiej wciągało czytelnika niewyrobionego i spełniało wymogi umiejętnej propagandy czytelnictwa. Nadto zestaw książek nienajlepiej od-

powiada możliwościom czytelniczym wiejskiego środowiska. Przeważają tu bowiem poezje białoruskie, a te z reguły na wsi są mało poczytne. Wniosek tu chyba nasuwa się taki, by Zarząd Główny Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego w swych planach kulturalno-oświatowych przewidywał również miejsce na prowadzenie nauki rodzimego języka literackiego wśród dorosłej ludności białoruskiej. Niewątpliwie przyszli absolwenci wydziału filologii białoruskiej przy ZSN będą tu w przyszłości bardzo pomocni.

Osiągnięcia Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego mogą być wzorem dla szeregu innych towarzystw narodowościowych w województwie białostockim.

B. KAMLEROWA
(„Trybuna Ludu” 27 grudnia 1959 r.)

R U Ń *)

Od roku przy redakcji „Niwy”, organie Zarządu Głównego Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego w Białymstoku, istnieje Stowarzyszenie Literackie, które co miesiąc wydaje Stronicę Literacką jako dodatek do „Niwy”, ostatnio zaś wydało tomik wierszy swych członków pt. „Ruń”.

Tomik zawiera utwory siedemnastu poetów, przeważnie młodych, cenionych w środowisku białoruskim i rokujących nadzieję na przyszłość.

Wszystkie niemal wiersze powstały po roku 1955. Autorzy ich różnią się nie tylko wiekiem i poziomem rozwoju twórczego, ale i gustami literackimi. Większość z nich pierwsze kroki stawiała na łamach „Niwy”.

Jest to pierwszy zbiorek poezji białoruskiej, wydany w Polsce Ludowej i można się spodziewać, że jego ukazanie się odegra pewną rolę w ożywieniu życia kulturalnego wśród Białorusinów zamieszkałych w Białostockim.

Winszujemy szczerze autorom tego niewątpliwego sukcesu i życzymy serdecznie dalszych.

„Przyjaźń” 5.VII.1959 r.

*) Białoruskaje litaraturnaje abjadnannie u Polszczy. „Ruń”. Zborek wierszau. Białystok 1959 r. s. 72, cena 5 zł.

PO BIAŁORUSKU

W czerwcu 1958 roku, czyli półtora roku temu na antenie Rozgłośni Białostockiej pojawiła się nowa pozycja programowa — Białoruski Magazyn Radiowy. Jego autor red. Maciej Konopacki znalazł na terenie Białostocczyzny wiele ciekawego materiału do audycji. Stare legendy i opowiadania, utwory poetów i prozaików, piszących po białorusku, rozmowy z entuzjastami literatury białoruskiej, ludowe melodie i piosenki — wypełniają program 14-minutowej audycji. A materiału nie brakuje...

Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne organizuje wiele cieka-

wych akcji mających na celu popularyzację folkloru białoruskiego. Żywy kontakt radia z Towarzystwem oraz współpraca z redakcją czasopisma „Niwa”, posiadającego dość szeroki krąg odbiorców w kraju i za granicą (prenumerata dociera do 36 krajów) daje doskonale rezultaty.

W dużym stopniu zajmują się audycje sprawami młodzieży białoruskiej, jej udziałem w pracach organizacji masowych.

Oczywiście najwięcej materiału dostarczają wyprawy w teren...

Do jednej z 200 znajdujących się na Białostocczyźnie szkół, w których dzieci uczą się języka białoruskiego, lub np. do któregoś z licznych, powstających samorządnie zespołów śpiewaczych. Zespoły te gromadzą przede wszystkim młodzież, a kierują nimi przeważnie miejscowi nauczyciele. Zespołów takich działa b. wiele. W Dobrych Wodach k-Hajnówki, w Dubiażynie, w Nowej Woli... Niejednokrotnie znaleźć tam można ciekawe melodie, których młodzież uczy się od matek, babek i wprowadza do swego repertuaru „dorabiając” często na własną rękę nowe słowa. Skarbnice starych melodii to oczywiście „babki” i „dziadki”, których szukać trzeba w Hajnówce, Białowieży a także w bardziej zapadłych kątach Białostockiego. Wiele już ciekawych nagrań wzbogaciło archiwum Białoruskiego Magazynu.

Oczywiście w audycji znajdują się też ciekawsze pozycje poezji i prozy białoruskiej, jak np. wiersze znanego poety Jaszy Bursza-Aniserowicza, zwanego białoruskim Różewiczem. Na uwagę zasługuje audycja poświęcona 100 rocznicy przekładu „Pana Tadeusza” na język białoruski, którego dokonał w 1859 r. w Wilnie Polak — Wincenty Dunin-Marcinkiewicz.

Po materiały do audycji trzeba się także niekiedy wypuszczać poza granice woj. białostockiego. Czasami aż do stolicy. Chociażby dla nagrania rozmowy z prof. Stanisławem Kazurą na temat wpływu muzycznego folkloru białoruskiego na jego twórczość, lub wywiadu z Remigiuszem Kwiatkowskim czy innymi znanymi osobistościami, interesującymi się kulturą białoruską.

Udało się też autorowi magazynu nawiązać kontakt z działaczami kulturalnymi na terenie Białorusi Radzieckiej. Współpraca ze Stefanem Aleksandrowiczem, który w Mińsku prowadzi prace nad powiązaniem kulturalnymi polsko-białoruskimi, da z pewnością ciekawe i pożyteczne rezultaty, wzbogacając problematykę tych interesujących audycji białostockiego radia.

„Radio i telewizja” Nr 46 (743) 15.XI.1959 r.

M. T.

**Арганізуйце
ў роднай мове
мастацкія выступленні**

1960

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ

На старонках «Нівы» разгарнулася шырокая перадз'ездаў-ская дыскусія аб дзейнасці таварыства. Адбыліся справаздаўча - выбарчыя канферэнцыі ў аддзелах і выбары дэлегатаў на з'езд БГКТ. 29 мая III з'езд накрэсліў напрамак дзейнасці на наступныя тры гады. Беларускі калектыў песні і танца даў 35 канцэртаў. Для калектыву быў арганізаваны двухтыднёвы курс на Мазурах. У Супраслі (2—21 жніўня) супольна з Аддзелам культуры ВРН быў арганізаваны асветны курс для настаўнікаў, якія кіруюць мастацкай самадзейнасцю. У верасні вышаў на экраны кароткаметражны фільм «Беларускае вяселле». У кастрычніку адбыўся II з'езд літаратурнага аб'яднання, 15 лістапада пленум абмеркаваў працу ГП і выбраў новага старшыню. Пры ГП пакліканы тры грамадскія камісіі прапаганды, культуры і асветы. Арганізаваная эстрада «Лявоніха» дала першыя канцэрты. У снежні выйшаў з друку навукова - літаратурны зборнік спалучаны з календаром.

Было прачытана на радыёвузлах на беларускай мове 136 гутарак. 50 асоб актыўу БГКТ брала ўдзел у школьных урачыстасцях. Адбыліся тры спатканны з настаўнікамі, якія вучыліся на беларускай філалогіі Завочнай настаўніцкай студыі. Супольна з Кураторыяй арганізавана канферэнцыя выкладчыкаў беларускай мовы. Адбылося 26 аўтарскіх спатканняў з членамі літаратурнага аб'яднання.

Праведзены павятовыя і ваяводскія агляды драмгурткоў з беларускім рэпертуарам. (мх)

НЕ СТАЯЦЬ ЗВОКУ

ІІІ з'езд нашай партыі паставіў перад народам акрэсленыя задачы на перыяд да 1965 года. Задачы гэтыя заключаюцца ў пад'ёме прамысловай прадукцыі на 50 прац. і сельскагаспадарчай прадукцыі на 30 прац. Гэтыя задачы выканаюць рабочыя і сяляне.

Першачарговай задачай та-

Таварыства павінна больш чым дагэтуль змагацца з буржуазнай ідэалогіяй, пашыраць ідэі інтэрнацыяналізма, выхоўваць сваіх членаў у духу гэтых ідэй, не дапускаць да пранікнення клерыкалізму ў розныя галіны жыцця, пашыраць навуковыя зацікаўленні, прапагаваць прыродазнаўчыя веды.



Удзельнікі з'езда.

варыства ў гэтай галіне з'яўляецца павышэнне палітычнай свядомасці беларускага насельніцтва, мабілізаваць гэтага насельніцтва да рэалізацыі партыйных пастановаў, барацьба з усімі спробамі падзелу працоўных паводле іх грамадскага і нацыянальнага паходжання.

У гэтай працы таварыства павінна шукаць дапамогі з боку іншых устаноў і культурна-асветных арганізацый, каб супольна з імі ўводзіць новы змест і зацікаўленне ў жыццё беларускай меншасці ў Польшчы.

Наша праца сярод насельніцтва павінна прабіваць дарогу сацыялістычным пераў-

тварэнням. Таму ў гэтую працу трэба ўкладаць многа сіл, розуму і ахвярнасці, не стаяць збоку, рашуча выконваць паставы нашай партыі.

Каб выканаць гэтыя задачы, трэба мацней звязацца з асяроддзем, з яго жыццём і працай.

ІІІ З'ЕЗД БГКТ

Справаздача са з'езда

29 мая ў памяшканні прэзідыума ВРН у Беластоку адбыўся ІІІ з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства. Апрача дэлегатаў у з'ездзе ўзялі ўдзел: прадстаўнік ЦК ПАРП Веслаў Аценка, намеснік міністра ўнутраных спраў Зыгфрыд

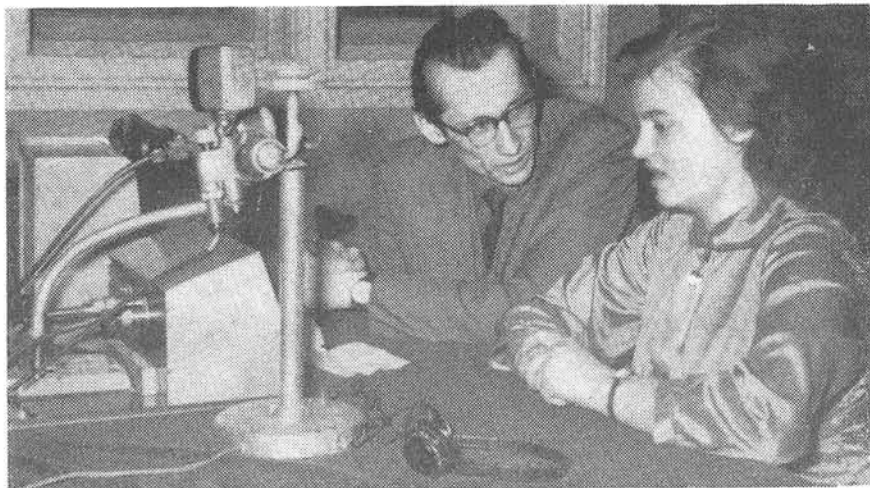
Шнэк, прадстаўнік Савецкага пасольства Васіль Фёдараў, сакратар ВК ПАРП у Беластоку Пётр Любянецкі, намеснік старшыні прэзідыума ВРН у Беластоку Станіслаў Юхніцкі і прадстаўнікі нацыянальных меншасцей у Польшчы.

З'езд адобрыў працу Галоўнага праўлення, прыняў паставы, якімі будзе кіравацца ГП у наступныя тры гады і выбраў 31-асабовае Галоўнае праўленне.

Зараз пасля з'езда адбылося першае пленарнае пасяджэнне ГП, на якім быў выбраны новы прэзідыум, у тым ліку і новы сакратар у асобе Уладзіміра Юзвюка.



Члены новавыбранага прэзідыума ГП — Васіль Дзуп, Уладзімір Станкевіч (старшыня), Лідзія Бялецкая, Георгі Валкавыцкі, Уладзімір Юзвюк (сакратар ГП).



Кіраўнік беларускіх радыёперадач Лявон Майсеюк наігрывае інтэрв'ю.

ГАВОРЫЦЬ БЕЛАСТОК

Рэпартаж з вясковага жыцця гуртка БГКТ, некалькі хвілін мілагучнай беларускай песні, інфармацыя, гутарка перад мікрафонам — вось асноўны змест беларускіх перадач Беларастоцкага вяшчання. Кіраўнік беларускай рэдакцыі польскага радыё ў Беластоку сябра Лявон Майсеюк дбае, каб кожная перадача прынясла штосьці новага і цікавага.

«БЭТЭСКА»

Галоўнае праўленне ў сакавіку 1958 года стварыла пры ГП БГКТ прамыслова-гаспадарчае прадпрыемства, каб даходам з яго дзейнасці папаўняць фінансавы фонд таварыства. Спачатку месцам арганізавання прадпрыемства і дзейнасці праўлення «БЭТЭСКІ» была Варшава. Там прадукцёцка шырокі асартымент вырабаў з пластмасы. У гэ-

тым жа годзе была арганізавана пякарня ў Гайнаўцы і дзее жывіроўні з адначасовым скупам налявога камення ў Краснянах у Сакольскім павеце і Дзернякове ў Беларастоцкім павеце.

У сакавіку 1960 года ў Гайнаўцы на базе адпадаў дрэва-апрацоўчага камбіната арганізавана пункт прадукцыі драўлянай тары і прадметаў хатняга ўжытку.

У ЭТНАГРАФІЧНЫМ МУЗЕІ

У этнаграфічным музеі на вуліцы Вольніца ў Кракаве ў красавіку 1960 года была арганізавана цікавая выстаўка народнага мастацтва нацыянальных меншасцей у Польшчы, у тым ліку і беларусаў.

На выстаўцы дэманстраваліся беларускія клетчатыя ткані, саламяныя кашы, рукамі гафаваныя сарочкі.

*

ЭТНАГРАФІЧНАЯ РАЗВЕДКА Ў ГАЙНАЎСКІМ ПАВЕЦЕ



Мгр Мар'ян Пецокевіч.

Па ініцыятыве аддзела культуры ВРН у Беластоку і ГП БГКТ ад 5 да 31 ліпеня была праведзена этнаграфіч-

ная разведка ў Гайнаўскім павеце. Усе працы праводзіліся этнаграфам магістрам М. Пецокевічам, навуковым працаўніком этнаграфічнага музея ў Торуні. Мгр Пецокевіч працаваў разам з групай студэнтаў - практыкантаў з кракаўскага універсітэта, якія аказалі дапамогу ў этнаграфічных пошуках.

Дзякуючы добраму надвор'ю, добраму транспарту і іншым спрыяльным умовам разведка прынесла добрыя вынікі.

Заданнем разведкі было сабраць звесткі аб народным мастацтве. Разведка сабрала агульныя дадзеныя аб сучасным становішчы ўсіх галін народнай культуры, а перш за ўсё матэрыяльнай.



Беларускі народны калектыў песні і танца пад кіраўніцтвам Міхася Ануфрыева і Тацяны Гіжэўскай павялічыў у апошні час колькасць выездаў.

Трэцяга ліпеня г. г. калектыў даў два канцэрты ў тэатры імя А. Вянгеркі ў Беластоку. Зацікаўленне канцэртамі было вялікае.

У сувязі з урачыстасцямі прысвечанымі адзначэнню 550-ай гадавіны гістарычнай барацьбы пад Грунвальдам Беларускі народны калектыў песні і танца ад 6 да 17 ліпеня пабываў у лагеры адпачынку ў Кентшыне (Альштынскае ваяводства). Адпачываючы ў маляўнічых мазурскіх акаліцах калектыў выступаў з канцэртамі ў Кентшыне, Барцянах, Гіжыцку і Рыне.

17 ліпеня калектыў выступаў на цэнтральных урачыстасцях на Палях Грунвальда. (мх)

II З'ЕЗД ЛІТАВ'ЯДНАННЯ

16 кастрычніка 1960 года ў памяшканні рэдакцыі «Ніва» адбыўся II з'езд літаратурнага аб'яднання. У з'ездзе ўдзельнічала больш 20-ці асоб, якія ўжо зрабілі першыя крокі, а іх творы былі друкаваныя ў зборніку «Рунь» і на старонках «Нівы».

Асноўнымі пунктамі парадку дня з'езда былі: справаздачны даклад Аляксандра Баршчэўскага (Алесь Барскага) на тэму: «Творчасць пісьменніка і рэчаіснасць», дыскусія і выбары новага праўлення. З'езд вырашыў змяніць назву з «Літаратурнага аб'яднання пры рэдакцыі «Ніва» на «Літаратурнае аб'яднанне пры ГП БГКТ».

У выніку выбараў старшынёю літаратурнага аб'яднання застаўся Алесь Барскі.

Пасля з'езда Алесь Барскі, Віктар Швед, Яша Бурш і Шыман Раманчук чыталі свае творы ў Клубе міжнароднай кніжкі і друку.



Удзельнікі з'езда.

ЦЭНТРАЛЬНЫ АГЛЯД МАСТАЦКІХ ГУРТКОЎ

На цэнтральны агляд беларускай мастацкай самадзейнасці ў Беластоку (адбыўся 27. XI. 1960 г.), арганізаваным ГП БГКТ і аддзелам культуры ВРН закваліфікавана 5 гурткоў.

Першым выступаў мастацкі калектыў з Гарадка. У яго выкананні гледачы пабачылі пастаноўку «Абразок з вясковага жыцця» і пачулі шэсць песень. Самадзейнікі з вёскі Ляшукі, Гайнаўскі павет, выступілі з п'есай «На ўскраіне сяла», а танцавальны гурток з Кляшчэляў выканаў танцы «Крыжачок», «Польку Янку» і «Лявоніху».

Чацвёртым выступаў мастацкі гурток з Пянькоў (Беластоцкі павет). Яго рэпертуар складаўся з драматычнай часткі, у якую ўвайшла п'еса «Прымакі» і з харавой часткі, на якую злажылася некалькі беларускіх і рускіх песень.

Цэнтральны агляд беларускіх мастацкіх калектываў закон-



Выступаюць самадзейнікі са Шчытоў.

чыўся выступленнем інструментальнага гуртка з вёскі Шчыты (Бельскі павет). Да гэтага гуртка належалі таксама дзве салісткі з вёскі Парцава. Былі імі сёстры Оля і Марыся Алешчук. Гэты дуэт пакарыў публіку. Бурныя апладысменты і «біс» прымусалі спяваць салістак па два разы беларускую песню «Замуж пайсці, трэба знаці» і рускую песню «Цішыня».

Журы вырашыла прызнаць першае месца мастацкаму калектыву са Шчытоў і ўзнагародзіла яго радыёпрыёмнікам «Каліпса».

Сакратар ГП БГКТ Уладзімір Юзвюк кожнаму мастацкаму гуртку і кожнаму яго кіраўніку ўручыў дыпламы ад Міністэрства культуры і ГП БГКТ. (мх)

ЛЯВОНІХА

ІІІ з'езд БГКТ вынес пастанову, якая забавязала прэзідыум Галоўнага праўлення да паклікання да жыцця невялікага эстраднага калектыву, які змог бы ў вясковых умовах даваць канцэрты. Шматасабовы калектыў песні і танца ГП не мог выступіць на цесных вясковых сценах, а грамадскае запатрабаванне на беларускую песню і танец было велізарнае і гэтае за-

данне змагла б выканаць невялікая аператыўная група людзей. Такая група (8-асабовая) выдзелілася з калектыву песні і танца і пачала рыхтавацца да выступлення. Першы свой канцэрт дала яна 13 лістапада на другім пленарным пасяджэнні ГП БГКТ. Утварэнне беларускай эстрады было яшчэ адным доказам у пашырэнні народнага беларускага жывога слова. (мх)

Пленум Галоўнага праўлення БГКТ

13 лістапада ў Беластоку адбылося ІІ пленарнае пасяджэнне Галоўнага праўлення БГКТ.

Пленум прыняў пастанову, якая абавязвае прэзідыум Галоўнага праўлення да далейшага ўкірункоўвання галоўнага напрамку дзейнасці таварыства на вёску.

Пастановы пленума накрэслілі таксама канкрэтную



Лідзія Бялецкая.



Выступае член прэзідыума ГП, старшыня Сакоўскага аддзела БГКТ Аляксандр Рафаловіч.

праграму дзейнасці прэзідыума ГП і праўленняў аддзелаў.

Галоўнае праўленне прыхілілася да просьбы Уладзіміра Станкевіча, які прасіў звольніць яго з абавязкаў старшыні ГП.

Новым старшынёю ГП БГКТ выбрана члена прэзідыума ГП — Лідзію Бялецкую. (мх)

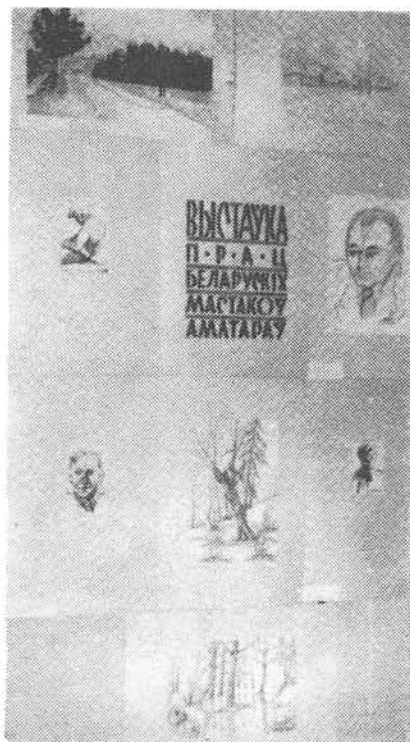
ВЫСТАЎКА МАСТАКОЎ АМАТАРАЎ

Беларускае мастацкае аб'яднанне пры Галоўным праўленні БГКТ наладзіла ў лістападзе выстаўку прац беларускіх мастакоў аматараў.

Аўтары выстаўкі: Аляксандр Сушчэня са Шчэціна, Генадзь Бібіла з Кашаліна і Мікола Несцяровіч з Орлі, Бельскі павет. Выставілі яны агулам каля 30 прац у жанры графікі і масла. Працы маладых мастакоў — гэта краявіды Беласточчыны і партрэты.



Фрагмент выстаўкі.



Фрагмент выстаўкі.

ВЫСТАЎКА ЯНКІ АНІСЭРОВІЧА

16 снежня 1960 года ў дзень склікання міжваядовскага нацыянальнага семінара ў памяшканні ГП наступіла адкрыццё творчасці мастака Янкі Анісэровіча з Варшавы, члена беларускага мастацкага аб'яднання.

1961

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ

У канцы студзеня выйшаў з друку зборнік фельетонаў Дзядзькі Леваня (Станіслава Вагуркі). Падрыхтоўка да ўрачыстага адзначэння 5-годдзя БГКТ. 26 лютага пленум 5-годдзя БГКТ. Выдана фотагазетка-плакат пяцігоддзя БГКТ. Падрыхтавана пяць рухомых выставак (з жыцця БГКТ, беларускае народнае мастацтва, з жыцця БССР, вучнёўская першамайская наценгазета на беларускай мове), якія экспанаваліся ў 61 мясцовасці. Праведзена два конкурсы: беларускі міжліцэйскі дэкламатарскі і на «Найлепшы мастацкі гурток у грамадскай працы». Былі праведзены ў аддзелах «Дзень беларускай культуры» і фэсты пяцігоддзя БГКТ. Падрыхтавана 42 тэксты радыёгутарак і прачытана па радыёвузлах у суме 261 радыёгутарку. Адбыліся 44 аўтарскія сустрэчы нашых літаратараў. Калектыў песні і танца даў 13 канцэртаў, а эстрада «Лявоніха» на працягу года — 302 канцэрты. У 20 лектарскіх пунктах чыталіся рэгулярна даклады. У другім паўгоддзі было арганізавана 3 культурна-асветныя курсы для старшынь і членаў праўленняў гурткоў БГКТ. Узяло ўдзел у іх 100 чалавек. У Сяміціцкім павеце была праведзена канферэнцыя настаўнікаў на тэму: «Роля настаўніка ў актывізацыі беларускага асяроддзя». Праведзена рэкрутацыя на беларускую філалогію Варшаўскага універсітэта і Завочную настаўніцкую студыю ў Беластоку. БГКТ уключылася да адзначэння і святкавання дня настаўніка. Прызнаны былі грашовыя ўзнагароды настаўнікам, якія выказаліся культурна-асветнай дзейнасцю ў беларускім асяроддзі. Праведзены былі два семінары для літаратурнага аб'яднання. З мэтай прапаганды беларускай літаратуры падрыхтавана 8 літаратурных мантажаў: аб творчасці Янкі Купалы, аб творчасці Максіма Багдановіча, каханне ў беларускай літаратуры і іншыя. Літаратурныя мантажы выкарыстоўвалі бібліятэкары. (мх)

ПЛЕНУМ ПЯЦІГОДДЗЯ

26 лютага адбылося ўрачыстае пасяджэнне ГП БГКТ, на якім былі падсумаваны дасягненні беларускай арганізацыі за 5-цігадовы перыяд дзейнасці. У пленуме прынялі ўдзел: прадстаўнік савецкага пасольства Сяргей Пагодзін, прадстаўнік Ваяводскага камітэта ПАРП Уладзімір Сянкевіч, куратар Белаастоцкай школьнай акругі Чэслаў Лойка і кіраўнік аддзела культуры прэзідыума ВРН Францішак Стачкоўскі.



Прэзідыум пленума.

Удзельнікі пленума вельмі гарача ўспрынялі прысланыя павіншавальныя тэлеграмы ад З. Шэка — падсакратара стану Міністэрства ўнутраных спраў, Галоўнага праўлення ТППР, старшыні прэзідыума Таварыства культурнай сувязі з заgrаніцай у БССР І. Казлова і старшыні Саюза пісьменнікаў БССР П. Броўкі.

ПЕРШЫ МІЖЛІЦЭЙСКІ ДЭКЛАМАТАРСКІ КОНКУРС

У нядзелю, 23 сакавіка, у Пяватоўвым доме культуры ў Бельску адбыўся першы беларускі міжліцэйскі дэкламатарскі конкурс. Яго арганізатарамі з'яўляліся Кураторыя Белаастоцкай школьнай акругі і Галоўнае праўленне беларускага таварыства. У конкурсе прыняла ўдзел 16 дэкламатараў — ліцэістак і ліцэістаў з Бельска і Гайнаўкі. На конкурсе прысутнічаў тав. Барт-

нік — загадчык аддзела сярэдных школ Кураторыі.

Два першыя месцы занялі: — Елена Грыц з IX кл. Беларускага ліцэя ў Гайнаўцы за дэкламацыю ўрыўка з паэмы «Новая зямля» Я. Коласа і Аня Анацік з X класа Беларускага ліцэя ў Бельску за дэкламацыю твора Т. Шаўчэнкі п. з. «Трынаццаць мнe год». Атрымалі яны ручныя гадзіннікі. Два другія месцы

занялі: Галя Матвеюк з X класа Бельскага ліцэя за дэкламацыю ўрыўка «На ростанях» Я. Коласа і Святлана Наўмень з V класа Педагагічнага ліцэя ў Бельску за твор «Шапэн» М. Танка. Яны атрымалі будзільнікі. Два трэція месцы занялі: Зіна Іванюк з X класа Гайнаўскага ліцэя за твор «Вясною» М. Танка і Юрка Кузмюк з IV «б» класа Педагагічнага ліцэя ў Бельску за твор Я. Купалы «Курган». Атрымалі па фотаапарату. І тры чацвёртыя месцы занялі: Марыся Нікіцюк, Пётр Семянюк з Гайнаўскага ліцэя і Яніна Трусевіч з Педагагічнага ліцэя ў Бельску — атрымалі пісьмовыя камплекты.



Першую ўзнагароду — ручны гадзіннік — атрымлівае Елена Грыц з Беларускага ліцэя ў Гайнаўцы.

НАЙЛЕПШЫ Ў ГРАМАДСКАЙ ПРАЦЫ



Кіраўнік мастацкага гуртка са Старога Ляўкова Васіль Целушэчкі з ўзнагародай — акардэонам.

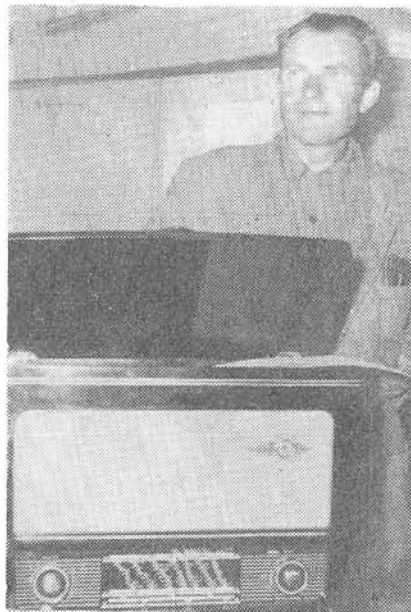
23 мая ў будынку Галоўнага праўлення нашага таварыства адбылося ўрачыстае ўручэнне ўзнагарод для мастацкіх гурткоў з беларускім рэпертуарам, якія ўдзельнічалі ў конкурсе «Найлепшыя беларускія мастацкія гурткі ў грамадскай працы». Конкурс быў аб'яўлены ГП БГКТ 1. X. 1961 года. Мастацкі гурток у Пяньках (Белаастоцкі павет) абслужыў за час конкурсу 10 мясцовасцей і заняў першае месца, за што атрымаў радыёпрыёмнік «Прэлюдыум» з радыёлай.

Мастацкі гурток са Старога Ляўкова (Гайнаўскі павет) выступаў у 9 вёсках. Ён быў

узнагароджаны акардэонам «Вельтмайстэр», самадзейнікі з Пілік (Бельскі павет) і Семяноўкі (Гайнаўскі павет) пабывалі ў 7 вёсках. Атрымалі яны радыёлы.

Мастацкія гурткі са Шчытоў, Навакорніна і Баршчэва абслужылі па 5 вёсак. Узнагароджаны яны гітарамі і балалайкамі. А аматарскія калектывы з рэпертуарам на беларускай мове з Ляшукоў і Галадоў наведалі па 4 вёскі і атрымалі як узнагароды камплекты савецкіх пласцінак з папулярнымі песнямі.

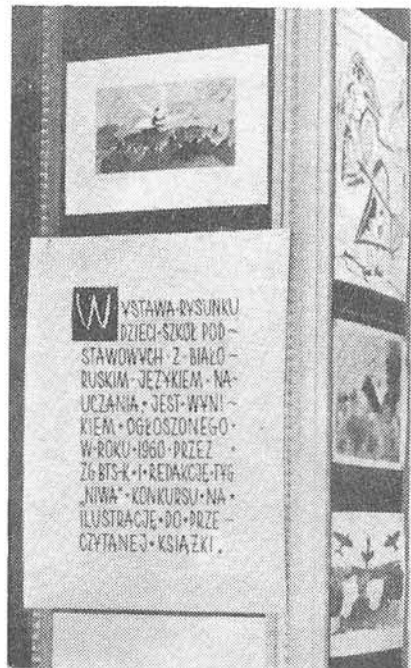
Кіраўнік мастацкага гуртка з Пянькоў Іван Азябла з узнагародай — радыёпрыёмнікам.



ВЫСТАЎКА

У 1960 годзе ГП БГКТ і рэдакцыя «Ніва» аб'явілі конкурс на ілюстрацыю прачытанай беларускай кніжкі. У лістападзе 1961 года была арганізавана выстаўка малюнкаў дзяцей са школ, у якіх вывучаецца беларуская мова.

Фрагмент выстаўкі.



Аб БГКТ пісалі

5 LAT BTSK

Kultura każdego narodu, w danym wypadku i ponad 200-tysięcznej mniejszości narodowościowej Białorusinów w Polsce, ma zagwarantowane istnienie i perspektywy rozwoju tylko w zasadniczym oparciu o mowę ojczystą. Rozwijająca się szkolna oświata białoruska stwarzała realne możliwości organizacji szkolnych i wiejskich zespołów amatorskich. Trzeba było rozwijać oświatę nie tylko szkolną, ale i wśród dorosłych, m. in. poprzez rozwój czytelnictwa w języku białoruskim, zapewnić zespołom artystycznym repertuar, opiekę nad nimi, pomagać władzom w kształtowaniu nowego światopoglądu i ideologii wieśniaka białoruskiego. Chociaż oświata jest podstawą rozwoju kultury, ale kultura w szerszym pojęciu nie kończy się przecież na niej.

Tak więc nowe wartościowanie stosunku do białoruskiej mniejszości w naszym kraju, oparte o zasady jak najbardziej humanitarnego równouprawnienia, stworzyło przesłankę ku powołaniu do życia społecznej organizacji Białorusinów w Polsce. Stało się nią Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne, zjazd organizacyjny odbył się 26 lutego 1956 r. w Białymstoku. Statut BTSK określa jego działalność jako społeczno-kulturalno-oświatową.

Przy niezawodnej pomocy naszych władz wojewódzkich i centralnych 4. III. 1956 r. wychodzi w Białymstoku pierwszy numer białoruskiego tygodnika „Niwa”, który staje się odtąd organem prasowym Zarządu Głównego BTSK. Tygodnik zdobywa popularność, grupuje współpracowników i korespondentów, staje się pomocną trybuną w życiu Białorusinów. Zespół redakcyjny dociera do każdej prawie wsi białoruskiej. Oprócz poruszania spraw i problemów codziennego życia na łamach tygodnika zamieszczany jest zbierany folklor, daje się początek rozpracowywaniu ruchu partyzanckiego na Białostocczyźnie. Od kwietnia 1957 r. wydaje się bezpłatny dodatek do „Niwy” — „Zorka”, jako czasopismo, które stało się pomocą uczniom szkół podstawowych w opanowywaniu języka ojczystego.

Wokół „Niwy” skupia się grupa początkujących młodych pisarzy i poetów białoruskich organizując Zrzeszenie Literackie. Lepsze utwory drukuje się raz w miesiącu na „Stronie literackiej” w „Niwie”, która staje się trybuną Zrzeszenia.

W celu zaspokojenia potrzeb na białoruskie słowo pisane, Zarząd Główny

ny BTSK rozpoczyna działalność wydawniczą. Ważną pozycję zajmuje tu wydawnictwo kalendarzy (pierwszy na rok 1957). Staraniem Koła Naukowego, istniejącego przy ZG BTSK na rok bieżący został wydany zbiorek prac naukowo-literackich w połączeniu z częścią kalendarzową, który stanowi najważniejszą dotychczasową pozycję wydawniczą Towarzystwa. W roku 1959 był wydany zbiorek wierszy poetów miejscowych „Ruń”. Dla zaspokojenia potrzeb repertuarowych amatorskich kółek artystycznych wydano kilkanaście utworów dramatycznych (w druku i na szapirografie), a także kilka inscenizacji wieczorów literackich. Ostatnio wydano zbiorek felietonów Dziadźki Lawonia, stałego współpracownika „Niwy”.

Polem zasadniczym działalności Towarzystwa jest wieś. Jak dotychczas koło BTSK największą działalność przejawiają w organizowaniu amatorskich kółek dramatycznych, pracujących przeważnie pod kierownictwem nauczycieli. Koła są również ogniwami rozpowszechniania czytelnictwa białoruskiego słowa drukowanego, podejmują walkę z zabobonami, znachorstwem, dbają o kulturę współżycia Białorusinów i Polaków we wsiach mieszanych. Niektóre koła były inicjatorami budowy świetlic. Ba, nie tylko inicjatorami. Koło we wsi Rajki w powiecie bielskim, prawie, że główny ciężar budowy świetlicy przyjęło na swoje barki i dziś wznosi się tam piękny murowany budynek, a w nim koncentruje się życie kulturalne wioski.

Zarząd Główny BTSK opiekuje się zespołami amatorskimi przy ścisłej współpracy z ZMW i inspektoratami oświaty. Pomaga się przy doborze repertuaru, wypożycza się stroje i instrumenty muzyczne, udziela się instruktażu, organizuje się konkursowe przeglądy i eliminacje zespołów. Tylko w roku 1960 wiejskie zespoły białoruskie wystąpiły w sumie około 300 razy. Często występy są poprzedzane korzystnymi odczytami i pogadankami o różnorodnej problematyce, a także spotkaniami z poetami (najczęściej Aleś Barski, Wiktor Szwed i Aleś Swisiok).

Ważną rolę w pracy kulturalnej odgrywa amatorski białoruski ludowy zespół pieśni i tańca, istniejący przy ZG BTSK w Białymstoku. Jego występy cieszą się powodzeniem nie tylko w środowisku białoruskim, ale nawet w stronach zachodnich naszego województwa. Jesienią, roku ubiegłego, zorganizowano amatorską grupę estradową „Lawonicha”. Estrada „Lawonicha” liczy 12 osób i występuje nawet w małych świetlicach wiejskich i salach szkolnych.

Oddziaływanie Towarzystwa Białoruskiego na kulturę daje się dziś zauważyć w wielu wsiach województwa. Szeroki aktyw, o który opiera się w swej pracy Zarząd Główny, jest bardzo ofiarny. W terenie wyróżniają się nauczyciele, którzy pracują w kołach BTSK, bezpośrednio organizują pracę i oddziaływują na kształtowanie się szeregu spraw odnośnie kultury wsi. Dziś nie spotyka się już głosów podobnych do zacytowanych na początku, ale można usłyszeć na wsi białoruskiej dyskusje o konkretnej działalności swojego koła i to jest bardzo ważne.

M. KURASZ

„Gazeta Białostocka”

25—26.II.1961 r.

Województwo wielu języków

Przed wojną Rajki były ostatnią wsią w województwie. Żyły właściwie z cięcia drzew dla Bielska. Ludzie z okolicznych wsi i miasta mawiali: z Rajek — gorzej niż z piekła. W czasie ucieczki hitlerowcy puścili z dymem całą wieś. Nawet drewniane studnie wypaliły się aż do wody. Zły los nie opuścił wsi po wojnie. W r. 1957, po żniwach, pół wsi z pełnymi stodolami płonie od pioruna.

A więc — wieś nie bogata, a jednak pozwoliła sobie na luksus wypędzenia nudy. Luksus, prawda, niezbyt kosztowny, bo wiejski dom kultury został zbudowany czynnem społecznym i gospodarczym sposobem. Ten zmałstrował okna, tamten zwiózł stare deski na sufit, pilowali, przybijali, mrowali.

Hawił kiedyś we wsi gość ze Związku Radzieckiego, z zawodu inżynier czy technik budowlany. Pokazują mu dom. Kto z was jest starszy? My wszyscy starsi. Ale kto kierował budową? A wszyscyśmy kierowali. A fachowców skąd żeście mieli? My sami fachowcy. To i okna i drzwi też żeście sami wstawiali? Też sami.

Stary specjalista, niejeden dom budował, wierzyć nie chce. Ale te drzwi to jak by krzywe. Nie, prościutkie, możemy zmierzyć. Przynieśli waserwa-gę zmierzili. Okazały się prościuteńkie. Do dzisiejszego dnia przyjemnie wspominać, jak to wieś radzieckiemu fachowcowi potrafiła zaimponować.

A zaczęło się w roku 1959, kiedy w wiosce powstało koło Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego. Dopóki koła nie było, młodzież grała w karty. Założyli koło — powstał teatralny zespół amatorski. Nie mieli gdzie odbywać prób, pierwsze przedstawienie dali w prywatnym mieszkaniu. I tak powstała myśl zbudowania świetlicy. Rzucił ją jeszcze w r. 1946 człowiek, który w tej chwili nas informuje — zwykły rolnik Grzegorz Siemieniuk. Nieufnie wtedy podeszli ludzie do jego projektu, pytali czy dużo na tym chce zarobić. Od tego czasu wiele się zmieniło.

Tyle informacji. Na zakończenie Siemieniuk wyciąga z kieszeni trzy listy adresowane do przedstawicieli władz. O pieniądze. O 20 tys. zł na dokończenie sufitu i wyposażenie. Listy, o ile wiem, nie pozostaną bez odpowiedzi.

Poważne, urzędowe rozmowy przechodzą powoli w swobodną, towarzyską pogawędkę toczoną w dwóch językach: polskim i białoruskim. Nasi gospodarze — aktyw kulturalny wsi Rajki w powiecie Bielsk Podlaski — to Białorusini. Cała wioska jest białoruska.

Jeżdżą po Białostocczyźnie w towarzystwie przedstawicieli Ministerstwa Kultury i Sztuki śladami spraw kulturalnych mniejszości narodowych.

Białostocczyzna jest terenem bardzo zróżnicowanym pod względem narodowościowym. Interesowałem się właściwie tylko Białorusinami, a jednak, przy okazji, toczyłem długie rozmowy w klubie żydowskim w Białymstoku, oglądałem meczet polskich Tatarów, słyszałem opowieści o pomysłowych Litwinach, którzy w okresie zimowo-jesiennym, z braku lokali, przerabiają tymczasowo stodoły na śliczne sale widowiskowe.

Liczną grupę narodową stanowią Białorusini zamieszkujący częściowo południowe i wschodnie powiaty województwa. Spotyka się wioski wyłącznie białoruskie, mieszane polsko-białoruskie i takie, w których Białorusini stanowią nieznaczny procent ludności. U podłoża rzucającej się w oczy ruchliwości społecznej i kulturalnej Białorusinów leżą wiekowe doświadczenia i tradycje — zamieszkują te okolice z dziada pradziada. Niemalą rolę odgrywa również stała troska o stworzenie im jak najlepszych warunków rozwoju, zaspokojenie potrzeb oświatowych i kulturalnych, o czym marzyć nie mogli w Polsce przedwrześniowej.

Od r. 1956 działa na tych terenach Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne. Pięć lat działalności społecznego towarzystwa to okres właściwie bardzo krótki, a jednak pobieżne omówienie jego wielostronnej, ciekawej działalności wymagałoby osobnego artykułu.

W Białymstoku wychodzi w języku białoruskim tygodnik społeczno-kulturalny „Niwa”, białostockie radio nadaje krótkie audycje dla Białorusinów.

W bieżącym roku w 135 szkołach podstawowych uczono języka białoruskiego jako przedmiotu, a w 39 szkołach był językiem wykładowym. Dorzućmy dwa licea z językiem wykładowym białoruskim, jedno z językiem białoruskim jako przedmiotem, trzy szkoły zawodowe oraz fakultet języka białoruskiego na Uniwersytecie Warszawskim, a będziemy mieć pełną sieć szkół, z których mogą korzystać białoruskie dzieci i młodzież.

Problem szkolnictwa białoruskiego jest ważny — bardzo niewielu Białorusinów posługuje się językiem literackim, większość używa różnych gwar i właściwie dopiero szkoły pozwalają na odradzanie się czystej formy języka.

Zaspokajanie potrzeb kulturalnych mniejszości narodowych — oto sprawa, którą postanowiło zbadać niedawno Ministerstwo Kultury i Sztuki. Jest to część ogólnego problemu zaspokajania potrzeb kulturalnych mieszkańców Białostocczyzny, rozwoju wszystkich placówek kulturalnych, ruchu amatorskiego, czytelnictwa.

Jeśli w wielu gromadach województwa zdarzają się wypadki niewypłacania poborów bibliotekarzom, dlatego, że gromadzkie rady narodowe uzależniają je od wpływu podatków, to jest to skandal, z którym pogodzić się trudno, bo oznacza absolutne niezrozumienie potrzeby działalności kulturalnej i niedopuszczalne kpiny z ustawodawstwa pracy, bijąc pośrednio wszystkich, bez względu na narodowość, mieszkańców gromady.

Jeśli dobrze pracująca w ubiegłym roku Powiatowa Komisja Koordynacyjna w Bielsku Podlaskim zawiesiła w tym roku pracę na kołku, bo podobno władze wojewódzkie powstrzymują poszczególne instytucje powiatowe przed wspólnym gospodarowaniem, to również nie można przejść nad tym do porządku dziennego.

Nęka też Białostocczyznę ogólnopolska bolączka — brak ludzi ze średnim wykształceniem chętnych do pracy w aparacie i placówkach kulturalnych.

Z drugiej strony, w samym tylko powiecie Bielsk Podlaski Inspektorat Oświaty wydał w zeszłym roku 15 zezwoleń na budowę świetlic, z których 5 już się realizuje.

Wydział Kultury Wojewódzkiej Rady głowi się nad stosem wniosków przedwyborczych w dziedzinie kultury dotyczących prawie wyłącznie budowy nowych obiektów kulturalnych. Więc, silnie rozbudowane potrzeby kulturalne dokumentowane m.in. bujnym i bogatym ruchem amatorskim.

Na tym tle wyrastają dopiero odrębności narodowe, drobne zresztą i łatwe w praktyce do uwzględnienia.

Na przykład sprawa białoruskiej książki. Wszędzie, gdzie mieszkają Białorusini, znajdziemy ją w bibliotekach i punktach bibliotecznych. Ale... jest kilka ale. Zajrzyjmy do tych książek. Jest ich mało, stanowią niewielki procent księgozbiorów. W większości źle dobrane, niestrawne dla wiejskiego, niewyrobionego czytelnika.

Nici takiego stanu rzeczy prowadzą do instytucji importujących książki: „Domu Książki” i „Ars Polona”. Powstaje paradoksalna sytuacja, że nie-ruchawość aparatu handlowego przeszkadza w realizowaniu polityki kulturalnej, bo oczywiście takie książki, jakie posiadają dotychczas biblioteki, wpływają poważnie na obniżenie czytelnictwa w języku białoruskim, czytelnictwa w ogóle. To samo odnosi się zresztą do książek w językach innych grup narodowych.

Biblioteki i świetlice w środowiskach białoruskich powinny być prowadzone przez Białorusinów, ewentualnie ludzi władających językiem białoruskim. I oczywiście, co najmniej ze średnim wykształceniem.

Dyrektor Szkoły Podstawowej i Liceum Ogólnokształcącego z Białoruskim językiem nauczania w Bielsku Podlaskim (pięknej, nowej, doskonale wyposażonej) pokazuje mi listę zgłoszeń na studia tegorocznych absolwentów. Znajdziemy w niej wszystkie możliwe uczelnie od tradycyjnej farmacji poprzez dziennikarstwo i politechnikę do Wyższej Szkoły Marynarki Wojennej. Dyrektor jest zadowolony. Oczywiście świadczy to o umiejętności rozbudzania wśród młodzieży szerokich zainteresowań. Tylko kto poprowadzi świetlice w okolicznych wioskach, jeśli nie pójdą tam właśnie absolwenci liceum białoruskiego? Oto przykłady specyfiki działalności kulturalnej wśród mniejszości.

Nigdzie tak łatwo i wyraźnie jak na Białostocczyźnie nie można stwierdzić, że polityka równouprawnienia we wszystkich dziedzinach życia społecznego, bez względu na narodowość została u nas w pełni zrealizowana. W czasie swojej wędrowki poznałem wielu działaczy i urzędników różnych szczebli — dotąd nie wiem, który z nich jest Białorusinem, a który Polakiem, który Litwinem czy Ukraińcem, bo z Polakami rozmawiają oczywiście po polsku. Nieodłączną częścią takiej polityki jest pełne zaspokajanie potrzeb kulturalnych wszystkich grup narodowościowych, w ramach ogólnej działalności kulturalnej i oświatowej.

Specyfika potrzeb mniejszości narodowościowej mieści się w pełni w takim rozumieniu polityki kulturalnej. Jeśli zdarzają się w tej dziedzinie drobne, wynikające chyba z niezrozumienia spraw, niedociągnięcia, powinny być jak najszybciej usunięte.

WOJCIECH KICIŃSKI

„Trybuna Ludu” 28.VI.1961 r.

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ

Урачыстасці арганізаваныя таварыствам у сувязі з 80 гадавінай нараджэння Янкі Купалы. У канцы студзеня вышаў з друку зборнік вершаў Аляксандра Баршчэўскага «Бела-вежскія матывы». Пленум ГП (красавік) прысвечаны працы гурткоў БГКТ. У верасні эстрада «Лявоніха» дала 500-ты канцэрт. У верасні арганізавана Дуброўскі аддзел БГКТ. Адбылося V пленум прысвечанае навучанню беларускай мовы і арганізацыйным справам. Прачытана на беларускай мове па радыёвузлах у паўднёва-ўсходняй частцы Беласточчыны 180 радыёгутарак. У лістападзе вышаў календар на 1963 год.

ГП аказала школьным уладам дапамогу ў наборы навучэнцаў у беларускія ліцэі і настаўніцкую студыю беларускай філалогіі. Супольна з Кураторыяй праведзены рэцытатарскі конкурс. У пяці паветах было сарганізавана 20 сталых лектарскіх пунктаў. Адбылося 65 сустрэч з літаратарамі «Бела-вежа». Удзельнікі эстраднай групы далі 144 інструктарскія выезды ў аматарскія гурткі. «Лявоніха» дала 262 канцэрты, якія аглядала 46 870 асоб. Калектыў песні і танца даў 11 канцэртаў. Восенню былі праведзены 3 асветныя курсы для прадстаўнікоў праўлення гурткоў БГКТ. (мх)

СУСТРЭЧА З РЫГОРАМ ШЫРМАМ

Менавіта сустрэча, сардэчная сустрэча. Інакш нельга назваць вечарыны, якая адбылася 3 студзеня ў памяшканні ГП БГКТ. І хоць юбіляр, якога сямідзесяцігоддзе сабраўся адзначыць актыўна гарадскога аддзела, быў сярод

нас толькі ва ўспамінах, расказаных людзьмі, якім давалася супрацоўнічаць з Рыгорам Раманавічам. Аднак адносілася ўражанне, што ён і фізічна прысутнічае ў гэтай зале. На гэта злажыліся і непасрэдняе жыццёвыя выступ-



Піліп Кізевіч.

ленні расказчыкаў, музычнае суправаджэнне (капела Шырмы на магнітафоннай плёнцы) і сямейная атмасфера, якую стварылі перад усім члены нашага калектыву песні і танца. Вечар адкрыў старшыня гарадскога аддзела БГКТ у Беластоку Лявон Другавец. Затым Аляксандр

Каліноўскі, саліст нашага калектыву (у мінулым харыст віленскага школьнага хору Шырмы, а пасля вызвалення — член слаўнай ужо шырмаўскай дзяржаўнай капелы) расказаў аб жыцці і творчай дзейнасці Рыгора Раманавіча, а таксама падзяліўся ўспамінамі са сваёй працы пад кіраўніцтвам Шырмы.

Пасля выступіў блізкі супрацоўнік Рыгора Шырмы ў канцы дваццатых гадоў, член галоўнай управы Таварыства беларускай школы, Піліп Кізевіч. Ён расказаў аб грамадскай і палітычнай дзейнасці Шырмы ў час санацыйнай Польшчы ў другой палове 20-х гадоў, пасля разгрому Грамады.

Вінцук Склубоўскі расказаў аб дзейнасці Шырмы ў 1935—1936 г. г., калі ў выніку курсу санацыйнай улады на разгром ТВШ умовы працы вельмі ўскладніліся.

Усе выступленні былі ўспрыняты прысутнымі вельмі сардэчна. Для многіх, асабліва для моладзі, быў гэты вечар таксама знаёмствам з роднымі традыцыямі.

Прысутнічала каля 100 асоб. (рл)

У СУВЯЗІ З 80-ГОДДЗЕМ

У сувязі з 80-годдзем з дня нараджэння вялікага беларускага пісьменніка Янкі Купалы Галоўнае праўленне Таварыства польска-савецкай дружбы запрасіла ў нашу краіну пісьменніка Максіма Лужаніна.

11 чэрвеня 1962 года Лужанін наведаў Беласточчыну. У па-



Люба Філіпik, Максім Лужанін, Лідзія Бялецкая і Язэп Маркоўскі.

мяшканні ТППР адбылася сустрэча паважанага гасця з жы-
харамі Беластока.

У ёй узяў таксама ўдзел літаратар і перакладчык беларус-
кіх твораў на польскую мову Ежы Енджэеўскі, які вельмі ці-
кава расказаў аб гісторыі беларускай літаратуры і асабліва
падкрэсліў значэнне творчасці Янкі Купалы і Якуба Коласа.

Вечарам у Беластоку адбылася сустрэча Максіма Лужаніна
з працаўнікамі і актывам Галоўнага праўлення Беларускага
грамадска - культурнага таварыства.

МАЛЫ ЮБІЛЕЙ

7-га верасня эстрада Галоўнага праўлення БГКТ
дала 500-соты канцэрт. У вёсцы Шымкі (Бела-
стоцкі навет) выступала яна перад школьнікамі.
Новую 500-ку пачала «Лявоніха» ў гэтай жа вёс-
цы канцэртам для дарослых. Сваёю выкаро-
днаю дзейнасцю раславіла яна на Беластоцчыне
беларускую песню, распявала ёю вясковую мо-
ладзь.



Танцорка Чэся Сільвончук.



Салісты Янка Блізнюк і Люба
Томчык.



Акардэаніст Васіль Кардзюкевіч.



танцор Янка Крупа.



Саліст і гумарыст Аляксандр Ка-
ліноўскі.

ЛІТАРАТУРНАЕ СЯБРОЎСТВА

6 кастрычніка г. г. у Беластоку адбыўся справаздачна - выбарчы сход літаратурнага аб'яднання пры Галоўным праўленні нашага таварыства. Увечары маладыя паэты выехалі на аўтарскую сустрэчу ў Гарадок (Беластоцкі павет).

На другі дзень праходзіў творчы семінар, на якім абмяркоўваліся некаторыя апавяданні і вершы пачынаючых аўтараў. Затым адбыліся перавыбары ўлад арганізацыі. Старшынёй праўлення паўторна выбраны Аляксандр Баршчэўскі (Алесь Барскі).



Выступае Алесь Барскі.

Назва літаратурнага аб'яднання зменена на *Літаратурна-мастацкае аб'яднанне «Белавежа»*.

У Клубе міжнароднай кніжкі і друку ў 18 гадзін пачаўся літаратурны вечар, арганізаваны супольна з беластоцкім літаратурным клубам. Са сваёй творчасцю пазнаёмілі прысутных Тадэвуш Сокул, вершы якога ў перакладзе на беларускую мову змяшчаліся на «Літаратурнай старонцы», а таксама Аліцыя

Енджэўская і Збігней Слёнчка. З ліку «белавежцаў» выступілі: Алесь Барскі, Яша Бурш, Віктар Швед і Янка Чыквін. Перапоўненая любіцелямі паэзіі зала аднеслася з выключнай увагай да кожнага з іх. Сведчыць гэта аб наспеўшай патрэбе пашырэння і паглыблення супрацоўніцтва паміж абодвума творчымі асяроддзямі.

V ПЛЕНУМ ГП БГКТ

9-га снежня 1962 года адбылося V пленарнае пасяджэнне ГП БГКТ. Абмяркоўвалася на ім асветныя справы.

Дакладчык, кіраўнік культурна-асветнага аддзела ГП Уладзімір Паўлючук, між іншым, сцвярджаў, што выкарыстаны далёка не ўсе магчымасці пашырэння сеткі школ з беларускай мовай як прадметам, якіх лік павялічваецца надта павольна. Звяртаў ён увагу прысутных на тое, што дзіця, з якім настаўнік ужо ў першым класе раз-



Выступае член прэзідыума ГП БГКТ Мікола Самоцік.

маўляе на роднай мове, лягчэй перажывае падрыхтоўчы перыяд і хутчэй зжываецца са школаю. І таму навучанне першакласнікаў на роднай мове патрэбна ўвесці ва ўсіх школах, дзе навучаецца беларуская мова. Гэта будзе мець велізарнае педагагічна - выхавальнае значэнне.

Абмяркоўваючы арганізацыйныя справы пленум прыхіліўся да просьбы тав. Лідзіі Бялецкай і звольніў яе ад абавязкаў старшыні Галоўнага праўлення БГКТ. Новым старшынёй быў выбраны тав. Макар Дземяновіч.



Чытае даклад Уладзімір Паўлюч.



Повавыбраны старшыня Макар Дземяновіч (злева) гутарыць з прадстаўніком МУС — Уладзімірам Станкевічам.

1963

Найважнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП

Выданы зборнік аповяданняў для дзяцей «Мой родны кут». 3 беларускім рэпертуарам працавала больш 70 драмгурткоў. 51 драмгурток узяў удзел у павятовых элімінацыях. Апрацавана 20 тэкстаў гутарак і прачытана на радыёвузлах 149. Праведзена справаздачна - выбарчая кампанія ў гуртках і аддзелах БГКТ, а 16 чэрвеня адбыўся справаздачна - выбарчы з'езд. Лектарская група дала 77 дакладаў (на сельскагаспадарчыя, санітарныя, літаратурныя, юрыдычныя тэмы і аб БГКТ). Аказана дапамога асветным уладам у наборы студэнтаў на беларускую філалогію Варшаўскага ўніверсітэта і Завочную настаўніцкую студыю. 17 лістапада адбылося пленарнае пасяджэнне ГП прысвечанае абмяркоўцы тых дзялянак працы, якія маюць уплыў на фармаванне светапогляду (праца БГКТ у святле XIII пленума ЦК ПАРП). Калектыў песні і танца даў 9 канцэртаў, а эстрада «Лявоніха» — 194. Купленай кінаперасоўкай паказана 42 савецкія фільмы ў памяшканні ГП і на беларускіх вёсках. Адбыліся два семінары літаратурнага аб'яднання, на якіх чыталіся і абмяркоўваліся творы аўтараў. Члены літаратурнага аб'яднання выступалі на 52 аўтарскіх спатканнях. З аўтобуса ГП на краізнаўчыя экскурсіі скарылася 62 гурткі БГКТ і ўстановы, якія супрацоўнічаюць з беларускім таварыствам. Ва ўсіх аддзелах адбыліся беларускія фестывалі. Праведзены конкурсы на выкананне беларускіх песень.

ТВОРЧЫ ЭКЗАМЕН

Увайшло ўжо ў традыцыю арганізаваць штогод беларускім таварыствам і аддзелаў культуры рад нарадовых павятовых аглядаў, а паліся ваяводскага агляду ма-
стацкай самадзейнасці гурткоў БГКТ. Гэта садзейнічае пашырэнню аматарскага руху ў беларускіх вёсках, стварае жаданне ўдасканаліць культуру ігры на сцэне і ах-

воту змерыцца сіламі з іншымі самадзейнымі калектывамi.

31 сакавіка ў Гайнаўку ў Дом гарняка на ваяводскi агляд прыехала 7 драмгурткоў. Скупава выступала з вадзілем «Прымакі», Зубава і Сяміхочы паказвалі «Міхалку» Леўкі — «Здарэнне на кірмашы», Пянькі — «10 гектараў», Новы Востраў — «Суд» і Паўлы «Мікітаў лапаць».

Драмгурток з Левак заняў першае месца ў аглядзе і выязджаў у Варшаву на цэнтральны агляд драмгурткоў нацыянальных меншасцей у Польшчы. (мх)



«Здарэнне на кірмашы» ў выкананні драмгуртка з Левак (Бельскі павет).

IV З'ЕЗД БГКТ

16 чэрвеня ў Беластоку ў памяшканні ГП адбыўся IV з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства. Справаздачны даклад Галоўнага праўлення БГКТ чытаў яго сакратар Уладзімір Юзвюк. У ім падсумаваны дасягненні і недахопы беларускай арганізацыі за трохгадовы перыяд дзейнасці. У дакладзе становіцца ацэньваюцца публікацыі «Нівы», радыёперадачы на беларускай мове па Беластоцкім радыё, таксама гутаркі, якія перадаюцца па радыёвузлах. За апошнюю кадэнцыю па радыёвузлах у Бельску, Гайнаўцы, Дуброве, Крынках, Саколіцы і Сяміцічах прачытана 720 радыёгутарак на розныя тэмы. Сваеобразнай формай прапаганды з'яўляюцца таксама выдавецтвы БГКТ.

У дакладзе падкрэслівалася дасягненні эстраднай групы Галоўнага праўлення, якая за 2,5 гады дала 656 канцэртаў. Аглядала іх 123 596 чалавек, з гэтага ліку блізка 90 тысяч складаюць жыхары вёскі.

— На працягу мінулай трэцяй кадэнцыі, — гаварыў дакладчык, — арганізацыя наша ўзрасла ў два разы. У канцы

красавіка г.г. налічвалася 151 гурток БГКТ, якія аб'ядноўваюць у сваіх радах 4465 членаў. Працавала 8 аддзелаў БГКТ. З узростам ролі БГКТ і павелічэння ліку членаў і актыву існуюць патрэбы далейшай арганізацыйнай разбудовы таварыства на Беласточчыне і ў іншых ваяводствах Польшчы.

— Пры нашым таварыстве працуе тры грамадскія камісіі: прапаганды, асветы і культуры і два творчыя аб'яднанні (літаратурнае «Белавежа» і навуковы гурток). Камісіі належна спаўняюць свае заданні, а творчыя аб'яднанні маюць вялікія ўжо дасягненні.



Прэзідыум з'езда. Выступае з прамовай дырэктар адміністрацыйнага дэпартамента Міністэрства ўнутраных спраў Генрых Хмялеўскі.

Дакладчык паведаміў дэлегатаў аб сітуацыі ў школьніцтве. На Беласточчыне працуе 143 пачатковыя школы, у якіх беларуская мова навучаецца як прадмет і 35 школ з беларускай мовай навучання. Разам роднай мовы ў пачатковых школах навучаецца 10,8 тысяч дзяцей. Беларуская мова навучаецца таксама ў агульнаадукацыйных ліцэях у Бельску, Гайнаўцы, Міхалове, у педагагічным ліцэі ў Бельску, Настаўніцкай студыі № 1 у Беластоку і Кафедры беларускай філалогіі Варшаўскага ўніверсітэта.

БГКТ рэалізавала заклік папулярызацыі асветы сярод дарослага насельніцтва праз арганізаванне розных курсаў, сталых лектарскіх пунктаў. Кожны год пры дапамозе нашага



У мастацкай частцы выступіла «Лівоніха».

актыву арганізавалася 25—30 курсаў беларускай мовы, крою і шыцця, гатавання, матацыклавых, людových універсітэтаў і г. д. Фінансаваныя яны былі інспектаратам асветы, Лігай жанчын і іншымі арганізацыямі.

Іншай формай асветы дарослых былі гутаркі, якія праводзіліся лектарамі ГП БГКТ на розныя тэмы. Праведзена за справаздачны перыяд 262 гутаркі грамадска і 65 гутарак адплатна. Усе гутаркі выклікалі вялікае зацікаўленне з боку насельніцтва.

Пасля шырокай і плённай дыскусіі з'езд выбраў новыя ўлады — Галоўнае праўленне і рэвізійную камісію. Пасля заканчэння работы з'езда адбылося першае пленарнае пасяджэнне ГП БГКТ, якое выбрала прэзідыум ГП БГКТ. Старшынёю ГП выбраны Міхась Хмялеўскі, а сакратаром паўторна Уладзімір Юзвюк. (мх)

РАЗВІТАЛЬНАЯ ВЕЧАРЫНА

У канцы ліпеня ГП БГКТ наладзіла сустрэчу з настаўнікамі, якія завочна вывучалі беларускую мову ў Беластоцкай настаўніцкай студыі. Мэта сустрэчы — навізаць цеснае супрацоўніцтва з на-

стаўнікамі, якія вучаць дзяцей беларускай мовы. Быў гэта адначасова развітальны вечар з выкладчыкамі на завочнай студыі, якія на сесію прыехалі з Мінскага Беларускага дзяржаўнага ўніверсітэ-

та — дацэнтам Ольгай Васільеўнай Казловай і дацэнтам Львом Міхайлавічам Шакуном.

Вечарына з ганаровымі гасцямі з Мінска прайшла не-

звычайна ў сардэчнай і цёплай атмасферы.



З развітальнаю прамоваю выступае Ольга Васільеўна Казлова. Побач Іван Радзюкевіч.



Леў Міхайлавіч Шакун глядзіць на падарунак (зубр у разьбе).

КОНКУРС СПЕВАКОЎ

У кастрычніку ГП БГКТ правяло конкурс на найлепш выкананую беларускую песню. У конкурсе ўзяло ўдзел 13 асоб. Лепшыя выканаўцы песень выступілі ў мастацкай частцы ўрачыстага пасяджэння Кастрычніцкай рэвалюцыі.

Першае месца ў конкурсе занялі сёстры Люба Гаўрылюк і Жэня Мінько з Трасцянкі, Гайнаўскі павет.



ГОСПІ З РУСКАГА ТАВАРЫСТВА

У рамках культурнага абмену паміж БГКТ і Рускім культурна - асветным таварыствам 3 лістапада 1963 года адбыўся ў памяшканні ГП канцэрт рускіх аматараў. Гледачам асабліва спадабалася інсцэніроўка твораў класіка рускай літаратуры Антона Чэхава ў выкананні аматараў тэатральнага гуртка.

У другую частку ўвайшлі рускія і польскія вершы і песні. (мх)

Выступае спявак - аматар Яраслаў Шульц.



СУСТРЭЧА З ВЕТЭРАНАМІ КАСТРЫЧНІКА

У сувязі з 46-ай гадавінай Вялікай Кастрычніцкай рэвалюцыі Галоўнае праўленне БГКТ наладзіла 3 лістапада ў сваім



Пасярэдзіне Ісаак Данілеўскі.



У мастацкай частцы ўрачыстай акадэміі з нагоды 46 гадавіны Вялікай Кастрычніцкай сацыялістычнай рэвалюцыі выступіў харавы калектыў ГП пад мастацкім кіраўніцтвам Мечыслава Шыманскага.

памяшканні сустрэчу з былымі ўдзельнікамі гэтых векапомных дзён. Прыехалі ветэраны кастрычніка з Гайнаўскага і Беластоцкага павеатаў, прышлі з горада Беластока. Прысутнічалі таксама прадстаўнікі савецкай арміі.

У вельмі цёплай і сардэчнай атмасферы прысутныя прыселі за сталом над кубкам чорнай кавы. Пачаліся незабыўныя ўспаміны.

Вайна закінула Ісаака Данілеўскага, жыхара Гайнаўскай вёскі Навакорніна, аж на далёкі Урал. На пачатку рэвалюцыі ён уступае ў рады Чырвонай Арміі.

Хто ж з нас не чытаў, не захапляўся кніжкаю аб легендарным савецкім палкаводцы Чапаеве? Ісаак Данілеўскі прайшоў увесь гераічны шлях менавіта ў 25-ай стралкавой дывізіі імя Чапаева. Працуючы сувязным у штабе дывізіі, ён часта асабіста сустракаўся і гутарыў з Чапаевым, Фурманавым і другімі камандзірамі дывізіі. Быў нават сведкам смерці Чапаева на рацэ Урал.

Вельмі цікава расказвалі аб сваім удзеле ў рэвалюцыі: жыхар вёскі Азяблы ў Беластоцкім павеце, былы чэкіст Павел Храноўскі; жыхар вёскі Новаберазова ў Гайнаўскім павеце — былы старшыня палкавога камітэта і камісар палка Іван Кальшко; жыхар Беластока, удзельнік рэвалюцыі ў Петраградзе Васіль Ляшчынскі і другія ветэраны.

Сардэчная размова і ўспаміны працягваліся да позніх гадзін вечара. (В. Б.)



Прэзідыум пленума. Злева направа: А. Рошка, М. Хмялеўскі, Ул. Юзвюк, В. Мікульскі — сакратар КВ ПАРП, Г. Валкавыцкі і Ч. Карэка.

ПЛЕНУМ ГП

17 лістапада адбыўся пленум ГП БГКТ. Былі абмеркаваны на ім усе тэмы дзялянкі працы, якія маюць уплыў на выхаванне чалавека і фармаванне светапогляду. Многа ўвагі ўдзялялася беларускаму рэпертуару для драмгурткоў а таксама публікацыям «Нівы». Удзельнікі дыскусіі падкрэслівалі вялікае значэнне ў гэтай справе пастаноў XIII Пленума ЦК ПАРП.

4-ДЗЁННЫ КУРС

У першай палавіне снежня Галоўнае праўленне арганізавала два чатырохдзённыя курсы для членаў БГКТ. Першы курс быў для членаў праўлення гурткоў.

Мэтай другога курса было

азнаямленне з элементарнымі ведамі ў напрамку разгорвання мастацкай самадзейнасці. Удзельнікі гэтага курса пад кіраўніцтвам членаў эстрады «Лявоніха» разучвалі песні і танцы.



Удзельнікі курса.

БЕЛЫЯ НЯДЗЕЛІ

Усё больш ажыўленым становіцца сяброўскае супрацоўніцтва БГКТ са студэнтамі Беластоцкай Медыцынскай Акадэміі (інстытута). Студэнты ў асноўным з апошняга курса актыўна ўключаюцца ў працу нашага таварыства: чытаюць у вясковых лектарскіх пунктах БГКТ лекцыі на медыцынскія тэмы, выязджаюць на т. зв. «Белыя нядзелі» — удзяляючы лекарскіх парад насельніцтву адлеглых вёсак ад пунктаў аховы здароўя.

Белая нядзеля ў Трасцяныцы.



ВЕЧАР НЕЗАБЫЎНЫХ МЕЛОДЫЙ...

...у выкананні Беластоцкага дзяржаўнага сімфанічнага аркестра адбыўся 9 снежня 1963 года ў канцэртнай зале Галоўнага праўлення БГКТ. З Беластоцкім сімфанічным аркестрам выступілі артысты з Варшавы Зофія Люпертовіч і Рабэрт Млынскі, а таксама майстар трубкі Рамуальд Нарушэвіч.



Сімфанічны аркестр у памяшканні ГП.

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП

На 9-ці пасяджэннях прэзідыума ГП абмяркоўваліся справы дзейнасці БГКТ. Многа ўвагі было прысвечана 45-годдзю БССР і 20-годдзю народнай Польшчы. Адбываліся даклады, гутаркі, сходы прысвечаныя гэтым гадавінам. 26 красавіка адбылося пленарнае пасяджэнне прысвечанае 20-тай гадавіне народнай Польшчы. Навязана цесны кантакт з Домам савецкай культуры ў Варшаве. Прачытана па радыёвузлах 157 гутарак, змест большасці якіх быў прысвечаны 45 гадавіне БССР і 20 гадавіне Польшчы. Перад кінасеансамі было праведзена 178 гутарак і прачытана 87 дакладаў. Выданы зборнік вершаў Янкі Анісэровіча (Яша Бурш). Аддзеламі было арганізавана 5 фэстаў 20-цігоддзя Польшчы, на якіх папулярывалася беларуская культура.

Адбыліся дзве канферэнцыі настаўнікаў беларускіх школ — адна ў Барысаўцы на Гайнаўшчыне для пачатковых школ, другая для настаўнікаў сярэдніх школ у Гайнаўцы. Арганізавана 41 краязнаўчую экскурсію ў асноўным для гурткоў БГКТ. Супольна з кураторыяй праведзена дэкламатарскі конкурс, які быў папярэджаны павятовымі конкурсамі. 15 лістапада адбылося пленум ГП прысвечанае культурна-асветнай дзейнасці ГП. Праведзены двухднёвы семінар літаратурнага аб'яднання «Белавежа», на якім абмяркоўваліся творы да літаратурнага альманаха. Адбылося 107 кінасеансаў савецкіх фільмаў, перад якімі актыўна БГКТ на вёсках выступаў з гутаркамі з жыхарамі БГКТ, БССР, на міжнародныя тэмы і іншыя. Эстрада «Лявоніха» дала 187 канцэртаў, а калектывы песні і танца 9 канцэртаў. Праведзена два чатырохдзённыя асветна-артыстычныя курсы для кіраўнікоў аматарскіх калектываў. У 1963 годзе запачаткаваны збор экспанатаў матэрыяльнай культуры паўднёва-ўсходняй часткі Беласточчыны і запісванне фальклорных песень. (мх)

Стараннем Ваяводскага праўлення ТППР і Галоўнага праўлення БГКТ, 17 студзеня г.г. у Беластоку адбыўся семінар прысвечаны 45-ай гадавіне заснавання Беларускай Сацыялістычнай дзяржаўнасці.

Даклад аб гістарычным шляху Беларускай Рэспублікі прачытаў інструктар Галоўнага праўлення БГКТ Віктар Швед. Дакладчык шырока



Віктар Швед.

прадставіў умовы, у якіх нараджалася першая ў гісторыі беларускага народа дзяржава. Асабліва шмат увагі прысвядзіў Віктар Швед росквіту беларускай эканомікі і культуры за гады савецкай улады. Цікавымі лікамі і прыкладамі прайлюстраваў ён буйнае жыццё нашага ўсходняга суседа, яго шпаркі марш побач другіх сацыялістычных дзяржаў да новых перамог. У дакладзе было таксама закранута пытанне гаспадарчых сувязей паміж Польшчай і БССР.

Аб польска-беларускіх культурных сувязях гаварыў член ГП БГКТ Аляксандр Баршчэўскі. З яго цікавага і змястоўнага дакладу прысутныя даведаліся аб шчыльных узаемаадносінах паміж дзвюма братнімі славянскімі культурамі. Асаблівую ўвагу дакладчык удзяліў справам пасляваенных сувязей у галіне навукі, літаратуры, музыкі, тэатра і мастацтва. Адзначым, што ГП ТППР апублікавала даклад А. Баршчэўскага асобным выданнем. Гэтая навінка каштоўная асабліва таму, што яна з'яўлялася ўпершыню ў папулярыватарскай дзейнасці ТППР.

У 100 ГАДАВІНУ СМЕРЦІ К. КАЛІНОЎСКАГА

У сотую гадавіну з дня смерці Кастуся Каліноўскага 21 сакавіка 1964 года Галоўнае праўленне арганізавала ўрачыстае пасяджэнне (акадэмію). З дакладам аб жыцці і дзейнасці Кастуся Каліноўскага выступілі члены ГП Францішак Берніковіч і паэт Алесь Барскі. Інструктар ГП Вера Юшчук прачытала верш і ўрывак з апавядання Алеся Барскага аб К. Каліноўскім. У мастацкай частцы выступіў драмгурток з вёскі Паўлы з пастаноўкай «Валодзін галыштук» — К. Крапівы і «Боты». (мх)



На сцэне паўлаўскі драмгурток.

ПЛЕНУМ XX-ГОДДЗЯ ПНР

26 красавіка адбылося пленарнае пасяджэнне Галоўнага праўлення БГКТ, прысвечанае адзначэнню XX-годдзя Польскай Народнай Рэспублікі. Між іншым пленум накіраваў ліст на адрас ЦК ПАРП, у якім выражае ўдзячнасць партыі і на-

роднай уладзе за стварэнне ўмоў усебаковага развіцця беларускай меншасці ў Польшчы. (мх)



Прэзідыум пленума XX-годдзя ПНР.

ЛПЕНЬСКАЕ СВЯТА

19. VII. 1964 года ў памяшканні ГП БГКТ адбылася ўрачыстая вечарына прысвечаная 20 гадавіне народнай Польшчы. Прысутнічалі на ёй выкладчыкі беларускай мовы з Мінска: Ніл Гілевіч і Павел Шуба са студэнтамі з беларускай філалогіі II курса Завочнай настаўніцкай студыі ў Беластоку. (мх)



Ніл Гілевіч і Павел Шуба сярод удзельнікаў вечарыны.

Калі стала вядома, што беларускі народны ансамбль песні і танца з Мінска пад мастацкім кіраўніцтвам народнага артыста Генадзя Іванавіча Цітовіча прыедзе ў Беласток, сталі наведваць людзі «Ніву» і ГП БГКТ з просьбай дапамагчы купіць білеты. Зацікаўленне было надзвычай вялікае. Асабліва з боку беларускага насельніцтва як з Беластока, так і з вёсак. Літаральна за некалькі дзён білетаў нельга было ўжо дастаць. І вось савецкія артысты на сцэне тэатра імя Аляксандра Вянгеркі. Выступаюць салісты, выступаюць жаночая і мужчынская групы, а таксама балет ансамбля. Бурнымі апладысмантамі ўзнагароджваюць прысутныя кожны нумар праграмы.



Госці з Мінска ў памяшканні ГП БГКТ.

А некаторыя песні і танцы на жаданне гледачоў артысты выконваюць па два разы. Высокім мастацкім узроўнем, багатай праграмай, прыгожымі народнымі ўборамі беларускі ансамбль песні і танца ачараваў гледачоў.

Увесь ансамбль песні і танца пасля аднаго з канцэртаў наведваў памяшканне ГП БГКТ. Тут пры чорнай каве адбылася сустрэча ўдзельнікаў ансамбля з актывам БГКТ.

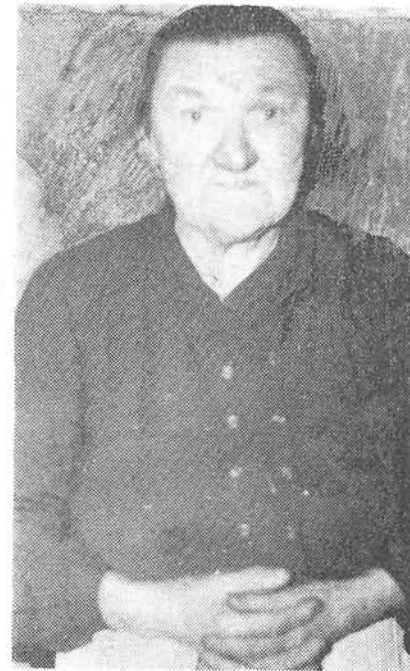
Тут жа на сцэне таварыства адбыўся невялікі канцэрт. Харавыя групы: жаночая і мужчынская, а таксама паасобныя артысты з ансамбля Г. І. Цітовіча выканалі па некалькі песень. Выступалі таксама з песнямі члены эстрады «Лявоніха».

Ад імя ўсяго ансамбля песні і танца Генадзь Іванавіч Цітовіч пераказаў таварыству шмат цікавых кніжак і грамплацінак. Прадстаўнікі ГП са свайго боку ўручылі гасцям некалькі камплектаў кніжных выданняў таварыства. (мх)

З'езды і пленумы БГКТ забавязваюць Галоўнае праўленне да збірання і апрацоўвання беларускага фальклору на Беласточчыне. У гэтай дзялянцы ўжо многа зроблена. Запісана і апрацавана шмат твораў. ГП рыхтуе зборнік народных песень, музыку да якіх апрацоўваюць кампазітары Э. Цюкша і Э. Гойлік.

На здымку мы бачым Агату Карпюк (85 год) з Капітаншчыны, у Гайнаўскім павеце. Без яе не адбываецца ў вёсцы ні вяселле, ні хрысціны, ні гасціны, а нават мярліны. Яна ведае многа, многа старынных песень і з кожнай нагоды спявае ў сваіх аднавяскоўцаў.

Настаўніца беларускай мовы ў Гайнаўцы Насця Майсеня запісала ад Агаты Карпюк 86 песень. Восенню 1964 года наведваў яе сакратар ГП БГКТ Уладзімір Юзвюк з кампазітарам Цюкшай і запісалі на магнітафон мелодыі многіх песень. (мх)



Агата Карпюк з Капітаншчыны.

КУРСАНТЫ

У двух 4-охдзённых курсах сарганізаваных у снежні для актыву гурткоў БГКТ узяло ўдзел 69 асоб. Яны пазнаёміліся з заданнямі і формамі дзейнасці гурткоў БГКТ, з палітыкай партыі ў нацыянальных справах, з тым, як павінен працаваць добры гурток на вёсцы.

Цікава прайшлі спатканні: з «Нівай», прадстаўніком Ваяводскага праўлення сельскагаспадарчых гурткоў інжынерам Чэславам Рашкоўскім і прадстаўніком Ваяводскага праўлення Саюза вясковай моладзі Віталісам Ельскім.

Як сцвярджалі многія прадстаўнікі гурткоў БГКТ, пройдзены імі курс дапаможа паставіць дзейнасць гурткоў на вышэйшы ўзровень. (мх)



Удзельнікі пленума.

ЗАДАННІ НА АСЕННЕ - ЗІМОВЫ ПЕРЫЯД

15 лістапада IV пленум ГП абмяркоўваў рэалізацыю пастаноў IV з'езда БГКТ і накрэсліў заданні па ажыццяўленню дырэктывы IV з'езда Польскай аб'яднанай рабочай партыі, вырашыў накіраваць культурна-асветнай дзейнасці БГКТ на асенне-зімовы перыяд. Былі прыдзелены таксама канкрэтныя абавязкі ўсім членам Галоўнага праўлення. (мх)

ХАРАКТЭРАСТАВЫ РОДНАЙ МОВЫ

У доме сямёра дзяцей засталася,
Нятоплена печка, няма што варыць,
А дзеткі заводзяць, а жонка галосе...
Не йдзі хоць у хату, так цяжынька жыць.

Будзь ласкаў, паночку! Як будзе работа,
Я ўдвое за ласку табе адраблю...
Дай з пудзік, мей літасць над нашай бядаю,
Пазыч, бо ці ж буду я грызці зямлю?

Гэта словы з верша «Град» Янкі Купалы. Удзельніца дэкламатарскага конкурсу Галя Юрчук з пачатковай школы ў Дубінах надзвычай прыгожа, глыбока, хваляюча дэкламавала гэты верш. Яна змагла аддаць увесь вобраз мінулай эпохі буржуазна-памешчыцкага ладу, калі панавала на вёсцы галеча і нэндза.

На сцэну ў памяшканні Галоўнага праўлення разам са школьнікамі пачатковых школ уваходзяць навучэнцы з ліцэяў Міхалова і Бельска. У іх выкананні знайшліся творы Максіма Багдановіча, Янкі Купалы, Якуба Коласа, Максіма Танка, Міхася Лынькова, Аркадзя Куляшова і іншых пісьменнікаў Савецкай Беларусі.

Многія школьнікі выступалі з вершамі нашых маладых беларускіх літаратараў у Польшчы, згуртаваных у літаратурным аб'яднанні «Белавежа». Люцына Амільянчук з Залук чытала верш Віктара Шведа «Ніколі больш вайны». Высока ацаніла журы супольнае выступленне школьнікаў з Паўлаў з паэмай Алеся Барскага «Мікола».

Усе вучні, якія прыехалі ў Беласток, паказалі высокі дэкламатарскі ўзровень, высокую культуру слова.

Цэнтральны агляд у Беластоку быў папярэджаны дэкламатарскім конкурсам у школах, а потым у наветах.

Беларускі конкурс, які быў сарганізаваны Кураторыяй асветы і Галоўным праўленнем беларускага таварыства, быў вельмі ўданы. У Беласток прыехала 82 дэкламатары з пачатковых і сярэдніх школ, у якіх навучаецца беларуская мова. (мх)



Галя Юрчук з Дубін.

150 ГАДАВІНА Т. ШАЎЧЭНКІ

У сувязі з 150-ай гадавінай з дня нараджэння вялікага украінскага паэта Тараса Шаўчэнкі 29 лютага 1964 года ў памяшканні ГП БГКТ адбыўся ўрачысты вечар. Аб жыцці і творчасці Т. Шаўчэнкі расказаў прысутным паэт Алесь Барскі. Віктар Швед прачытаў свой верш, напісаны з нагоды вялікай гадавіны. Пасля прысутным быў паказан савецкі фільм. (мх)

Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ

У 1965 годзе многа ўвагі ўдзялялася арганізаваўму музея матэрыяльнай культуры паўднёва-ўсходняй часткі Беларасточчыны. У гэтай справе адбылося супольнае пасяджэнне Прэзідыума ГП з кіраўніцтвам ГС у Белаавежы адносна арганізаваўму часовага музея. Было вырашана, што ГС у Белаавежы дасць будынак, а БГКТ падрыхтуе экспанаты музея.

У лютым вышаў з друку беларускі календар на 1965 год.

19 сакавіка адбыўся тысячны канцэрт эстрады «Лявоніха».

21 сакавіка адбыўся пленум ГП прысвечаны заданням БГКТ у выбарчай кампаніі ў Сейм і рады нарадовыя.

Многа ўвагі прысвядзілася падрыхтоўцы да друку літаратурнага альманаха і календара на 1966 год.

У сувязі з 40-ой гадавінай заснаваўму Беларускай сялянска-работніцкай Грамады 26 чэрвеня ГП БГКТ супольна з КВ ПАРП арганізавала ўрачыстую акадэмію, а супольна з музеем рэвалюцыйнага руху 18 верасня была адкрыта выстаўка прысвечана дзейнасці Грамады. 27 кастрычніка адбылася навукова-папулярная сесія аб Грамадзе, арганізатарамі якой былі ГП БГКТ і КВ ПАРП.

У чэрвені быў праведзены агляд мастацкіх драмгурткоў з беларускім рэпертуарам і конкурс на выкананне беларускіх песень.

У канцы верасня рэарганізаваная эстрада «Лявоніха» пачала канцэрты.

У кастрычніку па запрашэнню ГП БГКТ прыехаў з Прагі на Беларасточчыну вядомы беларускі спявак Міхась Забэйда-Суміцкі, які выступіў з 7 канцэртамі, а таксама наіграў 11 беларускіх песень на грампласцінку.

24 кастрычніка адбылося пленарнае пасяджэнне ГП БГКТ, на якім абмяркоўваліся справы звязаныя са справаздачна-выбарчай кампаніяй на V з'езд БГКТ, а таксама адносна паліпшэння дзейнасці беларускай арганізацыі.

Пачынаючы ад лістапада на старонках «Нівы» пачалася перад'ездаўская дыскусія накіраваная на ўдасканаленне працы БГКТ. У снежні выйшаў з друку літаратурны альманах і беларускі календар на 1966 год, які прысвечаны X гадавіне БГКТ. (мх)

НАВУКОВЫ ГУРТОК ПРЫ ГП БГКТ

Думкі аб стварэнні пры ГП БГКТ навуковага гуртка існавалі ад пачатку дзейнасці беларускага таварыства. Не было кадраў, не хапала арганізатара. Аднак вакол «Нівы» пачалі гуртавацца маладыя навукоўцы, настаўнікі сярэдніх школ, студэнты, якія прадстаўлялі цікавыя ўласныя даследчыя працы тэматычна звязаныя з напрамкамі дзейнасці БГКТ. З увагі на іх аб'ём змяшчаць у «Ніве» было нельга, і таму галоўны рэдактар тав. Г. Валкавыцкі запрапанаваў арганізаваць дыскусійны гурток. Першае пасяджэнне маладых навукоўцаў адбылося ў 1958 годзе. Былі абмеркаваны напрамкі працы. Адказным сакратаром выбрана мгр М. Якубюк. Але гурток гэты працаваў слаба, і таму праз год, а менавіта 19. IX. 1959 года было склікана чарговае пасяджэнне, на якім фактычна заснавана навуковы гурток, прыдзелена паасобным аўтарам тэмы, апрацавана графік пасяджэнняў гуртка.

У склад навуковага гуртка ўвайшлі пачынаючыя навукоўцы з Беларасточчыны, Варшавы, Лодзі і іншых гарадоў, якія былі звязаны з дзейнасцю БГКТ. Незалежна ад гэтага да ўдзелу ў распрацаванні тэм былі прыцягнуты вядомыя ў нашай краіне навукоўцы, які гісторыкі: дац. М. Кожэц і др Е. Вішнеўскі, эканаміст др Э. Тамашэўскі і некаторыя іншыя.

Вынікам працы членаў гуртка 25. XI. 1960 г. вышаў першы навуковы літаратурны зборнік спалучаны з календаром на 1961 год у тыражы 6 000 экзэмпляраў (304 старонкі друку). Спалучэнне календара з навуковымі працамі дазволіла масава раскальпартаваць публікацыю сярод вясковага насельніцтва і інтэлігенцыі.

У 1961 годзе пачалася падрыхтоўка наступнага навуковага зборніка. Да гэтай публікацыі тэматыка прац дабіралася больш старанна. У канцы 1964 года кніжка пад назвай «Навуковы зборнік» выйшла з друку. У ёй змешчаны былі працы аб засяленні Падляшша — Е. Вішнеўскага, аб беларускім нацыянальным руху — В. Склубоўскага, студзенскім паўстанні — Ф. Берніковіча, барацьбе гарбароў у Крынках — П. Корца, Грамадзе і газеце «Наш сцяг» — А. Бэргман, польскіх вершах Я. Купалы, — А. Баршчэўскага, Гайнаўскім павеце — Ул.



Члены навуковага гуртка Аляксандр Баршчэўскі, Уладзімір Юзюк (старшыня), Мар'ян Пецюкевіч, Францішак Берніковіч і збоку Мацей Канапакі.

Юзюка, Матэрыяльнай культуры Саколышчыны — М. Пецюкевіча, польска-беларускіх лексічных узаемасувязях — Л. Раманюк і дыхальных пігментах — Б. Чэчугі.

Шматлікія рэцэнзіі ў друку сведчаць аб вартасці гэтай публікацыі. Гораца сустрэлі нашу чарговую кніжку ў БССР.

Члены навуковага гуртка далей працягваюць працу. Яны рыхтуюць трэці навуковы зборнік. У яго ўвойдзе праблематыка 20-цігоддзя Польскай Народнай Рэспублікі, новыя матэрыялы аб Грамадзе, распрацоўкі мясцовага фальклору. (ую)

МУЗЕЙ БГКТ

Ужо I з'езд БГКТ вынес пастанову адносна пабудовы музея беларускай матэрыяльнай культуры Беласточчыны.

Пастановы IV з'езда БГКТ забавязалі Галоўнае праўленне збіраць экспанаты матэрыяльнай культуры паўднёва-ўсходняй часткі Беласточчыны.

Наша таварыства сабрала ўжо многа гэтых экспанатаў. І так, напрыклад, шмат ужо ёсць розных прылад працы як: саха, воз на драўляных восях, ярмо да арання каровамі, драўляны манеж (керат), малатарня, ступа і шмат іншых. Нямала падрыхтавана саматужных тканей: саяны, плахты, дываны, багата будуць прадстаўляцца вырабы з гліны. Экспанаты пачаткова знаходзіліся ў памяшканні ГС-у ў Нараўцы. У меся-

цы лютым 1965 года адбылося ў Белавежы супольнае пасяджэнне прэзідыума ГП з кіраўніцтвам белавежскага ГС-у ў справе арганізавання тымчасовага музея ў памяшканні ГС-у. Будынак ужо ўнутры адноўлены. Гайнаўскія мастакі Віктар Кабац і Анатоль Корзун шмат грамадска працуюць, каб усе экспанаты прыгожа размясціць у тымчасовым музеі.

Ідуць намаганні, каб адкрыць музей да V з'езда БГКТ. Адначасова робяцца захады адносна пабудовы спецыяльнага памяшкання для музея. Пакліканы камітэт пабудовы. У склад яго ўваходзяць, між іншым, такія грамадскія дзеячы як: Мікола Самоцік, Кастусь Майсёня, Мікола Шпаковіч, Аляксандр Вашкевіч, Мікола Седунь і іншыя. (мх)

ВЕЧАР «ЛЯВОНІХІ»

Ужо 1000 канцэртаў дала папулярная ў нашым ваяводстве «Лявоніха». Тысячны канцэрт «Лявоніха» адбыўся 19 сакавіка ў памяшканні Галоўнага праўлення Беларускага грамадска-культурнага таварыства. На канцэрт прыйшло мноства энтузіястаў «Лявоніхі» — жыхараў горада Беластока, а таксама запрошаныя госці на чале з прадстаўніком Міністэрства унутраных спраў Вацлавам Рукатам. На тысячны канцэрт прыбылі таксама былыя працаўнікі таварыства, між іншым былы яго



На сцэне балетная пара.



Члены «Лявоніхі».

старшыня Уладзімір Станкевіч і былыя працаўнікі «Лявоніхі»: Васіль Кардзюкевіч, Чэся Сілівончук і іншыя. Некаторыя з іх выканалі па некалькі добра вядомых старым гледачам «Лявоніхі» нумараў.

Гледачы ўспрымалі юбілейны канцэрт «Лявоніхі» з захапленнем, узнагароджваючы паасобныя нумары бурнымі апладысмантамі.

Пасля канцэрта адбылася ў памяшканні Галоўнага праўлення БГКТ сустрэча актуальных і былых працаўнікоў «Лявоніхі» з уладамі таварыства і запрошанымі гасцямі. Працаўнікі эстрады ўспаміналі першыя гады працы эстрады, выконвалі больш ц.кавыя нумары свайго рэпертуару, госці жадалі дачакаць дзвюхтысячнага канцэрта. Сакратар ГП БГКТ Уладзімір Юзвюк уручыў усім, хто працаваў і працуе ў «Лявонісе», падарункі ад таварыства, а найбольш заслужаным салістам — грашовыя ўзнагароды. Пад канец сустрэча пераўтварылася ў танцавальную вечарыну працаўнікоў эстрады і запрошаных гасцей. (п)



Прэзідыум акадэміі.

СВЯТА ГРАМАДЫ

Галоўнае праўленне БГКТ супольна з аддзелам прапаганды Ваяводскага камітэта ПАРП у Беластоку 26 чэрвеня арганізавала ў кінатэатры прафсаюзаў урачыстае пасяджэнне (акадэмію) прысвечанае 40-годдзю заснавання Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. Сярод прысутных старыя рэвалюцыйныя дзеячы, члены КПП, КПЗБ, Грамады і НПХ. Для іх гэта святкаванне мела асаблівае значэнне. Гэта ж ушаноўваецца іх змаганні. Яны жывыя сведкі гісторыі. Ды яшчэ якія. Сярод нас адны з заснавальнікаў НПХ (Незалежнай сялянскай партыі) Альфрэд Фідаркевіч і Фелікс Галавач. Яны, разам са сваёй партыяй, плячо ў плячо ішлі з Грамадой. Яны цесна супрацоўнічалі з Тарашкевічам, Рак-Міхайлоўскім, Мятлой, Валашыным. А Галавач разам з беларускімі пасламі апынуўся ў турме.

На ўрачыстасць прыбылі таксама член ЦК, І сакратар ВК ПАРП, пасол у Сейм А. Лашэвіч; старшыня прэзідыума ВРН С. Жмійка; намеснік старшыні ВК ЗСЛь Я. Чапля; старшыня ВК СДР Бартнік; члены Бюро ВК ПАРП Ю. Зюлкоўскі, В. Юшкевіч, К. Мадэлеўскі і Ю. Трусевіч. Тут і былыя кіруючыя работнікі КПЗБ — Ю. Кавальскі (цяпер намеснік дырэктара інстытута гісторыі партыі пры ЦК ПАРП), С. Малько (цяпер генерал), Г. Смоляр (цяпер журналіст) і іншыя.

Урачыстую акадэмію адкрыў член Бюро ВК ПАРП, І сакратар гарадскога камітэта партыі ў Беластоку Ю. Трусевіч. Ад імя арганізатараў акадэміі — ВК ПАРП і ГП БГКТ — ён

у цёплых словах прывітаў прысутных гасцей і грамадскасць і даў слова дакладчыку.

З дакладам, прысвечаным знамянальнай гадавіне ўзнікнення БСР Грамады, выступіў кіраўнік аддзела прапаганды ВК ПАРП В. Авер. Гаварыў ён аб палітычных, сацыяльных і нацыянальных прычынах узнікнення Грамады, падкрэсліваючы, што рух Грамады з'явіўся ў выніку супольнай барацьбы беларускіх і польскіх рэвалюцыйных партый. У гэтай барацьбе шляхаводнай зоркай было брацтва і інтэрнацыяналізм. У заключэнні дакладчык спыніўся над польска-беларускай дружбай у сённяшнія дні і над палітыкай партыі і ўрада ў адносінах да нацыянальных меншасцей, якія жывуць у ПНР. Сцвердзіў ён, што ідэі, за якія змагаліся польскія і беларускія рэвалюцыянеры, у тым і Грамада, здзейсніліся ў народнай Польшчы, дзе кожны грамадзянін, незалежна ад свайго нацыянальнага паходжання, атрымаў роўныя правы ва ўсіх галінах жыцця. Дакладчык падкрэсліў таксама становішча, актыўныя адносіны беларускай нацыянальнай меншасці да палітыкі партыі і ўрада.

З вялікай увагай выслухалі прысутныя выступленне Альфрэда Фідаркевіча. Ён у сардэчных словах гаварыў аб Грамадзе і грамадаўцах, з якімі яму даводзілася сустракацца, аб вялікім баявым саюзе польскіх і беларускіх рэвалюцыйных мас.



Спалучаныя хоры з Бельска і Градалёў.

У багатай мастацкай частцы выступілі самадзейныя калектывы БГКТ з Градалёў і Бельска, а таксама эстрада «Лявоніха». Вершы прысвечаныя Грамадзе чыталі нашы паэты — А. Барскі і В. Швед.

Урачыстае святкаванне слаўнай Грамады вылілася ў сардэчную дэманстрацыю пачуццяў братэрства. Гэта быў несумненна сур'ёзны ўклад ва ўмацаванне адзінства народа.

ТРЭБА НАМ ПЕСЕНЬ



Не толькі драмгурткі. Цікавай формай аматарскай дзейнасці з'яўляецца песня. Менавіта песня мае сваю непаўторную чароўнасць. У конкурсе на беларускую песню, арганізаваным 27 чэрвеня Галоўным праўленнем БГКТ, узяло ўдзел каля 30 спевакоў. І добра сталася, што ГП звярнула больш увагі на беларускую песню, што выдабывае яе з забыцця.

Удзельніца конкурсу Люба Сахарчук з Паўлаў.

ЦЭНТРАЛЬНЫ АГЛЯД

У чэрвені ГП БГКТ арганізавала ў сваім памяшканні цэнтральны агляд драмгурткоў, якія занялі першыя месцы ў пасабных павятовых аддзелах БГКТ.

Першае месца і першую ўзнагароду (тэлевізар) атрымаў драмгурток з Беявіч (Беластоцкі павет), які выступаў з п'есай Янкі Купалы «Прымакі».



Сцэна з п'есы «Прымакі» — у выкананні аматараў з Белявіч.

ВЕЧАРЫНА ВЫПУСКНІКОЎ

29 ліпеня ў памяшканні Галоўнага праўлення БГКТ адбылася ўрачыстая вечарына выпускнікоў беларускай філалогіі Завочнай настаўніцкай студыі ў Белаастоку. Апошнія 16 ды-

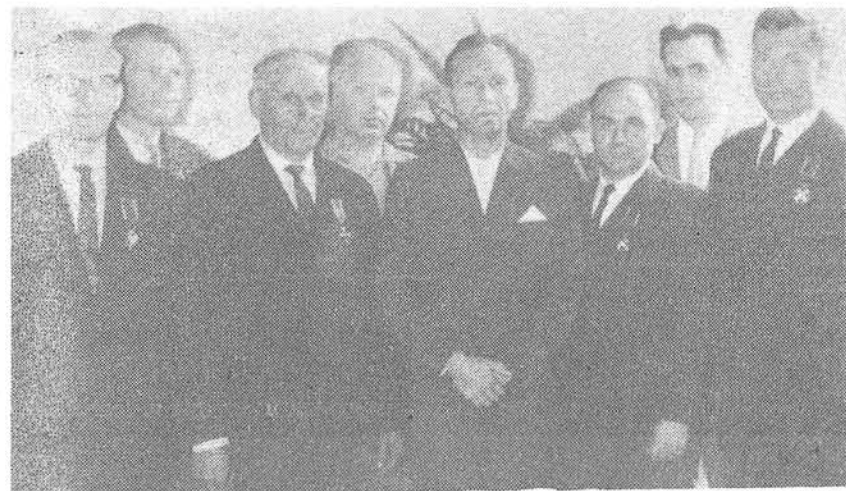


На заканчэнне вечарыны зроблена памятны здымак.

пламантаў разам са сваімі настаўнікамі Ізай Міхальскай, Аляксандрам Баршчэўскім, Лідзіяй Варабей і Любай Раманюк правялі апошні супольны вечар пры традыцыйнай «лямпцы віна».

УЗНАГАРОДЖАННІ ДЗЕЯЧАЎ

30 ліпеня г. г. указам Савета Дзяржавы ПНР вялікая група дзеячаў нацыянальных таварыстваў узнагароджана высокімі дзяржаўнымі ўзнагародамі. З дзеячаў БГКТ узнагароджана:



На нашым здымку паказана група ўзнагароджаных дзеячаў БГКТ з віцэ-міністрам Зыгфрыдам Шнэкам пасля атрымання ўзнагарод. Стаяць (злева направа): Арцём Чыквін, Янка Азябла, Васіль Дзун, член нацыянальнай камісіі пры ЦК ПАРП, Ян Кэндзерскі, віцэ-міністр Зыгфрыд Шнэк, Міхась Хмялеўскі, член нацыянальнай камісіі пры ЦК ПАРП, дырэктар дэпартаменту Міністэрства Культуры Чэслаў Калужны і Георгі Валкавыцкі.

Крыжам Кавалерскім Ордэна Адраджэння Польшчы члена БГКТ Васіля Дзуну. Залатымі крыжамі Заслугі — старшыню ГП БГКТ Міхася Хмялеўскага, сакратара ГП БГКТ Уладзіміра Юзвюка, члена ГП БГКТ, старшыню Белаастоцкага (павет) аддзела Янку Азябл і актывіста Бельскага аддзела Арцёма Чыквіна. Сярэбранымі Крыжамі Заслугі — члена Прэзідыума ГП БГКТ, галоўнага рэдактара «Нівы» Георгія Валкавыцкага, члена ГП БГКТ, інструктара ГП пры Варшаўскім аддзеле Віктара Шведа, інструктара ГП пры Сяміціцкім аддзеле Міхася Вішэнку і актывіста Сакоўскага аддзела Янку Аляксеюка.

Урачыстае ўручэнне ўзнагарод адбылося 31 ліпеня ў Міністэрстве ўнутраных спраў. У прысутнасці членаў Нацыянальнай камісіі пры ЦК ПАРП узнагароды ўручыў старшыня Нацыянальнай камісіі пры ЦК ПАРП віцэ-міністр Зыгфрыд Шнэк.

ГРАМАДА Ў ЗАЛАХ МУЗЕЯ РЭВАЛЮЦЫЙНАГА РУХУ

18 верасня г.г. у Музеі рэвалюцыйнага руху ў Беластоку адкрылася выстаўка п. з. Беларуская сялянска-рабочніцкая Грамада. Арганізатары яе — Галоўнае праўленне БГКТ і Музей рэвалюцыйнага руху ў Беластоку.

Выстаўку адкрыў сакратар ВК ПАРП Вітальд Мікульскі. Выступаючы перад удзельнікамі ўрачыстасці, ён, між іншым, сказаў: «Выстаўка гэта з'яўляецца важным звяном праграмы ўрачыстасцей 40-й гадавіны стварэння Грамады, з'яўляецца сведчаннем нашых



Сакратар ВК ПАРП Вітальд Мікульскі выступае з прамоваю.



Фрагмент выстаўкі.

адносін да месца і ролі, якія ў гісторыі польскага рэвалюцыйнага руху займае гэта арганізацыя». На ўрачыстасць адкрыцця прыбылі шматлікія прадстаўнікі палітычных і адміністрацыйных улад Беласточчыны. Шырока прадстаўлены былі таксама грамадскія і культурныя арганізацыі і ўстановы ваяводства і горада, сярод іх і члены Прэзідыума

ГП БГКТ і актыў нашага та-варыства. Мілымі гасцямі была вялікая група былых капэзэтбоўцаў, якія цяпер жывуць у Варшаве.

Рэдка якая падобнага роду ўрачыстасць у Беластоку мела так шырокае грамадскае прадстаўніцтва. Гэта най-лепш сведчыць аб зацікаўленні выстаўкай.

МІХАСЬ ЗАБЭЙДА - СУМІЦКІ НА БЕЛАСТОЧЧЫНЕ

Па запрашэнню Галоўнага праўлення БГКТ у кастрычніку прыехаў з Прагі (Чэхаславакія. Ён там жыве) на Беласточчыну беларускі спявак Міхась Забэйда - Суміцкі. Міхась Забэйда - Суміцкі з'ява ў беларускай культуры нештодзённая. Вялікі артыст - спявак з вялікай музычнай адукацыяй здабытай



Міхась Забэйда - Суміцкі атрымоўвае кветкі ад школьнікаў Гайнаўкі.



Міхась Забэйда - Суміцкі ў Беластоку сярод знаёмых (пасля выступлення ў кіна-тэатры прафсаюзаў).

Фота: Я. Мазурэк

ў найлепшых мастакоў даваеннай Еўропы, герой найлепшых сцэн сонечнай Італіі і дажджлівага Лондана, Варшавы, Познані. Застаўся ён нязменны, непадкупны найбольшай славе. Застаўся верным найпрыгажэйшым летуценням матчынай песні і матчынай мовы — беларускай. З беларускай вёскі праз свет пранёс тыя ж гукі, спяваў іх сотні разоў, сотням тысяч слухачоў.

У 1963 годзе Міхась Забэйда - Суміцкі канцэртаваў у БССР.

На Беласточчыне вялікі артыст даў 7 канцэртаў: у Міхалове, Бельску, Саколцы, Гайнаўцы, Мілейчыцах і два ў Беластоку.

А вось урывак са справаздачы «Нівы» з канцэрта ў Гарадку («Ніва» 7. XI 1965 г.). На сцэне наш госць - артыст.

— Добры вечар, дарагія суродзічы! Я называюся Міхась Забэйда, а вось мой акампаніятар, чэх па нацыянальнасці, Здэнэк Кожына.

Спявак назваў першую песню і, набраўшы ў грудзі паветра, пачаў свой канцэрт.

Чудоўны голас Міхасы Забэйды - Суміцкага! Пра яго паэты ўжо складалі вершы. І сапраўды трэба быць паэтам, каб пераказаць у словах бяздонную глыбіню і бязмежны дыяпазон

гэтага голаса. Нават тады, калі мастак выконвае песні на незразумелых тут англійскай, нямецкай, італьянскай і чэшскай мовах, голас яго, бы магніт, прыкоўвае ўвагу ўсіх прысутных. Але вось плывуць словы вядомыя ад калыскі. Спявак выконвае беларускія народныя песні і песні беларускіх кампазітараў. У іх адчуваецца неаб'ёмнае раздолле палёў і лугоў Беларусі, дзе салаўі спаборнічаюць з жаўранкамі, дзе звяняць сялянскія косы, дзе пастушок выводзіць сваю сумную думку, дзе маці пахіляецца над калыскай дзіцяці. За гэтыя песні дараць спевака найбольш гучнымі воплескамі. А ён, здаецца, бястомны. Яго голас гучыць цяпер як гоман капрызнай ракі, як рэха буры, як песня вяковых лясоў.

Дзве гадзіны праходзяць амаль непрыкметна. І толькі потым прыходзіць здзіўленне: гэта ж адзін чалавек змог заняць і сэрца, і душу настолькі, насколькі не заўсёды ўдаецца шматлюдным мастацкім ансамблям.

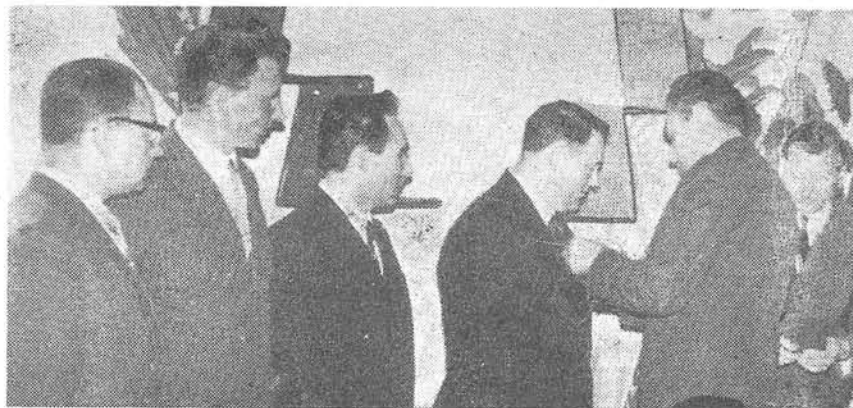
ПЕРАДЗ'ЕЗДАЎСКІ ПЛЕНУМ

24 кастрычніка адбылося пленарнае пасяджэнне Галоўнага праўлення БГКТ прысвечанае падрыхтоўцы да V з'езда таварыства, які адбудзецца ў дзесятую гадавіну яго існавання. На пленуме шырока гаварылася аб арганізацыйных недахопах гуртка на вёсцы. Удзельнікі пленума абмяркоўвалі праграму адзначэння X-ай гадавіны БГКТ і паклікалі дзве камісіі: 1 — арганізацыйную, для падрыхтоўкі з'езда і 2 — статутую, якая ўнясе папраўкі да статута БГКТ.

На пленуме прысутнічаў мгр Людвіг Ахоцкі — намеснік старшыні Беластоцкай ваяводскай рады нарадавай, а таксама прадстаўнікі дзяржаўных і партыйных улад з Беластока



Прэзідыум пленума. З дакладам выступае сакратар ГП БГКТ Ул. Юзвюк, далей П. Пестрак, М. Хмялеўскі, М. Арэхва, В. Рукат, Б. Феданчук.



Намеснік старшыні Ваяводскай рады нарадавай у Беластоку ўручае дзяржаўныя ўзнагароды дзеячам БГКТ, якія не змаглі быць у Варшаве 30 ліпеня ў час урачыстасці ўручэння дзяржаўных узнагарод дзеячам нацыянальных меншасцей у Польшчы. Злева направа: Віктар Швед, Міхась Вішэнка, Янка Аляксеюк, Уладзімір Юзвук, Людвіг Ахоцкі, Мікола Куц.

і Варшавы. Прысутныя гарача віталі з'яўленне ў прэзідыуме пленума вядомага беларускага пісьменніка Піліпа Пестрака і гісторыка Мікалая Арэхва з Мінска, а таксама слаўнага беларускага спевака Міхася Забэйдзі - Суміцкага з Прагі.

СЕСІЯ АБ ГРАМАДЗЕ

27 кастрычніка ў канферэнцыйнай зале Ваяводскага камітэта ПАРП у Беластоку адбылася папулярна - навуковая сесія прысвечана існаванню і дзейнасці Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. Арганізатарамі яе былі: Галоўнае праўленне БГКТ і Ваяводскі камітэт ПАРП у Беластоку. Сесію вёў сакратар прапаганды КВ Вітальд Мікульскі. Дакладчыкамі былі: Я. Кавальскі, намеснік дырэктара Інстытута гісторыі партыі пры ЦК ПАРП і Б. Нікіцюк — журналіст «Газеты Беластоцкай».

Я. Кавальскі найбольш увагі прысвяціў сацыяльным прычынам узнікнення Грамады. Грамаду, — гаварыў ён, — стварыла несамаверная бяда і галечка, якая царыла на тэрыторыі тагачаснай Заходняй Беларусі. У спалучэнні з жорсткім нацыянальным прыгнётам і праграмай насільнай паланізацыі Заходняя Беларусь была жывым вулканам бунту супроць існуючых парадкаў. Так масавага сялянскага руху ў той час не наглядалася ў ніводнай еўрапейскай краіне.



Прэзідыум папулярна - навуковай сесіі.

Б. Нікіцюк гаварыў пра дзейнасць Грамады на Беластоцчыне. З яго даклада шырокай ракой плылі прозвішчы людзей, якія самааддана працавалі для Грамады.

У сесіі ўзялі ўдзел і выступалі з прамовамі запрошаныя госці з БССР: гісторыкі Н. Каменская і М. Арэхва, а таксама пісьменнік П. Пестрак. У міжваенны перыяд М. Арэхва з'яўляўся кіруючым дзеячам ЦК КПЗБ. Шмат разоў сустракаўся ён з заснавальнікамі Б. Тарашкевічам, С. Рак - Міхайлоўскім і П. Мятлой.

У дыскусіі выступала шмат асоб. Многа ўнесена на сесію новага да тых ведаў, якія былі аб Грамадзе да гэтага часу.

На сесію было запрошана шмат грамадаўцаў і гісторыкаў. Толькі з Варшавы прыехала аўтобусам 32 асобы. Выступалі на сесіі дыскутанты на дзвюх мовах (каму на якой было выгадней): на польскай і беларускай. (мх)

АСЕННІЯ ПАДЛІКІ «БЕЛАВЕЖЫ»

31 кастрычніка 1965 года адбыўся семінар Літаратурна-мастацкага аб'яднання «Белавежа».

На семінары прысутнічалі запрошаныя члены карэспандэнцыйнага клуба маладых пісьменнікаў, які існуе пры Беластоцкім ваяводскім праўленні ЗМВ. Сярод іх быў, між іншым, таленавіты паэт Аляксей Казберук.

Асноўнай тэмай семінара была ацэнка творчасці «белавежцаў», якія друкаваліся ў сёлеташніх нумарах «Літаратурнай старонкі». Ацэнку падрыхтаваў Яша Бурш.

У заключэнні семінара вырашана змяніць склад рэдакцыйнай калегіі «Літаратурнай старонкі» і перанесці яе з Варшавы ў Беласток. Новую рэдакцыйную калегію ўзначаліў Янка Чыквін. Апрача яго ў калегію выбрана Сакрата Яновіча і Міколу Лобача.



Члены літаратурнага аб'яднання «Белавежа» ў Белавежы.

Аб БГКТ пісалі

Ożywiona działalność BTS-K

Na posiedzeniu Komisji Ideologicznej KP PZPR w Bielsku Podlaskim, była rozpatrywana działalność Zarządu Oddziału Białoruskiego Towarzystwa Społeczno-Kulturalnego. Komisja zapoznała się i wszechstrannie przedyskutowała działalność kulturalno-oświatową i organizacyjną. Ze szczególnym uznaniem wyrażano się o zespole chóralnym przy Zarządzie Oddziału, który w przeciągu 8-miu miesięcy, od chwili zorganizowania się, wystąpił z 13-tu koncertami w różnych miejscowościach i środowiskach województwa.

Komisja wystąpiła z szeregiem wniosków do Egzekutywy KP w sprawie dalszego usprawnienia pracy Towarzystwa i pomocy ze strony zainteresowanych instytucji i organizacji. Między innymi Komitet Powiatowy oddeleguje do pracy społecznej w BTS-K 15-tu swoich aktywistów, odciążając ich od innych prac. W miesiącu styczniu odbędzie się posiedzenie Egzekutywy KP, która oceni pracę Towarzystwa, a także pomoc udzielaną mu przez inne organizacje i instytucje.

А. К.

„Gazeta Białostocka” 9.XII.1965 r.

АДДЗЕЛЫ БГКТ

*

ГАРАДСКІ АДДЗЕЛ БГКТ У БЕЛАСТОКУ

Гарадскі аддзел БГКТ у Беластоку існуе ад 30 чэрвеня 1958 года. Яго памяшканне знаходзіцца ў будынку Галоўнага праўлення і з гэтай прычыны ў асноўным актыў аддзела ўключаецца амаль ва ўсе мерапрыемствы, якія арганізуе ГП. У Беластоку няма



Сакрат Яновіч — першы старшыня аддзела.



Люба Кулыгіна.

гурткоў БГКТ. Усе члены гуртуюцца ў адным велізарным гуртку ўтвараючы такім чынам аддзел, якім кіруе 15-ціасабовы праўленне і трохасабовы рэвізійны камісія. З пасярод членаў праўлення выбіраецца прэзідыум аддзела з 5-ці чалавек.

У Беластоку своеасаблівая



Уладзімір Куршэль.



Кастусь Масальскі.



Іван Філіпik.

спецыфіка дзейнасці беларускага таварыства. Культурна-асветная праца аддзела заключаецца перш за ўсё на выдабыванні таго, што знамянальнае беларускаму асяроддзю. Да іх, між іншым, належаць вельмі прыхільныя адносіны да СССР і да савецкай культуры. Таму аддзел узяўся за высвятляненне савецкіх фільмаў. Дэманстраваліся яны пачаткова ў памяшканні ГП, а пасля ў клубе гарадскога будаўлянага прадпрыемства (ЗБМ). Да другой палавіны 1963 года ГП закончыла перабудову свайго памяшкання, купіла апаратуру і аддзел

зноў дэманструе савецкія фільмы ў памяшканні ГП. Карыстаюцца яны вялікім поспехам сярод членаў БГКТ. Перад фільмамі адбываюцца 15-20-мінутныя гутаркі на беларускай мове, пераважна на літаратурныя тэмы. Гэтым спосабам адбываецца азнаямленне прысутных з класікамі беларускай літаратуры, азнаямленне з беларускай культурай, з рэвалюцыйнымі традыцыямі беларускага і польскага народаў.

У глядзельнай зале заўсёды знаходзяцца фотавыстаўкі з жыцця Савецкай Беларусі і СССР, якія таксама карыста-

юцца зацікаўленнем. Усё гэта спрыяе да прывівання пачуццяў братэрства і дружбы з савецкімі народамі. Наведванне памяшкання ГП і аддзела, карыстанне з усіх мерапрыемстваў, якія праводзяцца на беларускай мове прычыняюцца да пашаны роднай мовы, да выклікання зацікаўлення да сваёй роднай культуры, развіцця пачуццяў інтэрнацыяналізму і патрыятызму. Актыў аддзела даволі ахвярны, свядомы сваіх заданняў. Бярэ ён удзел у абслугоўванні вясковых гурткоў БГКТ, у распаўсюджванні кніжных выданняў ГП.

Старшынямі аддзела былі: сакрат Яновіч (30. VI. 1958 — 1. VII. 1959 г.), Язэп Маркоўскі (1. VII. 1959 — 6. IX. 1961 года), Лявон Другавец (6. IX. 1961 — 18. XI. 1964 г.), Уладзімір Куршэль (26. XI. 1964 — 11. XII. 1965 г.). Ад 11. XII. 1965 года старшынёю аддзела з'яўляецца Кастусь Масальскі. На 30 верасня 1965 года ў Беластоку налічваецца 833 члены. Аддзел вядзе многагранную дзейнасць, аб якой раскажам у далейшых ілюстраваных здымках інфармацыях. (мх)



Рэвізійная камісія, злева інструктар ГП Іван Дамброўскі, Іван Дзянісюк, Пётр Стасевіч і Хвёдар Садоўскі — старшыня камісіі.



Уладзімір Навіцкі.



Рыгор Скарынкевіч.



Лявон Другавец.

АКАРДЭАЊІСТЫ

З мэтай пашырэння музычнай культуры ўвесь час Гарадскі аддзел БГКТ у Беластоку арганізуе заняткі ігры для дзяцей на музычных інструментах. Пачаткова выкладчыкам музыкі быў Антон Кавальчук.

Ужо праз некалькі год ігры на акардэонах навучае Чэслаў Дзюбінскі. Два разы ў тыдзень блізка 50 дзяцей, (часам больш, часам менш) у памяшканні ГП павышаюць свае веды і выяўляюць таленты. Існуе зараз 4 групы. Па-

ся заканчэння 4-гадавога курса дзеці могуць паступаць у сярэднія музычныя школы.

Дзіцячы калектыў гармані-

стаў пад кіраўніцтвам Чэслава Дзюбінскага параўнальна часта выступае з канцэртамі на розных урачыстасцях БГКТ. (мх)



Падчас заняткаў ігры на акардэонах пад кіраўніцтвам Антона Кавальчука.

ВЫСТАЎКІ

Нашае таварыства атрымоўвае многа здымак з Мінска з Беларускага таварыства культурнай сувязі з заганіцай. Выкарыстоўваюцца яны да выставак з жыцця СССР і БССР, паказваюцца гаспадарчыя і культурныя дасягненні савецкіх народаў.



Выстаўка з жыцця СССР.



Заняткі па гісторыі Беларусі вядзе Вінцук Склубоўскі.

КУРС ДЛЯ АКТИВУ БГКТ

Гарадскі аддзел БГКТ у Белаастоку ў 1961 годзе сарганізаваў курс вывучання выбраных пытанняў з галіны беларускай літаратуры, мовы, гісторыі, геаграфіі. Заняткі адбываліся кожны панядзелак. Слухачамі курса з'яўляюцца актывісты беларускага таварыства.



БАЛЕТНЫ АЧАГ

Ад 1960 года па 1963 Гарадскі аддзел БГКТ арганізаваў для дзяцей актыву БГКТ і сімпатыкаў бясплатныя балетныя курсы. Харэаграфам працаваў Барыс Жэшка.



Алесь Барскі падпісвае кніжкі для моладзі.

АЎТАРСКІЯ СУСТРЭЧЫ

Праўленне аддзела арганізоўвае аўтарскія спаткванні з членамі беларускага літаратурнага аб'яднання «Белавежа», на якіх маладыя літаратары чытаюць свае творы. Пасля кожнай аўтарскай сустрэчы ёсць шмат жадаючых набыць кніжкі з аўтаграфамі аўтараў.

ЗДОРОВЭНЬКІ БУЛЫ

Аддзел супрацоўнічае з рускім таварыствам у Беластоку і Украінскім павятовым аддзелам у Банях Мазурскіх (Гал-



Украінскія самадзейнікі.

дапскі павет). Актыў аддзела БГКТ у 1961 годзе наведаў Бані Мазурскія. 4 лістапада 1962 года украінцы былі гасцямі Гарадскога аддзела БГКТ у Беластоку. Украінскія госці пабывалі ў Трасцянец, Гайнаўскага павета, дзе разам з эстрадай «Лявоніха» далі канцэрт мастацкай самадзейнасці. Жыхары Трасцянікі вельмі гарача сустрэлі мілых гасцей.

А вечарам адбылася сустрэча ў памяшканні Галоўнага праўлення БГКТ. Госці пазнаёміліся з дасягненнямі ў працы Гарадскога аддзела БГКТ у Беластоку, абмяняліся вопытам у дзейнасці таварыстваў.

КОНКУРС НАРОДНАЙ ВЫШЫЎКІ



Выстаўка вышыўкі (фрагмент).

Аддзел часта арганізуе конкурсы. У сакавіку 1962 года быў арганізаваны конкурс на найлепшую беларускую народную вышыўку. На конкурс было прыслана 56 прац. Усе экспанаты вышыўкі можна было пабачыць на выстаўцы ў Беластоцкім клубе міжнароднай кнігі і друку.



КАСТРЫЧНІЦКАЕ СВЯТКАВАННЕ

Аддзел арганізуе спатканні і вечарыны, на якія запрашае прадстаўнікоў савецкай арміі.

З нагоды 46 гадавіны Кастрычніцкай рэвалюцыі (1. XI. 1963 года) адбылося спатканне моладзі членаў БГКТ з савецкімі салдатамі.

БЕЛАРУСКАЯ ЁЛКА

Кожны год Гарадскі аддзел БГКТ арганізуе дзецям членаў беларускага таварыства навагоднюю ёлку. Заўсёды дзеці ве-



Дзед Мароз нясе дзецям падарункі.

села тут гуляюць, танцуюць, спяваюць. А калі Дзед Мароз прынясе падаркі, дык тады кожнае дзіця намагаецца прадэкламаваць верш або заспяваць песню. Пераважна вершы і песні беларускія. Дзеці спецыяльна вучацца іх. Бацькі вельмі задаволеныя, калі добра ўдасца дзецям выступіць, так скажаць з беларускім рэпертуарам.

З НАГОДЫ ГАДАВІНЫ



Выступаюць дзеці акардэаністы — навучэнцы Веслава Дзюбінскага

Аддзел БГКТ у Беластоку арганізоўвае разам з Галоўным праўленнем акадэміі, прысвечаныя дзяржаўным і міжнародным святам. Заўсёды пасля даклада наступae мастацкая частка, на якую складаюцца выступленні калектыву песні і танца або «Лявоніхі», самадзейнікаў з Рускага таварыства ў Беластоку (з якім аддзел супрацоўнічае), або курсантаў – акардэаністаў. Часам наладжваюцца пастаноўкі вясковых драмгурткоў, якія выступаюць з беларускім рэпертуарам.

Цікава прайшла акадэмія 8 сакавіка 1965 года, прысвечаная Міжнароднаму святу жанчын.

ТАНЦАВАЛЬНЫЯ ВЕЧАРЫНЫ

Гарадскі аддзел арганізоўвае для сваіх членаў танцавальныя вечарыны. Неаднойчы перад забавай праводзяцца кароткія гутаркі. Танцы часта пераплятаюцца беларускімі песнямі, конкурсамі на найлепшую танцавальную пару і «Згадуй-згадаю».



На вечарыне.



Удзельнікі экскурсіі наведваюць месцы партызанскіх баёў.

ЭКСКУРСІІ

Заўсёды цікава праходзяць экскурсіі арганізаваныя Гарадскім аддзелам БГКТ. Кожны год арганізуецца некалькі разоў. Да найцікавейшых трэба залічыць экскурсію на магілу паўстанцаў Кастуся Каліноўскага ў Копнай Гары (над Сакалдой), дзе член праўлення Васіль Баршчэўскі расказаў аб паўстанні ў 1863 годзе, у якім Кастусь Каліноўскі са сваім атрадам

змагаўся з царскім самадзяржаўем.

Да слёз хваляючая была экскурсія, шлях партызанскіх баёў у раёне Гарадка, 27 чэрвеня 1965 года. У ёй узяў удзел камандзір штаба партызанскага атрада імя Кастуся Каліноўскага Дзімітр Карповіч. Цікава ён расказваў і паказваў месцы акцыі дыверсіі і сутычак з немцамі. (мх)

КАНФЕРЭНЦЫЯ АДДЗЕЛА

23 мая 1965 года адбылася канферэнцыя Гарадскога аддзела БГКТ у Беластоку, прысвечаная заданням членаў БГКТ падчас выбараў у Сейм і рады нарадовыя. Дакладчык — старшыня аддзела Уладзімір Куршэль заклікаў да выканання патрыятычнага абавязку — аддаць свае галасы за кандыдатаў Фронту адзінства народаў.



Прэзідыум канферэнцыі. Вядзе яе Васіль Баршчэўскі.

БЕЛАСТОЦКІ АДДЗЕЛ БГКТ (павет)

У раёнах Гарадка, Міхалова і Юшкавага Груды найбольш спрыяльныя ўмовы да развіцця культурнай дзейнасці Беларускага грамадска-культурнага таварыства. У гэтых мясцовасцях ужо ў 1954 і 1955 гадах арганізаваліся мастацкія калектывы з беларускім рэпертуарам. Харавы калектыў пад кіраўніцтвам Ніны Мушыńskiej, якая сама складала частушкі,



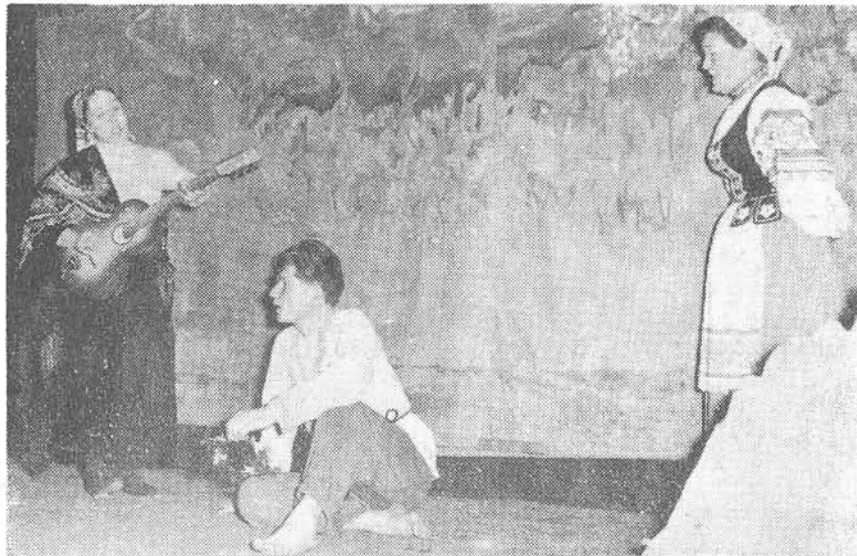
Рыгор Ваўрэнюк, Янка Палоцкі, Янка Азябла — старшыня аддзела і Янка Тарасевіч.

здабыў вялікую славу. Потым існавала там два драмгурткі, адзін пад кіраўніцтвам Ніны Мушыńskiej, другі пад кіраўніцтвам Алеся Дзярманскага. Яшчэ пазней існаваў гурток мандаліністаў і трыо ў асобах Ніны Мушыńskiej, Ніны Цыванюк і Аляксандры Яроцкай.

Вялікім поспехам таксама карыстаўся драмгурток з Новай Волі пад кіраўніцтвам настаўніцы Зоі Алексі, які ў 1955 годзе выступаў з беларускімі п'есамі.

У Гарадку, як у цэнтры беларускай культурнай дзейнасці, у 1956 годзе 10-га чэрвеня адбыўся першы павятовы з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства. 14-цісабывае праўленне асноўную ўвагу звярнула на развіццё мастацкай самадзейнасці. У 1958 годзе справаздачна-выбарчая канферэнцыя БГКТ адбылася ўжо ў Міхалове. З гэтага часу сядзібай Беластоцкага аддзела БГКТ з'яўляецца павятовы дом культуры ў Міхалове. У сваёй дзейнасці аддзел прысвячае многа месца разбудове гурткоў БГКТ, заахвочванню да пастановак твораў беларускіх пісьменнікаў, арганізаваў кулінарных курсаў і курсаў вывучання беларускай літаратуры і гісторыі для дарослых. Былі арганізаваны выстаўкі народнай беларускай вышыўкі, друку, а таксама выстаўкі з жыцця Савецкай Беларусі. Штогод праводзяцца фестывалы і павятовыя агляды мастацкіх калектываў БГКТ.

Зараз у Беластоцкім павеце 19 гурткоў, якія налічваюць 289 членаў (дадзеныя з 31. III. 1965 года).



Сцэна з п'есы «Абразок з вясковага жыцця».

ГАРАДОЦКІЯ ТАЛЕНТЫ

Гарадок славіцца гасціннасцю і таленавітасцю яго жыхараў, якія праяўляюцца перш за ўсё ў мастацкай самадзейнасці. Жаночы харавы калектыў арганізаваўся там ужо на пачатку 1954 года і 8 сакавіка на свята жанчын даў першы канцэрт. Пасля выступу ён у многіх вёсках і мя-



Гарадоцкая харавая група.

стэчках, у эфіры Беластоцкага радыё, браў удзел у пятым сусветным фестывалі моладзі і студэнтаў у Варшаве, у аглядах калектываў мастацкай самадзейнасці. Усюды ён выдзяляўся сваёй арыгінальнасцю, дакладней кажучы сваёй народнасцю. У яго рэпертуары былі народныя песні, і песні складзеныя кіраўніком калектыву Нінай Мушыńskiej. Праз увесь час калектыву дзяліўся на харавую і драматычную секцыю. На працягу свайго больш як 7-мігадовага існавання Гарадоцкі калектыв пад кіраўніцтвам Ніны Мушыńskiej даў 400 выступленняў.

Праз пэўны час у Гарадку існаваў другі драматычны калектыв БГКТ пад кіраўніцтвам Аляксандра Дзерманскага, які таксама карыстаўся вялікім поспехам.

На жаль гэтыя мастацкія калектывы не ўтрымаліся да сёння. Спынілі яны сваю дзейнасць. Заціхла ў Гарадку на нейкі час. Але гэта віда-

вочна для таго, каб ізноў пасля такога быццам адпачынку успыхнуць з новай энергіяй і вярнуць утрачаную славу. Зараз у Гарадку ізноў жанчыны групуюцца ў мастацкія калектывы, зноў паявілася жаданне шырыць роднае слова, родную песню. І я веру, што ў хуткім часе будзе там зноў таленавіты харавы калектыв, якога слава прагрміць па ўсёй Беластоцчыне.

(мх)



Вядомая выканаўца частушак Ніна Палоцкая.

ФЭСТЫН ПЕСНІ І ТАНЦА

Усюды гаварылі аб беларускім таварыстве!

Так можна сказаць аб фестывале песні і танца прысвечанага 5-годдзю БГКТ, які адбыўся ў нядзелю 11. VI. 1961 года ў вёсцы Рыбакі ў Беластоцкім павеце. Перад уваходам на пляцоўку — прыгожая брама, пабудаваная дружнаю моладдзю вёскі. Упрыгожана дзеразою, валожкай і ялінаю. У шчыце брамы партрэты Янкі Купалы, Кандрата Крапівы і Змітрака Бяду-



Перад урачыстасцю.

лі. На ўсю шырыню брамы транспарант з чырвонага палотнішча — «5 год беларускага таварыства». Далей чырвоныя і бела-чырвоныя сцягі. Усюды зеляніна, усё ў зеляніне.

Усюды натоўп народу. Фэстын адкрывае сябра Янка Азябла, вядомы дзеяч БГКТ на тэрыторыі павета. За сталом, засланым народным дываном, займаюць месца мгр Уладзімір Юзвюк — сакратар ГП БГКТ і Юры Міруць — старшыня мясцовай грамадскай рады ў Юшкавым Грудзе.

Пасля прамой гр. гр. Юзвюка і Міруця пачынаецца канцэрт мастацкай самадзейнасці. Выступаюць са сваімі праграмамі мастацкія гурткі з Пянькоў, Міхалова, Баршчэва і Семанюкі.

Адначасова ў зале мясцовай школы адбываецца канцэрт эстрады «Лявоніха».

Шматлікія групы людзей глядзяць у школьным калідоры фотавыстаўку «3 жыцця Савецкай Беларусі». На франтальнай сцяне школы насценгазеты аб беларускім таварыстве і выкананая вучнёўскай рукою насценгазета аб Янку Купалу.



Выступае з прамоваю сакратар ГП БГКТ.

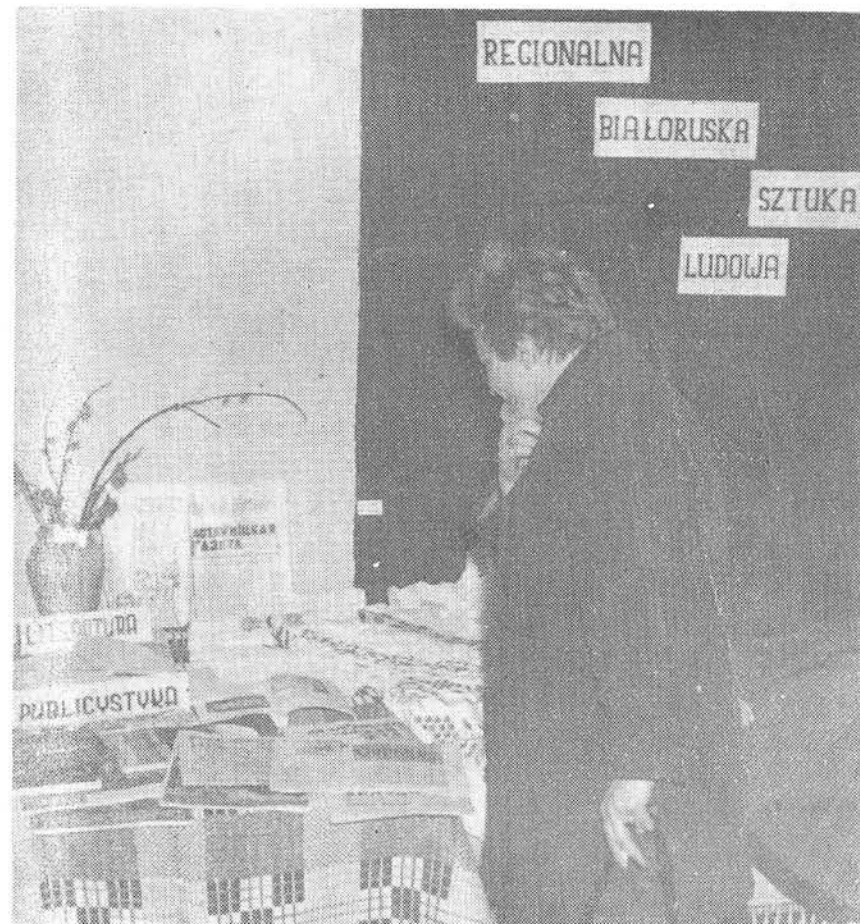
Пагода цудоўная (як на заказ). Штотраў больш прыбывае людзей. У ценю раскладзістых ліп продаж напіткаў і ласунак. Кірмаш беларускай літаратуры.

У нізіне цячэ шпаркая Нарва, і заціх у летняй спёцы альшыновы гай.

Пасля некалькіх гадзін на змену мастацкай самадзейнасці прыходзіць танцавальны аркестр. Народнае гулліне да позняга вечара.



Самадзейнікі з Баршчэва.



Выстаўка беларускіх кніжак, газет і часопісаў.

У ДНІ АСВЕТЫ, КНІЖКІ І ДРУКУ

Аддзел адзначае дні асветы, кніжкі і друку і з гэтай нагоды арганізуе выстаўкі. У 1963 годзе ў Гарадку была наладжана выстаўка беларускага народнага мастацтва і спалучана з выстаўкай беларускага друку.

ВЫСТАЎКА НАРОДНАЙ ТВОРЧАСЦІ

4. VI. 1961 года ў залах Дома культуры ў Міхалове была адкрыта выстаўка народнай творчасці Беластоцкага павета. Былі тут узорыстыя дываны, ручнікі, кашулі, карціны мас-

такоў - аматараў, а таксама старажытныя бораны, сохі і г. д. Усяго звыш 60 экспанатаў з навакольных вёсак. Выстаўку наладзіў аддзел БГКТ.



Фрагмент выстаўкі.

Ахоўвайце скарбы
народнай культуры!

БЕЛЬСКІ АДДЗЕЛ БГКТ

Бельскі аддзел утвораны 13 мая 1956 года павятовым з'ездам БГКТ. 15-асабовае праўленне аддзела пачало інтэнсіўна разбудоўваць рады БГКТ, ініцыяваць мастацкую самадзейнасць з беларускім рэпертуарам. Шмат увагі звярнула на вывучэнне беларускай мовы ў пачатковых школах, а таксама арганізавала для дарослых праблемныя курсы вывучэння беларускай мовы, літаратуры і гісторыі Беларусі.

Напрыклад, у 1963 годзе з ініцыятывы гурткоў і пры дапамозе членаў праўлення БГКТ, якія працавалі ў аддзеле асветы, было арганізавана 12 курсаў з праблематыкай беларускай літаратуры, мовы і гісторыі. Пры дапамозе настаўнікаў добра развівалася мастацкая самадзейнасць. У павятовым аглядзе драмгурткоў у 1962 годзе ўзяло ўдзел 12 аматарскіх калектываў. Некаторыя гурткі БГКТ пачалі цікавіцца ўсімі праблемамі вёскі. Да такіх гурткоў трэба залічыць перш за ўсё гурток БГКТ у Райках, старшынёю якога быў Рыгор Семянюк. Гурток БГКТ грамадскім чынам пабудаваў прыгожую святліцу, а таксама разгарнуў у сваёй вёсцы культурнае жыццё. Вялікую папулярнасць здабылі на Бельшчыне фестывалы арганізаваныя аддзелам. Аддзел кожны год арганізуе нарады прадстаўнікоў вясковых гурткоў БГКТ. Супрацоўнічае са школамі, арганізуе выстаўкі і вечарыны.

Ад пачатку 1965 года пры аддзеле існуе харавы калектыв. На дзень 31 верасня 1965 года бельскі аддзел налічвае 1 409 членаў, згуртаваных у 43 гуртках. Старшынямі аддзела працавалі: Кастусь Майсёня, Арцём Чыквін, Аляксей Карпюк, а зараз працуе старшынёю праўлення Янка Раеўскі.

РАЙКІ

Гурток БГКТ у Райках Семянюка і пры актыўнасці многа карыснага зрабіў для ўсіх членаў гуртка БГКТ, сваёй вёскі. Дзякуючы арганізатарскай дзейнасці Рыгора жыхары вёскі пабудавалі святліцу. Гурток БГКТ у Рай-

ках арганізуе і культурныя мерапрыемствы як выступленні драмгурткоў, з іншых вёсак, канцэрты «Лявоніхі», танцавальныя вечарыны і г.д. Члены гуртка арганізуюць таксама сваімі сіламі паста-ноўкі п'ес і бяруць удзел у павятовым аглядзе драмгурткоў БГКТ. Між іншым Рыгор Семянюк нягледзячы на свой пажылы век належыць да лепшых аматараў свайго драмгуртка.

На здымку: Члены драмгуртка, якія ў 1962 годзе з п'есай «Жыць на гэтым свеце» бралі ўдзел у павятовым аглядзе драмгурткоў у Бельску.



Члены драмгуртка з Раеч.

ФЭСТЫН У ГАЛАДАХ

23 жніўня 1964 года на лясной паляны непадалёк ад вёскі Галады (Бельскі павет) адбыўся фэстын арганізаваны актывам праўлення аддзела БГКТ у Бельску.

Фэстын пачаўся выступленнем інструктара праўлення аддзела ў Бельску — Іва-

на Шурбака, які прывітаў сабраўшыхся і прачытаў даклад аб дасягненнях Польскай Народнай Рэспублікі ў перыяд дваццацігоддзя 1944 — 1964 г. г. галоўную ўвагу звяртаючы на дасягненні Беласточчыны, у тым і Бельскага павета. У дакладзе га-



Харавая група з Орлі.

варылася і аб дзейнасці беларускага таварыства, аб дзейнасці гурткоў на вёсцы і іх уплыве на асяроддзе і развіццё беларускай культуры. Другую частку фэстыну пачаў гурток мастацкай самадзейнасці з вёскі Пілікі пад кіраўніцтвам Пятра Нявінскага, які выканаў шмат народных беларускіх, рускіх і польскіх песень і адыграў мелодыі актуальных танцаў. Пасля Пілікаў на «эстраду» вышаў аматарскі гурток з Орлі пад кіраўніцтвам Міраслава Кадзевіча. У яго выкананні прысутныя пачулі шмат прыгожых пераважна рускіх песень. Добра таксама падрыхтаваўся да фэстыну ГС, у якога крамах можна было купіць самыя неабходныя на

фэстыне прадукты. Прысутных на фэстыне было каля двух тысяч. (І. Д.)



Салісты з Пілік.

ПАСЯДЖЭННЕ ПРЭЗІДЫУМА



Пасяджэнне прэзідыума. На здымку: Яраслаў Кастыцэвіч, Іван Серадзінскі, Уладзімір Раеўскі (старшыня), Іван Шурбак і Кастусь Храпоўскі.

Усе справы дзейнасці аддзела абмяркоўвае прэзідыум аддзела, а потым выходзіць з імі на пасяджэнне праўлення, або на нараду актыву ці канферэнцыю.

БЕЛЬСКІ ХОР



Ад пачатку 1965 года пры адзеле БГКТ у Бельску існуе народны 30-асабовы хор. Мастацкім кіраўніком з'яўляецца Аляксандр Лукашук. Канцэрты беларускага бельскага хору карыстаюцца вялікім поспехам.

НАД РЭЧКАЮ АРЛЯНКАЙ

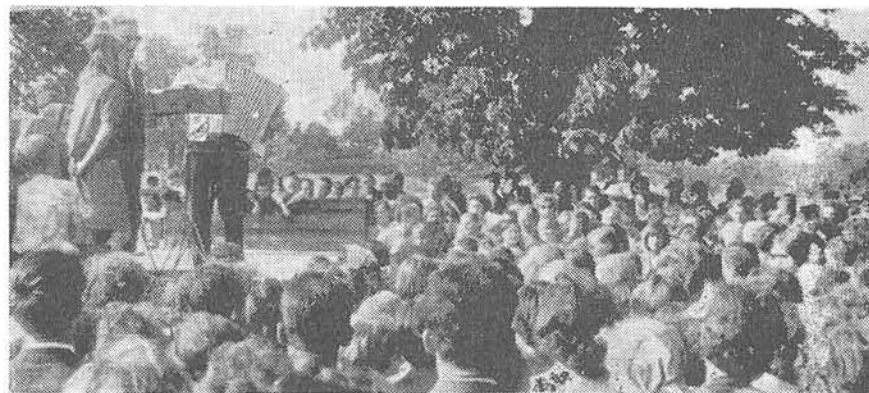
Над рэчкаю Арлянкай у Орлі, Бельскага павета, 25 ліпеня 1965 года адбылося вялікае свята. Павятовае праўленне БГКТ арганізавала тут вялікі фэст у сувязі з 40-годдзем Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. На плошчу з'ехалася многа народу з Орлі і з навакольных вёсак.

Духавы аркестр Павятовага дома культуры ў Бельску іграе інтэрнацыянал. Фэст адкрывае член праўлення аддзела БГКТ тав. А. Карпюк, які сардэчна вітае сабраўшыхся на ўрачыстасці: першага сакратара Павятовага камітэта ПАРП мгр-а інж. Уладзіміра Міхалюка, намесніка старшыні прэзідыума ПРН Уладзіміра Гаданьчука і сакратара прэзідыума ПРН Анатоля Гіншта. Затым тав. А. Карпюк чытае даклад, у якім шырока расказваецца аб дзейнасці Грамады і аб яе ролі ў рэвалюцыйным руху.

Орлю, як месца на арганізаваў фэсту, выбралі невяпадкова. Даўнейшая арлянская гміна была вядомая па колькасці

і актыўнасці грамадоўцаў. Старое Беразова, дзе адбываўся павятовае з'езд Беларускай сялянска-работніцкай Грамады, было ў даўнейшай гміне Орля.

Затым пачалася мастацкая частка. Сюды прыехалі мастацкі калектывы БГКТ у Бельску і калектывы з Пілік. Прысутныя вельмі ветліва ўзнагародзілі выступленні аматараў. Да позніх вячэрніх гадзін Орля была распяваная беларускай, польскай і рускай песнямі. У памяшканні мясцовай святліцы адбыліся танцы для моладзі.



Падчас фэстыну.

АКТЫВІСТЫ АДДЗЕЛА



Якуб Базылюк — актывіст аддзела.



Арцём Чыквін — былы старшыня аддзела.



Кіраўнік школы Аляксей Максімоў.

Культурна - асветнай працай у нашай вёсцы Паўлы супольна займаюцца ўсе арганізацыі, а найбольш гурткі Саюза вясковай моладзі і Беларускага грамадска - культурнага таварыства. Вялікую падтрымку і дапамогу аказваюць члены ПАРП і члены ЗСЛь. Удзельнічаюць у ёй таксама члены сельскагаспадарчага гуртка і члены гурт-

ка вясковых гаспадынь. Цэнтрам культурна - асветнай працы сталася школа. Настаўнікі змаглі наладзіць цеснае супрацоўніцтва з усімі жыхарамі вёскі, змаглі даць кірунак супольным намаганням. Шмат ужо гадоў, у нашай і суседніх вёсках, вялікім поспехам карыстаецца мастацкая самадзейнасць, у якой часта разам з моладдзю выступаюць на сцэне і настаўнікі. Добрая месца мы атрымлівалі на павятовых аглядах гурткоў БГКТ у Бельску. Выступалі з п'есамі «Мікітаў лапаць» і «Валодзін гальштук» у памяшканні ГП БГКТ у Беластоку. У мінулым годзе Саюз вясковай моладзі аб'явіў конкурс пад загалоўкам «Вёска бліжэй тэатра». Наш вясковы гурток ЗМВ (а ў ім члены БГКТ) уключыўся да конкурсу і ў рамках яго арганізавалі мы 8 паездак у тэатр у Беласток. У гэтых культурных паездках удзел узяло 462 асобы.

Шмат увагі прысвяцілі мы гуртку любіцеляў тэатру, які аб'яднаў 17 асоб. І гэты гурток супольна з гурткамі ЗМВ і БГКТ сарганізаваў спатканне з артыстам Чэславам Немчукам, паэтамі Алесем Барскім і Віктарам Шведам.

Конкурс «Вёска бліжэй тэатра» прынёс нам многа прыемных нечаканасцей. Камісія высока ацаніла нашу дзейнасць. Усе мы вельмі задаволены з грашовай узнагароды

ў суме 30 тысяч злотых, прызнаных нам Міністэрствам культуры.

Рэдакцыя «Зажэве» і «Польскае радзё» аб'явілі конкурс на сарганізаваў маладзёжнай забавы пад лозунгам «Раз па-народнаму». Галоўнай задачай гэтага конкурсу з'яўляецца заахвочванне да арганізавання вечарын са шматлікімі атракцыямі, у якіх галоўнае месца зоймуць народныя элементы: як рэгіянальныя танцы і песні. Выступаў мясцовы аматарскі калектыў БГКТ. Праграма яго была апрацавана з асаблівым падкрэсленнем рэгіянальных элементаў. І так, напрыклад, прадстаўлены быў мантаж на-



Настаўнік Сяргей Філіпук.

родных песень нашай акаліцы, які пераплятаўся музыкай і паэтычнымі тэкстамі.



Жаночая група хору.

Тэксты да мантажу былі зачэрпнуты з фальклору Беласточчыны. Мантаж вельмі добра быў прыняты прысутнымі. Сведчыць гэта аб тым, што нягледзячы на вялікую экспансію сучасных песень, аднак народныя песні не трацяць сваёй прыгожасці і чароўнасці. Іх любяць, спяваюць, з захапленнем слухаюць. Значыць, іх вартасць трывала, устойлівая ў народнай культуры.

У працы гуртка БГКТ ёсць ужо пэўная традыцыя арганізавання спатканняў з былымі жыхарамі нашай вёскі, якія жывуць у іншых мясцовасцях і працуюць на розных пасадах.

Гэтыя сустрэчы заўсё-

ды праходзяць вельмі цікава ў цёплай, быццам сямейнай атмасферы. І менавіта яны з'яўляюцца адной з форм сувязі былых жыхараў Паўлаў са сваёй роднай вёскай, з аднавяскоўцамі.

Гурткоўцы БГКТ і ЗМВ сарганізавалі выстаўку народнага мастацтва. Сабралі яны такія экспанаты, як: старыя народныя вышыўкі на палатне (ручнікі, настольнікі, блузкі, фартухі), дываны, вырабы з саломы і разьба ў дрэве і косці таленавітага аматара з Канюк, Уладзіміра Наумюка. Выстаўку пабачыла 200 чалавек.

СЯРГЕЙ ФІЛІПЮК
Паўлы

МОВА

Наша пывучая мова

Ты — уладарка нявызнаных скарбаў.

Мае ў сабе тваё кожнае слова

Столькі значэнняў, гучанняў і фарбаў.

АЛЯКСЕЙ ЗАРЫЦКІ

ВАРШАЎСКІ АДДЗЕЛ БГКТ

Беларусы, пражываючыя ў Варшаве, даўжэйшы час марылі аб сваёй арганізацыі. Патрэбу ўтварэння такой арганізацыі асабліва адчувала студэнцкая моладзь, якая прыежджала з Беласточчыны на вышэйшыя навучальныя ўстановы Варшавы. Гэтая моладзь імкнулася арганізаваць грамадскае жыццё і, карыстаючы з гасціннасці ці то Таварыства польска-савецкай дружбы, ці Рускага культурнага таварыства, наладжвала ў іх памяшканнях літаратурныя вечары.

Рэалізацыя імкненняў моладзі і старэйшага беларускага грамадства пражываючага ў Варшаве магла наступіць толькі пасля паклікання да жыцця Галоўнага праўлення Беларускага грамадска-культурнага таварыства ў Беластоку.

13 мая 1956 года адбыўся арганізацыйны з'езд Варшаўскага аддзела БГКТ, які выбраў праўленне аддзела і прыняў пастановы, вызначаючыя напрамак дзейнасці. У пастановах з'езда сцвярджалася між іншым:

1. Арганізаванне пры Варшаўскім аддзеле БГКТ:

а) навукова - асветнай секцыі,

б) секцыі мастацкай самадзейнасці.

2. Арганізаванне беларускай бібліятэкі і чытальні і забеспячэнне яе адпаведнай колькасцю кніг і часопісаў.

З'езд забавязаў новавыбранае праўленне аддзела прыняць усе меры ў справе арганізавання беларускай філалогіі пры Варшаўскім універсітэце.

Пастановы арганізацыйнага з'езда ў асноўным акрэслілі характар працы Варшаўскага аддзела БГКТ. Пашыраліся яны і дэталёва распрацоўваліся наступнымі справаздачна-выбарчымі з'ездамі аддзела.

На пасяджэнні аддзела 5. XI. 1956 г. старшынёю аддзела выбіраюць Юрыя Туронка. Па сённяшні дзень узначальвае ён варшаўскую арганізацыю. Многа энергіі патраціў Юры Туронак у напрамку арганізавання Кафедры беларускай філалогіі пры Варшаўскім універсітэце.

У хуткім часе сарганізавана пры аддзеле беларускую

бібліятэку з атрыманых кніжак ад Беларускага таварыства культурнай сувязі з заgrаніцай у Мінску, ад Галоўнага праўлення Таварыства польска-савецкай дружбы, ад Галоўнага праўлення беларускага таварыства і ахвяр сяброў БГКТ. У сучасны момант бібліятэка налічвае 1600 кніжак, пераважна беларускай мастацкай літаратуры, і мае 150 чытачоў.

У лістападзе 1956 года арганізуецца пры Варшаўскім адзеле 40-асабовы хор і дэкламатарскі гурток. У цяж-

важны гурток, якім кіруе Р. Адамовіч, а таксама эстрадная група.

У 1958 г. паклікаецца да жыцця дыскусійны клуб, які ўзначальвае Янка Анісэровіч. Клуб наладжвае даклады на розныя тэмы звязаныя з беларускай праблематыкай Беларасточчыны і шматгранным жыццём Савецкай Беларусі.

Пражываючы ў Варшаве члены Беларускага літаратурна-мастацкага аб'яднання «Белавежа» ўтварылі групу гэтага літаб'яднання пры адзеле. Група наладжвае лі-



Янка Анісэровіч, член праўлення аддзела.



Юры Туронак старшыня аддзела.



Пятро Ластаўка, член прэзідыума ГП БГКТ.

кіх умовах, пад кіраўніцтвам Міколы Ждановіча хор інтэнсіўна працуе над першай сваёй праграмай.

У сваёй кароткай гісторыі варшаўскі беларускі хор даў некалькі выступленняў у Варшаве, а таксама выязджаў на Беларасточчыну. Спыніў сваю працу з прычыны адыходу кіраўніка. Нейкі час працуе пры адзеле танца-

таратурныя вечары, аўтарскія сустрэчы беларускіх і польскіх пісьменнікаў, мастацкія выстаўкі. Члены літаратурнай групы рэгулярна падрыхтоўваюць грамадскім чынам матэрыялы ў літстаронку ў «Ніве». У памяшканні Варшаўскага аддзела адбываюцца сустрэчы з пісьменнікамі Савецкай Беларусі, якія прыязджаюць у Польшчу.

Наладжана сустрэча з вядомым беларускім паэтам Максімам Танкам.

Клуб Варшаўскага аддзела БГКТ штодзень наведвае моладзь і старэйшыя. Тут можна пачытаць беларускія і польскія часопісы, згуляць у шахматы, паслухаць беларускіх і польскіх песень з магнэтафоннай плёнкі, паглядзець тэлевізійныя праграмы. У святочныя дні адбываюцца тут танцавальныя вечарыны пры магнэтафоне. Час ад часу праўленне аддзела наладжвае сваім членам танцавальныя вечары ў горадзе пазычаючы ў прадпрыемствах залы. Варшаўскі адзел налічвае 180 членаў БГКТ, іх колькасць пастаянна ўзрастае. Колькасць гэтая была б шмат большай, калі б члены БГКТ не выязджалі з Варшавы. Варшаўскі адзел БГКТ на працягу дзесяці год дзейнасці прыняў у свае рады звыш 300 асоб. Многія з членаў — гэта студэнцкая моладзь, якая пасля заканчэння вышэйшых навучальных устаноў у Варшаве выехала працаваць на Беларасточчыну ці ў іншыя раёны Польшчы.

Адзел таварыства арганізуе рознага роду мерапрыемствы, у першую чаргу акадэміі з мастацкімі часткамі з нагоды гадавін, наладжвае супольна з Літоўскім, Рускім, Украінскім і Жыдоўскім грамадска-культурнымі таварыствамі. Варшаўскі адзел БГКТ супрацоўнічае з Домам савецкай культуры, Галоў-

ным і Ваяводскім праўленнямі Таварыства польска-савецкай дружбы.

Актывісты Варшаўскага аддзела з'яўляюцца адначасова актывістамі Галоўнага праўлення БГКТ. Бяруць яны ўдзел у працах існуючых пры ГП камісіях асветы, культуры і прапаганды, у навуковым гуртку, у літаратурна-мастацкім аб'яднанні «Белавежа». Члены літаб'яднання з Варшавы часта праводзяць аўтарскія сустрэчы на Беларасточчыне.

На працягу дзесяці мінулых год дзейнасці Варшаўскага аддзела апрача Ю. Туронака ахвярна працаваў актыў аддзела, у першую чаргу члены праўлення: Ніна Гайлевіч, Янка Анісэровіч, Юры Бусловіч, Пятро Ластаўка, Фёдар Галёнка, Віктар Швед, Янка Галубоўскі, Янка Бобік і Янка Багацэвіч.

Падсумоўваючы дзейнасць Варшаўскага аддзела БГКТ на працягу яго дзесяцігадовай гісторыі трэба сказаць, што мае ён значныя дасягненні. У асноўным праца аддзела, нягледзячы на яго спецыфіку, на яго адарванасць ад беларускага асяроддзя на Беларасточчыне, з'яўляецца патрэбнай і карыснай. Патрэбнай і карыснай як беларусам пражываючым у Варшаве так і ўсёй беларускай нацыянальнай меншасці ў Польскай Народнай Рэспубліцы.

ВІКТАР ШВЕД
сакратар праўлення
Варшаўскага аддзела БГКТ

У 5-УЮ ГАДАВІНУ

У пятую гадавіну Варшаўскага аддзела БГКТ адбылася вялікая ўрачыстасць.

З вялікім зацікаўленнем сабраныя ўспрынялі выступленні беларускіх мастацкіх калектываў з вёсак Беласточчыны: Шчытоў, Семяноўкі, Ляшукі і Новага Корніна.



Танцавальная вечарына.

ВЕЧАР БЕЛАРУСКАЙ ПАЭЗІІ І ПЕСНІ Ў ВАРШАВЕ

«Люблю наш край — старонку гэту»... — льюцца са сцэны прыгожыя словы меладычнай беларускай песні. Дэбютуе варшаўскі хор на вечары беларускай паэзіі і песні.

Дэбют рэдка калі бывае лёгка. Самы цяжкі заўсёды пачатак.

Дзякуючы працы і энергіі кіраўніка хору Міколы Жданоўіча можна было выступіць публічна пакуль што без акампанемента і народных беларускіх убораў.

Апрача хору рыхтавалася да выступлення дэкламатарская група. Гэта група паставіла перад сабою амбітнае заданне: пазнаёміць насельніцтва Варшавы з беларускай паэзіяй, у першую чаргу з вершамі вялікіх беларускіх паэтаў: Янкі Купалы, Якуба Коласа, Канстанцыі Буйлы і іншых.

Вось і пачатак вечара беларускай паэзіі і песні. На сцэну ўваходзіць канферансье — Стася Колей. На хвілінку гіне з яе



Варшаўскі хор.

твару ўсмяшка. Яна пачынае далікатным голасам «Шчыра вітаем усіх прысутных на нашым вечары. Цешымся, што ёсць такое вялікае зацікаўленне беларускай паэзіяй і песняй сярод насельніцтва Варшавы...».

У многіх песнях, якія выканаў хор, таксама і ў вершах адлюстроўваецца жыццё беларускага народа, праўдзіва пераказанае ў паэзіі вялікіх беларускіх паэтаў — песняроў і ў музыцы вядомых беларускіх кампазітараў — у першую чаргу Шырмы.

ВІКТАР ШВЕД

Сакавік 1957 год.

Прывівайце любоў

да роднай мовы

сваім дзецям!

ГАЙНАЎСКІ АДДЗЕЛ БГКТ

Ва ўсіх вёсках Гайнаўшчыны жыве беларускае насельніцтва. І таму ва ўсіх школах вывучаецца беларуская мова. Вывучэнне беларускай мовы ў школах мае спрыяльны ўплыў на развіццё мастацкіх аматарскіх калектываў з беларускім рэпертуарам. Колькасць гэтых калектываў, якія мастацкую самадзейнасць рыхтуюць на беларускай мове, значна ўзрасла з таго часу, калі пачало існаваць беларускае таварыства. Яно прычынілася да таго, што амаль ва ўсіх большых вёсках у павеце на працягу мінулых 10 год існаваў або існуе мастацкі калектыв. Гэтым калектывам з вялікай дапамогаю прыходзяць настаўнікі. Пад іх кіраўніцтвам самадзейнасць у Гайнаўскім павеце стаіць параўнальна на высокім мастацкім узроўні. Кожны год самадзейнікі даюць каля 100 выступленняў.

Гайнаўскі аддзел БГКТ (існуе ён ад 20 мая 1956 года) пачынаючы ад 1958 года кожны год арганізуе павятовыя



Мікола Лобач — інструктар ГП і старшыня праўлення аддзела
Аляксандр Іванюк.

агляды драмгурткоў, а пачынаючы ад 1961 года — фэсты. Фэсты з'яўляюцца своеасаблівай прапагандаю беларускага сцэнічнага слова, беларускай песні, беларускай культуры. У Гайнаўскім аддзеле існавала на дзень 31 сакавіка 1965 года 48 гурткоў. Колькасць членаў у іх — 1396.



Кастусь Майсёня — член прэзідыума Галоўнага праўлення, член праўлення Гайнаўскага аддзела. У 1956 годзе ён засноўваў Бельскі аддзел і быў яго першым старшыняю.

Многія з гэтых гурткоў апрача мастацкай самадзейнасці бяруць удзел у грамадскіх чынах. Члены БГКТ грамадскай працай прычыніліся да пабудовы на Гайнаўшчыне 94 крамы. Працавалі грамадска таксама пры меліярацыі сенажацяў і пабудовы дарог. Аддзел БГКТ арганізуе мастацкія выступленні, гутаркі і даклады ў сваёй сядзібе. Былі папулярныя чацвяргі культуры ў Доме настаўніка. Карыстаюцца поспехам сярод дарослых праблемныя курсы беларускай мовы і літаратуры, выстаўкі з жыцця БССР, а таксама краязнаўчыя экскурсіі.

Старшынямі Гайнаўскага аддзела працавалі Янка Філішок (некалькі месяцаў), Мікола Тарасевіч, Васіль Дзун і зараз Аляксандр Іванюк. (мх)

У ГРАБАВЫМ ЛЯСКУ

Па дарозе з Гайнаўкі ў Бельск, за вёскай Збуч, расце прыгожы грабавы лясок. Месца быццам спецыяльна створана для культурных мерапрыемстваў летам...

Гэтае маляўнічае месца і выбраў Гайнаўскі аддзел БГКТ на фэст у сувязі з 80 гадавінай з дня нараджэння Янкі Купалы.

У нядзелю 26 жніўня 1962 года ад самай раніцы ў грабавы лясок з розных бакоў накіроўваюцца групамі моладзь і старэйшыя. Едуць веласіпедамі, матацыкламі і самаходамі. Ідуць пехатою з Гайнаўкі, Чыжоў, Курашава, Орлі. Грабавы лясок запаўняецца людзьмі. Пасярод яго, на круглай налянцы, яшчэ напярэдадні была пабудавана эстрада з дошак.

Урачыстасць адкрывае сакратар Павятовага камітэта ПАРП у Гайнаўцы Мікалай Самоцік. Ён у цёплых словах вітае прысутных і сцвярджае, што творчасць вялікага паэта Беларусі Янкі Купалы за гады народнай улады сталася шырока вядомай сярод насельніцтва Гайнаўшчыны.



Мастацкі калектыў з Курашава.

На эстраду выходзіць прадстаўнік Галоўнага праўлення БГКТ Уладзімір Паўлючук. Прысутныя з увагай слухаюць даклад аб творчым шляху беларускага песняра.

А пасля эстраду бярэ ў сваё ўладанне моладзь. Выступае дзявочы самадзейны калектыў з Койлаў.

Белыя, як снег, народныя ўборы. Яскравай чырванню гараць накінутыя на плечы хусцінкі. Усё гэта прыемна кантрастуе з зялёнай ліствой грабавага лесу. Прыцягвае да сябе позірк соцен прысутных.

Плывуць адна за другой беларускія, рускія і украінскія песні і далёка за лесам адклікаюцца рэхам. Цікавы гэта самадзейны калектыў. У ім няма кіраўніка. Койлаўскія дзяўчаты — самадзейніцы самі сабой кіруюць. Самі праводзяць рэпетыцыі, самі арганізуюць канцэрты.

На эстрадзе паяўляецца самадзейны калектыў з Курашава. Душа гэтага калектыву — кіраўнік мясцовай школы Анатоль Швед. Ён патрапіў заахвоціць да культурнай дзейнасці моладзь не толькі Курашава, але і навакольных вёсак, 32 канцэрты, якія даў гэты калектыў за час свайго двухгадовага існавання, сведчаць найлепш аб яго актыўнасці ў культурнай дзейнасці.

Прысутныя гарача ўспрынялі выступленне вучаніцы XI класа беларускага ліцэя ў Гайнаўцы — Лены Грыц. Яна са-

праўды па-мастацку чытала вершы Янкі Купалы. Аднак найбольшай папулярнасцю і зацікаўленнем прысутных карыстаўся на фэсце конкурс на найлепш выкананую песню.

На эстраду выходзяць людзі проста з натоўпу. Заахвочваць да ўдзелу ў конкурсе не было патрэбы. Песня на Гайнаўшчыне, асабліва беларуская народная песня, карыстаецца вялікай любоўю і папулярнасцю. Найлепшым з усіх удзельнікаў конкурсу аказаўся дуэт у складзе Валі Паўлючук і Надзі Раманюк з Койлаў. Калі яны выконвалі частушкі, воплескам не было канца.

Пасля мастацкіх выступленняў на эстрадзе ў грабавым ляску паявіўся аркестр. Моладзь і старэйшыя весела гулялі да позніх гадзін вечара. «Купалаўскі дзень» на Гайнаўшчыне доўга застаўся ў памяці прысутных. (вб)



Удзельнікі фэстыну.

ПАД КІРАЎНІЦТВАМ НАСТАЎНІКАЎ

Аматарскаму руху ў Ляшуках шмат часу і энергіі прысвячаюць настаўнікі з мясцовай школы Аляксандр Харкевіч (член ГП БГКТ) і Аляксей Харкевіч. Пад іх кіраўніцтвам моладзь з многімі п'есамі і з многімі песнямі выступае ў сваёй і суседніх вёсках.



Ляшukoўскі хор пад кіраўніцтвам Аляксандра Харкевіча выступае ў Варшаве падчас урачыстаці 5-годдзя аддзела.

СКУПАЎСКІЯ САМАДЗЕЙНІКІ

Гурток БГКТ у Скупаве вядомы са сваіх сцэнічных выступленняў. Мастацкім кіраўніком яго з'яўляецца загадчык мясцовай школы Язэп Навіцкі. Сам ён таксама выступае ў ролях п'ес.



Сцэна з п'есы «Прымакі» — Янкі Купалы. Першы справа Язэп Навіцкі.



Самадзейнікі са Старога Ляўкова.

У СУВЯЗІ СА СВЯТАМ СЕЛЯНІНА

21 мая 1961 года ў сувязі са святам селяніна павятовае праўленне ЗСЛь у Нарве арганізавала павятовыя ўрачыстасці. У мастацкай частцы выступілі аматарскія калектывы гурткоў БГКТ.



Вялікім зацікаўленнем карысталася выстаўка аб дзейнасці БГКТ.

40 гадавіна Грамады

ФЭСТЫН У СТАРЫМ ЛЯЎКОВЕ



З дакладам аб дзейнасці
Грамады выступае член ГП БГКТ
Аляксандр Харкевіч.

29 жніўня над ракою Нараўкай у Старым Ляўкове адбыўся ўрачысты фэстын прысвечаны адзначэнню 40-ой гадавіны ўзнікнення Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. На ўрачыстасць сабралася многа людзей з суседніх вёсак: Ляўкова Новага, Ляшukoў, Капітаншчыны, Ахрымаў. З першым словам да сабраных звярнуўся актыўны карэспандэнт «Нівы» цяперашні настаўнік у Старым Ляўкове — Янка Целушэцкі, які цёплымi словамі прывітаў прысутных. Потым з дакладам на тэму значэння дзейнасці Грамады выступіў член Галоўнага праўлення БГКТ, загадчык школы ў Ляшukoх — Аляксандр Харкевіч. Пасля даклада адбыўся конкурс на найлепшы выкананую беларускую песню. Конкурс гэты быў адначасова мастацкай часткай фэстыну. Першае месца сярод салістаў заняла Валя Харкевіч з Ляшukoў і Валя Саевіч са Старога Ляўкова. З дуэтаў найлепшымі аказаліся Нэля і Аля Харкевіч з Ляшukoў, а з квартэта таксама ляшukoўскія дзяўчаты ў складзе: Гэля Кабац, Валя, Нэля і Аля Харкевічы.

У перапынках паміж выступленнямі спевакоў, якія бралі ўдзел у конкурсе, публіку забаўляў жартоўнымі і новымі песнямі вядомы на Гайнаўшчыне акардэаніст — Віталій Макац са Скупава, а таксама Аляксандр Харкевіч, які жартоўна заказваў нумары праграмы і таксама сам спяваў.

На заканчэнне фэстыну адбылася забава, якая працягнулася да позніх гадзін. (А.Х.)

У Альхоўцы, Гайнаўскі павет, гурток БГКТ быў сарганізаваны ў 1959 годзе. Пасля арганізаваўся драмгурток.

У 1964 годзе калектыў 8 разоў выступаў з п'есамі: «Мікітаў лапаць» і «Дзесяць гектараў» у навакольных вёсках. Потым прымаў удзел у павятовым аглядзе арганізаваным ГП БГКТ і атрымаў на ім узнагароду ў суме 1 500 зл. Узнагарода была выкарыстана на выезд на Цэнтральныя дажынкi ў Варшаву. Гэта яшчэ больш заахвоціла да працы.

Але праца гуртка не агранічваецца выключна да мастацкай самадзейнасці. Праўленне гуртка БГКТ пастаралася сарганізаваць у 1963—1964 гадах гурток сельскагаспадарчых ведаў.

Па ініцыятыве гуртка Нараўскі ГС арганізаваў у Альхоўцы курс пячэння і варэння. Праўленне і паасобныя члены гуртка БГКТ часта кантактуюцца з праўленнем аддзела ў Гайнаўцы, звяртаюцца да яго за парадамі ці дапамогай.

Аднак у працы не аглядаюцца толькі на дапамогу, яны ведаюць, што таварыства — гэта яны, іх гурток. (юс)



Драмгурток з Альхоўкі выконвае п'есу «Мікітаў лапаць».

Дуброўскі аддзел БГКТ

Пакліканы да жыцця ў 1956 годзе Сакольскі аддзел БГКТ ахопліваў сваёй дзейнасцю і суседні Дуброўскі павет. Сакольскі актыў наведваў беларускія вёскі Дуброўшчыны, інфармаваў аб утварэнні беларускай арганізацыі, аб яе задачах, заахвочваў да арганізавання гурткоў БГКТ і мастацкай самадзейнасці з беларускім рэпертуарам. Аднак праца не спорылася. Адчуваўся недахоп мясцовага аддзела.

III з'езд БГКТ забавязаў Галоўнае праўленне ўтварыць у Дуброве Павятовае праўленне. 6-га красавіка 1961 года адбыўся сход беларускага актыву, на якім пакліканы быў арганізацыйны камітэт. Старшынёй камітэта быў выбраны Іван Кіндзюк.

Арганізацыйны камітэт доўга не мог разгарнуць шырэйшай працы. Падрыхтаваў ён канферэнцыю на 30 верасня 1962 года. У ёй узяло ўдзел каля 100 чалавек. Дакладчык Іван Кіндзюк ахарактарызаваў дзейнасць і заданні таварыства, улічваючы спецы-



Іван Кіндзюк.

фіку Дуброўскага павета. Удзельнікі канферэнцыі ў час дыскусіі гаварылі аб патрэбе працы БГКТ на вёсцы. Пасля канферэнцыі праца БГКТ набрала трохі колераў.

Арганізаваныя гурткі ў Ячне, Хілімонах, Сынкоўцах, Герасімавічах, Бутрымоўцах, Крапіўне, Грабенях і Востраве сталі праяўляць актыўнасць (у гуртках БГКТ зараз аб'ядноўваецца блізка 300 асоб). Праз радыёвузел у Дуброве кожны тыдзень пачалі перадавацца радыёгутаркі на беларускай мове. Дуброву наведваў калектыў песні і танца, які існаваў пры Галоўным праўленні. Эстрада «Лявоніха» апрача Дубровы выступала ў некаторых вёсках.

Восенню 1963 года ў Ячне быў адкрыты дом культуры. Гэта дало магчымасць развіваць там культурна-асветную працу і для БГКТ. Сюды часцей пачалі прыязджаць інструктары і лектары Галоўнага праўлення. Сюды стала даязджаць і эстрада «Лявоніха», і кінаперасоўка ГП. Ячна стала свайго роду цэнтрам БГКТ у Дуброўскім павеце.

Аднак шырока разгарнуць культурна-асветную дзейнасць для БГКТ да гэтага ча-

су не ўдалося. Адною з галоўных прычын з'яўляецца тое, што няма там штатнага працаўніка, які б на штодзень займаўся працай БГКТ, які б мабілізаваў і актыў і гурткі да культурна-асветнай працы.

А ўмовы да працы там вельмі спрыяльныя. Амаль усе жыхары Дуброўскага павета (і тыя, якія адчуваюць сябе беларусамі, і тыя, якія лічаць сябе палякамі) вельмі добрай, амаль літаратурнай мовай карыстаюцца і ў штодзённым жыцці.

Дрэзна, што не вывучаецца там у школах беларуская мова. Гэты недахоп застаецца адкрытым і чакае развязкі праз асветныя ўлады. Патрэбу вывучэння роднай мовы адчуваюць беларусы Дуброўшчыны. У 1965 годзе жыхары вёскі Крапіўна выступілі з просьбай да асветных улад, каб іх дзеці вывучалі беларускую мову. І асветныя ўлады арганізавалі ў іх вёсцы школу і ўвялі вывучэнне беларускай мовы. (мх)

Падтрымлівайце
Б
Г
К
Т
мерапрыемствы

Сакольскі адзел БГКТ



Старшыня аддзела Аляксандр Рафаловіч, член праўлення Сяргей Аверчук і старшыня рэвізійнай камісіі Віктар Рагацэвіч.

Ва ўсіх вёсках Сакольскага павета штодзённай мовай з'яўляецца беларуская мова. Размаўляюць ёю і тыя, што лічаць сябе палякамі, і тыя, што лічаць сябе беларусамі. Магло б выдавацца, што гэтая супольнасць мовы прычыніцца да таго, што дзейнасць Беларускага грамадска-культурнага таварыства на Сакольшчыне расшырыцца

на ўсе вёскі. На жаль, так не сталася. Гурткі БГКТ арганізаваліся перш за ўсё ў тых вёсках, у якіх навучалася беларуская мова. Першы гурток арганізаваўся ў канцы 1956 года ў Паўднёвым Востраве. Узначальваў яго старшыня ГРН Мікола Куклік. Гурток з першых дзён свайго існавання ўзяўся за мастацкую самадзейнасць, падрыхтаваў п'есу Янкі Купалы «Паўлінка» і з вялікім поспехам на пачатку 1957 года выступіў у школах Паўночнага Вострава і Крушынянах. Пасля арганізаваліся аматарскія калектывы гурткоў БГКТ у Сукавічах, Сухінічах, Лішчаной, Піражках, Новым Востраве, Сідэрцы і іншых вёсках. У школе ў Паўночным Востраве пачалі адбывацца павятовыя агляды. Высокага мастацкага ўзроўню дабіўся драматычны гурток у Новым Востраве. Ён у 1963 годзе з п'есай «Суд» выязджаў на цэнтральны агляд беларускіх драмгурткоў у Гайнаўцы і заняў там другое месца.

У 1960 годзе на Саколь-



Намеснік старшыні Сакольскага праўлення аддзела Віталі Чыжэўскі, кіраўнік партыйнай прапаганды КП ПАРП Расціслаў Мадзалеўскі і сакратар аддзела Уладзімір Артэмюк.

шчыне налічвалася 10 аматарскіх калектываў з беларускім рэпертуарам, якія ў год давалі ад двух да 5 выступленняў кожны. У некаторых вёсках, як у Новым Востраве, Сухінічах, Гуранах з ініцыятывы гурткоў БГКТ і пры выдатнай дапамозе настаўнікаў карысталіся поспехам сярод моладзі і старэйшых праблемныя курсы беларускай мовы і літаратуры, а ў Лазнях, Сакалдзе, Талькоўшчыне і Паўночным Востраве сталыя лектарскія пункты. Выступалі тут з дакладамі на беларускай мове лектары ГП, спецыялісты з розных галін (юрысты, агра-

номы, літаратары, дзеячы БГКТ).

Праўленне Сакольскага аддзела складаецца з аўтарытэтных асоб, большасць якіх працуе на адказных пасадах у Саколцы. Да найлепшых актывістаў залічваюцца: Віталі Чыжэўскі, Уладзімір Артэмюк, Віктар Рагацэвіч, Анатоль Севесцянюк, Сяргей Аверчук і іншыя. Нягледзячы на гэта існуюць цяжкасці з рэгулярнай абслугой гурткоў БГКТ, якіх налічваецца ў павеце 22 і якія згуртоўваюць у сваіх радах 331 член (на дзень 31 сакавіка 1965 г.).

Да найбольшых дасягненняў аддзела трэба залічыць

наступныя факты: супольна з Саюзам вясковай моладзі і Лігай абароны краіны аддзел арганізаваў некалькі фэстынаў. З ініцыятывы аддзела і дзякуючы супрацоўніцтву з Павятовай радай нарадавай, а перш за ўсё аддзелам культуры ў Гаркавічах і Сукавічах арганізаваны святліцы, а супольна з Павятовым камітэтам ПАРП і іншымі павятовымі арганізацыямі і ўстановамі 10 лістапада 1963 года ў Гаркавічах аддзел арганізаваў вялікую ўрачыстасць

прысвечаную адкрыццю мемарыяльнай дошкі на доме, у якім нарадзіўся былы беларускі пасол, арганізатар Беларускай сялянска-работніцкай Грамады — Павел Валашын.

Першым старшынёй аддзела быў Уладзімір Кучынскі, які быў выбраны на першым павятовым з'ездзе 20 мая 1956 года. У 1958 і 1959 гадах працаваў старшынёю Уладзімір Аніська, а ад 1959 года да сёння аддзел узначальвае Аляксандр Рафаловіч. (мх)

ВОСТРАЎСКИ ФЭСТ

Пад знакам пяцігоддзя беларускага таварыства і «Нівы» праходзіў вялікі фэст песні і танца, які адбыўся ў нядзелю 25 чэрвеня 1961 года ў Паўночным Востраве (Сакольскі павет).

На прыгожым пляцы мясцовай школы на мураве зрабілі танцавальны вянок, абсаджалі яго бярозавым голлем — на



На франтоне школы сценгазета аб дзейнасці БГКТ.

франтоне школы чырвоныя і бела-чырвоныя сцягі, насценгазеты аб БГКТ, а ў зеляніне — транспарант — «5 год — «Нівы».

Крынкаўскі ГС сарганізаваў продаж напіткаў, марожанага і іншых дэлікатэсаў.

Адначасова ў зале мясцовай школы адбываецца павятовы агляд беларускіх мастацкіх гуртоў. Піражкоўскі гурток выступае з п'есай «Суд» Ул. Галубка, Сідарскі гурток — з п'есай «Мікітаў лапаць», мастацкі гурток з Сукавіч ставіць п'есу Кандрата Крапівы «Валодзін галыштук».

У суседняй школьнай зале знаходзіцца фотавыстаўка аб Савецкай Беларусі, а таксама выстаўка найлепшых насценгазет з асенняга конкурсу — «Найлепшыя вучнёўскія насценгазеты на беларускай мове».

На прысутных задумённа пазірае вялікі партрэт Янкі Купалы, упрыгожаны маладой зеленню, над партрэтам вялікія літары — «5 год беларускага таварыства»... і народныя дываны.

На вячэрнім канцэрце беларускай эстрады «Лявоніха» змясцілася... каля 300 асоб (у зале вясковай школы!).

Фэст адбыўся пад патранатам тав. Мікалая Кукліка — старшыні Грамадскай рады нарадавай з Гуран і тав. Мар'яна Філановіча — кіраўніка мясцовай школы. З прамовай да насельніцтва выступіў тав. Уладзімір Паўлючук — кіраўнік культурына-асветнага аддзела ГП БГКТ.

Народнае гуляння зацягнулася далёка запоўнач. (ся)

НОВАВОСТРАЎСКИ АМАТАРЫ СЦЭНЫ

Куды сумней жылося б у Новым Востраве, каб не было там аматараў сцэнічнага слова, каб не было каму час ад часу развесяліць людзей мастацкімі выступленнямі. Гэтай працай займаюцца члены БГКТ. У асноўным гэта моладзь. Ды трэба сказаць, што яна ініцыятыўная, дружная. Нягледзячы на вельмі цеснае школьнае памяшканне, апошнім часам у Новым Востраве кожны год падрыхтоўваецца па некалькі пастановак. Ста-

віліся там п'есы: «Прымакі», «Мікітаў лапаць», «Суд» і «Боты». З «Судом» выступалі ў Паўночным Востраве на павятовым аглядзе драмгурткоў БГКТ Саколышчыны і занялі першае месца, а на ваяводскім аглядзе ў Гайнаўцы закваліфікаваліся на другое месца.

Варта таксама звярнуць увагу на ініцыятыўнасць новавостраўскіх дзяўчат. Да п'есы «Боты» не хапала хлопцаў, але з гэтым не было затрымкі. Фэля Стасевіч і Лю-

ба Грыбок паспяхова справі-
ліся з мужчынскімі ролямі.

Мастацкая самадзейнасць
дапамагае расці духоўна нова-
востраўскай моладзі. Яна ву-
чыць моладзь высакароднасці,
робіць яе культурнейшай. Аб

гэтым сведчыць між-іншым і
той факт, што зараз забавы
адбываюцца там спакойна, без
сутычак, з'явілася асаблі-
вая ветлівасць у адносінах да
моладзі з суседніх вёсак.

М. Х.



Сцэна з п'есы «Суд» у выкананні новавостраўскай моладзі.

У СУХІНІЧАХ

Гурток БГКТ у Сухінічах добра развівае мастацкую сама-
дзейнасць. Выступаў ён з такімі пастаноўкамі як: «Такія сабе
хлопцы», «Прымакі», «Паўлінка», «Боты», «Міхалка». Сама-
дзейнікі наведалі суседнія вёскі, пабывалі ў Гуранах і Вараня-
нах і ўсюды сустракалі цёплы прыём. Сухініцкі гурток нама-
гаецца павялічваць колькасць падпісчыкаў «Нівы», заахвочвае
мясцовых жыхараў да чытання беларускіх кніжак, арганізуе
пры дапамозе настаўнікаў праблемны курс беларускай

мовы і літаратуры, наладжвае танцавальныя вечарыны. Ад-
ным словам заўсёды намагаецца нешта карыснага рабіць і та-
му залічваецца ён да аднаго з лепшых гурткоў на Саколь-
шчыне. (мх)

У ГАРКАВІЧАХ

Да гэтай даты рыхтаваліся людзі, рыхтаваліся мясцовыя
арганізацыі, рыхтавалася ўся вёска Гаркавічы. Усёй падрых-
тоўцы яшчэ большага значэння прыдавалася таму, што амаль
разам з Кастрычніцкім святам будзе адзначацца памяць аб
вялікім змагару за справядлівасць, за лепшае жыццё, аб Паў-
ле Валашыне, уражэнцу Гаркавіч. Старэйшыя людзі добра па-
мятаюць яго. Тут ён разам з усімі аднавяскоўцамі жыў і ву-
чыўся, тут набіраў мужнасці, каб пасля сваёй вялікасцю вы-
яўляць санацыйную палітыку.

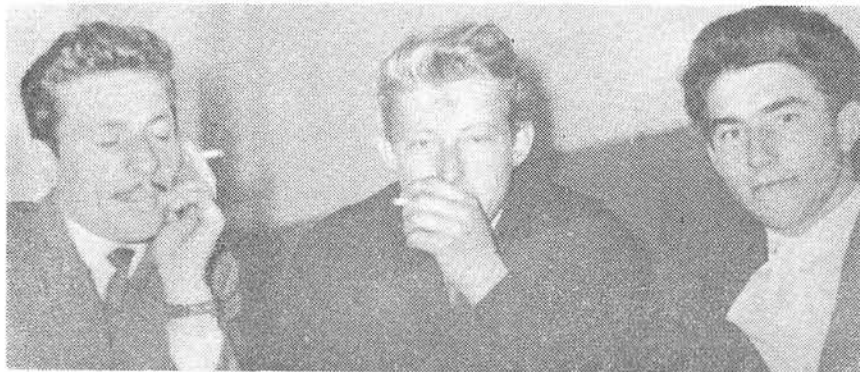
Многа было гутарак, многа ўспамінаў, калі жыхары Гарка-
віч у гонар гэтай даты, у гонар свайго аднавяскоўца прысту-
пілі да рамонтву вуліцы, да ўпарадкавання платоў, рамонтву
святліцы. 10 лістапада 1963 года вельмі прыгожа было
ў Гаркавічах. На многіх вясковых хатах і панадворках чыр-
воныя і бела-чырвоныя сцягі. Вуліца высыпана жоўтым пяс-
ком. Людзі, усе па-святочнаму апранутыя, накіраваліся да той
хаты, у якой жыў Павел Валашын, у якой яшчэ зараз жыве



Сакратар КП ПАРП Іван Дзянісюк чытае даклад.

яго старэйшы брат Аляксей. Да 11-ай гадзіны сабралася шмат людзей. Прыбылі прадстаўнікі павятовых улад у Саколцы, прыбылі прадстаўнікі беларускага таварыства, а таксама старыя дзеячы Грамады і КПЗБ. Старшыня Павятовага аддзела БГКТ у Саколцы, Аляксандр Рафаловіч кароткімі словамі адкрывае ўрачыстасць. Аб жыцці і рэвалюцыйнай дзейнасці Паўла Валашына гаворыць сакратар Павятовага камітэта ПАРП Іван Дзянісюк. Аб традыцыях супольнай барацьбы беларусаў і палякаў за лепшую будучыню гаворыць старшыня ГП БГКТ Міхась Хмялеўскі. Пасля пад гукі барабанаў адсланяецца мемарыяльная дошка на доме, у якім жыў Павел Валашын.

Калі закончылася афіцыйная ўрачыстасць, людзі накіраваліся да святліцы, куды прыехала з канцэртам эстрада ГП БГКТ «Лявоніха». (мх)



Члены праўлення гуртка ў Піражках: Алес Алешка, Міхась Дабрэньчук і Міхась Чаховіч.

ПІРАЖКОЎСКІ ГУРТОК БГКТ

Амаль кожны год гурток БГКТ у Піражках у асенне - зімовы перыяд падрыхтоўвае аматарскія выступленні.

СУПОЛЬНАЯ НАРАДА

Павятовы камітэт Польскай аб'яднанай робочай партыі ў Саколцы заўсёды аказвае дапамогу БГКТ у яго дзейнасці.

Аб гэтым сведчыць, між іншым, і нарада, якая адбылася 2 лютага 1964 года ў Саколцы. На гэтую нараду прыбылі

сакратары грамадскіх камітэтаў ПАРП і сакратары партыйных арганізацый, старшыні і сакратары гурткоў БГКТ, члены праўлення аддзела і яго актывісты.

Аб тым, як сур'ёзна патрактаваў гэту нараду Павятовы камітэт партыі, сведчыць між іншым і той факт, што ўдзельнічалі ў ёй тры сакратары КП. Сам ход нарады быў таксама своеасаблівы. Гаварылася на ёй і на беларускай і на польскай мовах. Адкрыў нараду першы сакратар

КП Іван Дзянісюк. З дакладам аб напрамках працы БГКТ выступіў сакратар ГП Уладзімір Юзвюк, а старшыня аддзела БГКТ Аляксандр Рафаловіч расказаў аб працы беларускага таварыства ў Сакольскім павеце.

З заключным словам на нарадзе выступіў Ішы сакратар КП тав. Іван Дзянісюк. Ён абавязаў сакратароў партыйных арганізацый дапамагаць гурткам БГКТ і не менш як два разы ў год абмяркоўваць на сваіх сходах працу беларускага таварыства. (мх)

АКТЫЎ САКОЛЬСКАГА АДДЗЕЛА



Яўген Чабан
— кіраўнік школы
ў Астроўку



Яна Куршэль
з Сукавіч



Яўген Аўгустыньчук
і Оля Паў-
лючук з Саколка

**Распаўсюджвайце
беларускае
друкаванае слова!**

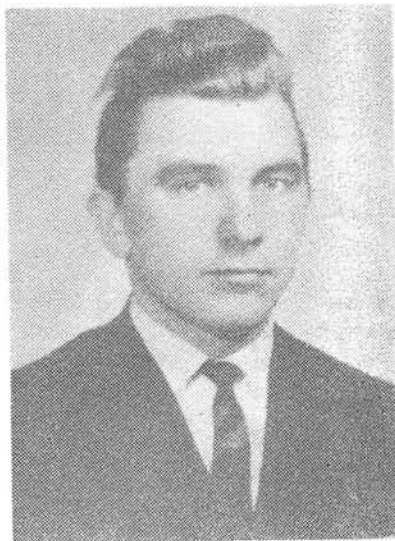
Сямяціцкі аддзел БГКТ

10-га чэрвеня 1956 года адбыўся першы павятовы з'езд Беларускага грамадска-культурнага таварыства ў Сямяцічах, які накрэсліў напямкі працы ў беларускіх асяродках. Першым старшынёй праўлення аддзела быў Пятро Бадавец, а першым штатным працаўніком павятовага аддзела працаваў Сяргей Крэйза.

У першых гадах дзейнасці аддзела найбольш была звернута ўвага на вывучэнне беларускай мовы. Родная мова была ўведзена ў многія школы. Няма было прысвечана часу арганізацыі гурткоў БГКТ і тлумачальнай працы адносна нацыянальнай палітыкі нашай партыі і ўрада.

У канцы 1960 года сядзіба аддзела БГКТ была перанесена ў Мілейчыцы. Ад гэтага часу аддзел узначальвае Анатоль Мартыновіч (П. Бадавец памёр у 1960 годзе), а штатным працаўніком аддзела з'яўляецца інструктар ГП Міхась Вішэнка.

Аддзел вядзе шырокую культурна-асветную дзей-



Анатоль Мартыновіч, старшыня аддзела.

насць, а менавіта: з'яўляецца ініцыятарам самадзейнасці з беларускім рэпертуарам, арганізуе штогод агляды драмгурткоў, рэцытатарскія курсы ў тых школах, дзе вучаюць беларускую мову, прапагуе выдавецтвы БГКТ, часопіс «Ніву» і беларускі друк БССР. Штогод арганізуе таксама фестывалы, якія

з'яўляюцца вялікім мерапрыемствам прапаганды беларускай культуры. Вельмі цікава і ўрачыста прайшлі фестывалы ў сувязі з пяцігоддзем БГКТ, Годам Беластоцкай зямлі, XX гадавінай народнай Польшчы і саракагоддзем з дня заснавання Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. Аддзел мае добры актыв, да якога перш за ўсё залічаюцца: Сяргей Крэйза, Анатоль Касцюк, Міхась Ві-

шэнка. Актыв рэгулярна абслугоўвае гурткі БГКТ, чытае даклады, уключаецца ва ўсе мерапрыемствы арганізаваныя ў іх мясцовасці. Тут асабліва добра пастаўлена супрацоўніцтва з усімі мясцовымі арганізацыямі.

На дзень 31 верасня 1965 года Сямяціцкі аддзел налічваў 17 гурткоў БГКТ, якія аб'ядноўваюць 436 чалавек.

(мх)

ЧЛЕНЫ ПРАЎЛЕННЯ

Старшыня Сямяціцкага аддзела БГКТ Анатоль Мартыновіч, сакратар праўлення Сяргей Крэйза, члены: Анатоль Касцюк і Янка Вішэнка.



Сяргей Крэйза



Анатоль Касцюк



Янка Вішэнка.

ВІЛІНАЎСКІ ГУРТОК БГКТ

Вілінава — гэта адна з многіх вёсак ва ўсходняй частцы Сямяціцкага павета. Нічым яна не розніцца ад сотні іншых вёсак. Хіба толькі тым, што яшчэ няма тут электрычнага святла, няма школы, а дзеці вучацца ў трок прыватных будынках. Няма тут святліцы, дзе моладзь і старэйшыя маглі б збірацца, каб правесці культурна час.

Калі гэта хтосьці прачытае, зараз падумае, што — вёска «забіта дошкамі». Гэта так было да таго часу, пакуль у гэту



Вілінаўскі хор.

вёску не прыехаў працаваць настаўнік Анатоль Мартыновіч. Дзякуючы яго ініцыятыўнасці створана два мастацкія гурткі: харавы, які налічвае 15 асоб, і драматычны, які налічвае 10 асоб. Дырыжорам і пастаноўшчыкам у гэтых гуртках з'яўляюцца маладыя настаўнікі, Анатоль і Ніна Мартыновічы. Зараз харавы і драматычны гурткі вядуць актыўную дзейнасць. У іх рэпертуары ёсць беларускія п'есы, народныя песні, гумар, сатыра і вершы.

Амбітныя імкненні гуртка БГКТ заключаюцца не толькі ў вядзенні аматарскага мастацкага руху ў сваім асяроддзі. Ён актыўна ўключаецца ва ўсе грамадскія мерапрыемствы ў сваёй вёсцы.

КОНКУРС РОДНАГА СЛОВА

Аддзел арганізуе дэкламацыйскія канкурсы і гэтым прывівае любоў да роднай мовы. У 1963 годзе ў снежні быў праведзены такі конкурс у Мілейчыцах, Тымянцы і Клюковічах. У конкурсе ўдзельнічалі вучні дзесяці школ з беларускай мовай як прадметам. У рэпертуар удзельнікаў конкурсу ўвай-

шлі творы беларускіх празаікаў і паэтаў: Янкі Купалы, Якуба Коласа, П. Броўкі, М. Танка, М. Лынькова, М. Багдановіча і інш., а таксама вершы літаратурнага аб'яднання «Белавежа» паэтаў Віктара Шведа і Алеся Барскага.

Найlepшым удзельнікам конкурсу Галоўнае праўленне БГКТ прызнала шэраг рэчавых і кніжных узнагарод.

ВЫСТАЎКА БЕЛАРУСКАГА ДРУКУ

З нагоды дзён асветы, кніжкі і друку аддзел арганізуе ў сваім памяшканні, таксама ў школах і святліцах выстаўкі беларускай кніжкі і беларускага друку.

Здымак з выстаўкі 1963 года. Такія выстаўкі былі наладжаны ў школах: у Рагачах, Зубачах, Клюковічах, Мілейчыцах, а таксама ў бібліятэках у Сяміцічах і Мілейчыцах.



Выстаўка беларускага друку.

СПАТКАННЕ З ВЕТЭРАНАМ КАСТРЫЧНІКА

Кожны год аддзел урачыста адзначае гадавіну Вялікага Кастрычніка. Вось, напрыклад, у сувязі з 46 гадавінай Кас-



трычніцкай рэвалюцыі ў Мілейчыцах адбылося ўрачыстае пасяджэнне праўлення аддзела БГКТ, на якое быў запрошаны ветэран Кастрычніка Васіль Барцічук з Мілейчыц (на здымку першы злева), які раскажаў аб рэвалюцыі ў Піцеры, дзе праходзіў ён вайсковую службу на браняносцы «Андрэй Первазваны» і прымаў удзел у гістарычных падзеях.

У ЛІТВІНАВІЧАХ

З ініцыятывы членаў беларускага таварыства ў Літвінавічах у 1962 годзе была пабудавана святліца. Мясцовы гурток БГКТ, старшынёй якога з'яўляецца Мікола Куптэль (сядзіць пасярэдзіне), вядзе шырокую культурна-асветную дзейнасць. Многа прысвячае ён увагі мастацкай самадзейнасці.



АМАТАРЫ З ВЕРПАЛЯ

У Літвінавічах у красавіку 1964 года адбыўся павятовы агляд аматарскіх калектываў БГКТ. Першае месца і першую ўзнагароду ГП БГКТ атрымалі самадзейнікі з Верпаля выступаючы з аднаактаваю п'есаю «Жыць на гэтым свеце». Гэты драмгурток браў удзел у ваяводскім аглядзе беларускіх драмгурткоў.



Сцэна з п'есы «Жыць на гэтым свеце» ў выкананні аматараў з Верпаля.



Хор з Волькі Нурэцкай.

Нашае дзесяцігоддзе

Ад 26 лютага 1956 г. датуецца гісторыя Беларускага грамадска-культурнага таварыства ў Польшчы. У сувязі з дзесяцігодзем існавання беларускай арганізацыі, хочам сказаць аб значэнні некаторых выбраных дзялянак яе дзейнасці. Агульна трэба сцвердзіць, што БГКТ аставіла ўжо значны след на культурна-асветнай ніве ў беларускім асяроддзі.

Перш за ўсё трэба падкрэсліць той факт, што дзякуючы БГКТ значна ўзрос ранг беларускай мовы на Беласточчыне. Гэтаму спрыяе тое, што вывучаюць беларускую мову ў школах, што ўсе сходзі ў гуртках, усе нарады і канферэнцыі ў аддзелах, усе спатканні з насельніцтвам нашага актыву, усе пленумы і з'езды вядуцца на беларускай мове, што праз радыёвузлы і праз Беластоцкае радыё раз у тыдзень па 15 мінут ідуць перадачы на беларускай мове, што выходзіць беларускі часопіс і мае больш 5-ці тысяч падпісчыкаў, што вядзецца выхаваўчая праца пра пашану да роднай мовы.

Галоўнае праўленне выдала больш 40 п'ес і пры дапамозе настаўнікаў арганізуе мастацкую самадзейнасць з беларускім рэпертуарам. «Валодзеў гальштук» Кандрата Крапівы; «Прымакі» і «Паўлінка» Янкі Купалы; «Суседка» — А. Пальчэўскага; М. Галубка — «Суд», «Жыць на гэтым свеце» — А. Няфода і шмат іншых пастановак сталі вельмі папулярнымі ў беларускім асяроддзі. У заахвочванні да беларускага рэпертуару не малую ролю адыгрываюць павятовыя і цэнтральныя агляды мастацкай самадзейнасці. Утварэнне пры ГП эстрады «Лявоніха» спрыяе папулярнага беларускіх песень. Беларуская песня зараз папулярная ўжо не толькі ў беларускім, але вельмі часта і ў польскім асяроддзі.

Аддзельны раздзел складае літаратурна-мастацкае аб'яднанне. Вырасло яно на глебе дзейнасці БГКТ і яго органа «Ніве», на старонках якой маладыя нашыя літаратары маюць магчымасць друкавацца. Зацікаўленне творчасцю нашых паэтаў і празаікаў ёсць агромнае. Аб гэтым сведчаць аўтарскія спатканні, якія заўсёды карыстаюцца вялікім поспехам і на якіх разыходзіцца заўсёды шмат уласных твораў аўтараў у аддзельных выданнях або супольных зборніках.

Аддзелы беларускага таварыства кожны год арганізуюць фэстыны, якія можна назваць днямі беларускай культуры. На іх гучыць беларуская мова, песня, сцэнічнае слова, музыка. Гэтыя фэсты заўсёды набіраюць агульнапавятовага значэння. Бяруць у іх удзел і выступаюць з прамовамі апрача прадстаўнікоў БГКТ прадстаўнікі павятовых улад. На беларускія фэстыны заўсёды збіраецца многа людзей.

Вялікай і даволі важнай дзялянкай працы БГКТ з'яўляецца фальклор. БГКТ і яго орган «Ніва» збіраюць легенды, казкі і народныя паданні. ГП запісвае народныя песні і зараз рыхтуе іх да публікацыі. Вялікая праца вядзецца ў галіне збірання экспанатаў матэрыяльнай культуры паўднёва-ўсходняй часткі Беласточчыны і арганізавання супольна з Белавежскім ГС-ам музея ў Белавежы.

Не малая роля беларускага таварыства ў прывіванні любові і пашырэню дружалюбных адносін да народаў СССР, да суседа нашай краіны — Савецкай Беларусі. Садзейнічаюць гэтаму бясплатныя савецкія фільмы, якія Галоўнае праўленне сваёй кінаперасоўкай дэманструе ў памяшканні ГП, у вёсках і мястэчках Беласточчыны. Садзейнічаюць гэтаму ўрачыстыя акадэміі з нагоды Кастрычніцкай рэвалюцыі, дня Савецкай Арміі, дня перамогі над нямецкім фашызмам, адзначэнні гадавін класікаў беларускай і рускай літаратуры, падкрэсліванне ролі і значэння СССР у свеце, перасовачныя фотавыстаўкі з жыцця СССР (фота атрымоўваем з Белоксу), а таксама наведванне ГП і рэдакцыі «Ніва» прадстаўнікамі савецкага народа ў час пабыўкі на Беласточчыне. Усё гэта спрыяе ўмацаванню дружбы польскага і савецкага народаў.

Многа ўвагі беларускае таварыства ўдзяляе рэвалюцыйным традыцыям беларускага і польскага народаў. Аб гэтым сведчаць, між іншым, мерапрыемствы арганізаваныя з нагоды 40-годдзя Беларускай сялянска-работніцкай Грамады. І так, з Ваяводскім камітэтам ПАРП арганізавана ўрачыстая акадэмія і папулярна-навуковая сесія, а з музеем рэвалюцыйнага руху — выстаўку аб Грамадзе, якая таксама экспануецца ў паасобных паветах.

Многа месца ў працы таварыства прысвячаецца пашырэню

беларускага школьніцтва, пачытнасці беларускай кніжкі, арганізаванню курсаў беларускай мовы і літаратуры для дарослых, арганізаванню дэкламатарскіх конкурсаў, распаўсюджванню выдавецтваў Галоўнага праўлення, растлумачальнай рабоце палітыкі нашай партыі, у тым ліку і нацыянальнай палітыкі.

Зразумела, што ўся культурна-асветная праца, якая падпарадкавана выхаванню беларускага асяроддзя ў духу сацыялізма, у духу патрыятызму і інтэрнацыяналізма, прычыняецца да мабілізавання насельніцтва да яшчэ лепшай, больш плённай працы на карысць нашай народнай краіны.

Члены БГКТ прымаюць актыўны ўдзел у грамадскіх чынах у час пабудовы школ, святліц, дарог, меліярацыі, злеўняў малака і г. д. У Гайнаўскім павеце члены беларускага таварыства на чале з членам прэзідыума ГП Кастусём Майсёнем вельмі многа ўлажылі грамадскай працы пры пабудове 94 вясковых крамаў.

Член ГП у вёсцы Пянькі ў Беластоцкім павеце Янка Азябла ў многім прычыніўся да таго, каб сельскагаспадарчы гурток у яго вёсцы быў самым перадавым у павеце.

Дзякуючы арганізатарскай працы члена ГП Рыгора Семянюка ў вёсцы Райкі на Бельшчыне пабудавана святліца.

Старшыня Сяміціцкага аддзела БГКТ Анатоль Мартыновіч мабілізуе зараз энергію сялян Вілінава да пабудовы ў вёсцы школы і святліцы.

У кожным павеце члены БГКТ з'яўляюцца арганізатарамі прагрэсу ва ўсіх галінах народнай гаспадаркі.

Значная іх роля ў ініцыяванні сельскагаспадарчай адукацыі ў вёсках, удзел у шматлікіх сельскагаспадарчых конкурсах, у павышэнні сельскагаспадарчай вытворчасці.

Ужо нават гэтыя ўспомненні факты сведчаць аб тым, што беларускае таварыства як адно з арганізацый Фронту адзінства народу з'яўляецца сапраўднай трансмісіяй да мас, што яго мае вялікі ўплыў на беларускае асяроддзе.

Адначасова нараджаецца пытанне, ці гэты ўплыў дастатковы, ці роля БГКТ не магла б быць большай? Адказ на гэтыя пытанні наступны. Уплыў БГКТ на беларускае насельніцтва недастатковы, а роля яго павінна быць большай. Што трэба рабіць у гэтым напрамку, як працаваць? Вось аб гэтых справах хочам сказаць.

1. Трэба нам удасканалваць усе дагэтуляшнія формы працы, якія даюць добрыя вынікі і трэба адначасова шукаць новых форм дзейнасці.

2. Неабходна нам, пачынаючы ад Галоўнага праўлення і канчаючы на гуртку, навязаць цеснае супрацоўніцтва з усімі ар-

ганізацыямі, якія займаюцца культурна-асветнай дзейнасцю. Супольная праца ў гэтай галіне дасць значна большыя эфекты. Возьмем для прыкладу Гайнаўскі павет. Там усе вёскі з беларускім насельніцтвам. Такім чынам у нас там вялікая магчымасць супрацоўніцтва ў культурна-асветнай працы. Неабходна толькі больш інспіраваць, больш ініцыяваць.

3. Неабходна таксама прадумаць ролю і значэнне нашых вясковых гурткоў. Не заўсёды стаяць яны на ўзроўні сваіх абавязкаў, не заўсёды аб'ядноўваюць у свае рады малодшае і старэйшае пакаленне вёскі. Вельмі часта апрача мастацкай самадзейнасці гурток нічым больш не займаецца.

4. Недастаткова займаліся мы асветнымі справамі. Не дабіваліся мы, каб вывучэнне беларускай мовы пачыналася ў пачатковых школах ад першага класа, а не ад другога, ці нават трэцяга і чацвёртага класаў.

5. Больш увагі трэба прысвяціць падрыхтоўцы настаўніцкіх кадраў, а таксама далейшаму павышэнню іх адукацыі.

6. Нашая мова моцна заняйдбаная, занячышчаная і таму існуе патрэба арганізавання курсаў беларускай мовы і літаратуры для дарослых.

7. Замала мы папрацавалі, каб да нашай дзейнасці прыцягнуць больш інтэлігенцыі, якая можа ў многім дапамагчы ў нашай працы.

8. Нашыя гурткі і аддзелы недастаткова выкарыстоўваюць базу ў паасобных вёсках. Ёсць там шмат ужо клуба-кавярняў, у якія трэба ўваходзіць з культурна-асветнай працай.

9. Існуе патрэба палепшыць працу навуковага гуртка, літаратурнага аб'яднання «Белавежа», а таксама ажывіць дзейнасць мастакоў і больш цесна яе навязаць з літаратарамі.

10. Заняйдбана ў нас справа грамадскага выдавецкага фонду. А гэта праца ўжо даўно запачаткаваная і даўно ўжо заняйдбаная.

11. Значна больш увагі трэба ўдзяляць аматарскаму руху, асабліва калі разыходзіцца пра выхаваўчыя вартасці рэпертуару.

Безумоўна, гэта толькі некаторыя выбраныя пытанні, якім трэба значна больш прысвяціць увагі. Зразумела, што ўся наша праца павінна прычыняцца да шырэйшага ўключэння беларускага насельніцтва ў пабудову сацыялізма ў нашай краіне.

Старшыня Галоўнага праўлення
Беларускага грамадска-культурнага
таварыства ў Польшчы
МІХАСЬ ХМЯЛЕЎСКИ

Беларуская асвета ў народнай Польшчы

Моваведы і пісьменнікі кажуць, што мова — гэта нацыянальны пашпарт, яго душа. Вось таму кожны народ намагаецца, каб яго аблічча было прыгожае, свежае і такая ж нацыянальная душа культуры.

Вялікі беларускі пісьменнік Францішак Багушэвіч у прадмове да «Дудкі беларускай» так пісаў аб роднай мове: «Шмат было такіх народаў, што страцілі найперш мову сваю, так як той чалавек прад скананнем, катораму мову займае, а потым і зусім замерлі. Не пакідайце ж мовы нашай беларускай, каб не ўмерці!».

Значыць перад кожным чалавекам ляжыць няпісаны абавязак, што роднай мовы, матчынага дару нельга сароміцца, а ўжо было б маральным злачынствам, калі хто прычыняўся да яе замірання і заняпаду.

Цэлымі стагоддзямі розных колераў сатрапы і прыгняталнікі здзекваліся над беларускай мовай, імкнуліся абудзіць у народзе пагарду, сорам да яе. Нягледзячы на тое, што беларускі народ быў пазбаўлены больш 200 год друкаванага слова ў сваёй роднай мове, ён не «памёр». Ён праіснаваў гэты страшны перыяд і не адрокся ад сваёй мовы. Захаваў у сваім сэрцы і сваёй душы любоў да яе, як да матчынага дару, захаваў яе, як найдаражэйшы нацыянальны скарб і беражліва пратрымаў да нашых часоў, для нашага пакалення.

Зараз у многіх школах на Беласточчыне вывучаюць беларускую мову. І тут перад выкладчыкамі стаіць агромнае заданне: прывіць любоў і пашану да роднай мовы і літаратуры, пераканаць свайго вучня аб тым, што нашая родная беларуская мова для кожнага з нас павінна быць найдаражэйшай і нічуць не горшай ад іншых моваў.

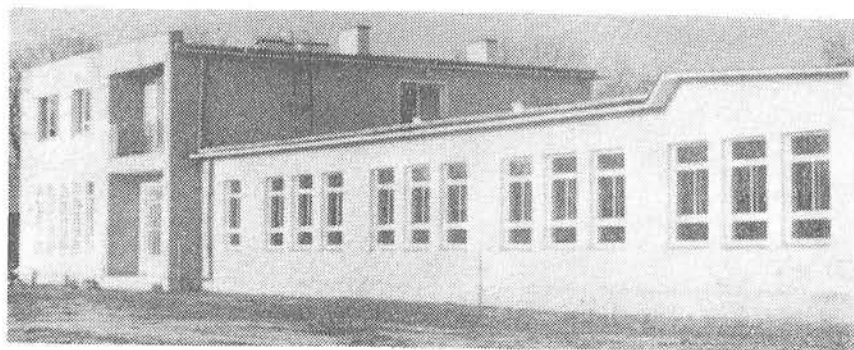
Настаўнікі беларускай мовы! Вучыце сваіх вучняў так, каб яны ніколі ў жыцці не цураліся роднай мовы, каб яны шанавалі яе, як найдаражэйшы матчын дар. (мх)

Права да асветы

Кожнаму чалавеку, які разумна думае, ясным з'яўляецца тое, што, каб даць сялянскім дзецям магчымасць асветы, не хопіць прызнаць ім гэтае права ў словах, трэба яшчэ стварыць рэальныя магчымасці навучання, адпаведную арганізацыю школьнай сістэмы, адпаведную колькасць школ, настаўнікаў, сарганізаваць усім даступнае бясплатнае навучанне.

Такое сапраўднае права да асветы атрымалі ўсе сяляне ў народнай Польшчы. У кожнай, нават найменшай вёсцы

існуе зараз прынамсі 4-класная пачатковая школа, прычым пасля аканчэння гэтай школы да бліжэйшай суседняй вёскі недалёка, дзе без ніякіх цяжкасцей могуць скончыць 7 класаў. Няма зараз аніякіх цяжкасцей у здабыцці сялянскімі дзяцьмі сярэдняй, а таксама і вышэйшай асветы. Усе нацыянальныя меншасці, якія жывуць на тэрыторыі Польшчы, у тым ліку і беларусы, атрымалі поўнае права навучання сваіх дзяцей у роднай мове. Пры дапушчэнні моладзі нацыяналь-



Школа помнік 1000-годдзя Польскай дзяржавы ў вёсцы Мора на Гайнаўшчыне.



Абсальвенты 7-га класа з Чыжоў на Гайнаўнчыне (1965 год).

ных меншасцей да рознага тыпу школ і навуковых устаноў знесена ўсялякія, існуючыя да вайны, абмежаванні.

Возьмем для прыкладу Гайнаўскі павет. На 77 існуючых у гэтым павеце школ у 70 навучаецца беларуская мова, прычым у 17 школах беларуская мова з'яўляецца мовай навучання, у іншых на-

вучаецца яе як усе іншыя прадметы навучання. Роднай мовы вучаць тут настаўнікі высокакваліфікаваныя. 18 з іх закончыла аддзяленне беларускай філалогіі на Завочнай настаўніцкай студыі, — іншыя — педагогічныя ліцэі з беларускай мовай навучання ў Бельску Падляшскім. Настаўнікі гэтыя і ў далейшым



Штогод выкладчыкі беларускай мовы выязджаюць у Мінск з мэтай павышэння сваіх кваліфікацый. Група настаўнікаў, якая ў 1962 годзе выязджала ў Мінск.

павышаюць свае кваліфікацыі на курсах беларускай мовы, якія штогод арганізуюцца ў Беластоку, а таксама ў мясцовым метадычным цэнтры, які вядзе настаўніца беларускай мовы ў Гайнаўскім ліцэі — Ніна Вішнеўская. Кожны год з Гайнаўскага павета выязджае 8 настаўнікаў у Мінск, дзе праз месяц часу паглыбляюць свае веды на беларускай мове і літаратуры, знаёмяцца з культурай Савецкай Беларусі. Зразумела, што навучанне роднай мовы стаіць тут на высокім узроўні. Моладзь беларускай на-



Анастасія Тропак — дырэктар Беларускага ліцэя ў Гайнаўцы.



У педагогічным ліцэі ў Бельску існуюць паралельныя класы, у якіх вывучаюць беларускую мову. Настаўніца беларускай мовы ў педагогічным ліцэі Лідзія Гайдук.

цыянальнасці, якая пасля заканчэння пачатковай школы хоча далей вучыцца ў роднай мове мае магчымасць паступіць у агульнаадукацыйныя ліцэі з беларускай мовай навучання, які існуе ў Гайнаўцы ад 1949 года. За час працы гэтага ліцэя закончыла яго 300 выпускнікоў. Працуюць яны зараз у розных дзяржаўных установах, а таксама настаўнікамі ў беларускіх вёсках, некаторыя пайшлі вучыцца далей, у вышэйшыя навучальныя ўстановы. Адна з выпускніц ліцэя, Марыя Чурак працуе нават у Польскай Акадэміі навук, як спецыяліст па беларускай мове.

Зразумела, што не ўся моладзь, якая пасля заканчэння пачатковай школы хоча ву-

чыцца далей, паступае ў ліцэй з беларускай мовай. У Гайнаўскім павеце існуе яшчэ чатыры іншыя сярэднія школы. Прытым частка моладзі ідзе вучыцца ў Беласток.

Для моладзі, якая пасля заканчэння VII класаў засталася ў родных вёсках на Гайнаўшчыне, як і ў іншых паветах, існуюць школы сельскагаспадарчай падрыхтоўкі (СПР-ы). Даюць яны апрача ведаў агульнага характару

рускім насельніцтвам. Ва ўсіх паветах, дзе пражывае беларускае насельніцтва, развіваецца асвета на беларускай мове.

Зараз на Беласточчыне існуе 173 пачатковыя школы, у якіх вучыцца беларускай мове 11 302 дзяцей, працуюць два агульнаадукацыйныя ліцэі з беларускай мовай навучання і адзін ліцэй (у Міхалове) з беларускай мовай як

гій, якое рыхтуе спецыялістаў - моваведаў.

Такім чынам у народнай Польшчы здзейсніліся мары перадавых кругоў даваеннай

Польшчы аб праве да асветы для ўсіх грамадзян незалежна ад нацыянальнага ці грамадскага паходжання.

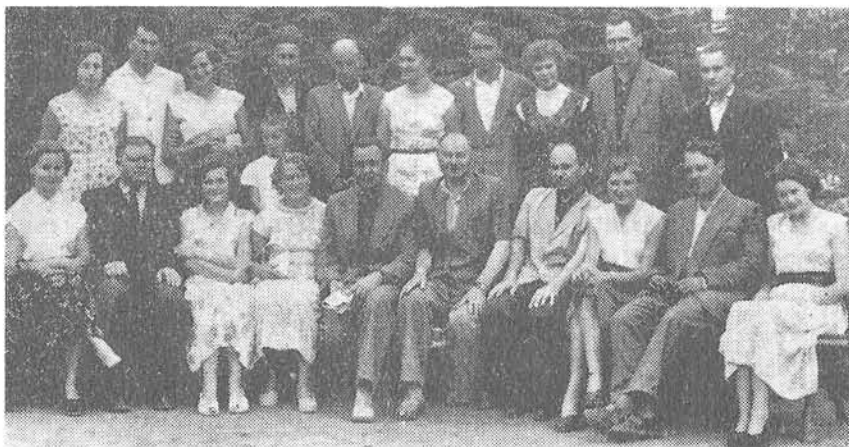
У. ПАЎЛЮЧУК

ПАД СЦЯГАМ

19 красавіка 1964 года быў вялікі дзень для моладзі Беларускага ліцэя ў Гайнаўцы. Пры ўдзеле прадстаўнікоў

улад і грамадскіх арганізацый адбывалася ўрачыстасць уручэння школьнага сцяга.

Паблісквалі золатам шы-



У 1959 годзе Завочная настаўніцкая студыя ў Беластоку (аддзел беларускай філалогіі) дала першых сваіх выпускнікоў. На здымку: выпускнікі са сваімі выкладчыкамі.

добрую падрыхтоўку да практычнай працы на гаспадарцы.

Гайнаўскі павет узялі мы як прыклад таму, што пражывае тут найбольш беларусаў. Але і ў іншых паветах Беласточчыны маем падобную сітуацыю. Мясцовыя ўлады з аднолькавай увагай клапацяцца аб стане школьніцтва ў вёсках з польскім і бела-

прадмет. Для падрыхтоўкі настаўніцкай кадры выкладаецца беларуская мова ў педагагічным ліцэі ў Бельску Падляшскім, частка кваліфікаваных ужо настаўнікаў паглыбляе свае веды на Завочнай настаўніцкай студыі ў Беластоку. І ўрэшце на Варшаўскім універсітэце існуе аддзяленне беларускай філала-



Адзін бок сцяга з надпісам на польскай мове, а другі на беларускай.

тыя словы: «Айчына, Навука, Праца».

На веснавым ветры лапатаў ён, школьны сцяг. Чырвона-бела - залатое палотнішча.

Не кожная школа можа ганарыцца такім дасягненнем. Не кожная мае такую адзнаку.

Беларускі ліцэй з пачатковай школай у Гайнаўцы належыць да дружных: настаў-

нікі, вучні, бацькоўскі камітэт, апякунчы камітэт стваралі тут адно непадзельнае цэлае, згоднае звязно народнага Дваццацігоддзя.

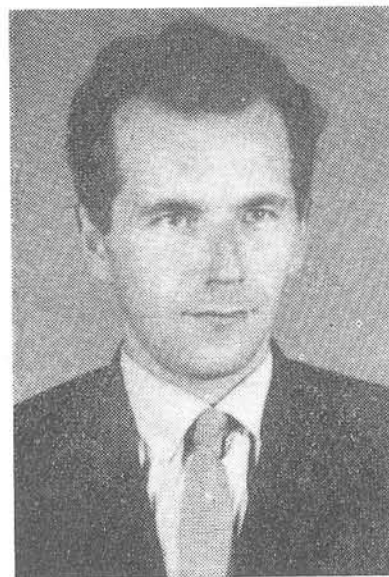
Як доказ гэтай еднасці, як замацаванне яе назаўсёды атрымала школа ганаровы сцяг. Ён вядзе яе ў штодзёнай працы. А залацістыя словы «Айчына, Навука, Праца» паказваюць уласцівую дарогу.

Беларуская кар'ера

Калі ў 1949 годзе зноў паўстаў Беларускі агульнаадукацыйны ліцэй у Бельску, тым самым адкрыўся другі акт пасляваеннай гісторыі беларускай асветы на Беластоцчыне — акт надта багаты падзеямі і іх паслядоўнасцямі. Даволі сказаць, што ў бліжэйшыя гады ў нашых вёсках і мястэчках была створана —

як ніколі — вялікая сетка школ і ліцэяў з беларускай мовай. З'яўляліся яны бадай што адзіным, але надзвычай істотным сведчаннем нашага нацыянальнага быту.

Да гэтага часу Бельскі ліцэй закончыла 491 асоба, з чаго 339 паступіла вучыцца далей — ва ўніверсітэты, палітэхнікі, інстытуты ў Польшчы, а некаторыя вучыліся



Мікола Гайдук — дырэктар ліцэя.



Ілья Бернат — выкладчык беларускай мовы ў ліцэі.

або вучацца заганіцаю. Дарэчы, падобную з'яву наглядаем і ў Гайнаўскім беларускім агульнаадукацыйным ліцэі. Наколькі мне вядома, няшмат ліцэяў можа пахваліцца да таго вялікай колькасцю сваіх студэнтаў і... высокакваліфікаванай кадрай.

У 1946 годзе Бельскі ліцэй закончыла ўсяго 11 асоб, у 1952 годзе — 20 асоб, у 1956 годзе — 47 асоб, у 1963 годзе — 58 асоб. Разам адбылося 14 выпускаў. Вядома, не кожны выпуск быў так «тлусты». Тым не менш маем дачыненне з выразным ростам — я сказаў бы — прадукцыйнасці гэтага ліцэя.

У 1965 годзе адбыўся пят-

наццаты выпуск — круглая лічба, маленькі юбілей, ліцэйскае свята... Добра пры такой аказіі ўспомніць былых выхаванкаў. Далёка не шукаючы, да іх ліку належыць журналістка «Нівы» Вера Леўчук; да іх ліку належыць вядомы свайго часу кіраўнік беларускай эстрады «Лявоніха» Васіль Кардзюкевіч і папулярны Віктар Швед. Юры Паплаўскі з'яўляўся ў мінулай кадэнцыі першым намеснікам старшыні Прэзідыума МРН у Беластоку, а на кафедры фізікі Беластоцкай Медыцынскай акадэміі працуе на адказнай пасадзе Ляля Лукашэвіч. У Варшаве працуе суддзёю Павел Красноўскі, а ў Гданьскай караблебу-



Будынак Беларускага агульнаадукацыйнага ліцэя і пачатковай школы ў Бельску.

даўнічай верфі — інж. Канстанцін Цудны. Прозвішча лекара Верамеюка ведаюць у санаторыі ў Цехацінку — ён таксама выпускнік Бельскага беларускага ліцэя. А др эканоміі Андрэй Анацік з'яўляецца гандлёвым аташэ польскага пасольства ў Мексіцы...

Ходзім па светлых калідорах, чыстых класах — вялікі, стройны будынак у цэнтры павятовай сталіцы. Пабудаваны ў канцы пяцідзесятых гадоў. І калі пасяліўся ў ім ліцэй, выдаваўся ён вельмі вя-

лізным. Уражанне, як у мнагadgetнай сям'і, якая перасялілася са старой цеснаты ў новую ды прасторную кватэру. Тады было штосьці каля 270 вучняў разам з пачатковымі класамі, цяпер іх дакладна 650! Ды ізноў стала цесна, моцна цесна, хаця не абляцеў са сцен яшчэ першы тынк, на кожным кроку відаць свежасць будовы.

Перад усім незвычайна павялічыўся лік вучняў у пачатковых класах — да 342! Гэта, пераважна, дзеці гарадскіх і прыгарадскіх сем'яў.

ВЫПУСКНАЯ ВЕЧАРЫНА

Адзвінелі школьныя званкі, закончыліся экзамены, наступіў традыцыйны бал выпускнікоў беларускага ліцэя ў Бель-



Максім Лужанін у Бельскім ліцэі.

ску. Разам з імі на ўрачыстым вечары іх настаўнікі, бацькі, запрашаныя госці з асветных, культурна-асветных і мясцовых улад.

Яшчэ большай урачыстасці, святочнасці, задавальнення і цёплага настрою дало прыбыццё на свята школы вядомага беларускага пісьменніка з Мінска Максіма Лужаніна, які ў гэты час знаходзіўся ў Польшчы. (М.Х.)

Ліпень 1962 год.

ЧЫТАЙЦЕ «НІВУ»



«Каляровай» дэманстрацыі школьнай моладзі прысвечанай дням асветы, кніжкі і друку.

«Шануйце кнігу», «Любім і шануем прыроду», «Шануйце кветкі» і іншыя транспаранты нясла моладзь.

Асабліва цікавая была калона пад лозунгам «300 год друку». Вучні нясуць загаловкі газет: «Панарамы пулноцы», «Новай всі», «Газеты Беластоцкай» і іншых часопісаў.

Сярод часопісаў была таксама «Ніва». Дзяўчынка ўбраная ў беларускі народны касцюм з прыгожым арнамантам і надпісамі на рукавах «Ніва» прадстаўляла нашу газету. Дзве маленькія дзяўчынкі суправаджалі яе з лозунгамі «Чытайце «Ніву».

У нядзелю 14 мая 1961 года Беласток быў сведкам

Чытайце «НІВУ»

— адзіную беларускую газету ў Польшчы!



БЕЛАРУСКАЯ МОВА ВА УНІВЕРСІТЭЦЕ

1 кастрычніка 1956 года Кафедра беларускай філалогіі пад кіраўніцтвам прафесар А. Яблонскай пачала заняткі. Ніхто з 20 студэнтаў, якія вучацца на філалогіі, не забудзе гістарычнай даты, калі першы раз у памяшканні Варшаўскага ўніверсітэта магутным рэхам пачулася беларуская мова. Упершыню тут прадстаўнікі моладзі размаўлялі па-беларуску. У выніку экзаменаў на беларускую філалогію прынята 19 чалавек. У тым 15 асоб з Беласточчыны.

Прафесар А. Яблонская.



Падчас першага экзамену на беларускую філалогію.

АЎТАРСКІЯ СУСТРЭЧЫ

Вялікай папулярнасцю карыстаюцца сярод беларускага насельніцтва аўтарскія сустрэчы з паэтамі Алесем Барскім (Баршчэўскі) і Віктарам Шведам. Дэкламаваныя імі ўласныя вершы заўсёды ўзнагароджваюцца бурнымі воплескамі.



Алесь Барскі і Віктар Швед сярод настаўнікаў вёскі Лянева на Гайнаўшчыне ў 1963 годзе.

Аб БГКТ пісалі

ZASADA: RÓWNY START

Jednym z podstawowych warunków realizacji zasady równouprawnienia mniejszości narodowych w Polsce Ludowej — jest zapewnienie młodzieży mniejszości narodowych możliwości pobierania nauki języka ojczystego w szkolnictwie państwowym. Dwadzieścia tysięcy młodzieży białoruskiej, ukraińskiej, słowackiej, czeskiej, litewskiej i żydowskiej uczęszcza do dwu typów szkół: do 100 szkół z niepolskim językiem nauczania oraz do 300 szkół z polskim językiem wykładowym, w których język ojczysty mniejszości narodowych jest od kl. II obowiązkowym przedmiotem nauki.

Nawet dla małych grup — po 7—10 dzieci — jeśli tylko tego pragną rodzice, wprowadza się naukę języka ojczystego. Nawet bardzo nieliczne mniejszości, jak Czesi — posiadają jedną szkołę. Rosjanie — dwie szkoły.

Licea dla mniejszości narodowych dały już w Polsce setki absolwentów.

Wielu z nich ukończyło wyższe uczelnie zdobywając zawód lekarzy, inżynierów, prawników, nauczycieli, ekonomistów itp. Ponadto ok. 1.800 dzieci uchodźców greckich pobiera naukę w języku greckim i macedońskim w 15 szkołach podstawowych i kilku średnich.

Czy liczba uruchomionych szkół i punktów nauczania języka ojczystego zaspokaja potrzeby oświatowe mniejszości narodowych? W zasadzie tak.

Wydaje się jednak, że ilość tych szkół i punktów nauczania będzie musiała wzrosnąć. Wielu rodziców, posyłających dziś dzieci do szkół polskich bez języków ojczystych mniejszości narodowych z najprzeróżniejszych względów nie powzięło ostatecznej decyzji w sprawie wyboru szkoły dla swych dzieci. Występuje tu już dziś i występować będzie nadal spora fluktuacja. Duży wpływ na decyzje rodziców wywierać będzie życzliwość i tolerancja środowisk polskich. Życzliwy stosunek nauczycieli, poziom nauczania w szkołach z językiem ojczystym, słowem — zrozumienie polityki partii i rządu w kwestii narodowościowej.

DWIE FUNKCJE

Przeważająca część ludności, należącej do mniejszości narodowych w naszym kraju — to obywatele polscy, którzy od kilku pokoleń zamieszkują polskie ziemie, tu mają swoje ojcowizny, powiązani są bardzo często z Polakami więzami pokrewieństwa, wrosli w polskie środowiska, związali się z polską kulturą. Zdarza się, że gdy w tej samej rodzinie jeden brat czuje się Białorusinem czy Ukraińcem, drugi uważa się za Polaka. Bywa, że jedne i te same osoby raz podają narodowość polską, a innym razem słowacką, białoruską, ukraińską lub określają ją krótko: „tutejszy”.

Jednak duża część tej ludności — przy poczuciu żywej łączności z Polską — pragnie pielęgnować swój język i kulturę. Z tej sytuacji wypływają dwie podstawowe funkcje wychowawcze szkolnictwa polskiego dla mniejszości narodowych.

Szkoły te — z jednej strony — wiążą swych wychowanków z polską kulturą, wychowują ich w duchu umiłowania Polski Ludowej i przygotowują do czynnego życia obywatelskiego w Polsce. Z drugiej zaś strony — zbliżają uczniów do piśmiennictwa i kultury ukraińskiej, białoruskiej, słowackiej, litewskiej i niemieckiej, co wpływa na powiązanie młodzieży z jego środowiskiem narodowościowym.

Szkolnictwo dla mniejszości narodowych stanowi także dogodny, lecz niedostatecznie jeszcze wykorzystywany czynnik oddziaływania na lokalne środowiska mieszane narodowościowo w duchu tolerancji narodowej, szacunku dla wartości kulturalnych i tradycji postępowych mniejszości narodo-

wych. Pracy wychowawczej w tym szkolnictwie sprzyja okoliczność, że prawie wszystkie narody, z których wywodzą się mniejszości narodowe w Polsce, należą do rodziny państw socjalistycznych.

PRZEŻYTKI NACJONALIZMU

Specyfika pracy w szkolnictwie dla mniejszości narodowych wymaga od nauczycieli dużego wyczulenia politycznego oraz przestrzegania zasad internacjonalistycznych w codziennej praktyce wychowawczej. Nie zawsze jednak tak się dzieje.

Zwłaszcza katecheci w wielu szkołach z upodobaniem spełniają rolę „obrońców polskości”, na lekcjach religii zachowując się w sposób uwłaszczający godności narodowej młodzieży. Daje się to we znaki szczególnie dotkliwie uczniom narodowości słowackiej i litewskiej.

Bywają wypadki, że księża w oficjalnych memorialach „ostrzegają” władze państwowe przed „zgubnymi wpływami udzielania mniejszościom swobód i praw kulturalnych”. Oto np. pewien ksiądz protestuje przeciwko projektom uruchomienia szkoły dla młodzieży ukraińskiej, ostrzega, że „ludność rzymsko-katolicka odnosi się z wielkim oburzeniem” do projektu i dramatycznie zapytuje „co z tego może wynikać w przyszłości?” Gorzej, że na ogół poglądy zawarte w tych memorialach są rozpowszechniane ze szkodą dla atmosfery współżycia w środowiskach mieszanych.

Kuratoria, inspektoraty oraz nauczyciele, kontynuując chlubne tradycje postępowe polskiej szkoły, przeciwstawiają się na ogół przenikaniu do szkół nacjonalistycznego obskurantyzmu, przejawiają troskę o zaspokojenie potrzeb oświatowych mniejszości narodowych. Nie oznacza to jednak, że i władze szkolne są już całkowicie wolne od uchybień i zaniedbań.

Działalność niektórych inspektoratów, poszczególnych pracowników kuratoriów i nauczycieli cechuje formalny lub niechętny stosunek do szkolnictwa narodowościowego i jego potrzeb kadrowych, lokalowych, zaopatrzeniowych. Zdarzają się też fakty lekceważenia — wyjątkowo ważnej właśnie w tych szkołach — współpracy z komitetami rodzicielskimi. Niektórym pracownikom oświaty wydaje się, że służba kulturze polskiej wymaga... wynarodowienia mniejszości narodowych. Jest to złe pojęcie „misja społeczna”, sprzeczna z linią wytyczoną przez politykę partii i rządu.

Oto próbka takich swoiście pojętych poglądów: „Nauczanie w języku ukraińskim wymyśla Warszawa i Koszalin, ale u mnie w powiecie tego nie będzie” — oświadczył publicznie pewien inspektor szkolny.

Dzieci mniejszości narodowych nie wynoszą na ogół z domu znajomości ojczystego języka literackiego. Zdarza się więc w białoruskiej, ukraińskiej, czy słowackiej szkole, że dziecko zwraca się do nauczyciela i prosi: „Panie, powiedzcież to nam „po naszymu”, albo „po prostemu” czy „po polsku”, bo ja nie rozumiem”. Zdarza się, że nawet nauczyciele na podstawie tych zjawisk propagują pochopnie likwidację tych szkół, istniejących przecież m. in. po to, aby nauczyć dzieci ojczystego języka literackiego.

Ostatnio, na wspólnym posiedzeniu Komisji Oświaty KC oraz Komisji d/s narodowościowych, gdzie m. in. omawiano wyniki nauczania w szkołach dla mniejszości narodowych wskazano, że niektórzy pracownicy oświatowi zbyt często skłonni są dopatrywać się wyłącznie obiektywnych przyczyn słabości pracy tych szkół. W szkole z niepolskim językiem nauczania uczeń ma więcej zajęć szkolnych niż w szkole polskiej, gdyż poczynając już od klasy II uczy się dwu języków, ojczystego i polskiego co sprawia mu dodatkową trudność. Kadra nauczycieli jest młodsza stażem i doświadczeniem od kadry nauczycieli polskich.

Istnienie tych obiektywnych trudności tym bardziej skłaniać winno władze szkolne, ogniwa ZNP oraz aktyw nauczycielski do większego wysiłku. Młodzież mniejszości narodowych, kształcąca się w szkołach z ojczystym językiem nauczania, nie może napotykać na bariery we wchodzeniu w krąg kultury polskiej. Musi mieć ona równy start życiowy z młodzieżą polską w dokonywaniu swobodnego wyboru między różnymi szkołami średnimi i w kontynuowaniu nauki na wyższych uczelniach.

O wyborze języka wykładowego w każdej szkole decyduje w zasadzie kierunek dążeń ogółu zainteresowanych rodziców. Niedobrze jednak się dzieje, jeśli rodzice rezygnują gdzieś z posyłania dzieci do szkół dla mniejszości narodowych ze względu na słaby poziom nauczania. Gorzej jeszcze, jeśli rezygnacja ta następuje wskutek niechętnego do tych szkół stosunku nauczycieli i środowisk polskich.

Głównym zadaniem staje się dziś więc podniesienie poziomu szkolnictwa dla mniejszości narodowych oraz stworzenie czystej, wolnej od nacisku atmosfery, w której swobodnie wyrażana będzie wola rodziców i młodzieży, co do języka wykładowego (zwłaszcza w klasach starszych).

Obok troski o właściwe nauczanie w językach ojczystych podjąć trzeba wysiłki zapobiegające wynoszeniu ze szkół niewystarczającej znajomości języka polskiego i nieznajomości polskiej terminologii przedmiotowej. Jest to ważne tak dla młodzieży mniejszości narodowych, jak i dla państwa, ponieważ dobra znajomość polskiego jest istotnym warunkiem dalszego zdobywania wiedzy i podwyższenia kwalifikacji zawodowych przez tę młodzież.

„1000 SZKÓŁ NA TYSIĄCLECIE”

Szkolnictwo z niepolskim językiem nauczania, podobnie jak całe nasze szkolnictwo, boryka się ze znacznymi trudnościami lokalowymi. Państwo nasze troszcząc się o zaspokojenie tych potrzeb, zbudowało w ubiegłym roku wielki gmach dla jedenastoletniej szkoły słowackiej w Jablonce — na Spiszu i Orawie, obecnie buduje piękne gmachy szkolne dla młodzieży litewskiej w Puńsku w pow. Sejny, dla białoruskiej w Bielsku Podlaskim oraz w wielu wioskach.

Ludność białoruska, ukraińska, słowacka, litewska, niemiecka, żydowska, oraz uchodźcy polityczni z Grecji — podejmują wspólnie z ludnością polską, bądź samodzielnie — liczne zobowiązania budowy nowych szkół, świetlic, przedszkoli, mieszkań dla nauczycieli, czy dróg itd. Wszystko to przyczyni się do poprawy stanu lokalowego tego szkolnictwa. Jednak nadal, przede wszystkim we wsiach woj. białostockiego oraz w powiecie Nowy Targ — na Spiszu i Orawie, wiele szkół pozostanie w ciasnych izbach chłopskich, wynajmowanych na sale lekcyjne.

Towarzystwa Społeczno-Kulturalne mniejszości narodowych ani na chwilę nie powinny więc osłabić pracy nad realizacją hasła „1000 szkół na Tysiąclecie”. Jest to bowiem sprawa bardzo istotna także dla dalszego rozwoju bazy materialnej szkolnictwa dla mniejszości narodowych.

STANISŁAW MAUERSBERG

„Trybuna Ludu”
6 września 1959 r.

Пашырайце
беларускую
асвету
сярод
дарослых!

»НІВА«



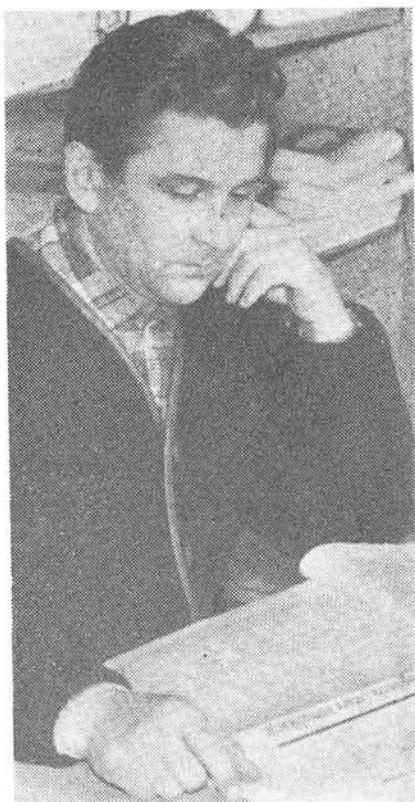
Георгі Валкавыцкі. Пра-
цуе галоўным рэдактарам
«Нівы» ад заснавання рэ-
дакцыі.

«Ніва» з'яўляецца прэсавым органам ГП БГКТ. Першы нумар нашага тыднёвіка выйшаў 4 сакавіка 1956 г. Напрамак «Нівы» — вёска. Тут знаходзіцца асноўная чытальніцкая база «Нівы». Але чытаюць нашу газету і ў горадзе. Разыходзіцца яна па ўсёй краіне. «Ніва» мае таксама сваіх падпісчыкаў у 13 замежных краінах. Сярэдні тыраж «Нівы» — 5258 экзemplяраў. Сярэдні лік падпісчыкаў 4271. Тыраж і падпіска з кожным годам узрастаюць. Калі, напрыклад, у 1957 годзе на падпісцы было распаўсюджана 148 000 экзemplяраў «Нівы», дык у 1964 годзе гэты лік павялічыўся да

225 000 экзemplяраў. Хто «Ніву» чытае? Калі верыць анкеце, якую рэдакцыя правяла сярод сваіх чытачоў, дык асноўнымі чытачамі «Нівы» з'яўляюцца людзі маладыя (да 30 год).

Для збіральнікаў цікаўнасцей: калі б усе літаркі з «Нівы» (у натуральным размеры), якія друкаваліся ў ёй на працягу дзесяці год, паставіць адну каля адной (упрытык) скажам на шыротнай паралелі, якая праходзіць праз Беласток, дык яны апаясалі б нашу планету.

Са шматлікіх публікацый «Нівы», з якімі яна выходзіла на працягу дзесяці год сваёй дзейнасці, мы выбралі найбольш характэрныя і такія, якія не звязаны актуальнымі заданнямі і маюць трывалую вартасць (быт, людзі, гісторыя роднай зямлі). Гэта свайго роду выбраная творчасць «Нівы».



А. Амільяновіч

Аляксандр Амільяновіч. Працаваў у «Ніве» ад 6. III. 1956 да 15. I. 1959 года. Працуе зараз у «Газеце Беларускай».

ТАЦЯНА

Навокал шумела векавая Белавежская пушча. Зблізку не было ніводнай вёскі. Ужо ад некалькіх год жылі тут Тацяна і Ларыён Жылюкі. Нязгорш ім было. Раніцай пушча будзіла іх на працу. Дзеці заставаліся ў хаце, а яны ішлі на чыгунку.

Час ад часу над пушчай праляталі са страшэнным выцём самалёты. Час ад часу асцярожна заглядалі туды бурыя постаці фашыстаў, і толькі гэта напамінала, што недзе там, далёка, ідзе вайна.

У пушчы было штораз больш партызанаў. Было гэта ў ліпені а мо ў жніўні 1941 года. Вечарам у хату Жылюкоў зай-

шоў са сваім патрулём славуты арганізатар партызанскіх атрадаў — Іван Іванавіч.

Жылюкі — людзі простыя, разумелі вайну, з нянавісцю глядзелі на фашыстаў. Іх простыя сэрцы зразумелі патрэбу дзеяння. Хутка дамовіліся з Іванам Іванавічам — дапамагаць партызанам, збіраць зброю, ежу, забяспечыць іншымі неабходнымі артыкуламі, арганізаваць шырокую сетку сувязных. Устаноўлена сустрэчы, і партызаны ізноў пайшлі ў пушчу.

Ларыён Жылюк удзень працаваў, а ноччу і ў святочныя дні ішоў далёка ў навакольныя вёскі. Ведаў там людзей, ведаў, да каго звяртацца, а і людзі таксама яго ведалі. Ведалі яго і ў Барысаўцы, Навасадах і Дубінах. Ларыён Жылюк прыносіў ад іх ежу, тытунь, гранаты, зброю. Тацяна латала адзенне, сцірала бялізну партызанам, яны яе проста матушкай называлі. Кожнаму аднаму знайшлося ў яе добрае слова. Таму, бывала, гузік прышые, таго малаком пачастуе, таму перавязку зменіць. Яе простае беларускае сэрца ўсіх кахала.

Прайшла зіма 1942 года. Партызанскі рух у пушчы ўзмацняўся. Фашысты былі раз'юшаныя, бо ведалі, што нехта дапамагае партызанам, што нехта корміць іх, забяспечвае зброяй, даносіць інфармацыі.

У жніўні 1942 года на падставе падазрэнняў гестапа арыштоўвае Жылюкоў, а разам з ім сорок іншых людзей і адстаўляе іх у гестапа ў Гайнаўку, а потым у Белавежу. Там фашысты праводзілі следствы, бязлітасна білі арыштаваных, дапытваліся, хто мае сувязь з партызанамі і хто ім дапамагае. Аднак людзі трымаліся цвёрда. Маўчалі. Гітлераўцы, не маючы дакладных даных, фактаў, вырашылі ўхапіцца іншых спосабаў.

Разам з Жылюкамі і іншымі партызанамі арыштавана Уладзіслава Янкушка з Горнага, каля Гайнаўкі. Калі Янкушка паклікалі на следства, у пакоі было двух немцаў. Адзін з іх, тоўсты як бочка, сядзеў каля стала над разложанымі паперамі, а другі — высокі і падстаўны, залажыўшы нагу на нагу, стаяў ля акна, абалершыся аб аконную раму, курыў папяросу і нядбайна ляскаў сябе па халяве бота кароткай пыткай. Немец прыжмурыў вочы, паглядзеў згары ўніз на Янкушка і прамовіў праз зубы.

— Ну Янкушак, кажы, хто ўтрымоўвае сувязі з партызанамі, хто збірае ім зброю, ежу, інфармацыі, хто іх паведамляў аб усім, калі не скажаш — то, вось, скуру на кавалкі парэжу, вось гэтым кнотом.

Вочы Янкушка разгублена глядзелі то на аднаго, то на другога гестапаўца.

— Хто мае сувязь, я не ведаю, — шаптаў збялелымі губамі,

— але панове, злітуйцеся, дайце мне час і магчымасць, а я ўсё разведаю, буду вам верны, як сабака, з маіх вачэй ніхто не сыдзе, зраблю ўсё, што толькі мне скажаце. Калі акажуся здраднікам — тады знішчыце ўсю маю сям'ю.

Гестапаўцы паглядзелі на сябе, потым на Янкушка, спыталі яшчэ аб некаторых асабістых і сямейных падрабязнасцях: ці ведае пушчу, навакольнае насельніцтва і г. д.

Праз хвіліну Янкушак сядзеў ужо на крэсле побач стала. Курчэ цыгара і ўважліва слухаў інструкцыю, якую падаў яму гестапавец. Пасля гэтага немец падсунуў яму пад нос картку. Янкушак прабегаў па ёй вачыма і на паўголоса прачытаў:

— Я, Уладзіслаў Янкушак, абяцаю верна служыць германскай імперыі, Фюрэру, дапамагчы выкрыць бандытаў, іх супрацоўнікаў і г. д. і г. д.

Памачыў пяро і падпісаў. І гестапавец і Янкушка былі задаволены. Праз некалькі дзён немцы выпусцілі ўсіх, хто быў арыштаваны.

Між іншым быў выпушчаны і Янкушак. Янкушак, вярнуўшыся дамоў, наладзіў некаторыя справы і патаемна заявіў суседзям, што баіцца, каб ізноў не арыштавалі яго і дзеля гэтага ўцякае ў партызаны. Доўга блудзіў Янкушак па пушчы, пакуль навізаў сувязь з партызанамі — сувязнымі.

Штопраўда, у гэты час людзі не вельмі верылі адны другім, але што ж, Янкушак сядзеў, яго ж «білі», іншыя сувязныя ведалі яго, гэтакім чынам здабыў сабе паважанне.

Заходзіў да Жылюкоў, браў ежу, боепрыпасы, хадзіў да іншых сувязных, пазнаваў кантактныя скрыткі, пасылаў інфармацыю ў гестапа.

Гестапаўцы заціралі рукі і чыталі ўсё, што дастаўляў ім Янкушак. Рабілі нейкія спіскі.

Аднойчы ў марозную студзенскую ноч 1943 года гестапа нахлынула на жылюкову хату. Гітлераўцы ўляцелі як звяр'ё, як раз'юшаныя шалёныя сабакі. Пераварнулі ўсё дагары нагамі, але рэвізія не дала пажаданых вынікаў.

— Дзе зброя, ты сабачая скура, — выў разбэшчаны гестапавец і бязлітасна калаціў Ларыёна прыкладам пісталета па акрываўленым твары і галаве. Іншыя фашысты павалілі на падлогу Тацяну. Душылі яе, гнетлі каленамі, вырывалі валасы, настойвалі, каб паказала ім схованку са зброяй і ежай, нарыхтаванай для партызан.

Акрываўленых і беспрытомных Жылюкоў фашысты кінулі на самаход і завезлі ў Белаавежу, у гітлераўскі штаб да барацьбы з партызанамі і кінулі іх у пограб на бетонную падлогу. У тую самую ноч, па ўказанню Янкушка, арыштавана 34

іншыя асобы, абвінавачаныя за дапамогу партызанам.

Беларусы і палякі запоўнілі падвалы гестапа. Сядзелі за адну і тую ж самую справу.

Пачалося следства. З пакояў, дзе праводзілі допыты, дзень і ноч несліся стогны і энкі катаваных людзей. Людзі цяпелі нялюдскія здзекі. Гітлераўцы цкавалі іх сабакамі, якія, кідаючыся, вырывалі кускамі цела, раздзіралі скуру кольбамі і пытамі, катавалі бязлітасна і ўсім на вочы прыводзілі Янкушку.

Тацяну Жылюк увялі ў следчы пакой. Сцены былі пахляпаныя крывёй. Янкушак стаяў з двума гестапаўцамі і курчэ папяросу.

— Пазнаеце яе? — звярнуўся да Янкушка гестапавец.

— Так, пазнаю, — гэта Тацяна Жылюк, — адказаў Янкушак.

— Пазнаеце яго? — акінуўся да Тацяны гестапавец.

— Так, — прашаптала Тацяна...

Жандарм на доўгіх бусліных нагах падыйшоў калыхаючыся да Тацяны і падняў пальцам яе бараду ўгару.

— Затым кажы, дзе, калі, каму, ды колькі давала ежы, якія партызаны заходзілі да вас, каму мужык даваў зброю, боепрыпасы, якія інфармацыі збіраў.

— Я нічога не ведаю, — дрыжачымі губамі прашаптала Тацяна і пагардліва паглядзела на Янкушка. Гестапавец кінуў на яго галавою. — Кажы!

— Я, — пачаў той, — хадзіў да Жылюкоў толькі і толькі разоў, з такімі і такімі партызанамі, атрымлівалі тут ежу, бялізну, тытунь, боепрыпасы, апошнім разам былі тады і тады...

І тут Янкушак падрабязна разказаў усё, што ведаў аб Жылюках.

— Эх, Янкушак, Янкушак, — прашаптала Тацяна. — Ці ты ведаеш, што робіш? Табе гэтага ніхто не забудзе. Прападзем мы, — то знойдуцца іншыя, якія табе заплацяць за крыўду, няхай толькі закончыцца вайна.

Раптоўны ўдар па твары разышоўся рэхам па пакоі. Тацяна ўпала.

Гестапавец бязлітасна біў яе ботам. Жанчына ўсхапілася на ногі.

— Падыйдзі сюды да акна, — кінуў зверскі. Тацяне нешта шумела ў вушах, падыйшла да акна.

— Глядзі, — паказаў рукою.

Напроці царквы, паміж старымі дрэвамі, была зробленая шыбеніца. Вецер калыхаў мёртвыя целы павешаных, у адной толькі бялізне, партызан.

Перад вачыма яе соўваліся белыя плямы.

— Гэта такія, як ты, як вы ўсе, — прамовіў гестапавец. — І ўсё вы знойдзецеся там. Вось, толькі тады выратуеш сябе, калі пакажаш нам вядомых табе інфарматараў, сувязных банды...

Тацяне шумела ў галаве, засыхала ў горле, у вачах стаяла царква, дрэвы, шыбеніца і павешаныя ахвяры... Яна не адказала на пытанне.

Гестапавец пачаў біць. Біў дзе папала: па галаве, твары, па ўсім целе. З-пад стала выскачыў вялізны сабака воўчай пароды, раз'юшаны, злосны, вочы яго набеглі крывёю, рваў зубамі цела. Немцы ўсё білі. Адзін з іх стукнуў ботам у твар, выбіў некалькі зубоў.

Нарэшце засопліся і перасталі біць. Тацяна абамлелая ляжала на падлозе. Яе аблілі вадою і кінулі ў падвал.

Калі ачуныла, пабітае цела балела, цякла кроў, спух акрываўлены твар, мутнелі думкі ў галаве.

У падвале было холадна, мороз быццам бы зубамі кусаў. Вада і хлеб не напаўнялі страўніка. У той жа час гестапаўцы выконвалі экзекуцыі на тых, якія былі раней арыштаваны. Пасля поўдня каты паздымалі раней павешаных людзей і шыбеніца стаяла парожняя.

У гэты вечар ні адной душы не бралі на допыт, ніхто не глядаў да арыштаваных. Усюды было ціха. Арыштаваныя не атрымалі належнай на вячэру порцыі вады і хлеба. Ноччу ніхто не спаў. Людзі цяжка ўздыхалі і прадчувалі канец жыцця, што разам з раніцай прыдзе смерць — прыдзе і вызваленне ад мук і катаванняў.

Тацяна сядзела абaperшыся галавою аб сцяну. Успамінала сваё жыццё, мінулае. Не надта там і было пра што ўспамінаць. Не прыйшлося ёй многа радасці пазнаць у жыцці. Заўсёды бяда, заўсёды трэба было цяжка, цяжка працаваць. Калі ўспомніла дзяцей, — так сэрца зашчымела, боль сціснуў грудзі, у вачах закруціліся слёзы і цёплай стружкай пацяклі па твары.

Прайшла ноч. На досвітку згары пачуліся глухія крокі, чыесці галасы. Усе ўзіраліся на дзверы. Некалькі гестапаўцаў, сярод іх Янкушак і шуцман Касіхін ускочылі ў арышт і пачалі палкамі гнаць усіх на калідор.

— Раздзявацца да бялізны, — равелі Янкушак і Касіхін. — Хутчэй, хутчэй!

Арыштаваныя дрыжачымі рукамі скідалі вопраткі. Янкушак бегаў як сабака паміж усімі і біў яшчэ горш, чым гестапавец. Паказваў сваю бязмежную нянавісць. Усіх паставілі

пад сцяну. Людзі стаялі ў адной толькі бялізне, некаторыя былі амаль голыя, дрыжэлі ад холаду і перапалоху.

Прышло яшчэ некалькі гестапаўцаў з сабакамі, акружылі арыштаваных і пагналі ўверх. Ізноў пасыпаліся моцныя ўдары.

На верхнім калідоры стаяла некалькі афіцэраў гестапа. Адзін з іх прачытаў прозвішчы і коратка сказаў: — За дапамогу бандытам, за шкоду прычыненую III-цый Германскай імперыі — усе будуць павешаны.

Янкушак старанна растлумачыў, прытым дадаў свой каментарый.

Гестапаўцы расставіліся густым шпалерам і пачалі выганяць засуджаных на вуліцу.

Тацяна і Ларыён апошні раз глянулі на сябе. Ці думалі яны што? Мабыць у гэтых хвілінах людзі нічога не думаюць. Такія словы як: жыццё, думкі, пачуцці былі ўжо за імі. Перад імі стаяла шыбеніца і смерць.

Калі ўжо першыя прысуджаныя выйшлі на вуліцу, пад'ехала некалькі нямецкіх аўтамабіляў. Затрымаліся каля гестапа. Выйшла некалькі афіцэраў. Адзін з іх, старшы чынам, падышоў да канвоя, паклікаў усіх набок і жыва нешта тлумачыў. Прысуджаных затрымалі.

Потым ізноў усіх загналі ў падвал. Бліснуў праменьчык надзеі. Ці застанемся ў жывых? Неўзабаве ўкінулі ім адзенне. Прынеслі хлеб і ваду, вярнулася надзея, вера ў жыццё.

Ізноў ноччу ніхто не спаў, усе чакалі з непакоем, што пакажа раніца. Кожнаму ў вачах стаяла шыбеніца. Раніцай гестапаўцы выгналі арыштаваных на панадворак, дзе стаяла некалькі чорных грузавікоў. Падалі прыказ забрацца ў кузавы. Усім было ясна. Значыцца не шыбеніца, а расстрэл. Фашысты заўсёды грузавікамі вазілі свае ахвяры.

Грузавікі павярнулі на гайнаўскую шашу. Мінулі пушчу, Гайнаўку і затрымаліся ў Бельску на вуліцы Галавескай, дзе знаходзіўся катаржны абоз, з яго людзі не варочаліся.

Ларыён Жылук разам з транспартам іншых таварышаў нядолі паехаў у канцлагер у Штутгоф, каля Гданьска. Яго прахі назаўсёды засталіся на пясканых выдмах. Тацяну завезлі ў лагер — Гумбінен. Там перажыла сваю геену — засталася ў жывых.

Сёння сама сабе не верыць і не можа адказаць сабе, якім чынам, як вырвалася яна з рук смерці ў гэтую студзенскую марозную раніцу ў Белавежы.



В. Баршчэўскі

Васіль Баршчэўскі. Працаваў у «Ніве» ад заснавання рэдакцыі да 29. II. 1964 года. Працуе зараз у «Газеце Беларускай».

Жоська—знахарка

У купэ сядзела некалькі вясковых жанчын, ахуганых шарсцянымі хустамі, нейкая старэнькая бабулька і маладая, гарадскога выгляду, жанчына, апранутая ў падношанае паліто з выленелым футраным каўнерам і ў прытоптаных на тоненькіх высокіх абцасіках туфельках. Побач яе сядзела бялявая ды зусім бледненькая, з патухлымі вочкамі, дзяўчынка год дванаццаці.

— Вы таксама да Жоські? — звярнулася адна з вясковых цётаў да жанчыны гарадскога выгляду.

— Але, да яе, — адказала жанчына. — Бачыце, нейкае ліха прычэпілася да мае Леначкі, ды мучыць бедненькую. То ў га-лоўцы, быццам той чмель, гудзе, то за живоцік, як абцугамі, хапае. Ніяк не хоча ад яе адчэпіцца. А яна, як бачыце, ужо ледзь жыве, зусім бледненькая зрабілася. За што на яе нявін-ную душаньку бог напусціў такую бяду — я ўжо і сама не ведаю, — бедала жанчына.

Цёты са спачуваннем уздыхалі ды ківалі галовамі.

— Я ўжо і ў доктара некалькі разоў была, — цягнула далей жанчына. — А як жа, прыпісаў нейкае лякарства, раіў больш

па двары бегаць. Думаеце, памагло? Ані капелютачкі, як мучыла яе злое так і далей мучыць.

— Плюнь ты, даражэнькая, на гэтых дактароў, — заўважыла бабулька, часта моргаючы пачырванелымі, запухлымі, схварэла-загноенымі вочкамі. — Ды ці ж яны ў сілах супраць-паставіцца злему, калі яно прычэпіцца да чалавека? Вось і ў мяне ўжо некалькі год таму нейкая хвароба да вачэй прычэ-пілася ды адступіць не хоча. Спачатку думала я, што паба-ляць крыху ды перастануць. Ці мала што баліць чалавеку ў жыцці, хто ж на гэта ўвагу звяртае. А тут яны мне штораз больш баляць. Раілі мне цыбулю нанач прыкладаць да вачэй. Прабавала, нічога не памагае, наадварот, штораз горш баляць. Ну, думаю, не іначай як нейкае злое прычэпілася да іх. Тады вырашыла я, няма іншай рады, трэба падацца да Жоські.

Цяпер не ведаю, калі ўжо Жоська не дапаможа, тады ма-быць сляпой давядзецца ў сырую зямельку лягаць.

— Дапаможа, чаму ж не дапаможа, — упэўнена заўважыла адна з цётаў.

— Кажуць, што трэба толькі моцна верыць у яе дапамогу, дык адразу, нібы рукой адыме. А калі не, дык гэта найлепшы знак кары божай, — вырашыла яна.

— Каб не дапамагала, ды і народ да яе не ехаў бы, — пе-раканаўча заявіла другая з жанчын. — А то кажучь, з усяе Польшчы людзі едуць. Са Шчэціна, Быдгашчы, Вроцлава, а нават з Варшавы. Там жа няма ла слаўных дактароў, аднак, мабыць, не здолеюць са злом змагацца, калі людзі аж сюды едуць.

— Вялікую ласку Гасподзь бог спаслаў на Жоську...

Цягнік неміласэрна заскрыгатаў тармазамі і цёта, не скончыўшы прарочых слоў, кулём паляцела з лаўкі. Яна ўзбятэжана ўстала і нешта шэпчучы, выйшла разам з ін-шымі з вагона.

Арлянка — маленькі прыпынак на шляху Бельск — Гай-наўка. Тут штодзённа цягнік выплёўвае некалькі дзесят-каў хворых людзей, якія з надзеяй цудоўнага здаравення спяшаюць у Орлю. Тут і жыве славутая знахарка — Жось-ка.

Каб нешта даведацца аб цудоўных Жосьчыных метадах лячэння, я зайшоў у Прэзідыум ГРН.

Аказваецца, што пацыентаў у Жоські ніколі не бракуе.

— Няма такога дня, — кажа сакратар прэзідыума, грам. Федаровіч, — каб праз яе прыёмны пакой не прайшло не-калькі дзесяткаў людзей. Штудзённа ідуць і едуць з усіх канцоў Польшчы. У жыхараў Орлі не мае яна вялікай па-пулярнасці. Большасць смяецца з яе дурманнах метадаў.

Аднак неаднойчы, калі ў каго-небудзь захварэе дзіцё, дык нясе да Жоські.

— Ці ж у Орлі няма медпункта?

— Ёсць, і вельмі добра забяспечаны, аднак фельчар Карп Куптэль, якому ўжо 70 год, не здолее ўсім дапамагчы. Тады што ж, няма выхаду, трэба йсці да Жоські. Вядома, чалавек у бядзе апошняе дошкі ратунку шукае. Мы ўжо некалькі год дамагаемся кваліфікаванага доктара, — гаварыў далей Федаровіч, — аднак усё дарма. Вось і цяпер трымаем для яго спецыяльнае памяшканне, аднак Аддзел аховы здароўя не можа нам прыдзяліць доктара. А Жоська, не маючы адпаведнага канкурэнта, далей шукае бязглуздых людзей і збівае не малы капіталік на людской дурнаце. Найлепш будзе, калі вы самі туды зойдзеце, ды пабачыце. Толькі не бярыце з сабой партфеля.

— Чаму ж гэта? — здзівіўся я.

— Бачыце, справа ў тым, што ўжо некалькі разоў пісалі аб нашай знахарцы ў друку, з прычыны чаго мела яна непрыемнасці. Таму цяпер вельмі асцярожная і падазронах людзей не хоча прымаць, — выясніў ён.

Старэнькаў, невялічкая хатка, з саламянай страхой, ды маленькімі, нізенькімі аконцамі, пры вуліцы Пасвёнтнай — гэта памяшканне слаўтай знахаркі.

Ля хаты стаіць некалькі фурманак вымашчаных сенам, куча веласіпедаў пад плотам, матацыкл — усё сведчыць аб тым, што і сёння ў Жоські пацыентаў не бракуе.

Самую Жоську сустраў я ў маленькіх сенцах. Давала нейкія ўказанні аднаму з пацыентаў.

— ...пасля трох дзён спаліш гэтую анучу і попел у 12 гадзін ночы высыпеш на разыходных дарогах у полі, — шапялявіла яна старэчым голасам.

Сама Жоська невялічкая, кволая, старэнькая ды па гадах рухлівая жанчына. Яе маленькія, бліскуча-чорненькія, пранізлівыя вочкі, падазрона змерылі мяне з галавы да ног.

— А ты да каго? — бесцырымонна спытала мяне.

— Да вас, бабулька, — з пакорай адказаў я прыглушаным голасам.

— Адкуль жа ты?

— Аж з-за Беластока.

— Чым прыехаў? — падазрона пытала далей бабка.

— Вядома чым, цягніком.

— Цяпер жа няма цягніка, чаму хлусіш? — разанула бабулька.

— Прыехаў я рана, — кажу, — аднак не ведаў, дзе вы, бабулька, жывеце. Я ж тут першы раз. Толькі цяпер мне людзі, каб ім бог даў здароўе, паказалі вашу хату.

Відавочна такое тлумачэнне пераканала падазроную знахарку аб маіх добрых намерах.

— Што баліць? — спытала яна ўжо зусім лагодна.

— Нага, у пахвіне, — адказаў я, некалькі крокаў чыкіл-днуўшы, каб лепш пераканаць бабулю.

— У доктара быў?

— Ды ці ж у аднаго?

— Ну і што?

— Нічога, як балела, так і баліць.

— Ну, добра, заходзь у кватэру і чакай сваёй чаргі, — сказала бабуля.

Адчыніў я паказаныя дзверы, а там у цесным пакоіку чалавек мо' трыццаць чакае на цудоўных лекі. Жанчыны і мужчыны, моладзь, дзеці, старэнькая бабулька — бітком пакой набіты. У пакойчыку брудна, смурод. Аднак у пацыентаў настрой прыўзняты. Усе яны сядзяць і стаяць нейк сур'ёзна задуманыя. Звяртаюцца да сябе толькі ціхенькім шэптам.

Тут сустракаю я знаёмых жанчын з цягніка, усе сядзяць яны набожна пахіліўшы галовы, толькі маленькая Леначка, распыранымі (відавочна ад страху) вочкамі, спалохана разглядаецца навокал.

Вось на ложку сядзіць нейкая зусім маладзенькая вясковая дзяўчынка-прыгажуня, сплёўшы рукі на падазрона выпуклым жывоціку. Мабыць яна недзе на палявы «злы вецер» наткнулася.

Ну што ж, Жоська спецыяліст па ўсіх справах. Няма такой хваробы, каб яна не змагла вылечыць сваім цудоўным спосабам.

У куче пакоя стаіць невялічкі стол, над ім у покуце маленькая іконка, а на сталі кучай ляжаць Жоськіны «медыцынска-чарадзейскія прылады».

На першым плане найважнейшы інструмент — гэта «вечны агонь» у шкляначцы пасля гарчыцы. Гэта ніколі не выгасаючы агонь (Жоська заўсёды да шкляначкі далівае масла, каб не пагас), мае вялікую моц, таму Жоська замаўляючы хваробу, менавіта да яго і моліцца. Далей ляжаць два сталовыя, з паадломванымі вяршамі, нажы, кавалачкі «святога» хлеба, торбачка з гарохам, другая з аўсом, клубок канопных нітак, куча пакуля і графін са свянцонай вадой.

Ну вось і ўсе «медычныя» прылады слаўтай знахаркі.

У гэтым жа пакойчыку, на вачах прысутных, знахарка праводзіць свае практыкі. Вось чарга прыйшла на пажылую вясковую жанчыну. Яна падышла да століка ў куче.

— Як завуць? — пытае Жоська.

— Тафіля, — пакорна адказвае жанчына.

— Што баліць?

— Грудзі і живот, у галаве круціцца.

Знахарка бесцпырымонна расшпіляе жанчыне кафтан і сажае туды свае трасучыся рукі.

— Гэта ад перапалоху, — вырашыла яна, ашчупваючы жанчыну. — Хвароба вельмі задаўнела. У доктара была?

— Была, нічога не памагае.

— Ну бачыш, трэба было адразу да мяне прыехаць, а не па дактарах цёгацца, — злосна заўважыла яна. — Цяпер можа быць горш, хвароба вельмі задаўнела, ну, але нічога — паспрабуй.

Сказаўшы гэта, бабка наліла свянцонай вады ў шклянку, накрыла анучай і ўзяўшы за яе рукамі пачала хуценька нешта шаптаць, пільна ўзіраючыся ў «вечны агонь».

Пашаптаўшы так нейкі час, устала, узяла са стала нож, пачала яго прыкладаць жанчыне да галавы, грудзей, жывата, адначасова нешта шапочучы. Пасля гэтага ўзяла клубок з ніткамі, перапаліла кавалак ніткі над «вечным агнём» і, стаўшы на калені, пачала вязаць на ёй вузлочки.

— Гэтай ніткай абвяжаш сабе паясніцу, — сказала яна жанчыне, — і насі датуль, пакуль не перастане балець живот.

Пасля знахарка накрыла жанчыну нейкай доўгай бруднай шматай, на шмату палажыла некалькі скруткаў пакуля і, падпаліўшы яго, пачала па-маладзецку падсакваць ды выкрыкваць.

— А кыш, а кыш, акаянны, як прыйшоў так адыйдзі, ды згінь, прападзі. — Пасля гэтых эксперыментаў знахарка выйшла з торбы некалькі гарошкаў і пашэптваючы пачала перакладаць іх з рукі ў руку.

— Кінеш іх за сябе на разыходных палявых дарогах. Ну, гэта ўсё, хадзі, — сказала яна жанчыне, выходзячы ў сенцы.

У сенцах бабка дае апошнія ўказанні пацыенты, а таксама бярэ заплату.

Глядзеў я на ўсе гэтыя эксперыменты знахаркі і губы кусаў, каб не выбухнуць смехам.

А людзі ўсе сядзяць з вялікай павагай, яны вераць у Жоську, вераць у яе няземскія здольнасці.

Цяжка паверыць, што ўсё гэта адбываецца ў XX стагоддзі, калі навука асягнула так вялікі ўзровень развіцця, што ўсё гэта адбываецца побач прасторнага, забяспечанага ў навейшыя лекарскія прылады пункты аховы здароўя. Аж хочацца крыкнуць: — эх, людзі, людзі, чаму ж вы такія наіўныя, чаму ж дазваляеце хітрай знахарцы ашукваць вас.

Не стаў я чакаць на сваю чаргу, матэрыялу меў удоваль да задуманага артыкула. Тады выкарыстаў момант, калі Жоська была занята малітвай, па-ціхеньку выйшаў і накіраваўся

ў медпункт. Прыняў мяне вельмі ветліва ўжо пажылы фельчар Карп Куптэль.

— Ведаеце, з гэтай знахаркай не зусім лёгкая справа. Колькі ж ужо разоў я пісаў у Аддзел аховы здароўя, каб забаранілі ёй ашукваць ды неаднойчы калечыць людзей, аднак нейкіх не можа перашкодзіць яе дурманным эксперыментам. Аднак членаў сваёй сям'і Жоська не лечыць. Усе яны ідуць да мяне лячыцца, мабыць не вераць у яе няземскія здольнасці.

— Напішыце аб гэтым, — прасіў мяне фельчар. — Няхай людзі ведаюць, што Жоська — гэта звычайны шарлатан, ашуканка. Няхай людзі не дазваляюць сябе ашукваць.

З КУЗЬМОЎ ПАД НЕБА

15 год таму назад на пастушка, які разам з другімі дзяццмі пасвіў кароў на паднараўскіх сенажацях, ніхто не звяртаў асаблівай увагі. От, пастушок, як і ўсе дзеці. Нічым ён спецыяльна не выдзяляўся ад другіх. Хіба толькі сваёй смуглявасцю. Мішка быў як цыганок. Толькі вочы блішчэлі з-пад доўгага казырка бацькавай кепкі.

Самалёты ў нас рэдка лёталі. Зараз пасля вайны, дык часцей за ўсё праляталі «кукурузнікі».

— Эх, узабрацца бы на яго, — гаварыў у такі час Мішка, ведучы за самалётам вачыма, — ды паглядзець уніз. Адтуль нашыя каровы мабыць малосенькія, як мурашкі.

— Калі б былі такія, як мурашкі, дык як ты іх пабачыў бы ў траве з такой вышыні? — пярэчыў нехта.

Тут успыхвалі спрэчкі, што з самалёта можна пабачыць, а чаго не. Але ніхто з нас не ведаў, як у сапраўднасці выглядае з самалёта і таму спрэчкі канчаліся ўнічыю.

Пасля, закончыўшы пачатковую школу ў Рыбаках, пастушкі пакінулі кароў, распаўзліся па свеце. Парваліся і нашы сяброўскія сувязі. Часам толькі, прыехаўшы дамоў, чулася, што Ваня вучыцца ў Лодзі, Шурык у Любліне, а Коля яшчэ ў іншым горадзе. Для нас, пастушкоў, народная ўлада адкрыла шырокія дзверы ў свет.

Мішка стаў вучыцца ў Міхалове ў прафесіянальнай школе (зараз яна называецца засаднічай школай механізацыі сельскай гаспадаркі). Калі Мішка канчаў 2-гі клас, у школу прыехаў прадстаўнік вайсковага паветранага флота, каб заахвоціць школьнікаў да афіцэрскай школы лётчыкаў. Мішкі заахвочваць не трэба было.

У 1950 годзе Беластоцкі ВКР паклікаў Мішку на лекарскую камісію. На здароўе ён не наракаў ніколі, але тут, як на злосьць, вырасла яму балаячка на шчацэ. Ад яе абалваніла ўвесь твар.

— З такім тварам у лётчыкі? — смяяліся з яго сябры. — У кухары лепш падавайся.

— Адкінуць, — думаў Мішка.

Але камісія зусім не звяртала ўвагі на балаячку. Сказалі чакаць аж выклічуць на спецыяльную камісію ў Дэмблін. Вярнуўся Мішка дамоў і чакаў. Па-ранейшаму пас каровы, а паведамлення з Дэмбліна ўсё не было.

— На карову садзіся, лётчык! — падтрунвалі з яго аднавяскоўцы.

Дачакаўся ў канцы. З радасцю і надзеяй у сэрцы выехаў у Дэмблін.

Адтуль незадоўга ў Кузьмы надышла па пошце пасылка з Мішкавай цывільнай вопраткай. Больш ён яе не накладаў.

*

У кабінеце падпалкоўніка ваенна-паветранага флота Міхася Палеха вісіць малюнак вядомага польскага мастака Хэломонскага «Буслы». На сенажаці стаіць двух пастушкоў. Высока ў небе шарэнгай ляцяць буслы. Пастушкі з захапленнем праводзяць іх вачанятамі.

— Люблю гэты малюнак, — кажа падпалкоўнік Міхась Палех. — Дзяцінства напамінае. А памятаеш, як мы кароў паслі і варонечыя яйкі выбіралі? — звяртаецца ён да мяне.

— Памятаю. Гэта ж не так даўно. Гадоў 15 таму.

Праз увесь гэты час нам не давялося пабачыцца. А колькі ж зайшло перамен у нашым жыцці. Міхась закончыў афіцэрскую школу. Пасля школы вышэйшага пілатажу. Ён ужо 10 год лётае на ваенных рэактыўных самалётах. А яму ж усяго 30 год.

— Ну што ж, дружа, мары твае збыліся. Задаволены? — пытаю.

— Так. Люблю сваю прафесію. Звыкся з ёю так, што ляпей сябе адчуваю ў паднябесных вышынях, як на зямлі.

— Ну, а як жа выглядаюць каровы з вышыні тваіх палётаў? Як мурашкі?

— Ты гэта што, спрэчкі нашыя на пашы ўспомніў? Вось паедзем на аэрадром, сядзем у самалёт ды сам паглядзіш.

Аэрадром вылажаны бетоннымі дарожкамі. На іх роўнымі радамі пабліскаваюць стальныя прыгажуні — рэактыўныя самалёты. Вось да аднаго з іх пад'ехаў грузавік, падчапіў і вольна пацягнуў на дарожку старту. Незадоўга адтуль па-

чуўся страшэнны гук матора. Зямля затраслася пад нагамі Здаецца, што каля цябе безупынна залпамі страляюць сотні пякельных гармат. Самалёт рушыў і хутка, хутка пабег па бетоннай дарожцы. Ён непрыкметна адарваўся ад бетону і ў момант кропачкай знік у гарызонце.

Мы падышлі да навігацыйнага пункта.

— Галё, палац! Тут дваццаць ноль восем — пачуўся ў радыёстанцыі голас толькі што выстартаваўшага лётчыка.

— Я палац! Я палац! Чую вас добра. Падайце вышыню! — гаварыў навігатар, падняўшы да вуснаў слухаўку радыёстанцыі.

— Галё палац! — Тут дваццаць ноль восем. Вышыня сем тысяч метраў!

— Галё дваццаць ноль восем. Выконвайце планавае заданне.

Пасля некалькіх мінут ізноў пачуўся ў радыёстанцыі голас невідочнага лётчыка.

— Галё палац! Тут дваццаць ноль восем. Заданне выканана. Дазвольце прызамліцца.

— Галё дваццаць ноль восем. Дазваляю прызамліцца.

Не прайшло і хвіліны, як на гарызонце паявілася чорная кропачка. Яна, прыбліжаючыся, расла ў вачах. І раптам над аэрадромам нізка заблішчаў самалёт. Зрабіўшы кола, ён накіраваўся да бетоннай дарожкі і, крануўшы яе коламі малайкай пранёсся каля навігацыйнага пункта. Пачаліся нармальныя заняткі лётчыкаў.

— Ну што, працягнем? — прапанаваў Міхась.

— Страшнавата, — прызнаўся я шчыра.

— Вось табе і маеш. Майму Андрэйку ўсяго 6 год. А ён лётаў са мною быццам стары лётчык. Аж за воблакі.

Гэта мяне падбадзёрыла. Нам паднеслі парашуты і шлёмы. Надзеўшы іх, мы падышлі да самалёта і па драбінцы ўзбраліся ў кабіну. Кабіна вузенькая, у ёй не пакрунцца. Толькі галавой можна варочаць. Міхась паказаў мне, як прышпіляцца паскамі. Над галавой шчоўкнулі і засунуліся цэлулойдавыя дзверы.

— Галё палац! — пачуўся ў мяне пад шлёмам голас Міхася. Дазвольце стартаваць.

— Галё восем ноль дзесяць! Стартаваць дазваляю! — пачуўся ў адказ знаёмы голас навігатора.

— Ну, дружа, трымайся! — сказаў весела, падміргваючы да мяне, Міхась. Ён паварушыў рукой і самалёт уздрыгнуўся ад гуку матора. Рухнуў і, набіраючы хуткасці, паймаў па дарожцы. Мне захапіла дух. У вачах пацямнела. Калі адрыва-

ліся ад зямлі, не пачуў. Толькі нейкая страшэнная сіла ўціснула мяне ў крэсла. І раптам палягчэла.

— Паглядзі ўніз, — пачуўся знаёмы голас Міхася.

Я глянуў. Пад нагамі далёка ўніз хутка ўцякаў горад. Аэрадрома не відаць было. Мы зрабілі кола далёка за горадам і раптам я з правага боку пабачыў аэрадром з роўнымі радочкамі самалётаў, маленькіх, як дзіцячыя цацкі. Ён хутка прыбліжаўся да нас.

— Прызямляемся, — сказаў Мішка. Мяне ізноў моцна, аж да болю, на гэты раз пачало выцягваць з крэсла. Напружыліся паскі, якімі быў я да яго прычэплены. Самалёт лёгенька крануўся зямлі і плаўна пабег у бок навігацыйнага пункта. Над галавой шчоўкнулі і рассунуліся дзверы. У галаве кружылася і шумела.

— Адчапляйся і выходзь, — сказаў Міхась.

Я, як ап'янелы, выкарабкаўся з самалёта. Да нас падыйшлі лётчыкі і, усміхаючыся, пачалі мяне паздраўляць з першым палётам.

— Ну і як? — спытаў Міхась.

— Пякельная машына! — выціснуў я дрыжачымі губамі.

— Гэта нічога, — адказаў смеючыся Міхась. — Вось паляцеў бы ты з хуткасцю 1 300 кіламетраў у гадзіну. Гэта шмат цяжэй.

*

У той дзень мы да позняй ночы прасядзелі з Міхасём, успамінаючы нашае дзяцінства. На яго каленях заснуў 6-гадовы сыноч Андрэйка, такі ж чорненькі цыганок, як бацька ў дзяцінстве.

— Хоча быць лётчыкам, — сказаў Міхась, пяшчотна глядзячы сынка па чорнай галоўцы.

— Хто ведае, мо' як вырасце, дык ваенныя самалёты будуць непатрэбныя. Але лётчыкам праца заўсёды знойдзецца. Асваенне космасу патрабуе адважных і адданных людзей. Такім і хачу яго выхаваць.

На развітанне Міхась падарыў мне рэактыўны самалёт — верны мадэль сталёвай птушкі, на якой ён лётае.

— Завязі ў рэдакцыю «Нівы», — прасіў ён, — і скажы, што гэта ад Мішкі — пастушка, якога мары збыліся.

1963 год.



С. Вагурка

Дзядзька Лявонь (Станіслаў Вагурка) супрацоўнічае з рэдакцыяй ад яе заснавання.

Здарэнне ў дарозе

Манатонна трухае конік. Фурманка на гумовых шынах каляшацца, бы лодка на хвалях. Нудна вяртацца з кірману па сумнай перадвясенняй дарозе.

Дзядзька Іпат паварушыў лейцамі, азірнуўся, але не ўбачыў ні пакінутай кампаніі, ні страчанага часу.

Пачалося ўсё звычайна. Зайшоў Іпат у сталовую падмацавацца перад дарогаю. Прымасціўся ля занятага століка. Субяседнікі аказаліся свойскімі, падлівалі Іпату прыпраўленае піва і неўзабаве ведалі, што Іпат — гаспадар не лыкамі шыты. Адзін з субяседнікаў сказаў:

— Рэдкі ты чалавек, Іпат: у полі дасі кожнаму два ачкі на-

перад, на кірмашы купца заткнеш за пояс, у гаспадарцы — галава Саламонава, а ў кампаніі ты зямляк, кум, сват, брат.

«Адразу ўбачылі гаспадара ва ўвесь рост», — прыпомніў Іпат і, крунуўшы пугай, паласнуў коніка.

— Ноо, Сівы! Жывей! Ведаеш, каго вязеш!

Конік спыніўся, павярнуў галаву. Чорным вокам пагардліва змерыў Іпата і сказаў:

— Хвалько, не людзі цябе пазналі, а я. Вязу дурня, а ён яшчэ і б'ецца.

Тут конік брыкнуў ударам у перадок воза, выбіў дошку і падрыпаў далей па разбітай дарозе. Здзіўлены Іпат учапіўся ў барты фурманкі і зашаптаў:

— Цуды ў рэшаце, або конь гаворыць чалавечай мовай, або я разумею па-конску?

Даехаўшы да скрыжавання, конь павярнуў у лагчыну, а Іпат падумаў: «Ведае дарогу да карыта». І голасна дадаў:

— Кармлю каня, а характару яго не ведаю. Рухайся, Сівы!

Конь фыркнуў, быццам засмяяўшыся і сказаў:

— Каб цябе так кармілі на тым свеце, як ты мяне корміш. Сечку пасыпаеш дзвюма жменямі вотруб'я. Даеш зерне толькі перад палявымі работамі, і то па паўвядра ў суткі. З вышак скідваеш сена, бы кроліку. Корміш па трэцяй катэгорыі, а ездзіць любіш па першай. Паспрабуй даць менш гаручага трактару, а ён плюе «пах», «пах» і стане.

Тут конь задзёр галаву і закрычаў:

— Апусці пугу, бо паламлю аглоблі, і пашукаеш ветру ў полі!

Іпат самлеў са страху, выпусціў лейцы і паваліўся на сена. Апрытомнеў Іпат каля хаты. Спускаючы з фурманкі зацёкшыя ногі, ён пачуў голас жонкі:

— Палювайся на сябе, труп трупам! Змучыўся ў дарозе. Нясе ад цябе, як з вінакурні.

— Ой, жонка, справы незразумелыя, наш конь гаворыць чалавечым голасам, — выпаліў Іпат.

— Здзівіў выдумкай, — іранізавала жонка. — У мяне тут карова спявала песенкі, а свіння трапала «Лявоніху». Марш у хату, грошы выкладвай!

Грамадзяне мілыя, а ўсё-такі, свет створаны цудоўна. Уявіце, што было б, калі б наша жывёла выгаварвала нам праўду, што аб нас думае.



М. Кананацкі

Мацей Кананацкі. Працаваў у «Ніве» ад 1. VIII. 1960 года да 2. XI. 1964 года. Зараз працуе ў Гданьску ў школьніцтве.

Інтэрв'ю з унучкамі Багушэвіча

Так ужо звычайна бывае, што мы цікавімся сваякамі выдатных пісьменнікаў, калі б нават яны і не маглі шмат новага паведаміць нам аб сваім слаўным продку. А сутыкненне з раднёй пісьменніка — гэта ж не толькі хваляючае перажыванне; такая сустрэча дазваляе, зразумела, у пэўнай ступені аднавіць атмасферу, у якой ён жыў і тварыў, асабліва ў тым выпадку, калі размаўляем з яго блізкімі сваякамі. І вось мне пашанцавала. Нядаўна я наведаў унучак Францішка Багушэвіча, пражываючых у Польшчы. Плённай аказалася гэтая сустрэча, нейк бліжэйшым стаў светлы воблік аўтара «Дудкі беларускай», у больш выразных абрысах з'явіліся перад вачыма тыя падзеі, якія адбываліся ў кушыянскім доме сям'і Багушэвічаў пасля смерці паэта. Хачу сёння падзяліцца з чытачамі «Нівы» сваімі ўражаннямі з пабыўкі ў Станіславы Тамашэўскай, пра-

жываючай у Гіжыцку і ў Канстанцыі Пшэдникоўскай — жыхаркі Алыштына.

Пасля ўдакладнення адраса Станіславы Тамашэўскай я напісаў да яе пісьмо, на якое неўзабаве атрымаў адказ. Унучка Багушэвіча сардэчна запрашала мяне прыехаць у Гіжыцка, выказваючы адначасова сваё здавальненне, што «Ніва» зацікавілася лёсам самых блізкіх сваякоў яе дзеда. Наша сустрэча адбылася ў памяшканні С. Тамашэўскай. Дом, дзе яна пражывае, знаходзіцца ў цэнтры Гіжыцка, у адным з жывапісных куткоў гэтага прывабнага курортнага горада. Унучка паэта прыняла мяне вельмі гасцінна. Неўзабаве на стале з'явіліся чорная кава і бабка дамашняга вырабу. Праўда, я аднекваўся, тлумачачы, што нядаўна вячэраў, аднак у адказ пачуў словы: «Гэта так ужо ў нас прынята, гэта кушылянскі звычай. Мой дзед і бабуля заўсёды цешыліся кожным госцем, з той толькі розніцай, што ў той час у модзе быў шыпячы самавар, і што там гаварыць — мая бабуля была ўмелай гаспадыняй, не то што я».

Наша размова пачалася ад абмяркоўвання штодзённых спраў і турбот, якіх нямала ў кожнага чалавека. С. Тамашэўская наракала на самотніцтва, якое ёй надта надакучыла. «Мае дзеці, — адзначыла яна, — абзаваліся ўжо сем'ямі і рэдка мяне наведаюць. Лешэк жыве аж у Шчэціне, ён працуе па санітарнай частцы ў якасці тэхніка, а Станіслава — магістр хіміі — настаўнічае ў Варшаве. У яе раскошнае дзіцё — хлопец», — не без гордасці падкрэсліла С. Тамашэўская.

— Муж мой даўно ўжо не жыве, а я зараз працую ў камунальным прадпрыемстве, — дадала яна.

Добра сталася, што перад выездам у камандзіроўку я забраў з сабою «Нарысы беларускай літаратуры XIX ст.» Сцяпана Майхровіча. Чытачы гэтай каштоўнай працы напэўна прыпамінаюць сабе здымак сям'і Багушэвіча. Ён змешчаны побач са 144 старонкай. І вось гэты здымак аказаўся для ўнучкі Багушэвіча прыемнай нечаканасцю. Аказваецца, яна лічыла яго даўно загубленым, і якая ж была радасць С. Тамашэўскай, калі ізноў магла ўзірацца ў твары сваіх найбліжэйшых: дзеда, бабкі, цёці Туні, бацькі — яшчэ хлапчука, Анны Галееўскай, — адданага прыяцеля сям'і Багушэвічаў. На жаль, свайго дзеда — Францішка Багушэвіча. С. Тамашэўская не памятае. Яна нарадзілася дзесяць год пасля яго заўчаснай смерці. Паволі, пад уплывам добра вывучаных з дзіцячых год рысаў, пачалі аднаўляцца ў памяці ўнучкі паэта падзеі, якія адбываліся пад скляпеннем старога кушыянскага дома, у даўно мінулыя гады, калі яшчэ жывымі былі ўспаміны аб творцы «Дудкі беларускай», калі старажылам багушэўскай сядзібы

здавалася, што яе гаспадар, вось, вось неўзабаве вернецца пасля даўжэйшай адлучкі, што было звычайнай з'явай у яго адвакацкай дзейнасці. На кавалачку паперы С. Тамашэўская рысуе план дома, дзе правяла сваё дзяцінства.

Вось тут быў салон, далей кабінет дзеда, а за ім пакой, прызначаны для дзяцей, — паясняе яна. Слухаю ўважліва ды не спыняю расказа...

«Памятаю, у салоне, перад трумо стаяла скрынка з чырвонага дрэва, ад якой ключык знаходзіўся заўсёды ў бабкі. Гэтая скрынка была ў вялікай пашане, і ніхто, акрамя бабкі, не меў да яе доступу. У нашых дзіцячых галоўках, здольных да фантазіі, узнікала ўяўленне аб нейкіх захаваных тут скарбах. Бывала, вячэрняй парою мы, гэта значыць я і мае сёстры, Кастуся і Габрыся, падыходзілі да таямнічай скрынкі, нешта паміж сабой шапталі і расказвалі казкі, у якіх столькі гаварылася аб зачараваных скарбах і дзівосных здарэннях, а ў галоўках няўмольна ўзнікала адно і тое ж самае пытанне, што ж урэшце знаходзіцца ў гэтай скрынцы? Толькі значна пазней, у гады сталасці, мы даведаліся, што ў ёй знаходзіліся лісты Элізы Ажэшка да нашага дядулі, рукапісы яго вершаваных твораў і здаецца штосьці напісана прозаю, нейкі дакумент з подпісам польскага караля Станіслава Аўгуста і іншыя сямейныя памятки, аб якіх цяжка ўжо сёння ўспомніць, што сабою ўяўлялі. З прыходам вясны, — працягвае Станіслава Тамашэўская, — бабка заўсёды прыступала да парадкаў, у якіх дапамагала ёй цёця Туня, дзедава дачка. Вясеннія парадкі якраз супадалі з гадавінай смерці дзеда, які памёр у кра-савіку.

Як сёння памятаю, бабка адчыняла куфар, адкуль вымала зляжалую праз зіму вопратку. Нейкай урачыстай для ўсіх нас была хвіліна, калі яна разраўноўвала паўстанцкі мундзір дзеда. У той момант у яе вачах паказваліся слёзы, а мы ўсе, згуртаваныя вакол куфра, ні зварухнуліся... Мой дзед быў жа ж удзельнікам студзеньскага паўстання. За бібліятэчкай стаяла яго дубальтоўка, якую таксама ўсе вельмі шанавалі. Мабыць з ёю дзед і быў у атрадзе. На вялікі жаль у 1919 годзе гэтая дарагая ўсім нам памятка была сканфіскавана. Ды што тут гаварыць, дзве сусветныя вайны шмат прычынілі злыбды. Многае згарэла ці проста прапала, а толькі нешматлікія ўцалелыя памятки захоўваюцца, як я чула, у доме — музеі майго дзеда ў Кушыянах. Гэта сапраўды цудоўна, што з такой клапатлівасцю ставяцца да іх там, на Беларусі. Не ведаю сёння пра любімае крэсла дзеда, у Кушыянах застаўся таксама яго сярэбраны кішэнны гадзіннік, з характэрным цыферблатам, уяўляючы сабою анёльчыкаў, якія адмервалі гадзіны,

удараючы малаточкамі ў мініятурныя званочки. Памятаю, такі самы гадзіннік я калісьці перад вайною бачыла на выстаўцы гадзіннікаў у Кракаве. Асабліва ўрэзаліся мне ў памяць два вялікія партрэты дзеда і бабкі, якія виселі над фартэпіяна. Дзед дбаў пра музычную культуру сваёй сям'і. Колькі ж намаганняў палажыў, каб яго любімая дачка, Туня, якая валодала мілагучным каларатурным голасам, працягвала сваю музычную адукацыю. Яна была нават у Італіі, дзе мела выступіць у Міланскай оперы «La Scala».

І тут нечакана звалілася бяда: цёця Туня прастудзілася і назаўсёды страціла голас. Якое ж гэта было няшчасце для яе самой, як перажываў наш дзед, усе кушыянскія, проста цяжка ўявіць! Цёцю Туню мы ўсе надзвычай любілі. Яна была дасканалым арганізатарам дзіцячых гульняў. Бывала, на Лысай гары, дзе зараз ляжыць камень з надпісам ушаноўваючым памяць дзеда, мы раскладалі агонь і да позніх вясёрых гадзін, а часам нават і запоўнач спявалі песні, вадзілі карагоды, наладжвалі розныя гульні, душой якіх была цёця. Разам з намі заўсёды забаўляўся вясёлы гурт сялянскіх дзяцей. Якія ж незабыўныя гэта гады! Часта, сустракаючыся са сваімі сёстрамі, мы ўспамінаем гэтае мінулае, якім так моцна даражым. Толькі вось гэтыя сустрэчы і яшчэ нешматлікія ўцалеўшыя здымкі нагадваюць нам незабыўны кушыянскі перыяд».

На момант унучка паэта спыніла расказ, каб прынесці мне гэтыя здымкі. Неўзабаве на стала з'явіліся пажоўклыя каштоўныя фатаграфіі. Адна з іх непасрэдна звязана з Францішкам Багушэвічам. Тут адображана каплічка, абваколена плотам. Яе гісторыя заслугоўвае на нашу ўвагу, таму што адлюстроўвае больш цікавы момант з біяграфіі паэта. Як вядома, пасля падаўлення студзеньскага паўстання, царская адміністрацыя супольна з праваслаўным духавенствам пачала «наварочваць», паводле выражэння Багушэвіча, беларусаў - католікаў у праваслаўе. Гэты факт знайшоў адлюстраванне ў вядомым вершы Багушэвіча п. з. «Хрэсьбіны Маціока». Аднак не толькі ў паэзіі праявіўся пратэст Багушэвіча супроць гэтых падзеяў. Як адзначае Станіслава Тамашэўская, на працягу адной ночы паэт разам з суседзямі — сялянамі пабудаваў гэтую каплічку, каб даць выраз таксама і ў такім выглядзе сваім настроям. А гэта, безумоўна, быў доказ вялікай адвагі Багушэвіча ў той бурны час.

Аглядалі наступныя здымкі.

«А гэта мой бацька ў Пецябургскія гады, — паясняе Станіслава Тамашэўская, — яшчэ студэнтам архітэктурнага факультэта. Ён у Вільні, у міжваенныя гады, супрацоўнічаў з вядомым тагачасным архітэктарам праф. Вівульскім. «Аці-

чэк» — як мы называлі свайго бацьку, — вывучаў таксама мастацтва і праз нейкі час з'яўляўся асістэнтам праф. Фердынанда Рушчыца ў Вільні. Карціны бацькі ўпрыгожвалі сцены нашых пакояў. Яны праўдападобна беспаваротна загінулі. Прынамсі ні ў мяне, ні ў маіх сясцёр нічога з яго творчага набытку не захавалася. Я, расказваючы аб цёці Туні, адзначыла яе здольнасці да спеву. А вось «ацічэк» быў таксама музыкальным. Ён лічыў гадзіны, праведзеныя са скрыпкай, самымі прыемнымі. Вядомым было адно здарэнне, аб якім зараз ўспомніла. Калісьці мой бацька выпадкова сустрэўся з жабраком, вандруючым па сялянскіх сядзібах і панскіх маёнтках і зарабляючым іграй на скрыпцы. Ён нейк зацікавіўся вонкавым выглядам гэтай скрыпкі і ўзяў яе ў рукі, каб дакладней агледзець інструмент. Якое ж было здзіўленне, калі прачытаў на ёй назву вядомай старой італьянскай фірмы «Страдыварыус». За невялікія грошы гэты жабрак згадзіўся растацца са сваёй скрыпкай.

Займаючыся жывапісам бацька ў Вільні пазнаёміўся з унучкай польскага паэта Людвіка Кандратовіча (Уладзіслава Сыракомлі), якая таксама была паклонніцай пэндзля. Гэтае знаёмства хутка пераўтварылася ва ўзаемнае каханне і амаль Людвіка Кандратовіч не стала жонкай «ацічка». Яна зараз пражывае ў Вільні. Прозвішча Людвікі па мужу Бялецкая. Ведаеце, не толькі музыка і жывапіс хвалявалі бацьку. Ён хіба атрымаў у спадчыну ад нашага дзеда схільнасці да паэзіі. Запомніўся мне толькі адзін верш менавіта дзякуючы таму, што быў упісаны «ацічкам» у нашыя дзіцячыя альбомікі. Паслухайце:

Smutny kwiatek już przekwita,
Traci swe kolory,
A motylek wciąż go pyta
Czyś kwiatku nie chory?

Mój motylku, nie rozumiesz,
Że czas życia leci...
Bo choć fruwać pięknie umiesz
Śmierć też ciebie zgniecie.

Мой позірк паў на аўтара гэтага журботнага вершыка. Я ўзяў фатаграфію ў рукі і адварнуў яе. «Маёй Юзі — 1906 год. Томы» — віднелі словы.

— Гэта напісана рукою бацькі, які падарыў свой здымак Юзэфе Маркоўскай — маёй маці. Дом Маркоўскіх знаходзіўся непасрэдна кушыянскай сядзібы. «Ацічэк», — працягвае Стані-

слава Тамашэўская, — памёр у лютым 1929 года. У гэтым жа самым годзе, летам, назаўсёды пакінула нас бабка. А цёця Туня, якую вы бачыце вось на гэтым здымку, памерла ў Ашмяне, каля 1936 года. Яе жыццё не склалася шчасліва. Праўда, яна выйшла, як кажуць, добра замуж, аднак яе адзіны сын — Франулек — не дасягнуў паўналецця і памёр. Якое ж гэта было добрае дзіцё, як мы ўсе яго проста абажалі! Яшчэ доўга пасля смерці Франулька рысавалася нам перад вачыма яго далікатная фігурка, мабыць нават залішне далікатная. Так. Смерць часта заглядала да нас. Вось у дзеда магло быць пяцёра дзяцей. Трое ж памерла. А вось яшчэ адзін памятны здымак. На ім вы бачыце маю маці, яе старэйшую сястру і бацьку.

Станіслава Тамашэўская, уручаючы мне апошні здымак адвабражаючы тры некалькігадовыя дзяўчынкі недзе на фоне сада, спыталася: «Як вы мяркуеце, хто ж тут на ім можа быць? «Цяжка мне было здагадацца». А гэта мы, — сказала яна, — гэта значыць я і мае сёстры: Габрыся і Кастуся, з якую вы заўтра пабачыцеся. Вось і ўсе фатаграфіі, якімі я надта даражу!».

Два дні, праведзеныя ў Гіжыцку, праяццелі вокамгненна. Трэці дзень сваёй камандзіроўкі я прызначыў на наведанне малодшай унучкі паэта, Канстанцыі Пшэднікоўскай. Пабыўка ў Альштыне папоўніла толькі ў нязначнай ступені мае звесткі, таму што ўспаміны С. Тамашэўскай, у асноўным, супадалі з расказам яе сястры.

Ізноў тая самая сардэчнасць і гасціннасць у другой багушэвічавай унучкі. Наша гутарка працягвалася да позніх гадзін вечара. Назапашаны ў Гіжыцку матэрыял дазволіў мне адчуваць сябе ўпэўнена ў размове. Я час ад часу прыгадваў адпаведныя фрагменты з «Нарысаў беларускай літаратуры XIX ст.» С. Майхровіча. З асаблівай увагай слухала Канстанцыя Пшэднікоўская выказванні кушлянскіх суседзяў Багушэвіча, якія ведалі паэта асабіста. Неаднаразова яна мяне спыняла, каб адзначыць, што маўляў, гэтага ці іншага добра памятае. Слухаючы расказа калгасніка С. Клуйшы аб тым, як граф. Чапскі намагаўся пазбавіць сялян рада вёсак права карыстацца сэрвітутамі ўвяла папраўку ў назву адной з іх.

— Не Стрытуны а Стрыпуны — вось правільная назва гэтай вёскі, — заўважыла яна. А чуючы пра калгасніка С. Альхімовіча, які таксама ў кнізе С. Майхровіча расказвае аб Багушэвічу ўнучка паэта паведамляла, што ён у мінулым годзе памёр у Быдгашчы, дзе прыехаў да свайго сына Кароля Альхімовіча.

У змешчаных у «Нарысах» выказваннях суседзі — землякі Францішка Багушэвіча даюць характарыстыку паэта, як ча-

лавека рэдкай дабраты, надзвычай спачувальнага, якога паўсядзённа хвалявалі турботы сялян.

— А я б хацела дапоўніць гэтыя выказванні, — звярнула маю ўвагу малодшая ўнучка паэта. — Тут гаварылася пра нашага дзеда, якога я, на жаль, не ведаю, таму што нарадзілася ў 1912 годзе, а Багушэвіч, як вядома, памёр у 1900 годзе. Вось наша бабка таксама вельмі сардэчна ставілася да сялян. Яны так як і пры дзеду лічылі наш дом заўсёды для сябе адчыненым. Бывала, зойдзе хтосьці з суседзяў параіцца ў той ці іншай справе, а бабуля так і ўжо замітусіцца, усхвалюецца, пачне распытваць, што і як... Час ад часу да нас заходзіла адна жабрачка, Франулька. Дык і пагаворыць з ёю бабка, а на дарогу дасць ёй харчоў і грошай трошкі падкіне. Памятаю, у нашай служанкі з'явілася на свет незаконна народжанае дзіцё. Вельмі часта здаралася, што гаспадары пазбаўлялі такую жанчыну працы, выракаліся, пакідаючы яе на волю лёсу. А ў нас жа ж усе заапекаваліся маладой маці і яе дзіцём. У дажынкавы час на прасторнай верандзе кушлянскага дома наладжваліся танцы, на якія прыходзілі вясковыя хлопцы і дзяўчаты. Усе мы тут разам весяліліся: і я, і мае сёстры, цёця Туня, усе хатнія святочна апранутыя. Толькі бабка строга сачыла за парадкам і ўціхамірвала вясёлую кампанію, калі яна надта ж расшумелася. А вось перад вашым прыездам я ад знаёмай пазычыла здымак нашай бабкі, які нейкім цудам у яе захаваўся. Калі ласка, паглядзіце.

На мяне глядзіць стройная, год трыццаці, мабыць крыху з суровым тварам, жанчына...

— Бабка, — расказвае Канстанцыя Пшэднікоўская, — надзвычай любіла музыку. Знаходзіла заўсёды час, каб правесці некалькі хвілін за фартэпіяна. Яна пераважна грала любімыя мелодыі нашага дзеда. А інструмент быў вельмі добрай фірмы — «Мюльбах». Што з ім сёння — цяжка мне сказаць. Яшчэ адно. Бабка добра валодала нямецкай, французскай і ў нейкай ступені італьянскай мовай. Пасля смерці нашай маці, якая памерла ў 1919 годзе, выхоўвала нас бабка і цёця Туня. Бабка атрымлівала ад Саюза паўстанцаў 1863 года невялікую пенсію, якую прызначала на нашыя патрэбы. Так ужо бывае, што пры ўспамінах шмат гаворыцца аб сумных справах, аб смерці блізкіх, мінулых здарэннях. Вось вы чыталі з кнігі Майхровіча аб жупранскіх могілках, дзе пахаваны наш дзед. Аўтар падае, што згодна з паданнем сяляне ўсклалі на дзедаву магілу дудку і скрыпку са смыком. А я добра памятаю, што гэтая дудка яшчэ пры мне там знаходзілася. Яна была толькі прымацавана да крыжа.

Наша размова паволі набліжаецца к канцу. Засталося яшчэ трошкі часу, і я расказваю ўнучцы Багушэвіча аб жыцці беларусаў на Беласточчыне, аб працы нашай рэдакцыі, аб справах беларускага школьніцтва. Канстанцыя Пшэднікоўская з хваляваннем успрымае звестку, што творы яе дзеда старанна вывучаюцца вучнямі і карыстаюцца любоўю сярод дарослых.

— Вось добра б сталася, — адзначыў я, развітваючыся з Канстанцыяй Пшэднікоўскай, — каб Вы і Вашая сястра сустрэліся са школьнай дзетварой, пабывалі сярод беларусаў на Беласточчыне.

Унучцы Францішка Багушэвіча думка гэта спадабалася.

— Добра, я абмяркую гэтую справу, калі мая сястра прыедзе ў Альштын, — адзначыла яна.

Дык вось, дарагія чытачы, падзеі і здарэнні, якія належаць ужо гісторыі. Прапаную іх сёння ўвазе тых усіх, каму каштоўнай з'яўляецца родная спадчына.

Студзень, 1962 год.

І возьмем мы прыклад

А можа павернем да роднага слова,
І возьмем мы прыклад з палякаў і рускіх,
І вернасць суседзяў для роднае мовы
Патрапім мы выліць у сэнс беларускі.

І любячы мовы айчынныя гукі,
Напоўнім іх зместам гарачыя сэрцы,
Пачуцці напоўнім і чулыя рукі,
І казку, і песню напоўнім бяссмерцем.

АЛЕСЬ БАРСКИ

М. Кураш



Міхась Кураш. Працаваў у «Ніве» ад 1. VII. 1959 года да 15. VII. 1962 года. Зараз працуе ў школьніцтве.

Паміж паданнямі, легендамі і гісторыяй

Гісторыю сваёй акаліцы заўсёды найлепш ведаюць найстарэйшыя яе жыхары, бо ў іх памяці найбольш захавалася вестак, пачутых з вуснаў сваіх дзядоў і бацькоў. І калі вы шукаеце нечага цікавага аб мінулым, дык толькі да іх і звяртайцеся. Да тых старых жыхараў, якія яшчэ памятаюць усе гутаркі дзядоў, што збіраліся проста пад плотам, на каменнях, ля чыёй-небудзь хаты, або пасвячы валоў і коней, расказвалі, спрачаліся папаўняючы адзін аднаго да ўсходу ранняй зоркі.

Кіруючыся такой думкай я вырашыў знайсці чалавека ў Гацьках, які мог бы расказаць мне аб курганах, што за вёскай, расказаць «сваімі словамі»...

З маім правадніком і расказчыкам 70-гадовым Фёдарам Казміруком мы накіраваліся за вёску, у заходне-паўднёвым напрамку. І якое ж дзіва! Раўнінная наогул Бельшчына мае тут сваё выключэнне. З паўднёвага ўсходу паласою пралягло як бы русло вялікай рэчкі, высахшай даўным-даўно, утвараючы «па дарозе» яры і абрывы. У адным месцы яр пашы-

раецца, абкругляючы далей вялікую гару. Побач — некалькі вялікіх узгоркаў.

— Гэта Замкавая гара, — інфармуе праваднік.

Прыглядаючыся ёй, можна адразу сцвердзіць, што не ўзнікла яна сама па сабе, а стварылі яе чалавечыя рукі. Гаворыць аб гэтым яе геаметрычнасць у форме ўцятага зверху конуса, затым — цяжка дапусціць думку, што яна ўтварылася там сама, бо не была б такою, якой з'яўляецца. І падумаць толькі, як маглі людзі без тэхнічнай дапамогі, якой сёння карыстаецца чалавек, стварыць у балоестым яры вышынёй прыблізна метраў 9, а ў аб'ёме — метраў 500. Але патрэба — маці вынаходства. Дарэчы, побач гары цячэ ручай, а грунт навокал яе зараз дрыгвяністы, міма меліярацыйнай асушкі ў апошнія гады.

Паводле меркаванняў археолагаў Замкавая гара — як яе называюць жыхары Гацькоў — з'яўляецца гістарычным (!) курганам з IV або V стагоддзяў і належыць да помнікаў мінулага, якія зараз у нас свята ахоўваюцца. Уступныя раскопкі гэтага кургана не выявілі, пакуль што, ніякіх слядоў «гістарычнасці». Магчыма яны тут не засталіся, але гэта пацвердзяць або абвергнуць далейшыя навукова-археалагічныя даследаванні над курганам, якія плануюцца правесці ў будучым. Мяне пацікавіла, чаму мясцовыя людзі не называюць гары курганам, а толькі «Замкавай гарой».

— Расказваў мне бацька (а пра гэта гаварыў яго бацька), што на гары стаяў драўляны замак, было шмат розных будынкаў; быў таксама нейкі мост, які бадай што спалучаў, калі трэба было, гару з раўнінай, а гара была акружана вадою. Яшчэ ў 1940 г. на гульні, якія моладзь наладжвала на гары, уваходзілася сюды па старых пагнітых ступеньках. На гары была студня, вельмі, вельмі глыбокая, вось у гэтым месцы... Зараз засталася толькі яма глыбінёй каля 2,5 м.

Замкавая гара зрабілася прадметам легендаў, таму што такім месцам народ заўсёды прыпісваў нейкія цудатворныя магчымасці. У адной з народных легенд гаворыцца, што ў далёкім-далёкім мінулым на гэтай гары стаяла прыгожая царква. Перад яе ўваходам плыла рэчка. Аднойчы праз рэчку пераходзіла маці з дзіцём. Быццам бы нейкая ліхая сіла вырвала з яе рук дзіця, і яно ўтапілася ў рэчцы. А рэчка была не малая, і беднай маці не пад сілу было вылавіць дзіця з вады яшчэ жывым. Маці звярнулася тады тварам да царквы і сказала: «Каб ты, цэркаўка, у зямлю завалілася». Словам гэтым нешта прыдало вялікую сілу, і царква запала ў зямлю. З гэтай пары, калі прыложыш вуха да гары ў няззелю, чуваць біццё звонаў гэтай царквы.

— Але хіба тады чуваць звон, калі ў недалёкім Райску звонаў у царкве?

— Ну так, — адказалі мне жанчыны...

Бэтлах і Бэтлажок

Каля 50 метраў ад Замкавай гары на паўночна-запад знаходзіцца гара, а побач яе — другая, крыху меншая. Першую людзі называюць Бэтлах, другую Бэтлажок. Ходзіць паданне ў народзе, што гэта ўсыпаныя курганы, дзе пахаваны бацька і сын. Ці гэтыя два курганы маюць нешта супольнае з вялікім курганам званым «Замкавай гарой» — невядома. На пацвярджэнне, што маюць, можа быць толькі адна прадпасылка: іх суседскае размяшчэнне ...Што назва «Бэтлах» неславянскага паходжання — у гэтым няма сумнення. Яна хутчэй за ўсё татарская. І цікава, чаму да гэтай пары ніхто з гісторыкаў не пацікавіўся ёю? Канстатуючы дыскусію аб яцвягах можна дапусціць думку, што расшыфраванне хаця б гэтай загадкавай назвы і ў дадатак дакладныя раскопкі курганаў маглі б унесці нешта новага ў гісторыю Бельшчыны.

«Ссыпкі» — навейшая гісторыя

Гісторыя акаліцы Гацькоў не канчаецца на «Замкавай гары» і гэтых двух курганах. Ёсць там яшчэ некалькі курганаў, малых, або зусім ужо панішчаных, якія людзі называюць тут «ссыпкамі».

Адна з іх знаходзіцца ў 300 метрах ад «Замкавай гары» на паўднёвым усходзе. Фёдар Казмірук расказаў мне аб ёй наступнае:

— Яшчэ за царскіх часоў гэтую «ссыпку» зааралі. Знойдзе-на тады шаблю. Яна, на жаль, не захавалася. Цудоўна выглядала, збоку, на рукаятцы, быў нейкі надпіс... «Ссыпка» гэтая ў нас найбольш папулярная, бо дасюль захавалася вестка, што на ёй калісьці генерал паставіў армату і з першага выстралу забіў свайго ворага, князя, які размясціўся на ўзгорку каля Кнаразоў. Гэта будзе каля 6 кіламетраў ад нас. Гару каля Кнаразоў да сённяшняга дня называюць «Князева гара».

У 1908 г. гацькоўцы раўнялі плошчу пад будову школы. Раўняць было нялёгка, бо будаваць школу трэба было якраз на «ссыпцы». Раскапалі, а там — поўна чалавечых касцей. Косці перавезлі ў другое месца і закапалі. «Ссыпка» гэта знаходзіцца амаль пасярэдзіне сучасных Гацькоў.

З трэцяй «ссыпкі» (на полі) у час ворыва часта выворваліся людскія косці. У 1940 годзе бралі тут пясок на пабудову дарогі. На глыбіні каля 0,5 м трапілі на магілу. Яна была абмежава-

ная чатырма стоўбікамі з колатага каменя. На кожным з іх вырыты былі крыжыкі. Пасярэдзіне магілы знойдзена астаткі глінянай пасуды, струхлелыя косці і здаровыя зубы. Месца гэтай «ссыпкі» сёння ледзь прыкметнае: маленькі толькі ўзгорчак, зраўнаны людзьмі і атмасфернымі дзеяннямі.

*

У вёсках узнікненне магіл — курганаў прыпісваецца перыяду шведскіх наездаў. Скажам толькі, што гэтае меркаванне няправільнае, бо нават гэтыя гацькоўскія «ссыпкі» старэйшага паходжання. Але гэта менш важнае. Найважнейшым будзе тое, калі ўзніклі гацькоўскія курганы. Ці ў адным гістарычным перыядзе, ці гацькоўскія палі былі настолькі «шчаслівыя», што бачылі воінскія падзеі ў некалькіх гістарычных перыядах. Напрыклад, можна меркаваць, што магіла — «ссыпка», аб якой мова ў канцы, паходзіць з перыяду ранняга хрысціянства. Сведчыць аб гэтым спалучэнне традыцыі язычаскіх і хрысціянскіх пахараў. Адначасова немагчымым з'яўляецца, каб у гэты самы час узніклі курганы «Замкавая гара, Бэтлах і Бэтлажок». Варта, каб гісторыкі — археолагі пацікавіліся «гацькоўскімі» падзеямі.

Чэрвень 1962 год.

**Распаўсюджвайце
» Н І В У «
— адзіны ў
Польшчы
беларускі
тыднёвік!**

В. Леўчук



Вера Леўчук працуе ў «Ніве» ад заснавання рэдакцыі.

З цыкла «Людзі Дваццацігоддзя».

У пошуках сонца

У белым фартуху застала яго ў пакоі Акадэміі. На століку, пры якім села, стаяў зялёны вазон.

— Біялогія. Гаворыцца, што гэта навука аб жыцці, — сказала я, — значыць, вы з самым жыццём працуеце.

— Жыццё — гэта сонца,

— адказаў дацэнт д-р біялогіі Васіль Чэчуга — кіраўнік кафедры біялогіі Беластоцкай Медыцынскай акадэміі. — Без яго не маглі б жыць ні людзі, ні расліны. Ды расліны больш любяць сонца, чым людзі, і таму маюць больш у сабе жыцця. Ці

ведаеце, што найменшыя жывыя істоты — ні то жывёліны, ні то расліны, якіх мы за-
вем фітапланктанам (жывуць у вадзе) ловяць аж 80% усяе сонечнай энергіі. Чалавек толькі 10%.

Каб мог чалавек спажыць водныя дробныя істоты — фітапланктон, на колькі сталі б мы багацейшымі і здаравейшымі! Гэта магчыма. Над гэтым працуюць вучоныя. Свой немалы ўклад у гэтую галіну ўносяць і вучоны беластоцкі дац. др Чэчуга. 33 навуковыя працы за 8 год працы ў Акадэміі, надрукаваныя і ў краіне, і за граніцай (5 у Англіі, 3 у СССР, па адной у ФРГ і Галандыі). Кантакты з вучонымі сусветнай славы. Лісты з 25 краін ад 94 вучоных, якія ўжо знаёмы ці хочуць пазнаёміцца з працамі нашага вучонага. Найбольш з ЗША, Чэхаславакіі і СССР. Але таксама з Японіі, Паўднёвай Афрыкі, Індыі, Ізраіля, Малайі, Аўстраліі.

Такі фінал народнага дваццацігоддзя ў жыцці 33-гадовага чалавека і вучонага, які гаворыць: «Я не саромлюся нідзе і ніколі сказаць, што толькі дзякуючы народнай уладзе быў магчымы мой рост і старт». Ён рос і сталей разам з ростам і сталасцю народнай Айчыны. І зросся з ёю, як зраслося з ёю многа людзей. З'яўляецца чыстым прадуктам народнага сацыялістычнага ладу. Каб прасачыць гэта, скочым у далёкія,

ці недалёкія, часы да 1939 года. Затрымаемся ў вёсцы Плюцічы ў Бельскім павеце.

Убачым тут у сям'і гаспадара на трох гектарах некалькігадовага хлапчука. Хлапчук гэты, як часта дзеці ў яго ўзросце, даглядае і дакармливае птушак, будзе ім хаткі, у якіх, на нейкіх тэхнічных не-



Дац. др Васіль Чэчуга.

дахопах малога інжынера, не хочуць пасяліцца; ідзе снежным следам няўлоўнага зайца. Свет звяроў і птушак — гэта яго цікавы свет. Потым пасвіць кароў, а калі кніжка паказваецца ў вёсцы, схаваўшыся ў кусты, чытае кніжкі. Кніжкі аб звярах стаюцца маніяй хлапчука «Гэта, бадай, уплыў вясковага жыцця», — успамінаючы, кажа цяпер. А

я кажу, што бываюць людзі, якія родзяцца з пэўнымі выразнымі схільнасцямі. Гора, калі іх прыроджаныя здольнасці не знаходзяць магчымасці вылівацца ў цікавым напрамку. Нашаму знаёмаму хлопцу з Плюціч стварыліся спрыяльныя ўмовы.

Але па чарзе. Бо раней яшчэ бачым яго 17-гадовым ужо ў радах ЗВМ, а потым у ППР. Прыходзяць часы бурныя і акрыляючыя. Малады Вася перапоўнены залатымі думкамі прачытаных кніг, якія выпісвае ў сваім сшытку, перапоўнены патрасаючым зместам лозунгаў — новых, поўных таямнічай цягі; «зрадзіў нас чын», «праца вырашае аб усім». Апошні лозунг становіцца жыццёвым дэвізам плюціцкага хлопца. Поўны чыстай веры, кідаецца ў вір працы, якая яго не падвядзе, якая стане неадлучнай спадарожніцай яго жыцця ў навым 20-годдзі.

Старэйшы брат Васі Чэчугі змагаецца з бандамі ў радах ОРМО, а ён сам едзе ў Беласток вучыцца. Вучыцца ўвечары, днём працуе. Прыходзіць першае прызнанне, першая невялікая ўзнагарода за ўпартасць: Васіль атрымлівае стыпендыю за добрую навуку. Потым бачым яго з дыпламам сярэдняй школы ў руках — ключом да далейшай навукі і адначасова з матэрыяльнымі ўмовамі, якія змушаюць да задум над далейшым крокам. Але новая

народная ўлада цэніць і паграбуе здольных і працавітых людзей. Васіль Чэчуга з такіх.

Тадышні куратар Лойка прапануе яму выезд на навуку ў Мінск (БССР). Радасць! Мінск перад ім. Факультэт біялогіі — і ўрэшце дыплом выдатніка. Вяртанне на радзіму і на сваю ўбогую Беласточчыну. Менш як за 4 гады працы ў Медыцынскай Акадэміі робіць дактарат, а за наступныя 3 гады габілітуецца і атрымлівае навуковую ступень дацэнта.

— За колькі год будзеце прафесарам? — пытаю.

— Трэба перад усім працаваць, — кажа. — Аб усім жа вырашае праца.

Цікава, у гэты даўні свой дэвіз, які паспеў ужо стаць для многіх толькі штампам (цяпер ужо) дац. др Чэчуга верыць як даўней — свежа і без засцярог. Для паяснення толькі дадае: «Сумленнае выконванне сваіх абавязкаў — гэта найбольшы і найлепшы ўклад кожнага ў будову сацыялізма».

Вечарам таго дня маса людская валіла ў кіно. Насупраць сваім шпаркім крокам ішоў дац. др Чэчуга. «Чэчуга яшчэ працаваць бяжыць...» Нястомны, нястрымны ў пошуках сонца.

Беласток, 29 сакавіка 1964 г.

У кожнай беларускай хаце «НІВУ» родную чытайце!

З цыкла «Людзі Дваццацігоддзя».

НЕСПАКОЙНЫЯ

Ад нядаўна ў Кляшчэлях пры школе існуе эксперыментальны комплексны цэнтр культурнага жыцця. Кожная навіна — для журналіста ласы кавалак. І таму мы тут, як тут. Размаўляем з кіраўніком школы, потым яшчэ са старшынёй ГРН. Аб працы грамадскім чынам (Кляшчэлі перадавыя ў гэтым), аб згодным супрацоўніцтве ГРН, школы, ГС, ПОМ, пункта аховы здароўя, партыйнай арганізацыі (116 членаў), СПР (3 паралельныя класы — 115 вучняў). На недахоп тэм нельга наракаць. З часам нашая пачатковая знаёмасць пашыраецца. З'яўляецца ішчэ адзін тутэйшы чалавек. Пастаць нарэдка сімпатычная і сардэчная з першага погляду. Галіна Харшляк — настаўніца і апора культурнага жыцця Кляшчэль. Прыватна — жонка кіраўніка школы.

Яна Харшляк па-рознаму завуць. Жонка «грамадскай ёлчай» — значыць абвешаны грамадскімі абавязкамі, нехта

назваў яго «кляшчэлеўскай энцыклапедыяй», бо кіраўнік школы ўсё ведае. Нехта яшчэ назваў Яна Харшляка «трактарам, на якім Кляшчэлі едуць да сацыялізма». А сам Харшляк у той час разважаў, што для справы добра пастаўленай сельскай гаспадаркі трэба школы сельскагаспадарчай падрыхтоўкі перастаць трактаваць як беднага сваяка, а надаць ім ранг нармальнай сярэдняй школы. Сям'я Харшлякоў прыехала на Беласточчыну з Кялецкага. Галіна Харшляк народжана ў Варшаве. Цяпер гэтыя людзі ў Кляшчэлях жывуць, працуюць, бо праца — іх радасць, іх адпачынак.

Мой рэпартаж аб кляшчэлеўскіх людзях. Іх там, такіх людзей, з вялікай літары, няма. Прадстаўляю: старшыня ГРН — Яўген Ефімчук, пад кідаўніцтвам якога напраўлены дарогі, пасаджаны лес на 900 га. У самых Кляшчэлях пракладзены ходнікі, пасаджаны дрэўцы: да таго

лазня, басейн. «Мы не працягваем рук да павета — дайце. Робім самі. Няхай пачаць і, калі могуць, дапамогуць». Вось будова грамадскага дома культуры. Цяпер усімі сіламі ГРН збірае сродкі. Агульная згода — на 100 зл. ад сям'і, на 1 працэнце ад заробкаў працаўнікоў.

школе для дарослых па праграме 6—7 класаў быў Антон Насковіч, год каля 60. Закончыў школу без тройкі, лепш ад маладых. У тым часе, як вучыўся, жонка хварэла, дзеці ў хаце, але ў Кляшчэлях кажуць: «Калі што пачнем, мусім дакончыць». У гэтым годзе вячэрняя школа такса-



Мікалай Дзмітрук, Пётр Більк і Аляксандр Малец.

Каб прыступіць да будовы, трэба ў 1964 г. сабраць 300 тысяч зл. Але ў Кляшчэлях (не памятаю ўжо хто) сказалі: «Мы ўсё, што заплануем, выканаем». Сакратар грамадскага камітэта партыі Мікалай Дзмітрук сціпла заўважае: «Людзям нашым верым». Іменна, усё залежыць ад людзей.

*

Найлепшым вучнем у мінулым годзе на вячэрняй

ма мае свайго героя. Ян Астапчук, таксама пасля 50. Не прапускае ніводнага дня. У Кляшчэлях наогул многа старэйшых вучыцца — палавіна ўсіх удзельнікаў вячэрняй школы — людзі каля пяцідзесяці, або ўжо пераступілі гэты парог. Радасна запісваць такія факты, ва ўпор тым, што махаюць рукой: «Зямлю абрабляць — не трэба навукі». Памылка!

Лекар мясцовага пункта аховы здароўя Аляксандр

Малец. Будучы ўжо на пенсіі, працуе па 7—8 гадзін, замест 2-х, за якія атрымлівае зарплату. У Кляшчэлях кажуць, што шукаць доктара трэба толькі ў двух месцах: або ў пункце аховы здароўя, або на пасяджэнні, калі ёсць. Бо др Малец — грамадскі дзеяч. Член Павятовага камітэта партыі. Выступае са шматлікімі лекцыямі на вёсках на тэму здароўя і гігіены, а зарплату за іх патрабуе дзіўнай: арганізацыі гуртка вясковых гаспадынь. Такім імэнна чынам узніклі гурткі ў Дабрывадзе, Саках, Жуках. Кіраўнік школы расказваў, як аднойчы доктар, засопшыся, увечары ўлятае да яго: аўтобус не ўзяў, а там у вёсцы вызначана лекцыя, чакаюць. А на дварэ дождж, вецер, сабакі не выганіш. Раяць доктару адкласці на іншы раз. Са здзіўленнем і пагрозай доктар глядзіць: — як жа ж, чакаюць, абяцаў. Кіраўнік выцягвае матацыкл і пхаюцца ўцямры ў далёкую вёску. Людзі сапраўды чакалі.

З адной бабулькай доктар пасварыўся, што за яго дапамогу асмелілася прынесці нейкі падарунак. А да кагосьці іншага два тыдні не адзываўся, бо той паклікаў доктара сярод ночы, збудзіўшы са сну, і хацеў за візіт заплаціць. Называюць часам доктара Мальца Юдымам (постаць лекара з рамана Жаромскага «Бяздомныя людзі»). Сапраўды, своеасаблівы гэты

кляшчэлеўскі, новы тып доктара Юдыма, поўны аптымізму. Калі аднойчы запрапанаваў Аляксандру Мальцу пасаду кіраўніка аддзела здароўя ў павеце, атрымалі раззбройваючы адказ: «Вы думаеце, я ўжо нічога не вары!».

Дырэктар ПОМ-у Пётр Вільк гаворыць ціха, ашчадна. Зусім нетыповы дырэктарскі тон. Не дырэктарскі — людскі. Гэта важнейшае, гэта найважнейшае. Гэта памагло яму зжыцца з людзьмі ў ПОМ-е, памагло знайсці ў іх патрэбную падтрымку і зразуменне. Квітнеючую цяпер інстытуцыю Пётр Вільк тры гады таму назад застаў у руінах. Былі размовы аб ліквідацыі ПОМ-у ў Кляшчэлях. А цяпер ён развіваецца, разбудоўваецца, пачалася вольная праца ў новай майстэрні, у будове яшчэ адзін — гігант. Распушчаныя, самавольныя людзі, якіх застаў Пётр Вільк — цяпер першыя памочнікі. ПОМ мае ўжо прыгожы інтэрнат, а ўвосень тут будзе прыкладовая школа — кузня кадраў. «Што з механізацыі, калі няма кадраў?» — гаворыць дырэктар. Кадры для сельскай гаспадаркі — гэта «вочка» дырэктара Вілька. Пытанне гэтае разумее шырока і з перспектывай, а наколькі слушнае такое разуменне паказвае XIV Пленум і актуальныя патрэбы ўсёй нашай сельскай гаспадаркі.

*

Спяваюць у Кляшчэлях даўно, Мо імэнна гэтай распяванай традыцыі трэба прыпісаць факт, што ў хоры для дарослых (ёсць яшчэ школьны хор) спяваюць пераважна старэйшыя. Некалькі прозвішчаў 50-гадовых: Ян Сасноўскі, Юзэфа Паўловіч, Уладзіслаў Якубоўскі, Антон Младзьяноўскі. Я пытала некаторых жанчын — харыстак безыменна: як з часам на гэтыя справы? Сказалі: «Так неяк прызвычаліся, што як трэба, дык ідзе».

Калі размова ідзе аб маладых, дык Славэк Місеюк — ціхі хлопец з няпоўнай вышэйшай адукацыяй — бібліятэкар і кіраўнік тэатральнага гуртка, які ён сам арганізаваў. Таленавіты і працавіты, не ўцякае з Кляшчэль, як многія іншых маладых. Для яго і тут месца добрае і тут яго хопіць.

Сярод кляшчэлеўскіх людзей нельга прамінуць прэзаса ГС. Вядома, што ГС-ы маюць сродкі, якімі могуць па-

магчы асяроддзю. Не ўсе аднак ГС-ы і не ўсе прэзасы хочучы. У Кляшчэлях інакш. Тут супольныя інтарэсы найважнейшыя. Тэлевізар у школе для ўсіх — уласцівы падыход ГС да культуры. У Кляшчэлях пануе думка, што з прэзасам Сяргеем Зінчуком многа добрага можна рабіць.

Або старшыня бацькоўскага камітэта школы Мікалай Леанкевіч, які сам, як кажуць, за нішто, прышчапіў 150 пладовых дрэваў у школьным гадавальніку.

Кляшчэлі многа (толькі цешыцца з гэтага) маюць ціхіх герояў працы, каб можна было ўсіх іх тут пералічыць, каб нават можна было аб іх даведацца. Менш ці больш яны падобны да тых, аб якіх я расказала.

Кляшчэлі здаюцца нам прыкладам старту маладых мястэчкаў, старту тым больш каштоўнага, што крыніцы яго ў грамадскай ініцыятыве, у сілах неспакойных духам людзей — людзей нашага слаўнага Дваццацігоддзя.

Беласток, 23. II. 1964 года.

ЛІШНІЯ

На ўскраіне Беластока, у вялікім доме, жыве дзіўная сям'я. Разам тут праводзіць свае дні 150 малых (да 3-год) дзяцей, а дарослыя ходзяць у белых халатах і ў тапачках. Пачэснае месца заняла тут чысціня, зелень і кветкі, усё

жыццё дома цячэ па звычайнай каляіне. Па гадзінам дзеці спяць, па гадзінам устаюць, па гадзінам мыюць іх, па гадзінам кормяць, па гадзінам саджаюць на гаршкі, па гадзінам забаўляюць. Сёстры прыслухоўваюцца, прыгля-

даюцца да дзіцячага дыхання, да дзіцячых гаршкоў. Лекар штодзень снуе сярод малышоў.

ДЗЕЦІ

Дзеці тут, як і ўсюды, б'юцца і ладзяцца, плачуць і смяюцца, але... сумуюць, чакаюць і з нямой просьбай у вачах выцягваюць рукі да кожнага вышэйшага ад сябе чалавека, і з лапочучым сэрцам туляцца да чужых грудзей, да чужой шчакі, заглядаюць моўчкі ў вочы, дрыжаць і мацней прытуляюцца, калі зробіш нязначны рух, каб паставіць малое цела на падлогу. А калі ўсё ж такі паставіш — плачуць жаласліва, бязрадна.

*

Сядзела я на кортачках, размаўляючы з сястрой. Не згледзіла, калі хлапчук з поўнымі шчокамі падышоў і, асцярожна падняўшы адно сцеганцо, пачаў пакавацца мне на калені. А потым рукамі абняў маю шыю і, перавесіўшы галоўку цераз плячо, замёр. Хіба заснуў — успомніла я пасля нейкага часу, і рукой адхапіла галоўку. А ён глянуў мне ў вочы і як бы гаварыў: не чапай, мне ж так добра, і зноў лёг на плячо.

*

Дзіця глядзела ў акно. Там дарогаю прайшла жанчына.

— О, мама! — і ўсё яго цела падалося наперад, але то не была мама.

*

Вярнуўшыся аднойчы з «Дому малых дзяцей», я ў хаце расказвала сваёй 3-гадовай дачушцы, як малая дзяўчынка, што не мае мамы, тулілася да мяне. А яна з крыўдай: «Я не пазволю ёй, каб яна тулілася да маёй мамы».

*

Як б'ецца дзіцячае сэрца, як хутка, як моцна б'ецца, што аж страшна робіцца, бо здаецца — выскачыць яно з малых грудзей. І ў бяссільнай злосці слёзы душаць за горла і надакучлівая думка не ідзе з галавы: чым правініліся гэтыя дробныя чалавекі, што ад першых дзён свайго жыцця засталіся без самага блізкага прыяцеля, што растуць, не чуючы простых, але патрэбных слоў «мая дачка», «мой сын», што слова «мама» мае для іх часта абстрактнае значэнне.

ВІНАВАТА НЕ ДЗІЦЯ!

О, НЕ! О, НЕ!

А ШТО?

Дзяўчына нарадзіла няшлюбнае дзіця. Не злюбіла яго ад зародыша. Некалькі тыдняў апекаваліся ім старыя бацькі, бо маці рада была пазбыцца гэтай перашкоды ў сваім маладым жыцці. Пакі-

нуўшы яго, выехала на захад, нешта наброіла і аказалася ў турме.

*

Дзяўчына аказалася цяжарнай. Мо і не зраклася б дзіцяці, але бацькі і ведаць яе не хацелі. Такі сорам! Выгналі з дому. А ў саміх 12 га зямлі, 4 каровы, 10 свіней.

*

У жанчыны трое дзяцей. Муж яе з дзяццмі пакінуў і д'ябал ведае, дзе бадзяецца. Маці калека, не ў сілах гадаваць трое дзяцей.

*

Недаразвітая, бадзялася без дому, без сям'і. Набліжаўся час яе родаў. Міліцыя падбрала і адвезла ў бальніцу. Нарадзіла дзіця, ужо другое. Што з такім дзіцём. Маці яно непатрэбнае. За нейкі час знойдзецца вырадак, ад якога народзіць яшчэ адно.

*

На 2-гектаравай гаспадарцы спладзілі 8-мёра дзяцей (дзе быў іх розум). Наканец маці памерла ад сухот, пакідаючы дзяцей сіротамі.

*

Дзіця знайшлі пры чыгунчаных рэйках у Беластоку. Пры ім была картачка, што

ахрышчана і пададзена імя. Якая, аднак, богабойная маці!

*

Некалькімесячнае яно ляжала ў дзіцячым ложкачку і скрэндзіла. Галава дзіцяці бясформенная, адно вуха страшна адтапыранае.

— Ад чаго? — пытаю.

— Маці, ведаць, як насіла, моцна спіскалася, каб не пазналі, — адказваюць мне. — А потым, як нарадзіла, хто яе ведае дзе, аддала спатканай па дарозе карэтцы хуткай дапамогі, нібыта знойдзенае ёю на дарозе. Маці гэтай 16 год.

ЗНАЧЫЦЬ ЗА ШТО?

Па чыёй прычыне, дарагі чытач, церпяць дзеці, адзінокія, пакінутыя дзеці, якія ж на свет не прасіліся. Дзеці — плён неабудзанах сляпых інстынктаў; дзеці несвядомых памылак, дзеці бяздушнай гульні дарослых!

*

Кіраўніцтва Дому малых дзяцей у Беластоку дало магчымасць прагледзець мне дакументы дзяцей, якія знаходзяцца ў іх. Я прагледзела дакументы 100 дзяцей, пачынаючы ад літары А.

Некаторыя лічбы зацікавяць і вас.

На 100 дзяцей — 66 — дзеці незамужніх дзяўчат, 28 — замужніх, 6 — падкідышаў.

24 на 100 — дзеці бацькоў (часцей толькі маці) псіхічна хворых. Частыя выпадкі — дзеці непаўналетніх.

Гэтыя лічбы павінны сказаць удумліваму чытачу больш, чым словы.

У анкеце гэтых 100 дзяцей мне ўсё ў вочы лезла рыска — у рубрыцы — ці жыве бацька. Жыве, але шукай, дзяўчына, ветру ў полі (і будзь асцярожнай).

Крыху аб гэтых 24 на 100 псіхічна-хворых, з якіх амаль кожная выдала на свет па 2 — 4 нешчаслівых дзяцей. Не ганю і не крытыкую іх патрэб уцех з жыцця, але на загану заслугуюць нармальныя мужчыны (бо гэта ж не сакрэт), ад якіх такія жанчыны родзяць дзяцей.

І яшчэ — бацькі, ці толькі маці ўсіх 100 дзяцей, акрамя некалькіх выключэнняў, людзі МАЛААДУКАВАНЫЯ, а гэта моцна аб нечым сведчыць.

*

Адна кампетэнтная асоба расказвала мне выпадак (не адзіночны), калі да яе прыйшла жанчына — маці 12-ці дзяцей і патрабавала грошай. Многія з гэтых яе дзяцей ужо выхаваны дзяржавай і дапамога цяпер ім не належыцца. Але жанчына была ўпартая і крычала, што ёй дзяржава мусіць плаціць, бо яна мае медаль за дзяцей.

Цяпер медалі за дзяцей,

на шчасце, не даюць. Бо на радзіце дзяцей — не такая штука. Куды большай штукай з'яўляецца іх выхаваць, даць адпаведную адукацыю, працу. А пра гэтае цяпер найбольш наша дзяржава клоціцца. Аднак дамы дзіцяці ніколі не замяняць роднага дому, нават скупых матчыных і бацькавых пяшчот. А са шчаслівых дзяцей вырастаюць шчаслівыя людзі.

*

Дамоў дзіцяці ў нашым толькі ваяводстве 12 плюс 4 спецыяльныя заклады для дзяцей недаразвітых, глуханаемых. ЗА АДЗІН ТОЛЬКІ ГОД дзяржава ў нашым ваяводстве выдае на ўтрыманне гэтых дамоў 22 741 000 злотых. Мільёны на дзяцей — лішніх у бацькоў.

Дзяржава — гэта не нешта адарванае. Дзяржава — гэта, між іншым, людзі, якія ў ёй жывуць — значыць мы.

І калі дзяржава плаціць мільёны злотых на дзяцей, пакінутых, занябаных бацькамі, часта без сур'ёзных прычын, то мы не можам быць абыхавымі да гэтага. У ніякім выпадку не можам праходзіць моўчкі міма выпадкаў, аб якіх я гаварыла вышэй. Дом збудаваны з многіх цаглін. Выміце адну — ва ўсім доме будзе дзірка.

Ул. Паўлючук

Уладзімір Паўлючук працуе ў «Ніве» ад 1. II. 1963 года.



Пра дзеда Антона і цара Мікалая

Кожны чалавек мае ў сваім жыцці часы, якія называе «залатымі часамі», а таксама і такія, якіх «залатымі» назваць нельга. У Антона Макарэвіча з Белавежы залатыя часы былі за цара Мікалая. Бо з царом Мікалаем дзед Антон жыў за панібрата. Можна не зусім ужо за панібрата, але ў кожным выпадку з імператарам усяе Расіі дзед Антон жыў нядрэнна. Ён жа быў сторажам у царскім палацы, які да апошняй вайны стаяў у Белавежы.

Калі я наведваў хату Антона Макарэвіча, дзядуля сядзеў ля стала з унукам на каленях. Унук круціўся і пахліпаў, а дзед Антон гаварыў:

— Не плач, дурань, а то пан зараз зробіць «стрык» і сфатаграфуе цябе, бэксы.

Пагроза не падзейнічала, і дзед Антон аддаў унука ў рукі маці. Затым звярнуўся да мяне:

— Эгэ, што тут было за цара! А багацце ў палацах якое, а якая мэбля! У кожным пакоі іншая, і з аднаго

Ў другі пераносіць ніхто не меў права. А печы былі з кафляў, а кафляў тады яшчэ не было нідзе, толькі ў царскім палацы, і ўсё было зроблена з вываранага дрэва, каб не трэскала.

— То вы на свае вочы бачылі цара? — пытаю.

Дзед Антон злуецца.

— Як жа ж мог не бачыць! Я ж быў у яго сторажам. Усё ў Белаавежы бачылі. Аднаго разу, як прыехаў, царская ахова пачала адганяць людзей ад палаца. Выйшаў цар на шпацыр, а кругом войска. Разгневаўся і пачаў крычаць: «Войска я і ў Санкт-Пецярбургу бачу ўдоваль, пакажыце мне цывільных людзей! Ці ў вялікай Расіі няма аніводнага цывільнага чалавека? Перапалохалася царская ахова і пачала нават з суседніх вёсак зганяць людзей у Белаавежу, каб паказаць цару нашых сялян.

— Ці часта цар прыязджаў у Белаавежу?

— Дзе там часта. Прыедзе раз на тры гады, пабудзе з два тыдні і зноў паедзе.

— І што ён тут рабіў?

— Паляваў, часам хадзіў на шпацыр. Але найбольш паляваў. Наб'юць, бывала, цэлую горбу звярыны: аленяў, лосяў, дзікаў, а нават зуброў цар страляў. На зуброў толькі цар меў права паляваць. Ну, яшчэ нейкі там высокі міністр, але павінен быў мець падпісаны праз цара дазвол.

— А цар сам прыязджаў у Белаавежу, ці з царыцай?

— І з царыцаю і з дзяццямі, з усім сямействам. Царскія дочки, бывала, над сажалкай цэлымі днямі пішчаць. Возьмуць нейкую балею і прабуюць па сажалцы плаваць. Або бяруць матыкі і ідуць да сялян бульбу збіраць.

— Эээ?!

— Так. А што вы думаеце — ім таксама збудзіцца ў палацах сядзець. Нават цар раз выйшаў на поле і просіць аднае жанчыны, каб дала яму з дзесяць бульбін. Жанчына кажа: «Ой, паночку, калі ж яны вельмі брудныя». Выцерла бульбу аб парцяк і падала яму. І цар схаваў бульбу ў кішэню.

— Навошта ж яму бульба?

— Не бачыў ніколі. У палацах бульбы не садзяць.

Дзед Антон выразна збудзіўся маімі наіўнымі пытаннямі. Глядзіць цяпер за акно на Белаавежу.

— Цяпер усё перайначылася, — адзваецца ўрэшце ціха, — і Белаавежа іншай стала. Вялікая і багатая. А тады была звычайнай вёсачкай.

Урэшце дзядуля Антон, быццам прабудзіўшыся, пытае:

— А ці жыве яшчэ цар Мікалай, не ведаеце?

— Не, не жыве.

— Я так і думаю, што не жыве. Нікога з іх я не сустраў ужо пасля царскай вайны, толькі адзін царскі ад'ютант прыехаў у Бела-

авежу ў час апошняй вайны. Быў ужо генералам нямецкага войска. Пазнаў ён нават мяне.

Дзед Антон ізноў траціць ахвоту да размовы і пачынае са стайго акна разглядаць Белаавежскі пейзаж. Развітваюся і выходжу пахадзіць белаавежскімі вуліцамі. Бела-

вежа сапраўды цяпер зусім іншая. Іншая яна робіцца з года ў год, і Антонавы ўспаміны выдаюцца нечым даўнім, так даўнім, што амаль нерэальным. Магчыма менавіта таму з прыемнасцю слухаецца расказаў старога Антона.

Ніва, 23 мая 1965 года.

Вяртанні

Дзядзьку Кірыла Валасовіча з Катлоў сустрэў я пры яго штодзённых занятках і прагутарыў з ім дзве гадзіны. Дзядзька Кірыл раскаваў сваё жыццё, а я запісваў усё у бланкце. Калі дзядзька Кірыл скончыў, я закрыў свой бланкот і схаваў яго ў кішэню.

— Цэлую кніжку запісалі, — сказаў дзядзька Кірыл.

— Так, цэлую кніжку, — адказаў я са смуткам.

Са смуткам, бо рэпарцёрскі бланкот то ўсё ж такі не кніжка, а аб Кірылавым жыцці можна напісаць сапраўдную кніжку, тоўстую і цікавую. На жаль, кніжкі такой ніхто не напісаў і не напіша, і таму вырашыў я звычайна расказаць вам аб Кірылавым жыцці.

Нарадзіўся дзядзька Кірыл у Катлах 83 гады таму назад, у 1881 годзе, канчыў прыхадскую школу і... дзіўная рэч, не захацеў быць «грэчкасеём». Ці то недалёкі Бельск уздзеінічаў на фантазію маладога тады дзядзькі Кірыла, ці можа настаўнік прыхадской школы разбудзіў зацікаўленне шырокім светам, хто яго ведае. Фактам з'яўляецца тое, што дзядзька не захацеў араць бацькаўскі грунт, пакінуў 12 дзесяцін бацькаўшчыны для брата і пайшоў у шырокі свет. «Шырокі свет» быў тады значна меншы, чым цяпер, пачынаўся ён ужо ў суседнім Бельску, да якога рэдка хто, або і ніхто з вёскі не перасяляўся. Але для Кірыла было замала Бельскай «шырыні», ён паехаў у Белаасток, а потым у Варшаву. Пасля доўгага бадзяння ў пошуках працы і кавалка хлеба ўдалося ўрэшце для Кірыла стаць на службу тамажніка недзе каля Каліша. Так пачалося бурлівае жыццё дзядзькі Кірыла. Службовыя абавязкі кідалі яго тысячы кіламетраў ад роднага краю. Кірыл праехаў усю Расію, Сібір і нарэшце апынуўся ў далёкай Манчжурый ля Кітайскай мяжы, на невялікай чыгуначнай станцыі Бордзя.

Праўда, дзядзька Кірыл цвердзіць, што не шукаў прыгод, а толькі хлеба і спакою. Жыццё, аднак, не скупіла Кірылу прыгод.

У далёкай Манчжуры дзядзька насмерць пакахаў прыгожую чорнавалосую казачку, дачку Забайкальскіх казакоў. Казачка таксама пакахала Кірыла і... як часта ў такіх выпадках бывае, бацькі казачкі не згадзіліся аддаць яе за Кірыла. Чаго толькі не змога вялікае каханне! Кірыл рашыў выкрасці бацькам прыгожую казачку. Так і сталася. Каб быць



Кірыл Валасовіч з жонкаю.

як найдалей ад бацькоўскага гневу, маладыя закаханыя пераехалі дзесяць тысяч з гакам кіламетраў і апынуліся ізноў на польскай зямлі, у Калішы. І ўсё можа б кончылася зусім звычайна, калі б не ўспыхнула першая сусветная вайна. Кірыла забралі ў армію, а яго казачка, уцякаючы перад фронтам, выехала ў глыб Расіі. Казачка галадала, а Кірыл ваяваў на ўсіх франтах вялікай вайны. Урэшце быў дэмабілізаваны і пачаў шукаць свае жонкі. Знайшоў яе на Украіне ў Палтаўскай губерні. Потым у Кіеве знайшоў нейкую працу і пражыў тут да 1923 года. У 1923 годзе Кірыл са сваёй жонкай адправіўся на радзіму, у Польшчу, у сваю вёску Катлы. У Катлах не было, як кажуць, «за што рук зачэпіць», усё знішчана,

разбурана вайною. Трэба было думаць, як знайсці кавалак хлеба. Атрымаў Кірыл ліст ад свайго знаёмага з Сілезіі. Запрапанаваў ён Кірылу перанесціся ў гэты прамысловы цэнтр Польшчы.

Паехаў. Доўга, аднак, і на Сілезіі не спыніўся. Цяжкасці атрымання працы адчуваліся нават тут. Быў гэта час бурных дэманстрацый і забастовак рабочых.

— Едзьце да дому, — парайлі Кірылу, — пакуль яшчэ не забаставалі чыгуначнікі, а то пехатою будзеце ўцякаць.

Кірыл ізноў знайшоўся ў родных Катлах. Нястача і галеча дакучалі, аднак, штораз больш, і Кірыл рашыў выехаць разам з жонкаю на другое паўшар'е нашай планеты — у Аргенціну. Працаваў там у нейкага будаўлянага прадпрыемцы. Напружаная праца і скромнае жыццё дазволілі заахчадзіць нейкую суму грошай, і калі ў 1933 годзе дзядзька Кірыл ізноў вярнуўся ў Катлы, мог купіць сабе кавалак агарода, хату, ды яшчэ крыху долараў засталася. Параспазычаў іх дзядзька розным людзям.

— Потым наступіла вайна, — расказвае дзядзька Кірыл, — загінулі людзі, загінулі і грошы.

З-над гаршкоў глядзяць удумлівыя вочы жонкі — казачкі, цёці Насці, на твары яе — сляды даўняй прыгожасці. Зямлю і палову сямлібы аддаў цяпер дзядзька Кірыл людзям.

«Добрыя гэта людзі, — гаворыць, — кормяць і дапамагаюць, бо працаваць мне ўжо цяжка, 83 гады!»

Цёця Насця разлівае гарачы суп, і ў дзядзькі Кірылы пачынаецца снеданне.

*

«Дзядзька Кірыл, — гаворыць катлоўскі солтыс, — гэта такі ціхі, спакойны чалавек. Жыве, нікому не перашкаджае, быццам бы яго і не было ў вёсцы».

Цёця Насця надалей гаворыць на чыста рускай мове, напамінаючы Кірылу пачаткі іх вялікага кахання ў далёкай Манчжурскай краіне.

Ніва, 21 лютага 1965 года.

Толькі скнара і лянiвы

Не выпісываюць «НiВЫ»!



В. Рудчык

Віктар Рудчык працуе ў «Ніве» ад
1. I. 1960 года.

Тэрэсы лёс незвычайны

П'ем каву, ямо пірожнае. Гляджу на яе. Тэрэса нічым асаблівым не вылучаецца сярод іншых дзяўчат, што занялі суседнія столікі кавярні. Толькі час ад часу, калі думкамі заглыбляецца ў сваё прошлае, твар яе чырванее, мускулы на шчоках пачынаюць неспакойна дрыжаць, а вейкі трапечуцца ў кроплях слязінак, якія бы жывое серабро іскрацца ў вугалках яе вачэй.

Тэрэса смяецца, сілаю намагаецца прыкрыць сваё балючае ўсхваляванне.

Хто яна — Тэрэса? Якую трагедыю хавае ў сваім сэрцы?

СМЕРЦЬ МАЦІ

Недзе далёка, пад Віцебскам, засталіся асмаленыя галавешкі роднай беларускай вёскі.

«Бандітэндорф» — гучаў жандармскі прыгавор. — Бандыцкая вёска, спаліць!»

Цягнік ляскатаў на злучэннях рэек. За сеткай з калючага дроту, што закрывала дзіравыя вокны таварных вагонаў, усімі колерамі вясёлкі пералівалася восень, восень 1943 года. Везлі іх у Нямеччыну на рабскую працу.

Каторы ўжо дзень яны ў цягніку?

Ніна нават не памятае. Толькі жылот ад голаду прырастае да хрыбта, мучыць страшэнная прага, і яе трохмесячная крошка безупынна крычыць тоненькім, хрыплым галаском. Дамагаецца есці. Яна не разумее і не можа разумець, што суха ў мацярынскіх грудзях, што няма ні малака, ні вады, ні кавалачка хлеба. Баюкае маці крошачку сваю, а сэрца крывавіць.

Цягнік спыняецца. Нейкая станцыя перад Граевам. Ніна выскаквае з вагона, бяжыць да людзей.

— Малака, малака! Для дзіцяці, для маленства! Хаця капельку малака! Злітуйцеся, людзі добрыя! — нясецца яе голас.

Не чуе нават крыку ахраннікаў. Раптам цягнік свіснуў раз і другі, бухнуў парай і рушыў з месца. Ніна кінулася ўдагонкі. З вагона працягнуліся рукі. Запозна. Ніна спатыкнулася і паляцела пад калёсы. Двух сыноў — 10-ці і 6-цігадовыя хлапчужкі і дачка трохмесячная крошачка асталіся сіратамі. Цягнік імчаўся далей, да Граева.

МАМА ЛЯШЧКОЎСКАЯ

— Жыла я тады ў горадзе Граева, — апавядае Анна Ляшчкоўская. — Жыла без мужа. Ён яшчэ да вайны ў Амерыку ўцёк, аднаго сына з сабою забраўшы. Старэйшая дачка, значыць Гэленка, працавала тады ў бараках, у якіх немцы трымалі тых, што вывозілі на работу. Баяліся, праклятыя, каб ім у Нямеччыну гэтыя нявольнікі вашэй сваіх з тыфусам не завязлі. Мылі іх, чысцілі, а вопратку вось у гэтакія, — паказвае рукамі, — грамадныя печкі кідалі. Там працавала дачка мая, Гэленка. Дзяўчынкай была тады яна. 17 год яшчэ не мела. А працавала цяжка. Часам і нанач дамоў не вярталася. Дык вось, аднойчы раніцай, я яшчэ спала, восенню, перад Задушным днём было гэтае... вяртаецца мая Гэленка з гэтых баракаў і нясе штосьці завернутае ў пледзе.

«Дзіцё, мама, прынясла я вам», — гаворыць яна.

Не, не скажу, каб я ўцешылася. У мяне ж сваіх было пяцёра галодных дзяцей.

«Што мы з ім зробім, дочанька?» — гавару я.

«Яно ледзь жывое, асталося без маці, бацька вельмі прасіў, каб заняцца дзяўчынкаю», — кажа Гэленка і просіць: «Возьмем, мама, гэтую дзяўчынку! Неяк выгадуецца пры нас».



Тэрэса з мамай Ляшчкоўскай.

Паслухала я дачушкі сваёй.

Выпрасіла я ў людзей гаршчок малака. Накарміла сінату, выкупалі і... аджыла яна. Тэрэсай мы яе назвалі. Цяжка даводзілася. Аж успамінаць не хочацца, бо сэрца баліць...

...Тэрэска малака патрабавала. Яе, свае дзеці, не магла ж я запхаць бульбай. Хадзіла я тады па вёсках, усю зіму хадзіла за малаком.

БЕЗ ІМЯ, БЕЗ ПРОЗВІШЧА

Зараз пасля вайны сям'я Ляшчкоўскіх перабралася ў Элк. Тэрэска нічым асаблівым не вылучалася сярод сваіх двух-трохгадовых дзяўчынак. Бегала ў дзетсад, гуляла з сяброўкамі. Разам з іншымі членамі сям'і цярпела звычайную бяду. Мама Ляшчкоўская працавала ўборшчыцай.

І так ішлі гады. Сям'я Ляшчкоўскіх пачала разлітацца па свеце. Дома засталася: мама, сёстры: Гэлена, Зофія і яна, Тэрэска.

У 1950 годзе Тэрэска пайшла ў школу, як іншыя дзеці. Спатрэбілася метрыка нараджэння. Ляшчкоўскія звярнуліся да ўлад. З гэтага часу засталіся два асноўныя дакументы.

«...Прэзідыум Павятовай рады нарадавай у Элку... дзіцяці жаночага полу невядомых бацькоў, якое нарадзілася 1 верасня 1943 года і знаходзіцца пад апекай грам. Анны Ляшчкоўскай, што жыве ў Элку, вуліца Касцюшкі № 3 прысвойвае імя: «Тэрэса».

Адначасова пастанаўляецца, што ў акце нараджэння як імёны бацькоў будуць запісаны: імя бацькі «Дамінік», імя маці «Анна» з дому «Сыпіткоўская», месца нараджэння г. «Элк».

Гэты дакумент датаваны ад 22. X. 1950 года. Месяц пазней, 21. XI. 1950 года з'явіўся другі дакумент:

«...Прэзідыум ВРН прысвойвае Тэрэсе народжанай дня 1 верасня 1943 года з невядомых бацькоў, якая знаходзіцца пад апекай Ляшчкоўскай Анны, што жыве ў Элку, вуліца Касцюшкі № 3 прозвішча «Ляшчкоўская».

Чалавек без імя, без прозвішча, проста невядома што. Тэрэска, вучаніца 1-шага класа пачатковай школы, урэшце згодна з усімі правіламі атрымала імя і прозвішча.

Яна, зразумела, аб нічым не ведала і па-ранейшаму Анну Ляшчкоўскую называла мамай.

ЗНОЎ СІРАТА

У 1954 годзе Гэлена памерла. Зофія была ўжо замужняй, мама Анна пастарэла, не магла працаваць. У хаце стала яшчэ больш цяжка. Нават не заўсёды хапала на хлеб.

Прадстаўнік аддзела грамадскай апекі параіў накіраваць Тэрэску ў дзіцячы дом, дапамаглі аформіць усё неабходнае.

І вось грахоца цягнік па рэйках. Прытуліўшыся да сценкі, сядзіць у купэ сумная Тэрэска. Яна ўжо дужая дзяўчынка. Ёй жа пайшоў 12-ты год.

«Куды мяне вязуць? — ломіць галоўку дзіцё. — Чаму адабралі ад мамы?»

Пытанне за пытаннем не дае спакою, а адказу яна сама не знаходзіць. Глядзіць на сястру сваю, Зофію, што сядзіць побач. Яна аднак нейкая сур'ёзная, задуманая. Але Тэрэска не можа маўчаць, яна хоча ведаць.

— Бо ты сінрата, — адказвае Зофія. — У цябе няма ні маці ні бацькі. Такіх аддаюць у дзіцячы дом.

Тэрэска шырока адкрытымі вачыма глядзіць на сястру і нічога не разумее.

— Ты ілжэш, — крычыць Тэрэска, а гарачыя слёзы заліваюць ёй шчокі.

— У нас жа ёсць мама! Наша мама жыве!
— Гэта не твая мама. Ты нам не сястра. Гэтае цяпер табе трэба ведаць...

Зофія не затайвала нічога. Тэрэсцы здавалася, што свет, яе дзіцячы свет адварочваецца ўверх нагамі.

— Твой бацька называецца Кожух, — гаварыла Зофія, — Іван Кожух. Ён пры табе пакінуў картачку з прозвішчам.

Тэрэска не паверыла. Яна думала, што Зофія яе проста абманвае. Аднак яе дзіцячы свет разваліўся дашчэнту.

ДЗЕ БАЦЬКА?

Тэрэска забыла і пра каву і пра пірожнае. Доўга маўчыць.

— Былі гэта найцяжэйшыя гады ў маім жыцці, — сцвярджае ўрэшце. — Чаму я такая няшчасная, думала тады, чаму ў іншых і бацькі і мамы, а ў мяне...?

У дзетдоме Тэрэска ўжо не галадала. Чыста апранута, да сыта наеўшыся хадзіла ў школу. Не хапала толькі мацарынскай цеплыні, добрага, зычлівага бацькоўскага слова.

Пасля пачатковай школы Тэрэска пайшла вучыцца на прадаўшчыцу. Вучылася ў Элку. Жыла ізноў у Ляшчкоўскіх і паранейшаму Анну называла сваёй мамай. Дзетдом штомесяц прысылаў ёй стыпендыю. Часам нейкую вопратку, або падарункі пад Новы год. Бяды вялікай ужо не было. Толькі думкі пра бацьку не давалі спакою. Хто ён? Ведала толькі яго прозвішча: Іван Кожух.

У розныя бакі разаслала лісты. Нікому пра гэта не гаварыла, нават адрас падала не свой, а іншы, даверанай асобы, якая жыла цалкам на другой вуліцы. Пасля нейкага часу з Варшавы, з бюро пошукаў Польскага чырвонага крыжа прыйшла першая вестка. Іван Кожух жыве недзе на тэрыторыі СССР. Ён таксама шукаў сваю дачку, якую ў 1943 годзе пакінуў у Граеве.

Надзея загарэла ў сэрцы дзяўчыны, але час чакання стаў цяпер яшчэ больш нязносны. Тэрэска паздавала ўжо ўсе экзамены і незадоўга атрымала пастаянную працу рахункавода ў элцкай фабрыцы фанеры. Быў ужо пачатак 1963 года.

ВЫСАКАРОДНЫЯ СЭРЦЫ

Адзін з лістаў Тэрэсы трапіў у Маскву на стол тав. Юлы Панамаровай, работніцы бюро пошукаў Саюза таварыстваў Чырвонага крыжа і Чырвонага паўмесяца. Тэрэска коратка апісвала свой незвычайны лёс і прасіла дапамагчы ёй у пошуках бацькі.

«Іван Кожух, Іван Кожух...» — паўтарала ў думках Панамарова, перачытваючы невядома ўжо каторы раз ліст, пісаны акуратным лацінскім шрыфтам, ліст, які прышоў з Польшчы, з нейкага горада Элк. Панамарова намагалася ўявіць сабе Тэрэску. Яна, Юлья Панамарова, таксама выхоўвала ў сябе ў сям'і адну дзяўчынку, якой бацькоў пахлынула лютая вайна. Поўнасьцю тады разумела неспакойнае хваляванне, што праяўлялася ў кожным радку кароткага лісту.

«Знайду табе бацьку, мілая Тэрэса, калі толькі ён у жывых!» — паставіла савецкая жанчына.

Першыя спробы пошукаў паказалі аднак, што Іванаў Кожухаў у Савецкім Саюзе многа. Хто з іх аставіў дачку сваю ў польскім горадзе Граева восенню 1943 года? Вось сярод цэлай арміі Іванаў Кожухаў трэба было знайсці гэтага аднаго — бацьку Тэрэскі. Паплылі заклікі ў розныя куткі вялікай краіны. І ўрэшце... Шчаслівы выпадак дазволіў натрапіць на брата Тэрэскі. Незадоўга Юлья Панамарова мела ўжо адрас Івана Кожуха, бацькі Тэрэскі Ляшчкоўскай. Гэтага ж самага дня заказала міжгарадскую тэлефонную размову з Астраханем. Не магла дазволіць, каб гэтая радасная вестка цягнулася некалькі дзён паштовымі дарогамі.

ЗВОНІЦЬ БАЦЬКА

Ішоў час. Тэрэска працавала ў фабрыцы фанеры. Была ціхай, руплівай і пільнай работніцай аддзела бухгалтэрыі. Начальства хваліць яе, даверыла ёй весці касу прадпрыемства.

Умовы дома таксама цяпер карэнна паправіліся. Тэрэска зарабляе не найгорш, мама Ляшчкоўская атрымала пастаянную 400-златовую месячную дапамогу ад гарадскога аддзела грамадскай дапамогі. Жыць стала многа лягчэй. Толькі вось пра бацьку нічога, цалкам ціха... І раптам выклікаюць Тэрэску Ляшчкоўскую ў мясцовы тэлеграф. Замежная размова. У трубцы голас нейкага мужчыны. Гаворыць па-руску. Тэрэска не ўсё разумее. Яна ж ведае толькі польскую мову. Дапамагае нейкая жанчына, работніца тэлеграфа. Мала даведлася Тэрэска з гэтай размовы. Ведала толькі адно: бацька, яе родны бацька жыве! Яна чула яго, з ім гаварыла! Аж свет папрыгажэў.

Наладзілася перапіска. Бацька прыслаў вызаў. Тэрэска сабрала ўсе свае скромныя ашчаднасці, купіла білет і падарункі ды паехала ў Астрахань, да бацькі ў госці.

— Вы пэўна здзіўляецеся, чаму я вярнулася назад у Польшчу? А маму хто бы гадаваў?..

— І нейкі хлопец нецярпліва чакаў вас тут, праўда?
Тэрэска сцвярджална махае вейкамі, а твар яе пунсавее.
Вось такая гісторыя Тэрэскі.
«Ніва», 23 жніўня 1964 года.

Здарылася гэта 25. VI. 1941 года

СТАРАКОРНІНСКІЯ ПОМНІКІ

Спрадвяковая традыцыя не дазваляе хаваць на прыцаркоўнай плошчы звычайных (недухоўных) пакойнікаў.

А вось перад царквой у Старым Корніне, што ў Гайнаўскім павеце...

*

У царкве ішоў малебен, а ён, бы скамянелы, стаяў перад двума крыжамі - помнікамі, што ўвекавечвалі супольную магілу, заросшую кветкамі.

— Хтосьці вам блізкі? — адважыўся я парушыць урачыстую цішыню. Ён памалу, як бы спрасонку, адварочвае галаву, глядзіць не мяне — нейкага чужога, абыякавага яму чалавека.

— І я меў быць тут... разам з імі...

Найстарэйшы сярод іхняй чацвёркі быў Ваня Ручай. Быў ужо сапраўдным васемнаццацігадовым кавалерам. Выбіраўся далёка, аж за Урал, на работу. Меў намер адначасова вучыцца.

Андруша Гарасімяк быў на два гады ад яго малодшы, а Санька Баравік і Міша Абрамяк таксама не многа розніліся ўзростам ад двух папярэдніх сяброў.

Ад самага ранку за вёскай на Качкавым лузе збіраліся чырвонаармейцы, устаўлялі гарматы, рыхтаваліся да бою. Старакорнінцы з трывогай чакалі гэтай хвіліны. Тады ж іх вёска... Але юнакоў, больш чым страх, ахапіла цікавасць.

— О, паглядзець бы, як страляюць з гармат!

— А мо' і нам бы дазволілі? Яны ж свае, чырвоныя байцы...

Выбраліся пад вечар. Ішлі асцярожна, гаварылі шэптам.

— Неяк не відаць ні нашых салдат, ні гармат, — маркотна заўважыў Андрэй. — Можна ўжо адступілі?

— Скажаў, што знаў, дурань! — абурыўся Ванька. — Чырвонаармейцы не такія, каб адступаць! Пабачыце, яны яшчэ гэтых германцаў...

Раптам з-за прыдарожных хмызнякоў раздаліся гарклівыя чужыя галасы.

— Хальт! Хальт! Хэндэ хох!

Хлопцы аслупянелі. «Гэта ж гітлераўцы...»

— Стой! Рукі ўверх! — загадаў адзін з нямецкіх салдат на рускай мове. Паслухмяна споўнілі загад. Яны ж не прадчувалі нічога злага. Ад маленства прызвычаліся да таго, што няма кары без віны.

— Што вы дэлят здэш? — запытаў той самы салдат, мабыць нейкі афіцэр, бо меў крыху іншы, прыгажэйшы мундзір.

Хлопцы разгублена глядзелі на чужых салдат і не маглі зразумець, чаго яны ад іх хочуць, чаму палохаюць іх сваімі аўтаматамі.

— Мы, пане, о... з тэй... вёскі... — невядома чаму на польскай мове адазваўся Ванька Ручай.

— Зі зінд дзі зоветішэн шпээрэн, — зашваргатаў рыжы салдат.

— Я, вы шпіён! — пацвердзіў афіцэр і пачаў шныпрыць па Ваневых кішэнях. Раптам у яго руках паявіўся нейкі дакумент.

— Фабрычна-завадское абучанне, — прамармытаў афіцэр.

— Гэта мая пуцёўка на работу, — гаварыў Ваня, але салдаты ўжо не слухалі, яны не патрабавалі ніякіх паясненняў.

Адвіль іх недалёка. Паставілі ў рове адзін ля другога паводле росту, як салдат на зборы. Пашваргаталі яшчэ штосьці на сваёй незразумелай мове...

Міхась Абрамяк аж закрыў вочы... Гэты рыжы ў іх... у іх цэліцца з аўтамата?!... Не!!!

Хацелася крычаць, пратэставаць, прасіць ратунку, клікаць людзей. Але словы не праходзілі праз горла.

Прагрымеў першы выстрал. Ваня, нібы збіты з ног, асунуўся на каменне. У той момант другая куля трапіла яму паміж вачэй.

Прагрымеў другі залп.

Міхась ужо нават не чуў, што кроў яго сябра, Андрэя Гарасімяка, аблівае яму босыя ногі.

— Цяпер я... мая чарга... канец...

Вось рыжая гадзюка падносіць аўтамат... Яго сябры рагочуць, смяюцца, ім весела. Злавіль ворага! Узнагароду будучы патрабаваць ад начальства.

«Не!... Каб не бачыць...»

Міхась закрывае вочы рукою і адварочваецца задам да свайго ката, як бы хацеў у апошнюю хвіліну жыцця прадэманстраваць пагарду, паказаць яму... плечы. Сэрца і лёгкія мераць час, час трывогі і чакання... Секунда... Другая... трэцяя... Замест стрэлу раздаецца сухі скрогат метала.

І вось Міхась чуе ля вуха рашучы сяброўскі шэпт:

— Асечка... уцякай... уцякай... усё роўна паміраць.

Скочыў Міхась з рову, як на крылах. Не чуе ні гарклівых галасоў, ні свісту куль... Не, дагоняць яго... Бяжыць...

Каб толькі хутчэй да вёскі, да першых хат. Вось стада кароў. Вяртаюцца з пашы. Міхась нурком кідаецца паміж маўклівых красулі. Хай страляюць, гады! Нічога цяпер яму не зробіць. Ён жыве! Жыве! Жыве!!!

*

Міхась Абрамюк цяжка ўздыхае.

— Дома не хацелі мне верыць. Думалі, што жартую... Потым я даведаўся, што Сацька Баравік таксама ўцёк... зараз за мною. А вось гэтыя два, — і паказвае рукою на два помнікі, што ля корнінскай царквы ўвекавечваюць брацкую магілу, — мелі б цяпер па...

Хвіліну пералічвае ў памяці даты, а потым неяк нечакана сцвярджае:

— Па радзё гавораць, што ў Заходняй Германіі зноў хацелі б вайны...

Беласток, 21 чэрвеня 1961 года.

ПАН РУРЫК СТРАШЫЦЬ

Жнівеньскае сонца абмывае зямлю, як растопленае жалеза.

Дзед Макар расшпіліў цвёрдую даматканую сарочку і, падняўшы высока белую рэдкую бародку, выгадна выцягнуўся на траве. Настала цішыня. Толькі час ад часу іржалі коні, што побач пасвіліся на лузе, грукацелі машыны, якія імчаліся шашою, ды ціха шумеў ручай. Далёка праз высокія кароны дрэў дзе-нідзе прарэзваліся сямлібы вёскі Галады. Сэрца радавалася разнастайнасцю краявіду. Урэшце вочы спыніліся на незвычайным помніку.

Стаяў ён на невялічкім узгорку ля дарогі, што непадалёку маста адыходзіць ад шашы і вядзе ў вёску Міклашы. Масіўны слуп, плоска абцёсаны з двух бакоў, вырастаў на вышыню грамаднага вясковага будынка. Па абодвух плоскіх баках зроблены былі глыбакаватыя нішы, у якіх свабодна можна змясціць высокія статуэты. Праз тоўстыя слаі адігчапіўшагася тынку віднелася чырвоная цэгла. Слуп закончаны дахам пакрытым чырвонай чарапіцай. З яго вярхушкі вырастае жалезны крыж.

На дарогах Беласточчыны сустракаў я розныя помнікі — крыжы, алтары ды каплічкі, але такога помніка, якому я зараз прыглядаўся, нідзе не бачыў. Узнікала тады пытанне, адкуль узяўся гэты незвычайны помнік? Хто і калі яго пабудоваў?

Я паглядзеў на дзеда Макара. Мо' ён што-небудзь ведае? Але стары спаў, і мне не хацелася трывожыць яго. Я моўчкі ўзіраўся на аб'ект маёй зацікаўленасці. Раптам дзед Макар зашпыцеў неяк балюча, прысеў, і моцна вылаяўшыся, з размахам стукнуў сябе па адкрытых грудзях.

— Ну ж, укусіла гадзюка, — загаварыў дзед.

— Што гэта за помнік вунь там стайць? — запытаў я старога. Дзед Макар пачухаў грудзі, плюнуў на палец і слінаю нацёр тое месца, дзе ўкусіла яго якоесьці насякомае. Затым зашпіліў сарочку, паглядзеў на мяне, а потым на гэты помнік і ўрэшце адазваўся:

— Пытаеш, сыноч, пра гэты крыж? — дзед кінуў галавою ўбок гэтай загадкавай будоўлі. — Гэта доўгая гісторыя.

Я хутка працягнуў дзядулі пачак «гевонтаў».

— Ага, значыць, панскія ты курыш. Ну, давай, паспрабуем панскага.

Стары пераламаў папяросу напалову, адну палавінку схваў у кішэню, а другую ўлажыў у муштук. Пацягнуўшы некалькі разоў, дзядуля зморшчыўся ад непрыемнасці, пачухаў сябе за вухам і сказаў:

— Нікудышнія твае папяросы, па шчырасці табе кажу, слабаватыя; другую палавіну адразу закурыць трэба.

Дзед Макар прагна глытаў дым, не гаворачы ні слова, як бы забыў пра помнік.

— Тады, што з гэтым помнікам, дзядуля? — прыпомніў я яму.

— О, гэта доўгая гісторыя! — паўтарыў стары. — З духамі гэта гісторыя, — дабавіў ён.

Я з цікавасцю наставіў вуха, а дзед Макар, не спяшаючы, пачаў сваё апавяданне. Як сапраўдную казку.

— Было гэта даўно, сыноч. Яшчэ за паншчыны. Вось усё гэта, што бачым, ды і тое, чаго адсюль не згледзіш — палі, лугі, лясы, вёскі ды і людзі — усё было ўласнасцю аднаго памешчыка. Рурыкам яго называлі. Ой, ліхі быў гэты пан! Самыя здзекі цяпеў ад яго народ. Асабліва жанчынам не было ад яго пакою. Жыў васьм ён тут, недалёка, у Навадворах, у палацы, зразумела, а ў вёсцы жыў, як іншыя мужыкі, нейкі Грыц. Здаровы і надзвычайна моцны быў гэты чалавек. Два сяміпудовыя мяшкі збожжа ўзяць яму за адным замахам то так, як мне плюнуць.

Дзед Макар паспрабаваў паказаць, як лёгка браў Грыц мяшкі збожжа, але плюнуць яму не ўдалося. Сліна надта ж слаба праціснулася праз бяззубыя вусны і ўпала на бараду.

— Вось чартоўская маці! — вылаяўся дзед і, выціраючы ба-
раду, дабавіў: — Зусім высахла ў роце. Давай, сыноч, свайго
панскага.

Я падсунуў папяросы. Пакурыўшы, дзед расказваў далей.

— У Грыца была жонка, Фроська, — прыгажуня незвычай-
ная. Прыгажосцю сваёй славілася яна на ўсё наваколле. Ну,
што ж, Грыц хлопец быў славуці. Свахі ад усіх дзяўчат пад
яго пад'язджалі. Мог выбіраць. Ды і выбраў сабе прыгажуню
на сваё гора, няшчасце.

Дзед Макар дапытліва паглядзеў на мяне, памаўчаў хвіліну
і нечакана запытаў:

— А ты, сыноч, жанаты ўжо?

— А чаму, дзед, пытаеш? — са здзіўленнем запытаў я.

— А ты ўсё ж скажы мне, — настойваў дзед.

— Не, не жаніўся яшчэ, — адказаў я.

— Дык і добра. Памятай сыноч, ніколі не жаніся на пры-
гажуні. Прыгажуня — горш смерці. Справядліва табе гавару.
Так было з гэтай Фроськай і Грыцам. Прыгожасць іх згубіла.

Было гэта летам, васьм'як зараз. У час жніва. Паехаў пан Ру-
рык у поле асабістым панскім вокам паглядзець, як бабы за
працай спраўляюцца. А жара, жарышча стаяла невыносливая.
Прыехаўшы, расставіў шырока ногі і глядзіць. Бабы завару-
шыліся хутчэй, толькі сярпамі мільгаюць ды калоссем раз-
махваюць. Паглядзеў пан ззаду, ды перайшоў паглядзець спе-
раду. І так узіраецца пан, а ў мазгах прыкідае, з каторай вар-
та было б пасаволіць, развесяліцца. Урэшце вочы яго, быццам
кацячыя кіпцюры, зашчапіліся аб Фроськін твар. Значыць, па-
пала мышка, нікуды не ўцячэш... Фроська, пачуўшы на сабе
дакорлівы позірк пана, яшчэ хутчэй замахала сярпом. Пунсо-
вы яе твар быў мокры, пот заліваў вочы, але яна намагалася
працаваць шторах хутчэй і хутчэй; баялася падняць вочы, ва-
дзіла імі толькі за сярпом і рукамі. Забылася бедная, што га-
дзіны дзве таму з-за спякоты расшпіліла кофтачку, і цяпер
пан Рурый асалоджвае свой панскі позірк яе поўнымі, мала-
дымі грудзмі, няроўна хвалюючымі ў такт нервовага біцця
яе ўстрывожанага сэрца.

Дзед Макар ізноў спыніў сваё апавяданне. Мы закурылі.
Стары, як бы шукаючы натхнення, павёў вачыма па наваколлі
і раптам, вылаяўшыся брыдка, сарваўся з месца ды пабег
цяжкім старэчым трушком адварнуць коней, якія залезлі
ў авёс. Калі вярнуўся назад, я запытаў яго:

— А далей што, дзядуля?

— На другі дзень, — памалу цягнуў дзед, — пан прыказаў
прызваць Фроську да сябе ў палац. Прышла Фроська, пакла-
нілася пану, стаіць і дрыжыць уся ад страху. А пан кажа ёй:

«З сённяшняга дня больш ужо не будзеш хадзіць на паншчы-
ну. У слугі бяру цябе». Затраслася Фроська, як тая асіна, ды
заплакала, і просіць і на госпада бога моліць пана, каб не браў
яе ў слугі. Пан нічога не хацеў слухаць. Раззлаваўся. Вось так
Фроська стала рурыкавай служанкай.

Ты, сыноч, хаця яшчэ малакасос, але хіба ўжо дагадваешся,
што пану не Фросьчыны паслугі патрэбны былі, а толькі яна
сама. Дык прыліп пан Рурый да Фроські, як муха да мёду.
Але Фроська не ветрам была падшита. Яна жанчына спра-
вядлівая і верная свайму законнаму мужу. Ніякімі прыман-
камі не мог пан звесці яе. Аднойчы, калі пан Рурый захацеў
ўзяць яе сілай, Фроська пакусала яму рукі і фанары аставіла
пад вачыма. Гэта давала яго да вар'ячці. Ён не мог дараваць,
каб простая, мужыцкая баба асмелілася супрацьпаставіцца яго
дваранскай волі. Незадоўга па загаду пана Грыца без чаргі
і лёсаў забралі казакі ў салдаты. Фроська засталася адна.
Дзяцей у іх яшчэ не было.

Пасля нейкага часу, памірыўшыся са сваім лёсам, Грыц
стаў паслухмяным, выносливым салдатам. Яфрэйтары і фельд-
фебелі ставілі яго як прыклад іншым. Тым часам выбухнула
турэцка-руская вайна. Грыц пайшоў на фронт. Гавораць, што
ў час бою за Севастопаль Грыц выратаваў ад смерці якоесьці
вельмі важнага афіцэра высокага рангу. За гэта прышлілі яму
нейкі крыж і на паўгода адпусцілі да дому на адпачынак.
Грыц не бачыў сваёй жонкі звыш пяці год. А пісьмы, якія
атрымоўваў вельмі рэдка, прыносілі ненайлепшыя весткі.

Трывожна хвалявалася Грыцава сэрца, калі ён сярод цём-
най ночы набліжаўся да сваёй хаты пасля двухмесячнага
вандравання з Крыму. Доўга Грыц стукаў у акно і клікаў жо-
нку. Урэшце хтосьці адчыніў дзверы. Грыц увайшоў у святлі-
цу і разгублена стаяў пасярэдзіне пакоя. Апрача начной цем-
ры ён нічога не бачыў. Ніхто яго не вітаў, не сустракаў. Сэрца
Грыца забілася яшчэ больш трывожна. Хтосьці прайшоў па
пакоі і пачаў раздзыхаць застыўшыя вуглі ў печы.

— Фроська, гэта ты? — запытаў Грыц.

Ніякага адказу не было. Грыц зрабіў крок наперад і рукамі
зачапіўся за якісьці кошык, штосьці закалыхалася перад ім
і пачуўся дзіцячы плач.

Тым часам разгарэлася лучына і ў хаце стала відней. Перад
Грыцам пасярэдзіне святліцы вісела калыска, а ў ёй малень-
кае дзіця. Фроська стаяла ля печы і вачыма прабівала хатні
ток.

— Чыё гэта?! — забыўшыся ўжо аб прывітанні, востра за-
пытаў Грыц жонку, паказваючы на калыску.

Плечы Фроські затрасліся ад плачу. Яна кінулася мужу да ног і загаварыла праз слёзы:

— Грэшная я перад табою! Але не магла абараніцца. Ён сілай, гэты гад... Ой, Грыша, Грышэнька, што я перацярпела, што я перажыла тут! Бі, забі мяне!

Грыц моўчкі паглядзеў на жонку, нагой адкінуў яе ад сябе і без слова сеў за стол. Фроська паднеслася з зямлі і падышла да калыскі, каб супакоіць дзіця. Грыц тупым, нядобрым позіркам сачыў за ёю. Урэшце загаварыў:

— Дай есці!

Пад'еўшы, насунуў шапку на вушы і без слова вышаў з хаты. Куды накіраваўся, ніхто не ведаў. Толькі пасля некалькіх дзён пайшла па наваколлі трывожная вестка: «Грыц забіў старога дзедзіца, пана Рурыка, і падпаліў яго палац!» — паўтаралі людзі. Жандармы і казакі доўга шукалі Грыца. Урэшце ўдалося ім злавіць яго, і Грыц пайшоў у Сібір на вечную катаргу, а жонка яго, Фроська, разам з панскім насеннем скочыла з мосту і ўтапілася.

Дзед Макар акінуў мяне дапытлівым позіркам, як бы хацеў праверыць, якое ўражанне выклікала ў мяне яго апавяданне.

Потым памаўчаў хвіліну і сказаў:

— Вось да чаго прыводзіць прыгожасць.

— Ну добра, але прычым тут гэты помнік? — сказаў я.

— Помнік, кажаш? А гэта далейшая гісторыя. Раней нам трэба закурыць, сыноч.

Пакурыўшы, як след, дзядуля прадаўжаў:

— Панам у Навадворах, пасля смерці бацькі, стаў яго сын, малодшы Рурык. Той, аднак, мала дбаў пра гаспадарку. Амаль пастаянна сядзеў у горадзе. Але аднойчы, як талкавалі людзі, прысніўся яму ракавы сон. Ноччу прышоў да яго бацька, адкрыў грудзі і кажа: «Бачыш, сын ты мой нягодны, гэтую крываваю рану на сэрцы маім? Ты жывеш, гуляеш, аба мне забыў, а я крывёю заліваюся. Калі хочаш майго спакою, пастаў крыж там, дзе зямля прасякнута маёй крывёю і маліся за ўпакой душы маёй грэшнай».

Паслухаў юнак бацькавага загаду і пабудаваў васьм гэта помнік, сто пакутлівых багаслужэнняў заказаў у касцёлах цэлай акругі і сам шчыра маліўся. Аднак усё гэта не супакоіла душы старога Рурыка. Ён яшчэ і зараз штоноч выходзіць з рэчкі, ідзе пад гэты помнік і сядзіць там аж да світання, чакаючы на сваю ахвяру. Гэты Рурык, хай яго трасца, нават пасля смерці застаўся вельмі ласы на жанчыны.

Беласток, 17 верасня 1961 года.



М. Хмieleўскі

Міхась Хмieleўскі працуе ў «Ніве» ад заснавання рэдакцыі.

ПРЫ ЛЕСЕ НА ХУТАРЫ

Стан здароўя партызана Сярожкі быў даволі цяжкі. Асабліва ноччу моцна паліла яго гарачка. У гарачцы ён трысніў. Увесь час сучышаў сваю маці, якая відавочна жаласна плакала, адпраўляючы яго ў салдаты.

Еўфрасінія Фірсовіч падышла да хворага, паправіла коўдру і стала ўменшвацца ў тыя словы, якія вырываўся з вуснаў расчырванелага твару. Але ён нічога не адказваў і далей паўтараў: — Мама, не плач, я вярнуся, не плач!

Гэтыя словы расчулілі Еўфрасінію. Уявіла яна маці гэтага партызана і яе гора ад дзіным сыне. «Мусіць прадчувала яе сэрца», — падумала яна і пайшла паглядзець на сваіх узрослых дзяцей, якія соладка спалі.

Еўфрасініі не спалася. Розныя думкі лезлі ў галаву. «Што будзе, — думала яна, — як хто-небудзь разведае і да нясе немцам, што іх дом з'яўляецца частым прыпынкам для партызан, што яе дзеці разам з мужам з'яўляюцца

партизанскімі сувязнымі, што ў гэтай хаце часта мыецца партызанская бялізна, пяэца для іх хлеб і сухары, што яе дачка, Насця, прыносіць для хворага партызана лякарствы з Бельска, што...»

*

Пачатак вясны быў дажджлівы і халодны. Зінові Фірсовіч у адну такую непагодную раніцу збіраўся араць. Устаў ён самы першы, хутка апрагнуўся і накіраваўся да хлява, каб пакарміць каня. Глядзіць ён і бачыць, што клуня адчынена.

«Няўжо ж я забыўся вечарам зачыніць яе? — думае. — А мо вецер яе адчыніў?»

Падыходзіць бліжэй і чуе ў клуні гутарку. І калі разабраўся, што гэта гутарка вядзецца на рускай мове, смела пайшоў. «Гэта ж яны прыйшлі», — падумаў аб партызанах.

— Добрай раніцы, дзядзя Зінові, — звярнуўся да яго знаёмы партызан. — Д'ябэльская непагодзь ды холад. Грэемся тут. І ведаецца, мусім прабыць у вас да ночы, а ноччу ідзем на заданні.

— Калі ласка, калі ласка, — адказаў гаспадар. — Пакуль што адпачывайце, а я пайду, скажу, хай жанчыны хутэй вараць, — звярнуўся ён да ўзброеных людзей.

Гаспадар разбудзіў жонку і дочак, і ўсе яны спешна прыступілі да работы. Маці і На-

дзя ў пакоі скробаюць бульбу, а Насця пабегла па вадуду калодзежа. І ёй захацелася пайсці і паздаровацца з партызанамі, пабачыць іх, пагаварыць. Яны з сабою заўсёды прыносілі новы, бадзёры настрой, новыя думкі, новыя весткі. Калі глянула ўбок клуні, убачыла партызана, які штосьці ўсхвалявана паказваў і хутка закрыў дзверы. Насця зразумела, што ёсць нешта нядобрае. Глядзіць на дарогу і бачыць, што да іх хаты набліжаецца трох немцаў. Набраўшы вады, убегла ў хату і крыкнула: — Немцы ідуць!

Усе ўстрыможана замітусіліся, хацелі ўцякаць з хаты. Але было позна. Немцы ўжо былі на панадворку. Паглядзелі яны крыху на клуню і ўвайшлі ў хату. Твар у маці і бацькі зусім спалатнеў, калі немцы запыталі на ломанай рускай мове: «А партызаны сюды прыходзяць?»

— Паночкі мае, ніколі яны не прыходзілі да нас. Няма іх у нашай акаліцы, — адказала маці, хоць спалоханым, але пераканаўчым тонам.

Немцы нічога больш не пыталі пра партызан. Сказалі зрабіць ім хутка снеданне, а самі пачалі гутарку з прыгожымі дочкамі Фірсовічаў.

Цяжкія былі гэта мінулы для сям'і Фірсовічаў. Усе баяліся, каб немцы не пайшлі да клуні. Немцы наеліся і пайшлі назад туды, адкуль прыйшлі.

*

Было гэта на Сёмуху. Паводле традыцыі сяляне на Бельшчыне ў гэты дзень клічуць гасцей, або самі гасцямі з'яўляюцца. На хутары ў Фірсовічаў таксама былі гос-



Насця Фірсовіч.

ці. Прыйшлі яны з лесу. На сталае паявіўся пірог, мяса, каўбаса, самагонка. Разам з сям'ёй Фірсовіча кругом стала сядзяць партызаны. Зрабіўшы па чарачцы і закусіўшы добра, хочацца пагаварыць, уголас памарыць, успомніць родны кут, які знаходзіўся ў аднаго за Масквой, у другога ў Варонежы, у трэцяга на Дану і г. д.

— Гэтую чарку я прапаную выпіць, — адазваўся Сярожка, той самы Сярожка, які лячыўся ў гэтай хаце, — за вас, мама, — звярнуўся да Еўфрасініі, — за ўсю вашу сям'ю. Каб не вы, магчыма, што я ўжо ляжаў бы ў зямлі. Дзякую вам за ратунак, за ўсё шчыра вам дзякую.

Калі лёгкі шумок у галаве, каму ж не хочацца заспяваць. Еўфрасінія Фірсовіч мела вельмі прыгожы голас. Яна зацягнула задушэўную песню, і яе падхапілі сын Шымон, і партызаны, і дочки. Прыгожая песня прабівалася праз шыбы вокан, праз сцены і ва ўсе бакі расплылася па панадворку.

*

У гэтай старэнькай хаце, якая заўсёды была гасціннай для партызан, жыве зараз толькі Насця са сваім 76-гадовым бацькам. Яны, як і іншыя земляробы, належна выконваюць перад дзяржавай свае гаспадарскія абавязкі, цікавяцца новымі метадамі апрацоўкі зямлі, чытаюць розныя часопісы, у тым ліку і наш штотыднёвік «Ніву».

Маці Насці ўжо памерла. Сястра Надзя і брат Шымон працуюць у Беластоку на адказных пасадах. Часам са сваімі сем'ямі наведваюць яны родны бацькоўскі кут.

Нядаўна і мне давалося наведаць хату Фірсовічаў, якая знаходзіцца, як называюць у Відаве, на калёніі ў Бабіне. Мы пазнаёміліся і хутка паплыла ў нас гутарка аб мінулых днях.

Аднастайна цікае на сталае гадзіннік. Б'е ў акно золкі вецер. Насця і яе бацька любяць такія дні і такія вечары. Колькі думак у іх з'яўляецца тады. Колькі ўспамінаў пераплывае перад імі.

— Дзе ж вы цяпер, баявыя рускія партызаны? — вырываюцца словы ў Насці. — Дзе ж ты цяпер, Сярожка? Ці спаткаўся са сваёй роднай маці, якую ў гарачцы так сунцяшаў, калі ляжаў у нас хворы ў ложку за печчу?

У гэтай хаце ведаюць, што некаторыя знаёмыя ім партызаны не дачакаліся перамогі над гітлераўцамі. Палажылі яны галовы за тое, каб нам цяпер добра і спакойна жыло-

ся. Каля Цеханоўца загінуў адважны і ўсімі партызанамі паважаны іх таварыш і добры знаёмы Фірсовічам Тамаш Грабяж (такі яго быў псеўданім). Загінула многа і іншых партызан. Спіце ж спакойна, родныя. Вас ніколі не забудуць тыя, хто вольным і шчаслівым гаспадаром ходзіць па зямлі.

Беласток, 13 I. 1963 года.

З ПЕРАЖЫТАГА І ПРЫЗАБЫТАГА

Лета! Шмат у гэтыя дні працы на вёсцы. Толькі паспявай упраўляцца. І таму рана цяпер устаюць сяляне і позна ідуць спаць. На палях ідзе змаганне за хлеб, за іншыя прадукты. Уладзімір Хомік са Слоі на Саколышчыне выцірае з твару пот, а позірк яго накіроўваецца на непадалёкі луг, які завуць Папоўка, і які знаходзіцца на граніцы палёў суседніх вёсак Сукавіч і Піражкоў. Яму прыгадваецца іншае лета. А менавіта 1 жніўня 1935 года. Камуністычная партыя Заходняй Беларусі адзначала гэты дзень, як антываенны, і арганізавала мітынгі. Уладзіміру Хоміку — члену КПЗБ і сакратару ячэйкі камсамола ў Слоі запамніўся назаўсёды гэты мітынг. З палымянаю прамоваю, заклікаючай да барацьбы супроць сацыяльнага і нацыянальнага прыгнёту,

выступаў член крынкаўскага раённага камітэта КПЗБ пад псеўданімам «Барыс». Промова гэта падбадзёрвала, гартавала, натхняла. Пасля заканчэння мітынгу грывнула дружная магутная песня «Смело товарищи в ногу, духом окрепнем в борьбе». Песня неслася над палямі, і здавалася, што відней рабілася ад яе ў позні жнівеньскі вечар.

Уладзімір Хомік не надта любіць кранаць мінулае.

— Што было — тое прайшло ўжо, — крыху падумаўшы, гаворыць ён. — А яшчэ ляпей, калі б многае з гэтага мінулага ніколі не вярнулася, не паўтарылася.

Сваімі скупымі словамі рысуе ён вобраз забастоўкі тэкстыльшчыкаў у Беластоку ў 1933 годзе, калі ён і многія камуністы арганізавалі дапамогу рабочым, калі збіралі збожжа, бульбу і іншыя пра-



Уладзімір Хомік.

дукты і адпраўлялі ў Беласток. Усё гэта рабілася пакрыўму, так, каб не дайшла вестка да паліцыі ў Шудзялаве.

Многае перажытае і прызбытае. Уладзімір Хомік цяжка ўздыхае і пачынае гаварыць аб лясной забастоўцы ў 1934 годзе, аб тым, якія выступалі супроць штрэйкбрэхераў, як арганізавалі паход на Шудзялава, каб вызваліць арыштаваных сваіх сяброў, рэвалюцыянераў. І вось тады палілася рабочая кроў. Шудзялаўскі камендант Антон Марконь загадаў страляць да рабочых. Шэсць чалавек было раненых, а Уладзімір Хомчык з Сурошкава ўмірае ад паліцэйскіх куль.

Ва Уладзіміра Хоміка ажываюць карціны мінулага. Менавіта мінулае — гэта ручай, ад якога ўсё шырэй і шырэй разлівалася і развівалася сённяшняе. За гэтае сённяшняе многа людзей змагалася, многа выцерпела страшныя здзе-

кі ў турмах. Турма не абмінула і Уладзіміра Хоміка. Яго арыштоўваюць за падпольную дзейнасць, засуджваюць на 5 год цяжкага турэмнага зняволення. Не хочацца яму прыгадваць, як усё гэта адбылося. І без таго цяжка робіцца на душы, таму што многа яго знаёмых і сяброў не дачакалі таго, за што змагаліся. Смерць вырвала іх з радоў змагароў за новы справядлівы лад.

У змрочныя дні гітлераўскай акупацыі варвары не аднойчы шукалі яго. Яму ўдалося перахавацца і не трапіць ім у рукі. Не ўдалося таксама бандытам забраць яму жыццё ў 1945 годзе. Уладзіміру проста ўдалося ўцячы, калі бандыты напалі на дом Хомікаў. І вось у гэтую ноч вялікая гора рынулася на яго. Бандыты не знайшлі Уладзіміра дык закатавалі ў хаце яго бацькоў. На вочы яго і цяпер накачваюцца цяжкія, як волава, слёзы, калі ён успамінае 14 лістапада 1945 года, ноч, у якую былі замучаны найдаражэйшыя яго сэрцу людзі — маці і бацька. У хаце тады асталося 6 сірот, якіх ён, як найстарэйшы брат, гадаваў і вывучыў.

Ішоў час. Ён паступова зацягаў глыбокую рану. Заглушыў нясцерпны боль. Уладзімір Хомік працуе пачаткова на гаспадарцы. Потым праз дзве кадэнцыі быў старшынёй грамадскай рады нарадавай у Шудзялаве, а пазней інспек-

тарам пункту збору злomu. Зараз ён зноў працуе на гаспадарцы. Як бачым, нялёгка пражыў ён свае 50 гадоў. Ніколі жыццё яго не песціла сваёй увагай і радасцямі, а вельмі часта ўзвальвала на яго плечы такі цяжар, быццам выпрабоўвала і правярала, колькі вытрымае гэты чалавек, ці не сагнецца. Але Уладзімір Хомік не належыць

да хісткіх людзей, да слабых воляй. Ён і зараз, як радавы партыі, змагаецца за ажыццяўленне яе пастаноў. Ён задаволены тым, што асноўная ідэя, якая кіравала ўсім яго жыццём, стала рэчаіснасцю, што ён унёс свой скромны ўклад дзеля набліжэння справядлівага ладу ў нашай краіне.

Ліпень 1963 год.

ВАМ СУСЕДЗІ

Вам, суседзі, вам, кумочкі,
Беларусы - галубочки,
Пяю з сэрца, падцінайце,
Вы грамадай голас дайце.
Зложым песню цэлым людям.
Выйдзе пекна, стане цудам.
Як свет светам яшчэ стаў,
Такой песні не слухаў:
Восем, дзевяць... і мільён
Грудзей зльецца ў адзін тон,
Дадуць песню, а ў ёй труд,
Доля, жыццё. Ці ж не цуд?
Ад вякоў мы, братцы, спалі,
А тут разам заспявалі.

ЦЁТКА

Я. Чэрнякевіч



Яніна Чэрнякевіч працуе ў «Ніве» ад 19. X. 1959 года.

МАЦІ

Нізкая старэнняя хатка з адным маленькім аконцам схавалася пад саламяную страху, як вывадак пад цёплыя крылы квактухі. Сонца амаль не пранікае праз крошачныя шыбы аконца.

У хаце, на метр ад глінянай падлогі, узвышаюцца палаці — памост са збітых дошак, які замяняе тут ложка.

На саломе, прыкрыты шэрай коўдрай, ляжыць мужчына. Нішто навокал яго не цікавіць. Яго бледныя ад доўгай хваробы пальцы паволі перабіраюць саломінкі.

*

1932 год. У Плюцічах страшэнны знішчальны пажар. Вецер разгуляўся ва ўсю моц, гоніць іскры, гарачыя галавешкі ўсё далей і далей. Ужо гарыць вёска па абодва бакі. Здаецца, ніякая сіла не зможа спыніць агонь. У такі вецер усе людскія намаганні не прыносяць жаданых вынікаў. На саламяныя стрэхі дастаткова адной іскрынка!

Дваццацігадовы хлапец разам з усімі змагаецца з шаленствам агню. Яшчэ хвіліна, і загарыцца яго родная хата, дзе нарадзіўся яго бацька, дзе нарадзіўся і ён сам, правёў сваё дзяцінства. Усё зараз пераўтворацца ў груды попелу і каменя. Раптоўна вецер, нібы змучыўшыся ў гэтым жаклівым танцы агню, спіхае. Паволі змяняецца сіла полымя. Родная хата застаецца.

Але раўнавагу душы хлопцу вярнуць не ўдаецца. Мінае тыдзень, другі. Хлапец адчувае сябе ўсё горш. Бацькі вязуць яго да дактароў у Бельск, Беласток. Лячэнне мала дапамагае. З кожным днём хлапец усё больш слабее, ужо зусім не ўстае з ложка, паступова губляе розум.

*

Прайшло з таго часу 29 гадоў. Хатка зусім асела, маці вельмі пастарэла. Пасля доўгай хваробы памёр бацька, а хлапец мала змяніўся за гэты час. Ад доўгага ляжання абясцілелі ногі, а на спіне вырас горб. Розум не вярнуўся. 50-гадовы мужчына стаў зусім дзіцём. Часам, у хвілі прасвятлення, ён раптам успамінае сяброў дзяцінства, дзядзькоў. Людзі апошніх трох дзесяцігоддзяў для яго не існуюць. 29 год ляжыць на тых самых падацях, 29 год маці падае да пасцелі яму ежу і прыбірае за ім, за 29 год чалавек ні разу не выйшаў за парог старой нізкай і цёмнай хаткі на свежае паветра, не бачыў неба, сонца, вясны.

*

— Як сябе адчуваеце? — звяртаюся да хворага.
— Мгм... мгм...
— Скажы, сыноч, галава баліць, — падказвае маці.
— Галава баліць, — ледзь-ледзь магу разабраць мармытанне хворага.

— Восем год назад захварэў і мой муж, — працягвае свой расказ жанчына, — ветрам яго прадзёмула. Таксама ўвесь час ляжаў, вась тут, разам з сынам. Так да смерці і не выздаравеў. Памёр два месяцы назад. Восем год даглядала за абодвума, восем год глядзела на мукі двух самых родных і блізкіх мне людзей. Лепей бы... — слёзы не даюць ёй гаварыць, плечы сутаргава ўздрыгваюць. Праз хвіліну, трошкі супакойшыся, яна працягвае: — Не бачыла я жыцця... Хаты не паставілі: усе сабраныя грошы пайшлі на лячэнне сына. А потым і муж захварэў... Я ўжо сама зусім аслабла. Ногі цяжка перастаўляць, крыж баліць, і рук не магу падняць, каб з полкі талерку зняць. Пакуль хаджу, даглядаю сына, а потым... — Жанчына зноў не можа стрымаць слёз.

Слухаю гэтае трагічнае апавяданне і задумваюся. Адзінокая 80-гадовая бабулька мае на папачэнні хворага непрытомнага сына. На яе плячах гаспадарка, бо трэба ж мець што есці. А сіл на гаспадаранне няма.

— Зямлі маю шмат, паўчастка, — гаворыць жанчына, — гэта 9 гектараў. З іх каля 3,5 ворнай. Зямля пясчаная, малаўраджайная. Ніхто не хоча гэтай зямлі. У нашай вёсцы ўсе гаспадары маюць шмат зямлі. Але працаваць на ёй няма каму. Маладыя цяпер не хочуць заставацца на гаспадарцы. Пакойны гаспадар запісаў усю зямлю на свайго пляменніка, той адмовіўся ад яе, і зараз працуе ў Беластоку.

Жанчына штогод вымушана шукаць людзей, каб дапамаглі ёй узараць, засеяць, сабраць, вядома, за частку ўраджаю. Але гэта не так лёгка ў яе ўзросце і на яе сілы.

Старэнькая можа толькі марыць аб адпачынку, бо яна вымушана яшчэ змагацца за кавалак хлеба. Адзіны сын не толькі не можа ўтрымліваць яе, але ён сам знаходзіцца на яе руках. Жанчына не хацела б і той зямлі, толькі каб людзі не пакінулі яе сына галодным. Яна нават не думае аб сабе, яе клопат — непрацаздольны, з дзіцячым розумам 50-гадовы сын. Каму будзе патрэбны, апрача маці, гэты чалавек?

У апошні час бабку часта наведваюць дзяўчынкі-гарцэркі. Яны і вады прынясуць, і дроў напілююць, гатовы выканаць любую бабчыну просьбу.

І старыя, шмат пабачыўшыя на сваім вяку, вочы засвецяцца цёплай слязінкай удзячнасці.

май 1961 год.



РОДНАЕ СЛОВА

Магутнае слова, ты, роднае слова!

Са мной ты на яве і ў сне;

Душу мне затрэсла пагудкаю новай,

Ты песень наўчыла мяне.

Бясмертнае слова, ты, роднае слова!

Ты крыўды, няпраўды змагло;

Хоць гналі цябе, накладалі аковы,

Дый дарма: жывеш, як жыло!

ЯНКА КУНАЛА



С. Яновіч

Сакрат Яновіч працуе ў «Ніве» ад заснавання рэдакцыі.



ДЗЯЛЬБА

Верка была цяжарнай і тады збунтавалася.

— Я ў вас усё роўна бы служанка — тое прынясі, туды пайдзі, так зрабі...

Нікодым Лісоўскі, яе муж, маўчаў.

Аляксандр не вытрымаў нараканняў братавой:

— Раз ты служанкаю стала дык бяры па 60 пудоў і выма-
тывай з хаты! — Аляксандр ведаў цану: па столькі плацілі
служанкам знаёмыя гаспадары.

Верка астаўбянела.

Раскошны — малатарнай зарабляе. Што ж яму цяпер зна-
чыць — 60 пудоў! Проста, глупства.

Верка не забудзе дзевяру гэтых слоў. Не забудзе сваіх тых
пасажных тысяч, што скарысталі на куплю малатарні.

У Слоі пляткавалі, зайздросцілі братам. Аж увосень 1950

года ўсміхнуліся суседзі: абмен грошай! У мураванай хаце
Лісоўскіх паніка.

— Казаў табе, халера, каб не трымаць грошай, — пекліўся
Аляксандр і бегаў з кута ў кут. — На бобах засталіся, чэрці
панеслі на хвасце ўсёй заробак!

— Ад цябе нат' залатоўкі не выпрасіш, — крактаў Ніко-
дым. — Пад падушку хаваеш.

За дзвесце тысяч злотых атрымаў усяго каля шасці тысяч
у новай валюце.

— Наеліся, дурню!

Страты трэба адбіць і гэта яднала братоў. Аляксандр усё
малаціў і малаціў дзесьці пад Саколкую. Сезон. Для пэўнасці
плату браў збожжам — па два пудзікі за гадзіну. Нікодым да-
возіў паліва для аграгата і назад забіраў на фурманку цяж-
кія мяшкі з жытам, гнаўся ў Крынкі або ў Саколку на торг.
Прадаваў.

— Не спяшай, — хітрыў Аляксандр. — Пад весну зацэнім
столькі, колькі захочам. Зразумеў?!

Нікодым ішоў араць і абсяваць бацькоўскія загоны. Хтосьці
пасмяяўся, што Аляксандр сілком жаніў яго на старасць, каб
было каму апрацоўваць гаспадарку...

Капітал рос, і калі ў акаліцы загаварылі аб калектывізацыі,
Аляксандр адчуў, што яго інтарэсы не даўгавечныя.

Супраскі кампаніён Прасняк дудукаў:

— Маеш грошы? Купляй пляц у Супраслі і будуй хату,
пакуль не запозна.

Аляксандр ужо ведаў, што значыць спазніцца з грашымі.
Купіў пляц. Зімою, не чакаючы вясны. Летам аказалася, што
падмоклы ён.

— Надулі, сукіны сыны, але няма часу дабівацца праўды.

Нацэліўся на адно: уцячы з вёскі. Падатковыя наказы гмі-
на шле на імя Нікодыма. Ну, і дзякаваць богу.

— Слухай, — кажа Нікодыму Аляксандр. — Давай, пабу-
дзем хату на два канцы. На ўсякі выпадак і табе прыдасца
яна.

Будова не спарылася. Аляксандр прывык камандваць,
прагнаў майстра.

— Рабі сам, раз ты такі разумны! — абураўся вясковы спец.

Нікодым дапамагаў брату і таму, каб той урэшце пераехаў
да Супраслі і даў яму вольную руку на гаспадарцы.

*

Аляксандр ажаніўся неспадзявана, перад летам.

У хату прышла яшчэ адна гаспадыня — Ольга. Яна не ква-
пілася мяняць мураванку на нывыканчаную драўляную хату

ў Супраслі — далёка ад мужыковых і пасажных загонаў. А Верка ўжо восьмы год, як замужам тут. У яе двое дзяцей — Валя і Нінка.

«Вайна нерваў» немінучая. Ні з таго, ні з сяго грахнула чутка, што Ольга нагаварыла Аляксандра, каб прадаў тую хату.

У сераду Нікодым запрог каня, на возе расселася Верка з дзяўчынкамі.

— Куды выбраўся? — азваўся Аляксандр.

— Валя прыхварэла, павязу да знахара.

Нікодым вярнуўся на чацвёрты дзень, увечары, адзін.

— Да Супраслі ўцёк? — шыпеў Аляксандр. — Заб'ю, свочач!

— Я заняў свой канец... — прабаваў тлумачыцца Нікодым.

— Не быць гэтаму!

Паміж Лісоўскімі разгарэлася дзяльба — за пару мяшкоў бульбы, за адзін — другі воз саломы, за карову, авечкі, калыску, калаўротак, дзежку. На Каляды Верка забірала цялушку ад пасажнай каровы, а Аляксандр кінуўся не даваць яе. Схапіў за слончык і біў па руках, спіне, галаве.

— Я цябе накармлю!

Верка засудзіла Аляксандра, а Аляксандр Верку — за пайбой. Лекары лічылі раны на спіне братавой і шчаць дзевяра.

Аляксандр раз'юшаны. Падае ў суд брата Нікодыва за тое, што ён заняў другую хату.

— Супраскім панам захацеў быць!

Нікодым хадзіў у Слою ноччу, да швагра Івана. Прасіў дапамогі, здаў яму ў арэнду сваю часць — 6 гектараў бацькаўшчыны. Выходзіў ад яго над ранам, горбіўся на марозе і распываўся ў цемнаце. Да Супраслі каля 30-ці кіламетраў — праз Равок, Азярок, Сакалду.

З тых пор жыццё братаў лічылася ад суда да суда — ад няўдачы да няўдачы і наадварот. Цяжка спамятаць, колькі адбылося іх? Мо дзевяць, дванаццаць, а мо і пятнаццаць? З'язджалася горба сведкаў па 30—40 асоб. Нікодым трымаецца аднаго адваката, але Аляксандр не любіць кланяцца і па старой прывычцы падганяе свайго мецэнаса.

— Ну, узяў пан грошы, дык глядзі, каб абараніў.

— Пайшлі вы к чорту! — ускіпіў абаронца.

І Аляксандр ідзе шукаць сабе новага адваката.

Праз чатыры гады, здаецца, дабіўся, чаго жадаў, але не зусім: штопраўда, Нікодыва эксмiтавана, аднак прыйшлося сплаціць брату палавіну вартасці хаты — пятнаццаць тысяч злотых.

Каморнік выясняў Нікодыму, што трэба вярнуцца ў Слою, але той замахаў рукамі.

— Не, ніколі!!!

— Зразумейце, вы ж не выйграеце справы, бо ўсе дакументы адносна пляца і хаты аформлены былі на імя Аляксандра...

Знайшоўся прытулак у суседа Кастэцкага. Нікодым упарта не прымаў ад пісьманосца Аляксандравых сілат. Відаць, спадзяваўся адстаяць свае рацыі?... Пошта адсылала грошы ў касу беластоцкага суда.

Аднойчы Кастэцкі гаворыць:

— Купляй мой пляц пры вуліцы Зялёнай 4. Будуйся памалу.

Давялося бегаць у суд за Аляксандравымі грашыма ды заўсёды не хапала там якойсьці фармальнасці, адзінаццаць разоў!

Прайшло роўна паўтара года, калі разжыўся на ўласны... хлёпчык з пустакоў і раскватараваўся ў ім.

— Згнаю, дзеда, — смяецца Аляксандр і гаворыць для Мішкі Утка: — Хочаш, едзь у маю хату да Супраслі, яшчэ заплачу табе за догляд перад зладзеямі...

Утка не схацеў. Паехаў Фёдар Мічэйка з сям'ёю. Плаціў Аляксандру па 50 зл. у месяц.

— Усяго? За такую хату?!

50 злотых варочаліся са Слоі назад — да Супраслі.

— Што яму здаецца!! — гарачыўся Фёдар і не прымаў вярнутых грошай. Пошта адсылала іх у касу алыштынскай дырэкцыі. Вандравалі «пяцьдзiesiąткі» па шляху: Супрасль — Слоя — Супрасль — Алыштын. Мічэйку надабрыдла такое марнатраўства, перастаў плаціць.

Аляксандр заенчыў:

— Пяты год жыве і не плаціць. Прадаю хату!

— Прадавай.

— І прадам!!!

— Не думай, на вуліцу не выкінеш сям'і! Няма такога права.

— Ты, сук...

Дыскусія закончана. Грыміць лаянка.

Аляксандра немагчыма зразумець. Ні то ён прадае хату і страшна пэніцца, каб вярнуць тых «страчаных» пятнаццаць тысяч, што Нікодыму сплаціў. Зноў раптам згаджаецца, каб Мічэйка жыў у ёй і просіць аб сплату «залегласцей», ну, хаця па сто злотых.

Патрэбна яму грошай, многа грошай. Суды і адвакаты не чакаюць. Аляксандр абдумаў новую вайну: як не даць Нікодыму трыццаць тысяч злотых гаспадарскай рэкампенсаты?

— Сам жа згадзіўся перад судом на такую суму, — жаліцца Верка.

Аляксандр разгадаў Нікодываў план.

— Уласнай хаты захацелася яму, валакіце! Засмуроджу ў хлёўчыку...

Справа «трыццаці тысяч» павандравала аж у Варшаву. Аляксандр чым хутчэй збяднеў. Прадаў малатарню, веялку, на шчасце (!) здох конь і г. д.

Летам мінулага года каморнік перадзяліў зямлю.

— Пагадзіцеся, — прасіў братоў.

Аляксандр засоп:

— Пане, датуль будзем судзіцца, пакуль я не заб'ю яго!

Каморнік выцер хустачкаю лоб.

Нікодываў швагер, Іван, мамантальна адрокся ад арэнды.

— Нарабіўся. Выцягнуў сокі і пакінуў аблагамі.

Нікодым стараўся не паказвацца ў Слоі. Яго часць загонаў існуе толькі на судовым плане. Аляксандр арэ і сее па-старому, як бы і не было перадзелу.

*

— Дзяцей мы не маем, тай за багацтвам не гонімся... Гэта Нікодым такі хцівы, не дае спакойна дыхнуць, чыста агаліў нас...

Аляксандр усё гаворыць ды заглядае ў вочы. На развітанне піхнуў мне ў далоню жмут чырвоных сотак. Хабар для рэдактара...

У Беластоку напаткаў я Нікодыва. З ім гаварылася больш па-людску, ён не прабаваў захаборыць мяне.

— Чорт ведае, колькі вывалілі грошай на суды.

Аляксандр мсціцца: зацяўся ды годзе...

Словам: дзяльба.

16. VI. 1963 года.

ІДУЧЫ ВУЛІЦАЮ НАШАЙ ВЁСКИ

Мой сябра не дае дайсці да слова.

— Адсюль паходзіць інжынер, адтуль кіраўнік, адгэтуль афіцэр...

Ідзем вуліцаю беластоцкай вёскі. Якой? Магу адказаць — першай лепшай! Ці то будзе Трасцянка, Аўгустова, ці Баброўнікі. Амаль штодзень прыносіць пісьманосец лісты са штампамі Варшавы, Шчэціна, Вроцлава, Глівіц, Гданьска, адраса-

ваныя да далёкіх Мікуліч. Ёсць такая вёска ў Сяміціцкім павеце.

«Дарагая мама! Хутка пабачымся, прыязджаю ў водпуск»... Кацярына Капчук чакае сына Валодзю з Гданьска (магістра эканоміі). Чыгуначнік Сцяпан Бадавец і кіраўнік пезда Іван Іванавец сустрэліся на панадворку роднай хаты. Яны вяртаюцца! Уважлівы чытач «Трыбуны люду» пэўна часта чытаў артыкулы журналіста Анатоля Рышчука. Аб ім тут ведаюць, бо ж вёска Рагачы, адкуль ён паходзіць — гэта тыя хаты, што відаць за старым вятраком... Жыхар мазавецкай вёскі не раз дыскупаваў з аграномам Мікалаем Габрышуком з Варшаўскай рады нарадавай. Узіраючыся як праз фабрычную браму «Урсуса» выходзіць чарговая змена, зямляк можа аклікнуць: — Віця, пачакай! Гэта будзе Віталі Вішэнка. Міністэрскі інспектар, знаёмычыся з адказнымі працаўнікамі Глівіцкага чыгуначнага вузла, можа пачуць у адказ — Мікалай Такаюк. Прадукцыйныя дасягненні Чарнавескай фабрыкі сельскагаспадарчых машын з'яўляюцца таксама часткай заслуг і Аляксандра Вішэнкі, старшыні мясцовай рады закладовай. Мой новы субяседнік — старшыня ГРН у Мілейчыцах Іван Вішэнка, толькі што вярнуўся з працы. На вуліцы сустракаю інструктара ГП БГКТ Міхася Вішэнку, раднага Сяміціцкай павятовай рады (амаль палова Мікуліч то адны Вішэнкі).

Размаўляем. Хутка запісваю ў бланкот лічбы — мясцовасць налічвае 78 хат (сярэдняя вёска). Дагэтуль выйшлі ў «шырокі свет» 44 асобы, у тым ліку звыш палавіна закончыла сярэдняю або вышэйшую адукацыю...

Насупраць нас ідзе гурба малагодкаў. Яснавалосыя дзяўчынкі і чупурыстыя хлапчукі. Пэўна вучні IV, V, VI класаў... Міне некалькі год, і бацькі многіх з іх будуць з нецярплівацю чакаць пісьма ад сына ці дачкі — ад Веры, Сярожкі ці Тоні з далёкага горада. Будуць ганарыцца сваім дзіцём — інжынерам, лекарам ці настаўніцай...

Пісьманосец прыязджае ў Мікулічы кожны дзень.

22. VII. 1962 года.

ДУБІНА

Дубіна — абшар счарнелых хмызнякоў, здзічэлай травы, хісткай твані. Пакрай прытаіліся вёскі — Чахі Забалотныя, Волька Выганаўская, Паўлінава. Яны прывыклі да такой Ду-

біны, мелі з яе карысць: меншую карысць у дажджлівыя гады і большую — у засуш.

Калі прыехалі меліяратары, людзі казалі: праваляцца са сваімі трактарамі скрозь зямлю, у Амерыку.

Прайшло чатыры гады.

Дубіну пасеклі чорнымі равамі, у якіх цякла каламазная вада. За вячэрай бацька тлумачыў:

— Меліярацыя добрая ў мокрае лета.

Сям'я дзелаўіта заядала бульбу з кіслым малаком і маўчала, як бы думаючы: «А што будзе ў сухое лета?» Дарэчы, гэтае пытанне не наводзіла непакою: на наш век хопіць вады ў Дубіне.

У школе пачаўся сход. Сын прысеў спераду — малады з маладымі; бацька сядзіць ззаду — стары са старымі. У павестцы дня: чаму водная суполка не атрымоўвае штучных угнаенняў?

Людзі злосныя.

— Калі не хацелі, тады давалі!

— Цяпер хочам, але не даюць, — азваўся другі голас.

— Трава перастане расці, — дадаў сын.

Бацька паглядзеў яму ў спіну і ўсміхнуўся, хітравата жмурчы вочы.

Забраў голас аграном.

— Грамадзяне! Чытаем у газетах ды чуем па радыё, што прамысловасць не паспявае за патрэбамі сельскай гаспадаркі... Нашы надзелы штучных угнаенняў кіруем, у першую чаргу, туды, дзе пачынаем меліяраваць, загаспадароўваць сенажаць. Але ёсць надзея, што будучы дадатковыя надзелы, і тады вы атрымаеце сваю долю...

Са звалкі паперы на сталае бяру зграбную папку.

Чытаю: водная суполка «Дубіна» ў Вольцы Выганаўскай, ГРН Грыгораўцы. Плошча 524,56 гектараў. Да суполкі належаць гаспадары Волькі Выганаўскай, Грыгораўцаў, Алекшаў, Паўлінава...

Адзін дакумент мае філасофскі ўступ:

«Дзеля ўздыму сельскагаспадарчай вытворчасці патрэбна стварыць глебе адпаведныя ўмовы». (Кропка).

Пасля ўсведаміў я сабе, што сэнс гэтых слоў, нягледзячы на іх агульнасць, з'яўляецца адназначным. *Датычаць яны праведзенай меліярацыі.*

— Ёсць гаспадары, якія прадаюць цяпер па 20 тон сена, — сказаў хтосьці ў зале.

Дубіна шчогра сплывае свой доўг удзячнасці за вызваленне яе ад балотнага патоку. Сплывае доўг і яшчэ зарабляе на сваё ўтрыманне. За ялоўку заведзеную да пародзістага бугая,

член суполкі мае ільготу ў дастаўках збожжа, якім можна аплаціць — на некалькі год наперад кошты ўтрымання ў належным парадку меліярацыйных равоў.

Бацька з апетытам смакуе яблыка. Сын глядзіць у цёмнае акно, аб чымсьці думае. Магчыма, затрывожыла яго тая паспешлівасць, з якой Дубіна сплывае свой доўг. Сплаціць, і што далей?

Было без пяці мінут палавіна шостай, калі аграном і я дабраліся да станцыі ў Грыгораўцах, дзе затрымліваецца апошні вячэрні поезд з Чаромхі ў Бельск. Не ведаю, чаму я загаварыў аб гнявой жыжцы і кампосце. Я расказаў аб гэтым і нечакана пачуўся ў ролі павятовага Калумба.

Я загаварыў:

— Праз зіму гаспадары могуць назапасіць кампосту і жыжкі столькі, каб на весну ўгнаіць сенажаці не аглядаючыся на дадатковыя надзелы штучных угнаенняў...

У цёмнаце не было відаць твару агранома, які нецярплівым голасам абарваў мяне:

— Нічога не выйдзе з таго.

Хвіліну маўчалі. Здавалася мне, што счоўп я якуюсьці непрабачальную наіўнасць у прысутнасці спецыяліста, які раз улепіць мне двойку бы недавучанаму вучню.

Аграном першы парушыў нялоўкае маўчанне:

— Думаеце, калі б і назапасілі ўгнаенняў для сенажацяў — трава палепшае? Усё панясуць на поле, а трава, як расла так і будзе расці — штораз горшая...

І махнуў рукою.

22. XI. 1964 года.

Чытачы, пішыце ў «НІВУ»!

Кожны з вас можа быць

карэспандэнтам «НІВЫ»

АБ «НИВА» ПІСАЛІ

«Звязда». 20 мая 1956 года.

«...З першых нумараў «Ніва» набыла шырокую папулярнасць сярод беларускага насельніцтва, якое жыве на тэрыторыі народнай Польшчы.

Штотыднёвік адлюстроўвае на сваіх старонках вялікую стваральную працу польскага народа, паказвае, які ўдзел прымае беларускае насельніцтва ў будаўніцтве новага, сацыялістычнага жыцця. Аб гэтым друкуецца шмат разнастайных матэрыялаў — нарысаў, замалёвак, карэспандэнцый...

...«Ніва» ў кожным нумары знаёміць сваіх чытачоў з жыццём Савецкай Беларусі, расказвае аб творчай працы беларускага народа, росце яго культуры...

...Беларускае грамадска-культурнае таварыства і яго друкаваны арган «Ніва» выконваюць пачэсную ролю ва ўмацаванні дружбы і супрацоўніцтва паміж народамі, у будаўніцтве новага, сацыялістычнага жыцця ў народнай Польшчы.

«Советская Белоруссия». 12. VIII. 1956 года.

В середине марта в редакцию пришел пакет, в котором находилась газета непривычного объема и своеобразного технического оформления — 8 страниц, печать в два цвета, журнальная верстка, огромное фото на первой странице...

В братской Польше, в ее восточных районах, родилась газета на белорусском языке — «Нива». Она является еженедельником Белорусской общественно-культурной организации, созданной на Белоссточчине в феврале этого года. Организация ставит своей задачей содействовать активизации усилий белорусского населения по строительству социализма в Польше, развивать белорусскую культуру, популяризировать и распространять традиции совместной борьбы белорус-

ских и польских трудящихся и расширять их культурные взаимосвязи, бороться за мир и дружбу между народами.

Большую работу проделала за пять месяцев «Нива» по решению этих благородных задач.

...Газета «Нива» выступает активным борцом за высокие урожаи, за быстрое развитие всех отраслей сельского хозяйства.

...К чести газеты, она выступает как воинствующий орган здоровой партийной критики, помогающей выкорчевывать тяжелое наследие буржуазного строя в сознании людей и в стиле работы государственного аппарата.

...«Нива» — инициативная газета. Она смело ставит вопросы развития производительных сил воеводства, подъема культурного уровня его населения.

...Весьма интересное явление в еженедельнике представляют очерки о людях.

...Читатель В. Корней, проводший отпуск у нас, в колхозе «Первомай», в своем письме, которое было опубликовано на страницах первого номера газеты, просит редакцию: «Хотим, чтобы в еженедельнике «Нива» печатались вести о жизни наших братьев белоруссов в БССР... Газета свято выполняет волю своих читателей. Пристально следит она за всем, что происходит в Советской Белоруссии... Из газеты можно узнать, что она завязала переписку с трудящимися Волковыска, установила связь с Гродненским литобъединением. «Нива» охотно даёт слово людям, побывавшим в Советской стране...

...Огромной важностью политическую задачу решает газета, публикуя материалы о боевой солидарности трудящихся Белоруссии и Польши в революционном прошлом.

...В международных вопросах «Нива» занимает позицию, содействующую укреплению мира, дружбы и взаимопонимания между народами.

...Газета «Нива» с энтузиазмом трудится над тем, чтобы культурный уровень белорусского населения неуклонно поднимался. Она отводит много места вопросам сельской клубной работы, естественно-научной пропаганде, постановке художественной самодеятельности и народному творчеству.

Во всех публикациях, посвященных народному творчеству белоруссов, чувствуется острая заинтересованность газеты в бережном сохранении каждой крупинки мудрости оставленной в устной традиции гением народа.

...«Нива» горячо ратует за всемирное развитие национальных институтов культуры, за расцвет белорусской литературы. «Нива» внимательно следит за всеми литературными да-

тами. Она проявляет хороший вкус, публикуя на своих страницах поэтические произведения М. Горького, М. Исаковского, А. Твардовского, М. Танка, П. Панченки, рассказы Ф. Багушевича и Я. Брыля. Помимо всего прочего имеет тот положительный результат, что она становится для населения школой литературного языка.

Один из читателей «Нивы» в начале ее выхода писал в редакцию: «Пусть еженедельник не пичкает читателя формулами и дефинициями, пусть не старается быть пророком. Пусть статьи будут оригинальные, живые, чтобы воздействовала не только на сознание, но и на воображение и чувства». Надо сказать, что газета остается верной этому положению.

...«Красива наша белостоцкая земля» — пишет газета «Нива». — Вдоль и поперек покрыта она зелеными полями, кудрявыми лесами. На юге ее расстилается дремучая Беловежская пушча, на севере Августовские боры.

Тихо спят в низинах прозрачные голубые озера, обрамленные темнозеленым венком лесов, тянутся к небу янтарные сосны...

Чудесная наша сторонка».

Мы, советские люди, рады, что слово, овеянное поэзией этой земли, вышло на широкую ниву и рядом со словом польским питает сознание народа, строящего социализм.

«Літаратура і мастацтва»

Творчая дружба і шчырыя сяброўскія сувязі звязалі выдатнага беларускага паэта — дэмакрата Францішка Багушэвіча з вядомай польскай пісьменніцай Элізай Ажэшкай.

...Аднак да апошняга часу наша літаратуразнаўства мела даволі скупыя і абрывістыя звесткі пра дружбу прадстаўнікоў двух братніх славянскіх народаў.

...Гэтыя звесткі нядаўна напоўніліся новымі матэрыяламі, якія шырэй раскрываюць сяброўскія ўзаемасувязі Ф. Багушэвіча з польскай пісьменніцай, удакладняюць некаторыя моманты яго біяграфіі і творчасці, знаёмяць з невядомымі творами аўтара «Дудкі беларускай». Беластоцкая беларуская газета «Ніва» 1 студзеня 1961 года змясціла цікавы артыкул Эдмунда Янкоўскага «Эліза Ажэшка і Францішак Багушэвіч». Э. Янкоўскі — складальнік і каментатар новага выдання пісем польскай пісьменніцы — прыводзіць у сваім артыкуле шмат дагэтуль невядомых фактаў, якія датычаць дружбы беларускага паэта з Э. Ажэшкай.

...Артыкул Э. Янкоўскага, апублікаваны на старонках «Ні-

вы», узбагачае нашы звесткі пра жыццё і літаратурна-грамадскую дзейнасць Ф. Багушэвіча, знаёміць з матэрыяламі, якія сведчаць пра даўнія і слаўныя традыцыі беларуска-польскіх літаратурных узаемасувязей.

СЦЯПАН АЛЕКСАНДРОВІЧ

21. II. 1961 год.

*

Нядаўна ў беларускай газеце «Ніва», якая выходзіць у Беластоку, быў змешчаны цікавы артыкул Мацея Канапацкага «Пісьмы Лучыны». М. Канапацкаму ўдалося выявіць у рукапісным аддзеле Нацыянальнай бібліятэкі ў Варшаве 12 пісьмаў беларускага паэта.

...Пажадана, каб гэтыя пісьмы поўнасьцю былі апублікаваны ў хуткім часе ў беларускім друку. Яны ў значнай ступені ўзбагацяць нашы веды аб жыцці і творчасці таленавітага прадстаўніка беларускай літаратуры другой паловы XIX стагоддзя.

М. БАЗАРЭВІЧ

6. IV. 1962 год.

*

Беларуска-польскаму пісьменніку Арцёму Вярызе-Дарэўскаму ў гісторыі нашай літаратуры не шанцуе. Недзе загінулі ўсе яго беларускія творы.

...Праўда, кожны год прыносіць новыя адкрыцці. Нядаўна ў беластоцкай «Ніве» М. Канапацкі ўслед за часопісам «Рух музычны» (№ 49 за 1859 г.) апублікаваў вельмі цікавы ўрывац з беларускай оперы Вярыгі-Дарэўскага «Грэх 4-ры гнеў» (значыць, «Грэх» і «Гнеў» — адзін і той жа твор).

А. МАЛЬДЗІС

(№ 100) 1963 год.

„GŁOS KOSZALIŃSKI”

...Po przeczytaniu kilkunastu numerów „Niwy” można śmiało stwierdzić, że zespół redakcyjny realizuje coraz lepiej swoje ambitne zamierzenia. Na przestrzeni zaledwie pięciu miesięcy obserwujemy np. rozwój reportażu od „odświeżenie” lukrowanych obrazków do reportaży ukazujących istotne konflikty życia współczesnego Białostocczyzny.

...W odróżnieniu od wielu innych pism, które zalewa wprost „powódź” krytycznych notatek, „Niwa” zamieszcza sporo informacji o osiągnięciach

wsí białostockiej. Nie znaczy to, że rezygnuje z korespondencji i listów, piętnujących braki i wypaczenia.

Wiele uwagi poświęca pismo historii i tradycjom wyzwoleniczym ludu białoruskiego, jego literaturze i sztuce. Wydobywa z mroków zapomnienia postacie społeczników i pisarzy białoruskich, informuje o zdobyczach współczesnego piśmiennictwa białoruskiego w Związku Radzieckim. W każdym numerze znajdujemy pełne prostego piękna wiersze Maksyma Tanka, Jakuba Kołasa czy Kondrata Kropiwy i poetów najmłodszego pokolenia Białorusi. „Niwa” drukuje również debiuty poetyckie samorodnych talentów Białostoczczyny.

Dorobek „Niwy” stanowią artykuły poświęcone wspólnym walkom Polaków i Białorusinów w latach sanacji.

...Ciekawie została pomyślana graficzna oprawa pisma.

...„Niwa” z miejsca zdobyła czytelników, łaknących pisanego słowa w ojczywym języku. Mam wrażenie, że i w naszym województwie znajdują się prenumeratorzy tego niewątpliwie dobrze redagowanego tygodnika.

28—29.VII.1956 r.

ALICJA ZATRUBÓWNA

„TRYBUNA LUDU”

Ostatnio odnalezione zostały w rodzinie krawca ob. Płatka w Skarżysku Kamiennym (woj. kieleckie) korespondencje i rękopisy pisarki Jadwigi Łuszczewskiej-Deotymy, autorki popularnej powieści „Panieka z okienka”.

Materiały te uważano dotychczas za zaginione. Odnalazł je dziennikarz z białoruskiego tygodnika „Niwa”, wydawanego w Białymstoku, mgr Maciej Konopacki...

23.XII.1962r.

„ŁĄCZNOŚĆ”

Muzeum Poczty i Telekomunikacji we Wrocławiu pozyskało ostatnio niezwykle cenne dokumenty, dotyczące poczty w Buksztelu, położonym przy dawnym trakcie petersburskim, między Białymstokiem a Sokółką. Dokumenty te pochodzące z lat 1796—1863 znalezione zostały przez redakcję czasopisma „Niwa”, wydawanego przez Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne w Białymstoku...

13.XII.1964 r.

„ZIEMIA I MORZE” (Szczecin)

Nieco sceptycznie nastawiona brałam do ręki zszywkę „Niwy”. Wydawca — Białoruskie Towarzystwo Społeczno-Kulturalne. Owszem, ciekawe, ale od razu mimowolna asocjacja pisemek z okresu dwudziestolecia wydawa-

nych „dla ludu” przez różne „towarzystwa”. Oczywiście zdawałam sobie sprawę z różnic dzielących te dwa zjawiska, lecz co uprzedzenie, to uprzedzenie.

Jednak już pierwsze numery — dotychczas ukazało się ich dwadzieścia sześć — zaostrzyły moją uwagę.

...Ważnym osiągnięciem było moim zdaniem to, że pismo nie zagubiło się w ogólnikach i bezpłodnej autoreklamacji (a były takie tendencje!) lecz potrafiło mniej lub więcej udolnie nawiązać do problemów, które powinny być zająć i zająć centralne miejsce w periodyku. Mam na myśli tematykę wiejską i sprawy związane z upowszechnieniem białoruskim tradycji kulturalnych.

Jeśli chodzi o pierwsze zagadnienie trzeba przyznać, że „Niwa” od razu nawiązała mocny kontakt z terenem uwidoczniający się w listach czytelników, zajmujących prawie całą kolumnę w każdym numerze od pierwszego począwszy. Szeregiem reportaży redakcja poruszyła bardzo obecnie palący problem, a mianowicie problem stworzenia młodzieży wiejskiej takich możliwości rozwoju, jakie zapobiegałyby w przyszłości katastrofalnemu już w wielu miejscowościach wyludnieniu wsi. I co jest najbardziej wartościowe nie ograniczono się do zwykłego zasygnalizowania danego zjawiska, ale wysunięto konkretne i rzeczowe wnioski i propozycje.

W ogóle im dalej posuwałam się w lekturze, tym więcej rósł mój szacunek do ambitnego kolektywu redakcyjnego. Gdy początkowo przeważały pozycje słabe, w których wszystko odgrywało się na płaszczyźnie „niegdyś” i „teraz” — to „niegdyś” zawsze czarne jak sadze z czeluści piekieł, zaś „teraz” śliczne i pachnące jak polna różyczka — to w dalszych numerach coraz częściej spotyka się bezpośrednią ingerencję w życie swego terenu.

...Z numeru na numer gazeta nabiera agresywności, tematyka rozszerza się, pióra stają się ostrzejsze.

Na szczególną uwagę zasługują próby przypomnienia bogatej i pięknej przeszłości ziemi białostockiej. Mają temu służyć działy „Z historii ludu białoruskiego” oraz „Z rewolucyjnych tradycji Białostoczczyny” popularyzujące wspólny wysiłek polskich i białoruskich chłopów i robotników w walce o społeczne wyzwolenie.

Oprócz tego wydaje się rzeczą b. dobrą wprowadzenie stosunkowo dużej ilości artykułów popularno-naukowych z różnych dziedzin, co niewątpliwie wpłynie dodatnio na poczytność tygodnika.

...Teraz kiedy zszywka się kończy, wypada mi odżegnać się od różnych brzydkich skojarzeń prześladowających mnie na początku i przyznać, że „Niwa” stała się pismem potrzebnym i zajmującym. Pismem, które włączyło się w ogólny nurt naszego życia, nie tracąc swoich cech specyficznych.

15.IX.1956 r.

KATARZYNA SUCHODOLSKA



Пры рэдакцыі «Ніва» дзейнічае праўны пункт. Парады дае актывіст БГКТ юрыст Вінцук Склубоўскі. На здымку Вінцук Склубоўскі дае парады.

ПРАЎНЫЯ ПАРАДЫ

Новае праўнае рэгуляванне абаротам зямлі і набыванне спадчыны сялянскай гаспадаркі

Ад 1-га студзеня 1965 года абавязвае ў народнай Попышчы новы цывільны кодэкс, які прадбачвае сур'ёзныя змены ў дагэтуль абавязваючым праве, якое рэгулюе абаротам зямлі і набываннем спадчыны на вёсцы. Мэтай новых законаў з'яўляецца аграічэнне падзелаў сялянскіх гаспадарак, прадукі-ленне іх ад раздраблення і ахова перад празмернымі сплатамі асобам не звязаным з земляробствам.

Аграічэнні адносяцца толькі да сялянскіх гаспадарак. Праз гаспадарку трэба разумець зямельныя ўгоддзі: ворныя землі, сенажаці, пашы, лясныя дзялянкі, з будынкамі, жывым і мёртвым інвентаром.

Набыванне сялянскай гаспадаркі праз куплю, замену, дараванне

Купіць зямельныя ўгоддзі можа толькі той, хто мае кваліфікацыю да вядзення гаспадаркі. Той, хто ніколі не працаваў на гаспадарцы і не мае скончанай сельскагаспадарчай школы, можа купіць толькі будаўляную дзялянку.

Плошча купленай зямлі не можа перавышаць 15 гектараў, а калі гаспадарка мае характар гадаўляны — 20 гектараў. Калі б плошча набытай зямлі разам з той зямлёю, якую мае набыўца, перавышала гэтыя нормы, дзяржава можа забраць гэтую надвыжку без кампенсацыі.

Прадаць можна толькі цэлую гаспадарку, а не частку толькі тады, калі пасля яе аддзялення застаецца ў гаспадара не менш чымсьці 8 гектараў.

Калі частка, якую аддзяляецца ад гаспадаркі, мае 8 або больш гектараў, яе можа купіць кожны, хто мае кваліфікацыі да вядзення сельскай гаспадаркі. Калі ж яна меншая ад 8 гектараў, то купіць яе можа толькі той, хто сам мае не менш як 4 гектары.

Гаспадарку да 4 гектараў можна прадаць у цэласці, а таксама і частку. Аграічэнняў падзелу гэтай гаспадаркі закон не прадбачыць. Аднак у кожным выпадку купіць частку гэткай гаспадаркі можа толькі той, хто сам мае найменш 4 гектары.

Той, хто мае менш 8 гектараў можа прадаць частку сваёй гаспадаркі толькі таму, хто мае сваёй зямлі звыш 4 га і пасля куплі меў бы разам з купленай часткай больш зямлі ад таго, хто зямлю прадае. Прыклад: Антон мае 7 га, а Павел 6 га. Антон можа прадаць для Паўла 2 га, бо пасля гэтага Павел будзе мець 8 га, гэта больш чымсьці меў перад продажами Антон. Але не можа яму прадаць 1 га, бо пасля продажу Павел меў бы 7 га, гэта значыць столькі, колькі перад гэтым меў Антон. Затое Павел можа прадаць Антону кожную колькасць са сваіх шасці гектараў.

Ніякія аграічэнні не адносяцца да дзяржавы, якая можа купіць частку кожнай гаспадаркі. Няма таксама аграічэнняў

у адносінах да падзелу гаспадарак абшарам да 0,5 га. Частку гэтай гаспадаркі можа купіць і той, хто не мае сваёй гаспадаркі, або мае гаспадарку меншую ад 4 га.

Падзел спадчыны

Да раздраблення сялянскіх гаспадарак найбольш прычыняюцца падзелы спадчыны.

Паводле новага цывільнага кодэксу ў першую чаргу атрымоўваюць спадчыну, калі няма завяшчання, дзеці і муж або жонка. Усе яны атрымоўваюць па роўнай частцы, з тым аднак, што частка мужа або жонкі не можа быць меншай чымсці 1/4 усёй спадчыны.

Частку, якая прыпала б дзіцяці, якое памерла перад завяшчальнікам дзеліцца пароўну паміж яго дзіцямі.

Калі б не было дзяцей і ўнукаў, спадчына дзеліцца паміж мужам або жонкай, якія атрымоўваюць палавіну спадчыны, бацькам і маці памершага, якія атрымоўваюць 1/4 частку і братамі і сёстрамі, якім прыпадае таксама 1/4 спадчыны. Калі адзін з бацькоў не жыве, яго частка дзеліцца напалавіну паміж другім з бацькоў, братамі і сёстрамі. Калі няма братоў і сясцёр, то ўся спадчына, якая б прыпала мужу або жонцы — прыдзяляецца бацькам. І наадварот, калі няма бацькоў, то іх частка прыпадае братам і сёстрам. Калі ж няма бацькоў, братоў і сёстраў, усю спадчыну атрымоўвае муж або жонка. Калі б не было мужа або жонкі, то спадчына прыпадае дзяржаве.

Прыведзены вышэй парадак спадчыны абавязвае, калі завяшчальнік памёр пасля 1 студзеня 1965 года. Калі ён памёр перад 1. I. 1965 г., то прымяняюцца законы, якія абавязвалі ў час смерці.

Паводле спадчыннага права, якое абавязвала перад 1. I. 1965 годам муж або жонка атрымоўвалі 1/4 частку спадчыны, калі завяшчальнік пакінуў дзяцей або ўнукаў, і 1/2, калі паследаваў разам з бацькамі, братамі і сёстрамі памершага. І гэтакі парадак абавязвае ў выпадку, калі завяшчальнік памёр перад 1. I. 1965 годам, але не раней чымсці 1. I. 1947 г. Перад гэтай апошняй датай абавязваў яшчэ іншы парадак спадчыны.

Зразумела, што завяшчальнік можа распарадзіцца сваёй маёмасцю інакш, і тады спадчына прыпадае таму, каго ўстанавіў спадчыннікам у завяшчанні завяшчальнік.

Спадчына сялянскай гаспадаркі

Не кожны, каму прыслугоўвае спадчына паводле апісанага вышэй спадчыннага права, можа атрымаць у спадчыну сялян-

скую гаспадарку. Цывільны кодэкс прадбачыць новы парадак атрымання ў спадчыну сялянскай гаспадаркі.

Вышэй было сказана, што ў першую чаргу пакліканы да спадчыны дзеці, унукі, муж або жонка завяшчальніка. Сярод гэтых асоб сялянскую гаспадарку могуць браць у спадчыну толькі тыя, якія:

1. Непасрэдна перад смерцю завяшчальніка працавалі на гэтай гаспадарцы бесперапынна прынамсі год. За перарывы не лічыцца:
- а) час выконвання абавязкаў з выбараў у дзяржаўныя, кааператыўныя або грамадскія органы;
- б) сезонную працу ў іншых гаспадарках, або прадпрыемствах, якія сведчаць услугі для сялянскай гаспадаркі;
- в) працуюць на гаспадарцы, а адначасова займаюцца рамяством;
- г) пакліканы да ваеннай службы, хворыя, або з іншых незалежных ад іх прычын не могуць працаваць на гаспадарцы.

2. Атрымаюць у спадчыну гаспадарку тыя, якія ў момант смерці завяшчальніка з'яўляюцца членамі сельскага вытворчага кааператыву або працуюць на гаспадарцы гэтага кааператыву.

3. У момант смерці завяшчальніка самастойна працавалі на гэтай гаспадарцы, або на гаспадарцы сваіх бацькоў, мужа або жонкі, або іх бацькоў.

Толькі тады, калі б ніводзін са спадчыннікаў не адказваў гэтым вымогам — той са спадчыннікаў пасярод іх, які мае кваліфікацыі да вядзення гаспадаркі на працягу шасці месяцаў ад смерці завяшчальніка можа заявіць у судзе або ў натарыуса гатоўнасць вядзення гаспадаркі. Гэтаму спадчынніку можа быць прыдзелена гаспадарка, але калі б у выніку падзелу спадчыны яна была прыдзелена іншаму — сплаты ён не атрымоўвае.

Спадчыннікамі сялянскай гаспадаркі з'яўляюцца таксама непаўналетнія і тыя, якія вучацца ў агульных або прафесійных школах. Аднак пры падзеле спадчыны сялянская гаспадарка можа ім быць прызнана толькі тады, калі няма іншых спадчыннікаў, якія маюць права атрымаць гаспадарку. Пры падзеле спадчыны непаўналетнім прызнаецца сплаты на час навукі. Гэтакія сплаты не могуць быць вышэйшыя чымсці 450 зл. у месяц для тых, якія вучацца ў сярэдніх школах і 550 злотых для студэнтаў.

Да спадчыны сялянскай гаспадаркі маюць таксама права тыя, якія ў момант смерці завяшчальніка трывала няздольныя

да працы. Гэткімі ліцаца інваліды I і II групы — у разуменні закону аб пенсіях працаўнікам і іх сем'ям ад 24 чэрвеня 1954 года. Яны не могуць атрымаць гаспадаркі нават тады, калі няма іншых спадчыннікаў, якія маюць права атрымаць гаспадарку. У такім выпадку дзяржава атрымоўвае гаспадарку і вызначае ім сплаты, якія адпавядаюць іх удзелам.

Спадчыннікамі сялянскай гаспадаркі могуць быць бацькі завяшчальніка ў выпадку, калі няма дзяцей, унукаў, мужа або жонкі, або калі спасярод іх няма ніводнага такога, які мог бы атрымаць спадчыну, гэта значыць асоб, аб якіх вышэй была мова. У адносінах да іх патрабаванняў толькі, каб мелі кваліфікацыі да вядзення гаспадаркі. Калі яны няздольныя да працы, то права да сплат.

У адносінах да братоў і сясцёр, калі яны маюць права да спадчыны, абавязваюць тыя самыя ўмовы як да сыноў і ўнукаў. Тым спасярод іх, якія прынамсі год перад смерцю завяшчальніка жылі і працавалі на гаспадарцы, прыслугоўвае права да спадчыны, нават тады, калі ёсць дзеці і ўнукі завяшчальніка або яго муж — (жонка) — якія з прычыны адсутнасці вышэй апісаных кваліфікацый не могуць атрымаць спадчыны.

З вышэй сказанага вынікае, што ўсе тыя, хто не мае сувязі з сялянскай гаспадаркай, напрыклад, жывуць і працуюць у горадзе, або нават жывуць на вёсцы, але працуюць не на сельскай гаспадарцы — не могуць мець права на спадчыну сялянскай гаспадаркі. Калі б завяшчальнік меў нават некалькі сыноў і дочак, якія ўсе б працавалі па-за земляробствам — у промысле, або дзяржаўных і кааператывных установах і г. д., гаспадарка пераходзіць на ўласнасць дзяржавы.

Таксама завяшчаннем не можна перадаць гаспадарку асобам, якія паводле вышэй апісаных правіл не маюць права атрымаць гаспадарку. Таксама спадчыннік не можа прадаць спадчыны або свайго ўдзелу ў ёй асобам, якія не маюць кваліфікацыі да вядзення гаспадаркі.

Падзел гаспадаркі

Спадчынная гаспадарка можа быць падзелена толькі тады, калі б у выніку падзелу паўсталі гаспадаркі не меншых абшарам чымсьці 8 га. Калі гэткі падзел немагчымы, гаспадарку атрымоўвае адзін са спадчыннікаў, якія маюць права да наслідства гаспадаркі.

Калі сярод спадчыннікаў няма згоды, хто мае атрымаць гаспадарку, суд прыдзяляе яе ў наступнай паслядоўнасці:

1. Хто перад падзелам спадчыны працаваў на гаспадарцы найменш адзін год.

2. Хто ў момант падзелу спадчыны з'яўляецца членам сялянскага вытворчага кааператыву або працуе на гаспадарцы гэтага кааператыву.

3. Хто ў момант падзелу спадчыны вядзе іншую гаспадарку, або працуе на гаспадарцы бацькоў, жонкі або яе бацькоў.

4. Хто ў час падзелу спадчыны мае кваліфікацыі да вядзення сялянскай гаспадаркі і на працягу 6 месяцаў ад смерці завяшчальніка зладжываў перад судом або натарыусам заяву аб гатоўнасці вясці гаспадарку.

5. Хто ў час падзелу спадчыны з'яўляецца непаўналетнім, вучыцца прафесіі або ходзіць у школу. Спасярод тых, хто мае аднолькавыя правы да атрымання гаспадаркі, суд выбірае таго, хто дае найлепшую гарантыю, што будзе найлепш вясці гаспадарку.

Усе іншыя спадчыннікі, якія маюць права да спадчыны сялянскай гаспадаркі, атрымоўваюць сплаты, пры гэтым поўную сплату атрымоўваюць толькі тыя, хто:

1. Непасрэдна перад падзелам спадчыны працавалі бесперапынна на спадчыннай гаспадарцы найменш год.

2. Непасрэдна перад падзелам спадчыны былі членамі сялянскага вытворчага кааператыву, або працавалі на яго гаспадарцы.

3. Спадчыннікі трывала няздольныя да працы.

Сплаты іншым спадчыннікам, якія маюць права на спадчыну гаспадаркі, могуць быць абніжаны. Пры гэтым бярэцца пад увагу стан і вялікасць спадчыннай гаспадаркі і маёмасную сітуацыю абавязанага да сплат і ўпраўленага да атрымання сплаты.

Вышэй апісаныя агранічэнні спадчыны і падзелу сялянскай гаспадаркі абавязваюць ва ўсіх выпадках, калі завяшчальнік памёр пасля 5 ліпеня 1963 года г. з.н. пасля даты, ад якой абавязваў закон ад 29 чэрвеня 1963 г. аб агранічэнні падзелу сялянскіх гаспадарак.

У практыцы будзем сустракаць яшчэ доўгі час справы падзелу спадчыны, якая ўзнікла перад гэтай датай. У такіх выпадках абавязваюць наступныя правілы:

Права спадчынніка захоўваюць усе тыя, хто перад 5 ліпенем 1963 г. стаўся фактычным гаспадаром часткі або цэлай спадчыны. Усе іншыя захоўваюць гэтыя правы толькі тады, калі 5 ліпеня 1963 года мелі яны здольнасць быць спадчын-

нікам сялянскай гаспадаркі, прадбачанай цывільным кодэксам і апісанай вышэй.

Пры падзеле спадчынай гаспадаркі тыя, хто валодае ўчасткамі могуць іх захаваць, хоць бы яны былі меншыя ад 8 га, а гаспадарка была раздробленая на невялікія ўчасткі. Кодэкс не дазваляе адбіраць без слухнай прычыны тое, з чаго хтосьці ўжо карыстаецца.

Тыя, хто не дастаў гаспадаркі або яе часткі — атрымліваюць сплаты. Поўная сплата належыцца тым, хто непасрэдна перад 5 ліпенем 1963 г. працаваў на гаспадарцы прынамсі адзін год, быў у гэтым дню трывала няздольным да працы, або перад гэтай датай набыў удзел у спадчыне. Іншым спадчынікам сплаты могуць быць абніжаны.

Падзелы спадчыны праведзеныя перад 5 ліпенем 1963 годам застаюцца важнымі з тым, што калі хто меў прысуджаныя сплаты, а паводле новага права спадчына сялянскай гаспадаркі яму не прыслугоўвае, сплаты яму не належацца.

В. СКЛУБОЎСКИ

»НІВА«

— ваш

найлепшы

прыяцель.

Чытайце »НІВУ«!

ПЕСНІ

ВІКТАР ШВЕД

РОДНАЯ МОВА

Мова ты родная, мова прыгожая,
Як жа цябе не кахаць, не любіць!
Ты пратрывала атакі варожыя,
Цябе не здолеў ніхто пакарыць.

Ты пад страхою знайшла саламяную
Прытулак ад цяжкай навалы, нягод.
Цябе, мова, носіць з вялікай пашанаю
У сэрцы сваім беларускі народ.

Паднятая сілай Купалы і Коласа
Змагла ўсе правы свае адстаяць.
Змагла ты дайсці да магутнага голасу
І месца пачэснае ў свеце заняць.

Калі нехта скажа — ёсць мовы мілейшыя,
Яму адказаць я заўсёды гатоў:
Найпрыгажэйшая, найдаражэйшая
Мне мова прадзедаў — мова бацькоў.

ОЙ, У ПОЛІ ПАД РАКІТАЙ

Ой, у полі, полі пад ракітай,
Дзе клубіцца па начам туман.
Там ляжыць сырой зямлёй зарыты,
Малады, чырвоны партызан.

Я сама героя правадзіла
У шлях далёкі, дзе вайна гула.
Шаблю вострую яму дарыла,
Варанога коніка вяла.

Паў ён паміж травамі густымі,
Паў ён куляй скошаны ў баю.
За Саветы, за сваю радзіму
Ён злажыў галованьку сваю.

Ой, у полі, полі пад ракітай,
Дзе клубіцца па начам туман.
Там ляжыць сырой зямлёй зарыты,
Малады, чырвоны партызан.

ДЗЯЎЧЫНЕНЬКА, ШУМІЦЬ ГАЙ

| | |
|---------------------------------------|----------|
| Дзяўчыненька, шуміць гай, | (2 разы) |
| Каго верна любіш, не забывай | (2) |
| Няхай шуміць, хай гудзе | (2) |
| Ды хто верна любіць — той сам прыдзе. | (2) |
| «Дзяўчыненька адчыні, | (2) |
| Хаця ж маё сэрца развесялі». | (2) |
| «Ой, не буду адчыняць | (2) |
| Бо захочаш ночаньку начаваць». | (2) |
| «Ой, не буду, не буду, | (2) |
| Толькі ўзыйдзе месячык, як пайду». | (2) |
| Мы сядзелі да зары, | (2) |
| Пакуль стала відненька на двары. | (2) |
| Зышоў месяц і зара, | (2) |
| Аставайся, мілая, здарава. | (2) |

ШТО ЗА МЕСЯЦ

Што за месяц, што за ясны,
Уночы свеціць, а ўдзень не.
Што за міленькі дружочак,
Калі прыдзе, калі не.

Усе людзі, людзі кажуць,
Усе людзі гавараць:
«Сорам дзеўка, сорам красна,
Позна вечарам гуляць».

Дзяўчынаныцы кепска стала,
Стала плакаць і ўздыхаць,
Хлапчынаныку шкода стала,
Стаў дзяўчыну суцяшаць:

«Не плач дзеўка, не плач красна,
Прыду ў госці да цябе,
Разгарыцца кроў гарача,
Вазьму замуж за сябе».

Я ТЕБЯ ПОДОЖДУ

Ты глядел на меня,
ты искал меня всюду.
Я, бывало, бегу, ото всех твои взгляды храня.
А теперь тебя нет.
Тебя нет почему — то,
Я хочу, что б ты был, чтобы так же глядел на меня.

А за окном то дождь то снег,
и спать пора, и никак не уснуть.
Всё тот же двор, всё тот же смех,
и лишь тебя не хватает чуть — чуть.

Я иду без тебя
переулком знакомым.
Я спешу не с тобой, а с Наташкой в кино,
А тебе шлюет привет
окна тихого дома
да ещё старики, что всё так же стучат в домино.

А за окном то дождь то снег...

Во дворе дотемна
крутят ту же пластинку.

Ты сказал, что придешь, хоть на вечер вернёшься
сюда.

Вечер мне ни к чему,
Вечер мал, как песчинка,
Я тебя подожду, только ты приходи навсегда.

А за окном то дождь то снэг...

ЧАСТУШКИ

У садочку на галіне
Груша спелая вісіць,
Падарыў мне мілы сэрца,
Я не знаю, дзе насіць.

Ўчора цэлы вечарочак
З мілым цалавалася,
А праводзіла ў салдаты,
Сэрца разрывалася.

Ой, дзяўчаткі, я нядаўна
З хлопцам падружылася,
Цалаваў на развітанні,
Галава кружылася

Расцвітае вішня цветам
Каля хаты на дварэ,
Мілы кажа, што кахае,
Толькі замуж не бярэ.

Лёгка гладкаю дарогай
Ды машына коціцца.
Добра замужам падружыцы,
І мне замуж хочацца.

Мяне мілы мой не любіць,
Толькі сэрца маё губіць,
Ходзіць, ходзіць ён са мной,
А цалуецца з другой.

Ой, дзяўчына, не той любіць,
Хто ў любві клянецца,
А той любіць, хто з табою
Век не расстанецца.

Ўчора мілага чакала,
Ды не дачакалася,
Ночку цэлую не спала,
Сэрца надрывалася

Па садочку вецер вее,
Вішанька калышацца,
Ой, не вер, дзяўчына, хлопцу,
Покуль не запішацца.

БУЛЬБА

Сеем бульбу на загонах,
Каб расла яна спарней.
Будзе бульбы, будзе многа
Для сябе і для людзей.

І на полі, як на дзіва,
Разраслася на віду.
Наша бульба урадзіла —
Пад кустамі па пуду.

З бульбы ў нас галушкі вараць,
Нашу бульбу ўсюды хваляць.
З бульбы клёцкі, з бульбы каша,
Расцвітае доля наша.

Смачна бульба з кілбасою,
Смачна бульба з агурком.
Смачна бульба з саланінай,
Смачна бульба з селядцом.

Як пaeў ты з маслам бульбы,
Йдзеш на працу, як на гульбы,
А з'ясі ты з бульбай скварку —
І работа пойдзе шпарка.

Жонка бульбы наварыла,
Напакла яшчэ й бліноў,
Пакаштуеш, пасмакуеш
Ды захочаш бульбы зноў.

Бульбу смачную палюбіш,
Лепей жонку прыгалубіш,
Пацалуеш ласкавей,
Каб была яна мілей.

З бульбы клёцкі, з бульбы каша,
З бульбы ўсё ідзе на лад.
Возяць бульбу, возяць нашу
У Маскву і Ленінград.

Не мінайце нашай хаты,
Прыязджайце вы да нас.
Пачастуем нашай бульбай,
Пачастуем, госці вас.

ГУМАР

Параіла

Ён: — Што мне нарэшце зрабіць, каб вы былі маёю?
Яна: — Замкнуць на ключ дзверы.

Няма часу

— Куды ты бяжыш? Памалей!
— Няма часу, жаносы і еду да маладой.
— Ну, то бяжы, а я пайду памалу бо іду да жонкі.

У школе

— Калі ты нарадзіўся?
— Я зусім не нарадзіўся, бо ў мяне мачаха.

Не разумее

— Не разумею, як ты можаш выходзіць замуж за кульгавага?
— Ну дык што! Ён жа толькі тады кульгае, калі ходзіць.

Спрытны

Малы хлопчык прышоў з бацькам у краму. Прадаўшчык звяртаецца да яго:

— Выцягні ручку, то насыплю табе арэхаў.
— Лепш дайце бацьку.
— Пахвальна так любіць бацьку.
— Не, толькі ў бацькі большая рука.

Перацярога

Возчык: — Ці пані мае ўстаўленыя зубы?

Дама (абураная): — Н ваша якая справа?!

Возчык: — Я не з цікавасці. Але на нашых дарогах гэтулькі ўхіб, што калі зубы сядзяць слаба, дык лепш іх схваць у торбачку.

Няўдзячны

— Спакла я сёння, галубачка, пірог мужу. Ды пірог гэты быў такі румяны, быццам яблыка, а пухленькі, як падушачка. А ён жа, нягоднік, як кіне ў мяне гэтым пірагом у плечы, то так як усё роўна каменем. Яшчэ цяпер баліць.

Невялікі горад

— З кім ты гэта жэнішся?.. Да яе ж увесь горад хадзіў.

— Ой, вялікі там горад!

— Дзве тысячы жыхараў.

Што кажуць

— Ну, сыночак, развітайся з цёткаю! Што кажуць, калі цётка адыходзіць?

— Дзякуй богу!

Пазычце, калі ласка

— Агата! Даражэнькая! Пазычце, калі ласка, мне качалку.

— Не магу, мілая, не магу, бо яна мне патрэбна. Я таксама яшчэ чакаю на свайго.

Суддзя: — А дзе вы мелі схаваныя грошы, якія вам украў гэты чалавек, тады ноччу ў цягніку?

Жанчына: — А вось тут, мілыя мае, за панчохаю...

Суддзя: — І вы гэтага не чулі, як ён вам каля нагі шыгнуў?

Жанчына: — Чула, мілыя мае, чаму ж не чула, але я думала, што гэта ён у... добрых намерах.

Нашы дзеці

— Дзядуля, ці вы маеце зубы!

— Не, даражэнькі, ужо ніводнага не маю.

— То патрымайце мне арэхі пакуль я прыду.

Спалоханая

— Каця, ты запляміла сваю рэпутацыю.

— Ох, божа! А я думала, што новую сукенку.

Напісана: страсянуць

— Чаму вы хворага так трасеце?

— Таму, што на рэцэпту напісана, што перад карыстаннем трэба страсянуць.

Размова

— Марыся, як жа ты замуж пойдзеш, абеду рыхтаваць не ўмееш?

— Ага...

— Сціраць не ўмееш.

— Ага...

— Танцаваць не ўмееш.

— А гэта ўжо брэшаце!

Вытлумачыў

Жанчына купляе ў нейкага дзядзькі мяса і пытае яго:

— І вы мелі сумленне забіць такое худое цяля?

— Я яго не забіў. Яно само здохла.

Доўгі язык

— Цёця, разяў рот, — папрасіла маленькая дзяўчынка жанчыну, што прыйшла да іх у госці.

— Чаго ты не бачыла ў маім роце? — пытаецца тая.

— Мая мама казалася тату, што ў цябе вельмі доўгі язык.

Свой ёсць

Дзед заўважыў, што ўнук калупае пальцам у носе і сказаў:

— Саша, на яшчэ маіх пяць пальцаў.

— Навошта? У цябе ж свой нос ёсць, — адказаў унук.

Не чакала

Жонка да мужа:

— Ужо час, каб наша дачка пачала думаць аб замужастве.

— Хай пачакае, пакуль з'явіцца адпаведны мужчына.

— Мой мілы, я не чакала...

БЮРО ДАВЕДАК

Галоўнае праўленне Беларускага грамадска-культурнага таварыства. Беласток, вул. Варшаўская 11. Тэлефон 21-18.

Беластоцкі (гарадскі) аддзел БГКТ. Беласток, вул. Варшаўская 11. Тэлефон 21-18.

Беластоцкі (павятовы) аддзел БГКТ. Міхалова, вул. Беластоцкая. Тэлефон 56.

Бельскі аддзел БГКТ. Бельск.

Варшаўскі аддзел БГКТ. Варшава, вул. Сенаторская 8. Тэл. 26-02-86.

Гайнаўскі аддзел БГКТ. Гайнаўка.

Сакольскі аддзел БГКТ. Саколка.

Сяміацкі аддзел БГКТ. Мілейчыцы.

Рэдакцыя «Нівы». Беласток, вул. Вєсялоўскага 1. Тэл. 25-89. Галоўны рэдактар Георгі Валкавыцкі.

Рэдакцыя «Зорка». Беласток, вул. Вєсялоўскага 1. Тэлефон 25-89. Рэдактар Яніна Чэрнякевіч.

Літаратурнае аб'яднанне «Белавежа». Варшава, вул. Сенаторская 8. Тэлефон 26-02-86. Старшыня Аляксандр Варшчэўскі (Алесь Варскі).

Навуковы гурток. Беласток, вул. Варшаўская 11. Тэлефон 21-18. Сакратар Уладзімір Юзвюк.

Эстрада «Лявоніха». Беласток, вул. Варшаўская 11. Тэлефон 21-18. Кіраўнік Янка Крупа.

Кафедра беларускай філалогіі Варшаўскага ўніверсітэта. Варшава, Кракаўскае прадмесце.

Беларускі ліцэй у Бельску. Бельск, вул. Каперніка 4. Тэлефон 203. Дырэктар Мікалай Гайдук.

Беларускі ліцэй у Гайнаўцы. Гайнаўка, вул. Вызвалення. Тэлефон 12. Дырэктар Анастасія Тропак.

Праўны пункт «Нівы». У будынку рэдакцыі. Дзейнічае ў кожны панядзелак ад 11 да 12 гадзіны. Парады вядзе (бясплатна) юрыст Вінцук Склубоўскі.

Рэдакцыйная калегія літаратурнай старонкі — органа літаб'яднання «Белавежа». Старшыня калегіі Янка Чыквін. Адрас. Беласток, вул. Вєсялоўскага 1. Рэдакцыя «Нівы». Тэлефон 25-89.

ЯК ЗРАБІЦЬ ПАДПІСКУ НА «НІВУ»

Падпіску на «Ніву» прыймаюць усе пісьманосцы і паштовыя ўстановы ва ўсёй краіне. Гадавая падпіска — 28,80 зл., паўгадавая — 14,40 зл., квартальная — 7,20 зл., месячная — 2,40 зл.

Падпіску з высылкай заганіцу прыймае Przedsiębiorstwo Kolportażu Wydawnictw Zagranicznych „Ruch”, Warszawa, ul. Wronia 23, konto PKO Nr 1-6-100024.

Гадавая падпіска з высылкай заганіцу каштуе 40,40 зл. Паўгадавая, квартальная і месячная адпаведна менш. Гэта падпіска прыймаецца да 10 кожнага месяца. Калі вы, напрыклад, хочаце выпісаць «Ніву» камусьці з замежных сваіх знаёмых на студзень (ці ад студзеня), вы павінны гэта зрабіць да 10 снежня. Падпіска робіцца праз уплату грошай на вышэй пададзены адрас і конту.

З М Е С Т

| | |
|---|------|
| Да чытачоў | 3 |
| Каляндарыум | 3—27 |
| Беларусы ў народнай Польшчы | 28 |
| Droga do wspólnej sprawy | 28 |
| Nowym torem | 33 |
| Беларускае грамадска-культурнае таварыства | 38 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП у 1956 годзе | 38 |
| Наша дружба | 39 |
| Ліст Балеславу Беруты | 41 |
| Беларускае свята | 42 |
| Пленум ГП | 49 |
| Katedra języka białoruskiego | 52 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП у 1957 годзе | 52 |
| Захацела бабуленька | 52 |
| Беларускі літаратурны вечар у Беластоку | 54 |
| Купалаўскія дні | 55 |
| Багацце і прыгожасць узораў беларускай вышыўкі | 57 |
| Пленум ГП | 58 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ у 1958 г. | 59 |
| II з'езд БГКТ | 59 |
| Справаздача са з'езда | 60 |
| Рыгор Шырма ў «Ніве» | 61 |
| Арганізавалася беларускае літаратурнае аб'яднанне ў Беластоку | 63 |
| Вучыцца, вучыцца, вучыцца | 63 |
| Возьмуцца за культурную працу | 65 |
| II пленум ГП БГКТ | 66 |
| Вучоныя з Мінска ў Беластоку | 67 |
| Песні дружбы | 68 |
| Наша мэта — сацыялізм | 70 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці БГКТ у 1959 годзе | 72 |
| Руні | 79 |
| Культура вёсцы | 74 |
| Выстаўка беларускай народнай творчасці | 76 |
| Мастацкая выстаўка | 77 |
| Kulturalnie nie tylko w sztyldzie | 77 |
| Рунь | 79 |
| Po białorusku | 79 |
| З важнейшых падзей у дзейнасці ГП БГКТ у 1960 г. | 81 |
| Вытрымкі з даклада на III з'езд БГКТ | 82 |
| Вытрымкі са справаздачы | 83 |

| | |
|--|-----|
| Новыя ўлады | 83 |
| Гаворыць Беласток | 84 |
| БЭТЭСКА | 84 |
| У этнаграфічным музеі | 85 |
| Этнаграфічная разведка | 85 |
| Беларускае вяселле | 85 |
| Беларускі калектыў на летніх гастролях | 86 |
| II з'езд літаб'яднання | 86 |
| Цэнтральны агляд мастацкіх гурткоў | 87 |
| Лявоніха | 88 |
| Пленум БГКТ | 89 |
| Выстаўка мастакоў аматараў | 90 |
| Выстаўка Янкі Анісэровіча | 90 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ у 1961 г. | 91 |
| Пленум пяцігоддзя | 92 |
| Найлепшы ў грамадскай працы | 93 |
| Выстаўка | 94 |
| 5 lat BTSK | 95 |
| Województwo wielu języków | 97 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ у 1962 г. | 100 |
| Сустрэча з Рыгорам Шырмам | 100 |
| У сувязі з 80-годдзем | 101 |
| Малы юбілей | 102 |
| Літаратурнае сяброўства | 104 |
| V Пленум ГП БГКТ | 105 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП у 1963 годзе | 107 |
| IV з'езд БГКТ | 108 |
| Развітальная вечарына | 109 |
| Конкурс спевакоў | 111 |
| Госці з рускага таварыства | 112 |
| Сустрэча з ветэранам кастрычніка | 112 |
| Пленум ГП | 114 |
| 4-охдзённы курс | 114 |
| Белья нядзелі | 115 |
| Вечар незабыўных мелодый | 115 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ у 1964 г. | 116 |
| Семінар у гонар 45-й гадавіны БССР | 117 |
| У 100 гадавіну смерці К. Каліноўскага | 118 |
| Пленум XX-годдзя ПНР | 118 |
| Ліпеньскае свята | 119 |
| Цітовіч у Беластоку | 120 |
| Беларускі фальклор | 121 |
| Курсанты | 121 |
| Заданні на асенне-зімовы перыяд | 122 |
| Хараства роднай мовы | 122 |
| 150 гадавіна Т. Шаўчэнкі | 123 |
| Важнейшыя падзеі ў дзейнасці ГП БГКТ у 1965 г. | 124 |
| Навуковы гурток | 125 |
| Музей БГКТ | 126 |
| Вечар «Лявоніхі» | 127 |
| Свята Грамады | 129 |
| Трэба нам песень | 131 |
| Цэнтральны агляд | 131 |
| Вечар выпускнікоў | 132 |
| Узнагароджанні дзеячаў | 133 |
| Грамада ў музеях рэвалюцыйнага руху | 134 |

| | |
|---|-----|
| Міхась Забэйда - Суміцкі на Беласточчыне | 135 |
| Перадз'ездаўскі пленум | 137 |
| Сесія аб Грамадзе | 138 |
| Асеннія падлікі «Белавежы» | 139 |
| Гарадскі аддзел БГКТ у Беластоку | 141 |
| Акардэаністы | 143 |
| Выстаўкі | 144 |
| Беларуская ёлка | 148 |
| З нагоды гадавіны | 149 |
| Танцавальная вечарына | 149 |
| Экспедыцыі | 151 |
| Канферэнцыя аддзела | 151 |
| Беластоцкі аддзел БГКТ | 152 |
| Гарадоцкія таленты | 153 |
| Фэстын песні і танца | 155 |
| У дні асветы, кніжкі і друку | 157 |
| Выстаўка народнай творчасці | 157 |
| Бельскі аддзел БГКТ | 159 |
| Райкі | 159 |
| Фэстын у Галадах | 160 |
| Пасяджэнне прэзідыума | 161 |
| Бельскі хор | 162 |
| Над рэчкай Арлянкай | 162 |
| Актывісты аддзела | 163 |
| Нашы дасягненні | 164 |
| Варшаўскі аддзел БГКТ | 167 |
| У 5-ую гадавіну | 170 |
| Вечар беларускай паэзіі і песні ў Варшаве | 170 |
| Гайнаўскі аддзел | 172 |
| У грабовым ляску | 173 |
| Пад кіраўніцтвам настаўнікаў | 175 |
| Скупаўскія самадзейнікі | 176 |
| У сувязі са святам селяніна | 177 |
| Фэстын у Старым Ляўкове | 178 |
| БГКТ — гэта мы | 179 |
| Дуброўскі аддзел БГКТ | 180 |
| Сакольскі аддзел БГКТ | 182 |
| Востраўскі фэст | 184 |
| Нававостраўскія аматары сцэны | 185 |
| У Сухінічах | 186 |
| У Гаркавічах | 187 |
| Піражкоўскі гурток БГКТ | 188 |
| Супольная нарада | 198 |
| Актыў Сакольскага аддзела БГКТ | 189 |
| Сям'яцкі аддзел БГКТ | 190 |
| Члены праўлення | 191 |
| Вілінаўскі гурток БГКТ | 191 |
| Конкурс роднага слова | 192 |
| Выстаўка беларускага друку | 193 |
| Спатканне з ветэранамі Кастрычніка | 193 |
| У Літвінавічах | 194 |
| Аматары з Верпаля | 194 |
| Нашае дзесяцігоддзе | 196 |
| Беларуская асвета | 200 |
| Права да асветы | 201 |
| Пад сцягам | 205 |

| | |
|--|-----|
| Беларуская кар'ера | 206 |
| Выпускная вечарына | 208 |
| Чытайце «Ніву» | 209 |
| Беларуская мова на універсітэце | 210 |
| Аўтарскія сустрэчы | 211 |
| Zasada: równy start | 211 |
| Niwa | 215 |
| Тацяна | 218 |
| Жоська — знахарка | 224 |
| З Кузьмоў пад неба | 229 |
| Здарэнне ў дарозе | 233 |
| Інтэрв'ю з унучкамі Багушэвіча | 235 |
| Паміж паданнямі, легендамі і гісторыяй | 243 |
| У пошуках сонца | 247 |
| Неспакойныя | 250 |
| Лішнія | 250 |
| Пра дзеда Антона і цара Мікалая | 257 |
| Вяртанні | 259 |
| Тэрэсы лёс незвычайны | 262 |
| Старакорнінскія помнікі | 268 |
| Пан Рур'як страшыць | 270 |
| Пры лесе на хутары | 276 |
| З перажытага і прызабытага | 279 |
| Маці | 282 |
| Дзяльба | 285 |
| Ідучы вуліцай нашай вёскі | 289 |
| Дубіны | 290 |
| Аб «Ніве» пісалі | 293 |
| Праўныя парады | 299 |
| Родная мова | 305 |
| Ой, у полі пад ракітай | 306 |
| Дзяўчынэнька, шуміць гай | 306 |
| Што за месяц | 307 |
| Я тебя подожду | 307 |
| Частушкі | 308 |
| Бульба | 309 |
| Гумар | 311 |
| Бюро даведак | 314 |
| Як зрабіць падпіску на «Ніву» | 315 |
| Змест | 316 |

Матэрыялы аб БГКТ падрыхтаваў
МІХАСЬ ХМЯЛЕЎСКІ

Артыкулы журналістаў «Нівы» адрэдагаваў
ГЕОРГІ ВАЛКАВЫЦКІ

Каляндарыум падрыхтаваў
УЛАДЗІМІР ЮЗВЮК

Тэхнічны рэдактар
МІХАСЬ ХМЯЛЕЎСКІ

С т ы л і с т
ЛІДЗІЯ ВАРАБЕЙ

К а р э к т а р
ВАЛЯНЦІНА ЖЭШКА

В о к л а д к а
ТЭРЭСА БЭЙНЭРОВІЧ

Здымкі з архіваў: Рэдакцыі «Ніва», ГП БГКТ,
САКРАТА ЯНОВІЧА, АЛЯКСЕЯ КОЗЁЛА, НІНЫ
ЦЫВАНЮК, МІХАСЯ ХМЯЛЕЎСКАГА і ГЕОР-
ГІЯ ВАЛКАВЫЦКАГА
